प्राचीन यूनान का इतिहास

(द्वितीय--खण्ड)

(ई० पू० ४३१ -- ३२३)

[भारतीय विश्वविद्यालयों के लिये]

●

लेखक

शैलेन्द्र प्रसाद पाथरी, एम० ए०

इतिहास विभाग

श्री काशी विद्यापीठ, वाराणसी

●

प्रकाशक

अशोक पुस्तक मंदिर

१६३ महात्मागांधी रोड
कलकत्ता

ज्ञानवापी, चौक
वाराणसी ।

प्रकाशक :
अशोक पुस्तक मंदिर

●

प्रथम संस्करण
जनवरी : १९६८
मूल्य : सात रुपया मात्र

●

प्रमुख वितरक
विद्यापीठ पुस्तक निकेतन
विद्यापीठ रोड, वाराणसी—२
मुद्रक :—
श्री सदेहव राम
श्री हरि प्रेस,
सी ६/७१ बागबरियार सिंह, वाराणसी

—समर्पण—

श्रद्धा का यह पुष्प उन समस्त गुरुजनों
के चरणों में अर्पित है जिन्होंने
ज्ञान-दान देकर मुझे इस
पुष्प के सृजन के
योग्य बनाया।

: शैलेन्द्र पांथरी

प्रस्तावना

मेरी पुस्तक 'प्राचीन यूनान का इतिहास' का यह दूसरा खण्ड है। प्रथम खण्ड विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से प्रकाशित हुआ था। द्वितीय खण्ड के प्रकाशन में कतिपय कारणों से विलम्ब हो गया, परन्तु मेरे मित्रों, श्री परशुराम सिंह, श्री देवेन्द्र सिंह, व श्री धर्मनाथ सिंह आदि के सहयोग से यह कार्य भी सफलतापूर्वक पूरा हो ही गया—इसके लिये मैं इन मित्रों का, जो कि इस पुस्तक के प्रकाशक भी हैं, आभारी हूँ। अपने मार्ग-दर्शक पिता श्री, गुरुजनों और हितैषी मित्रों, जिन्होंने मुझे सदैव प्रोत्साहन दिया, के प्रति भी मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूं। श्रीहरि प्रेस के मालिक एवं उनके कर्मचारियों को भी सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ ! मुखपृष्ठ के चित्रकार राधेश्याम पाण्डेय व ब्लाक के निर्माता को धन्यवाद !

पुस्तक के इस खण्ड का सम्बन्ध प्राचीन यूनान के उस युग के इतिहास से है, जिसमें पारस्परिक संघर्षों के कारण नगर-राज्यों की प्रभुता क्षीण हुई: समय-समय पर एथेंस, स्पार्टा, थीबिस, आदि ने पूरे यूनान को, या उसके एक अंश को अपने नेतृत्व में संघटित कर शासित करने का प्रयत्न किया, परन्तु एक 'यवन-राष्ट्र' की कल्पना से अछूते रहने के कारण वे सफल न हो सके ! अन्त में उन्हें मैसिडोनिआ जैसे एक ऐसे अर्द्धसभ्य राज्य के समक्ष नमित होना पड़ा, जिसने पहली बार उन्हें झुका कर अपना नेतृत्व स्वीकार करने को बाध्य किया—और यूनान को एक राष्ट्र के रूप में संघटित करने की ओर पहला कदम बढ़ाया। फिलिप द्वितीय ने, व उसके बाद उसके पुत्र अलेक्जाण्डर तृतीय, (अलेक्जाण्डर महान्) ने, यूनान की सभ्यता व संस्कृति को स्वयं अपना कर शेष विश्व में उसको व्याप्त करने का बीड़ा उठाया। अलेक्जाण्डर ने, और आगे बढ़ कर, यूनान की पाश्चात्य संस्कृति व एशिया की प्राच्य संस्कृति के समन्वय का भी प्रयास किया और इस प्रकार, (यद्यपि पूर्णरूपेण हम उसे सफल नहीं मानते) ईसाई धर्म के जन्म का मार्ग प्रशस्त किया, जिसमें दोनों गोलार्द्धों के तत्व शामिल है—एक का मस्तिषक और दूसरे का हृदय, एक का विचार दूसरे की भावना, एक का तर्क व दूसरे का विश्वास। इस धर्म के उदय में भारत का योगदान किस रूप में व अंश में है यह अध्ययन का विषय हो सकता है !

इस पुस्तक की रचना में मैंने अनेक पुस्तकों का सहारा लिया है, जिनकी सूची प्रथम खण्ड में दे दी है। मैं उन सभी इतिहासकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूं!

पुस्तक में यत्र-तत्र भाषा, व्याकरण, छपाई आदि से सम्बन्धित कुछ त्रुटियां रह गई हैं, आशा है सहृदय पाठक क्षमा करेंगे। अगले संस्करण में इन त्रुटियों को दूर करने का प्रयत्न करूँगा!

जयहिन्द !

दिनांक ९-१-६८

शैलेन्द्र प्रसाद पांथरी
इतिहास विभाग
श्री काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

विषय-सूची

१ पिलोपोनीसियन युद्ध
प्रथम चरण

★

सिमान के अथक प्रयत्नों से पाँचवीं शती ई०पू० के छठें दशक में स्पार्टा और एथेंस के मध्य तीस वर्ष के लिये जो शांति सन्धि सम्पन्न हुई थी वह ४३१ ई०पू० में हो भंग हो गयी और हेलेनिक संसार की दो अग्रगण्य रियासतें पुनः आपस में गुथ गयीं (थूसिडाइडस् का भी विश्वास है कि इस युद्ध का वास्तविक यद्यपि अप्रकट कारण एथीनियन शक्ति की प्रगति ही था जिसने लेसिडेमोनिअनों को भयाक्रांत कर युद्ध के लिए प्रेरित किया)

सिमान की शाँति-संधि भङ्ग

इस युद्ध ने एथीनियन साम्राज्य का चकनाचूर कर डाला किन्तु एथेंस के ह्रास के साथ यूनान का राजनैतिक प्रभुत्व भी समाप्त हो गया। समय-समय पर कतिपय नगर राज्यों [स्पार्टा, थीबिस आदि] ने प्रमुखता प्राप्त की परन्तु अन्ततः हेलेनिक समुदाय से निष्कासित मेसिडोनिया के उत्कर्ष के पश्चात् ही यूनान एक राष्ट्र के रूप में प्रथमतः संगठित हो पाया और राजनीतिक स्थिरता के दर्शन हो सके।

यूनान के प्रथम विवेचनात्मक इतिहासकार थूसिडाइडस् के विवरण से ज्ञात होता है कि यह युद्ध व्यर्थ ही लड़ा गया था। एथेंस का प्रभुत्व समुद्र पर था जबकि पिलोपोनेसस की सम्राज्ञी नगरी स्पार्टा स्थल पर सर्वशक्तिमान के रूप में मान्य थी। अतः दोनों के क्षेत्र पृथक-पृथक थे और दोनों को आपस

युद्ध की अनिवार्यता

में लड़ने की कोई आवश्यकता न थी। श्री राबिन्सन ने इसे "हाथी और व्हेल" के बीच युद्ध का अति प्राचीन, रुचिकर [आकर्षक] और अत्यन्त स्पष्ट उदाहरण कहा है। यह एक ऐसा अनहितकारी संघर्ष था जिसने दोनों ही शक्तियों को विनाश की मरणस्थली में ला पटका। इसका कारण यवन राज्यों की यौद्धिक प्रवृति ही मानी जा सकती है जो उन्हें एक दूसरे की समृद्धि के प्रति ईर्ष्यायुक्त बना देती थी। अत: पेरीक्लीज के नेतृत्व में एथेंस ने जब प्रजातन्त्र स्थापित किया और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र-साहित्य, कला, व्यापार-वाणिज्य व व्यवसाय, तथा रूढ़िगत विचारों व मान्यताओं को आघात पहुँचाने वाले दर्शन में उच्चतम विकास किया तो यूनान की अन्य नगर रियासतें ईर्ष्या से जल उठीं। एथेंस उन्हें नई शिक्षा और नवीन विचारधाराओं का केन्द्र दिखने लगा। इन नये विचारों से अन्य यूनानी यह सोचकर भयभीत हो उठे कि कहीं एथेंसवासी प्राचीन यवन विचारों, मान्यताओं व परम्पराओं को समाप्त न कर डालें।

एथेंस के बढ़ते हुए साम्राज्य को देख कर उन्हें यह भय भी प्रतीत हुआ कि कहीं एथेंस स्थल पर भी अपना प्रभुत्व न स्थापित कर ले और सारे यूनान का स्वामी बन जाय। इसी भावना को कोरिन्थ के दूत ने स्पार्टा के दरबार में इस प्रकार प्रकट किया :——

"हेलास में स्थापित यह निरंकुश नगर सभी के लिए समानरूपेण स्थायी संकट के समान है, वह हम में से कुछ पर पहले से ही शासन करता है और अब औरों पर भी शासन आरोपित करने का आकांक्षी है। हमें अपने भविष्य की सुरक्षा के हित उस पर आक्रमण कर उसे दबा देना चाहिए, साथ ही उसके द्वारा दास बनाये गये हेलेनिस को भी मुक्ति दिलानी चाहिए। हम आक्रामक नहीं हैं, न्याय हमारे पक्ष में है और देवता ने भी हमें सहायता का वचन दिया है।"[1] एथेंस के इस बृद्धिमान प्रभुत्व को रोकने का बीड़ा स्पार्टा ने उठाया। स्पार्टा सदा से एथेंस का प्रतिद्वन्द्वी था। एथेंस जिस प्रकार प्रगतिशीलता व विकास का नेता था, उसी प्रकार स्पार्टा यूनान के पुरातन विचारों का नेता और प्रजातंत्र का विरोधी था। इन विरोधों के कारण यवन रियासतों में एक संघर्ष प्रारम्भ हुआ। एथेंस के नेतृत्व में डेलियन संघ के सदस्य राज्य थे और स्पार्टा पिलोपोनीसियन संघ की रियासतों का नेता था। यह युद्ध ४३१ ई० पू० में प्रारम्भ हुआ और अल्पकालिक विराम के साथ ४०४ ई०पू० तक चलता रहा। इसे द्वितीय पिलोपोनीसियन युद्ध के नाम से भी पुकारा जाता है क्योंकि पेरीक्लीज के शासनकाल में हुए एथेंस-स्पार्टा

---

१. E. Abbot.—Pericles, p. 202

संघर्ष को भी इसी की एक कड़ी के रूप में माना जाता है जो तीस वर्षीय संधि के साथ समाप्त हुआ था (४६०–४४५ ई॰ पू॰)। यों तो इस युद्ध के अनेक कारण थे परन्तु कतिपय प्रकट कारण जिन्होंने अन्य प्रच्छन्न कारणों से मिल कर इस युद्ध को भड़काने का काम किया इस प्रकार थे :—

युद्ध के कारण

एथीनियन साम्राज्यवाद

१—डेलियन संघ का नेता बन कर एथेंस ने अनेक यवन राज्यों को अपने अधिकार में कर लिया था। एथेंस उन पर शासन करता था। अपनी साम्राज्यवादी वृत्ति द्वारा एथेंस ने एक विशाल समुद्री साम्राज्य का निर्माण कर लिया था। एथेंस की इस साम्राज्यवादी प्रवृति के कारण यूनान के उस प्राचीन सिद्धांत का अतिक्रमण हो रहा था कि सभी राज्यों की स्वतंत्र प्रभुसत्ता हो। एथेंस के व्यवहार से संघ की सदस्य रियासतें असंतुष्ट थीं और विद्रोह के अवसर की ताक में थीं। यूनान की अन्य रियासतें भी इसे निन्दनीय समझती थीं, यद्यपि अवसर मिलने पर वे स्वयं भी एथेंस के समान साम्राज्यवाद का प्रसार करने को प्रस्तुत रहती थीं। स्पार्टा स्वयं इस भावना का शिकार था। अपनी संघीय रियासतों के साथ उसका व्यवहार भी बहुत उत्कृष्ट न था, अतः उसका यह नारा कि वह यवन राज्यों को एथेंस के प्रभुत्व से मुक्त करना चाहता है केवल एक बहाना मात्र था जिसके द्वारा वह एथेंस के विरुद्ध विद्रोही राज्यों को उभाड़ना चाहता था।

स्पार्टा का ईर्ष्याभाव

२—इसके पीछे स्पार्टा की ईर्ष्या काम कर रही थी। अपनी संकीर्ण तथा स्थानीय प्रवृत्ति और परशियन युद्धों के समय में स्वार्थयुक्त व्यवहार के कारण यवन जगत से स्पार्टा का नेतृत्व समाप्त हो चला था और एथेंस ने उसका स्थान ग्रहण कर लिया था। परशियन युद्धों के बाद एथेंस ने व्यापार-वाणिज्य व सैन्य-क्षेत्र में भी प्रमुखता प्राप्त कर ली थी। स्पार्टा पुनः यूनान में अपना नेतृत्व स्थापित करना चाहता था। अतः उसने एथेंस के जुये से यूनानी राज्यों की मुक्ति के नारे की आड़ ली। डेलियन संघ की थीबिस, एजिना, मेगारा प्रभृति रियासतों का एथेंस के प्रति असंतोष भाव स्पार्टा को ज्ञात था और इससे उसे बड़ी सहायता मिली।

(३) परशियन युद्धों के बाद एथेंस का व्यापार पर्याप्त उन्नत और

समृद्ध हो चला था। इस व्यापारिक विकास ने विशेषकर कोरिन्थ के व्यापार को बहुत क्षति पहुँचाई। कोरिन्थ पिलोपोनीसियन संघ का सदस्य था अतः उसने संघ से अपनी व्यापारिक-वाणिज्यिक क्षति के निराकरण की मांग की।[1]

कोरिन्थ का ईर्ष्याभाव

युद्ध का सूत्रपात :—एथेंस व स्पार्टा के बीच इस युद्ध का सूत्रपात कोरिन्थ द्वारा हुआ। एक समय एजियन सागर का समस्त व्यापार कोरिन्थ के अधिकार क्षेत्र में था। इस व्यापार पर अब एथेंस ने, स्वर्णयुगीन औद्योगिक प्रगति के फलस्वरूप, अधिकार जमा लिया था और इटली व सिसीली के समुद्रों से भी कोरिन्थ को अपदस्थ करने के निमित्त सचेष्ट था। इसी कारण कोरिन्थ में एथेंस के प्रति विद्वेष की भावना पनपने लगी।

इसी बीच इपीडैमनस नामक अधि-उपनिवेश को लेकर जो कोरसिरा का उपनिवेश था, कोरिन्थ व कोरसिरा (जो स्वयं कोरिन्थ का उपनिवेश था) में संघर्ष छिड़ गया। इपीडैमनस के निवासियों ने कतिपय निष्कासित सरदारों व उनके अत्याचारी सहायकों के अत्याचारों से घबरा कर कोरसिरा से सहायता याचना की लेकिन वहाँ से निराश होने पर वे कोरिन्थ की ओर उन्मुख हो चले। कोरिन्थ ने उनकी याचना स्वीकार कर ली। इस पर रूष्ट होकर कोरसिरा ने इपीडैमनस के थलडमरूमध्य (इस्थमस Isthemus) को घेर लिया। साथ ही उन्होंने इस विवाद को किसी ऐसे पक्ष के समक्ष रखने का आग्रह किया जो कोरिन्थ व कोरसिरा दोनों को ही मान्य हो। इस के उत्तर में कोरिन्थ ने ७५ जहाजों सहित २००० होप्लाइट सैनिकों की सेना कोरसिरा

कोरिन्थ-कोरसिरा संघर्ष

१—इसी को लक्ष्य कर थूसिडाइड्स ने लिखा था—"The Peloponesse could be encircled by war"

जिससे सम्भवतः उसका तात्पर्य यह था कि कोरिन्थ के व्यापार मार्ग को अवरुद्ध कर एथेंस पिलोपोनिसस की शक्ति को क्षीण करे। इससे कोरसिरा (यहाँ से होकर कोरिन्थ का व्यापार इटली व सिसीली से होता था) की मैत्री व कोरिन्थ की खाड़ी के मुहाने पर स्थित Naupactus में तैनात अपने बेड़े से उसे महत्वपूर्ण सहयोग मिल सकता था—परन्तु इस ओर कोई सक्रिय कदम नहीं उठाया गया।

Hellas, C. E Robinson, P. 108

के विरुद्ध भेजी। जिसे कोरिसिरा के ४० जहाजों वाले बेड़े ने अम्ब्रेसिया की खाड़ी (Ambraciangulf) में ल्यूसिम्ने (Leucimne) की लड़ाई में पराजित किया। उसी समय (४३५ ई० पू) इपीडैमनस ने भी आत्मसमर्पण कर दिया। इन विजयों के फलस्वरूप आयोनिअन सागर पर कोरसिरा का नियंत्रण स्थापित हो गया।

कोरिन्थ भी इन पराजयों के प्रतिशोध के निमित तैयारियाँ करने लगा। इन तैयारियों का समाचार पाकर आतंकित कोरसिरा ने अपने दूत एथेंस भेजे।

कोरिन्थ व कोरसिरा के दूत एथेंस में

कोरिन्थ भी दूत भेजने में पीछे न रहा। कोरसिरा के दूतों ने एथेंस को बतलाया कि एथेंस और पिलोपोनीसियन संघ के बीच संघर्ष छिड़ना अनिवार्य था और इसके लिए उन्हें कोरिसिरा के बेड़े का सहयोग प्राप्त करना भी अनिवार्य होगा क्योंकि एक तो कोरसिरा सिसीलि के मार्ग में स्थित है और दूसरे उनकी नौ-सेना भी एथेंस को मिल जाती है। दूसरी ओर कोरिन्थ ने इस बात पर जोर दिया कि युद्ध अनिवार्य नहीं था, लेकिन अगर एथेंस कोरसिरा की ओर गया तो युद्ध अवश्य अनिवार्य हो जाएगा। कोरिन्थ ने अपनी पिछली सेवाओं का स्मरण भी दिलाया। इस समस्या पर गम्भीर विचार-विमर्श हुआ और अन्त तक पैरीक्लीज के परामर्श पर एथेंस ने कोरसिरा का पक्ष ग्रहण किया। लेकिन कोरसिरा के साथ जो संधि सम्पन्न की गयी वह रक्षात्मक संधि थी। अर्थात् यदि कोरसिरा या उसके मित्रों पर आक्रमण हो तो एथेंस उसकी सहायता करता। इस संधि के बाद ही १० जहाज भी कोरसिरा के सहायतार्थ भेज दिये गये।

४३३ ई० पू० के लगभग कोरिन्थ व कोरसिरा के बीच कोरसिरा के समुद्र के पास सिबोटा (Sybota) नामक स्थान पर एक टक्कर हो गयी जिसमें

सिबोटा (Sybota) की लड़ाई ई० पू० : ४३०

अपने ७० जहाजों की क्षति के मुकाबले शत्रु के केवल ३० जहाज नष्ट कर पराजित कोरसिरा पीछे हट गया। परन्तु तभी एथेंस से २० और जहाज कोरसिरा की सहायता के लिए आ पहुंचे जिन्होंने कोरिन्थ को पलायन के लिए विवश कर दिया। यद्यपि अपने को विजयी घोषित कर उसने विजय

स्मारक भी स्थापित कर ही लिया। कोरसिरा ने भी एक विजय चिन्ह की स्थापना की। वापसी के समय कोरिन्थ ने एनेक्टोरिग्रान (Anactovion) पर आधिपत्य कर लिया जिस पर कोरिन्थ व कोरसिरा का संयुक्त अधिकार था।

एथेंस व स्पार्टा के द्वेष की अग्नि में दूसरी आहुति का काम पोटिडे (Potidaea) नामक एथेंस की करद् रियासत ने किया जो चाल्सिडिक (Chalcidice) प्रायद्वीप में कोरिन्थ का उपनिवेश था। पोटिडे के प्रशासन के लिए मजिस्ट्रेट आदि की नियुक्ति कोरिन्थ द्वारा ही की जाती थी। पैलीन के थलडमरू-मध्य पर नियन्त्रण रखने की दृष्टि से इसकी स्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। सिबोटा के युद्ध के पश्चात् एथेंस ने पोटिडे को कोरिन्थ से भेजे जाने वाले मजिस्ट्रेटों का बहिष्कार करने और दक्षिण की ओर की सुरक्षात्मक दीवार गिरा देने को कहा क्योंकि उस ओर मैसिडोनिया स्थित था और उससे अभी आक्रमण की कोई आशंका नहीं थी परन्तु स्पार्टा द्वारा सहायता का आश्वासन मिलने से पोटिडे ने एथेंस का आदेश मानने से इन्कार कर दिया। मैसिडोनिया का राजा पर्डिक्कस (Pardiccas) भी एथेंस की आशाओं के प्रतिकूल चाल्सिडिक प्रायद्वीप के नगरों से एथेंस के विरुद्ध विद्रोह कर ओलिन्थस में केन्द्रित होने का परामर्श देने लगा। एथेंस ने पहले उसी को दण्ड देने का विचार किया परन्तु फिर पोटिडे की ओर ही प्रयाण को प्राथमिकता दी। वहाँ पिलोपोनीसियन सेना के साथ आये हुए कोरिन्थीयन सेनापति एरिस्टियस (Aristeus) को पराजित कर पोटिडे पर विजय प्राप्त की और वहाँ के निवासियों व विदेशी सैनिकों को निष्कासित कर एथीनियन नागरिकों को बसाया।

पोटिडे की समस्या एवं एथेंस की पोटिडे विजय

सिबोटाकी लड़ाई में मेगारा ने पिलोपोनिसियन संघ के सदस्य के नाते कोरिन्थ की सहायता की थी। अतः पेरीक्लीज ने मेगारा को एथीनियन साम्राज्य के बंदरगाहों, बाजारों व नगरों से बहिष्कृत करने की घोषणा की। एरिस्टोफेनीज (Aristophanes) के मतानुसार मेगारा पर आक्रमण का कारण था मेगारा द्वारा की गई एस्पेसिया (Aspasia) की निन्दा। इतिहास में आर्थिक बहिष्कार का सम्भवतः यह सर्वप्रथम उदाहरण है। एथेंस के इस व्यवहार से कोरिन्थ का असंतुष्ट होना उचित ही था। उसका कहना था कि

मेगारियन डिक्री
Megarian decree

एथेंस ने कैलेस (Callias) द्वारा सम्पादित तीस वर्षीय संधि का उल्लंघन किया है। अतः उसने पिलोपोनीसियन संघ के अग्रणी सदस्य होने के नाते स्पार्टा से एथेंस के विरुद्ध सहायता-याचना की। स्पार्टा पहले ही एथेंस से जला भुना था। फलतःसंघीय सभा ने बहुमत से एथेंस के विरुद्ध युद्ध का निश्चय किया। स्पार्टा के राजा आर्किडमस (Archidemus) ने यद्यपि युद्ध का विरोध किया परन्तु कोरिन्थ, मेगारा व एजिना के जोर देने पर स्पार्टा की असेम्बली को युद्ध की घोषणा करनी पड़ी। स्पार्टा में भी संघ की बैठक हुई और वहाँ भी युद्ध का निर्णय स्वीकृत किया गया। थूसिडाइड्स ने लिखा है कि स्पार्टा ने युद्ध के लिए डेल्फी के आरेकल से भी सम्मति ली और आरेकल ने उन्हें आश्वासन दिया कि, "यदि वे अपनी पूरी शक्ति से युद्ध करेंगे तो अवश्य विजयी होंगे।" इस प्रकार देव-आज्ञा के साथ युद्ध का प्रारम्भ हुआ।

पिलोपोनीसियन संघ, स्पार्टन असेम्बली तथा संधीय बैठकद्वारा युद्ध का निश्चय

दोनों ही पक्ष समानरूपेण शक्तिशाली थे। स्पार्टा पिलोपोनीसियन राज्यों का (यथार्थ में) स्वामी था। स्थल पर उसकी धाक थी। दूसरी ओर एथेंस की धाक समुद्र पर थी और उसके अधीन एजियन क्षेत्र के प्रायः सभी नगर थे। स्पार्टा सैन्य दृष्टि से शक्तिशाली था परन्तु धन व जहाजों का वहाँ अभाव था। एथेंस के पास शक्तिशाली बेड़ा था, भरापूरा कोष था, और उसका नगर सुदृढ़, सुरक्षित था। अतः स्थल की लड़ाई में यद्यपि एथेंस स्पार्टा का सामना सफलतापूर्वक नहीं कर सकता था परन्तु स्पार्टा भी समुद्र में उसे कोई क्षति नहीं पहुँचा सकता था। इन्हीं कारणों से पेरीक्लीज युद्ध को दीर्घकाल तक ले जाना चाहता था जिससे कि स्पार्टा युद्ध का व्यय सहन न कर सकने से स्वतः नमित हो जाये।

सम्भवतः इसी कारण चौथी शती ई०पू० के एक इतिहासकार इफोरस ने इस युद्ध का दायित्व पेरीक्लीज पर आरोपित किया है। उसके मतानुसार पेरीक्लीज द्वारा संघीय कोष के अपव्यय से जो कठिन स्थिति उठ खड़ी हुयी थी उससे जनता का ध्यान हटाने के लिए ही उसने स्पार्टा से संघर्ष मोल लिया। [जनसाधारण की असाधारण आकांक्षाओं की पूर्ति में असफल होने से उनका ध्यान पेरीक्लीज से विमुख होने लगा। अभिजात वर्ग पहले ही उससे

युद्ध का दायित्व

विमुख था। अब दोनों मिल कर उसके विरुद्ध उठ खड़े हुए थे।] परन्तु एथेंस का, और सही अर्थों में पेरीक्लीज का, दायित्व वहीं तक था जहाँ तक वह अपने नौसैनिक साम्राज्य को अक्षुण्ण रखने के पक्ष में था। यह सोचना कि इस युद्ध द्वारा वह अपने साम्राज्य विस्तार की कोई गम्भीर आकांक्षा रखता था, नितांत भ्रमपूर्ण होगा। अतः कुछ विद्वानों द्वारा प्रतिपादित यह मत कि पेरीक्लीज का प्रयोजन हेलास पर एथेंस की प्रभुसत्ता स्थापित करना था, उपयुक्त नहीं प्रतीत होता।

अल्कमिआनिडी परिवार के निष्कासन की मांग

स्पार्टा भी स्थिति की गम्भीरता से परिचित था अतः वह भी तैयारी के लिये समय चाहता था। इसी लिए उसने दूत भेज कर एथेंस से अल्कमिआनिडी परिवार के सदस्यों को, जिन पर 'काइलोन के षडयंत्र' की घटना के सम्बन्ध में एथेना देवी का अभिशाप था और जिनसे पेरीक्लीज भी माता के पक्ष से सम्बद्ध था, निष्कासित करने की मांग की, एथेंस ने भी 'एथेना ऑफ ब्रेजेन हाउस' (Athena of Brazen House) जहाँ पोजेनियस को मरने के लिए बन्द करवा दिया गया था।] और टेनारस (Tenarus) के श्राप से मुक्ति प्राप्त करने की माँग की, जहाँ पॉजीडॉन के मंदिर में हेलॉट दासों का वध किया गया था। स्पार्टा की दूसरी मांग थी कि एथेंस समस्त अधीनस्थ हेलेनिक राज्यों को मुक्त कर दे। एथेंस ने भी बदले में समस्त पिलोपीनोसियन राज्यों को मुक्त करने की मांग की।

हेलेनिक राज्यों को मुक्त करने की मांग

दोनों पक्षों की शक्ति

इन कूटनीतिक घात प्रतिघातों के साथ ही दोनों अपना अपना पक्ष सुदृढ़ करने में लगे रहे। स्पार्टा के पक्ष में आर्गास व एकेइआ को छोड़ कर शेष समस्त पिलोपोनेसस, कोरिन्थ व मेगारा, बोयोशिया, फोशिस, लोक्रिस, अम्ब्रेसिया, अनेक्टोरिआन, और ल्यूकस (leucas) द्वीप थे। एथेंस के पक्ष में अकार्नेनिआ, कोरसिरा, जेकिन्थस, नोपेक्टस, प्लेटेइआ तथा डेलियन संघ के सदस्य राज्य थे। लेस्बास, कियास, कोरसिरा के जहाजी बेड़ों के अतिरिक्त एथेंस के पास स्वयं अपने १०० जहाज थे। साथ ही ३००० से ऊपर अश्वारोही तथा पदाति धनुर्धारी, होपलाइट सैनिक आदि थे।[1]

१, A History of Greece, J. B. Bury p. 380

दोनों ने परशिया को भी अपनी ओर मिलाने का असफल प्रयास किया। पिलोपेनेसस इटली व सिसीली को अपनी ओर मिलाने में असफल रहा। एथेंस ने भी इस दिशा में प्रयत्न किये। कैलेस के अनुमोदन पर लिआण्टिनी (Leontini) व रेगियम (Rhegium ४३३ ई०पू०) तथा जेकिन्थस से एथेंस की संधि हो गयी, लेकिन इन सफलताओं-असफलताओं का निकट भविष्य में कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा।

परशिया, इटली व सिसीली को मिलाने में असफलता

यह युद्ध अधिकांशत: एट्टिका, थ्रेस व पश्चिमी यूनान के सागरों में ही सीमित रहा क्योंकि एक नौसैनिक शक्ति होने के कारण एथेंस वहीं लाभ में रहता जहाँ उसके जहाजी बेड़े की सफलता के अधिकाधिक अवसर हों, और स्पार्टा एक स्थल-शक्ति होने के नाते वहीं प्रहार करने पर लाभान्वित होता जहाँ इसकी थलसेना के लिये अनुकूल अवसर हों। इसी कारण स्पार्टा ने एट्टिका व थ्रेस, और एथेंस ने पश्चिमी समुद्र में ही आक्रामक रुख अपनाया। इसी दृष्टि से पेरीक्लीज ने एथेंस के नागरिकों को भूमि व सम्पत्ति आदि छोड़कर समुद्र व नगर की रक्षा का निर्देश दिया। वह किसी भी तरह स्वयं युद्ध आरम्भ नहीं करना चाहता था क्योंकि उसे ज्ञात था कि स्थल शक्ति में स्पार्टा अपेक्षाकृत प्रबल है। साथ ही अपनी नौ-सेना पर भी उसे आवश्यकता से अधिक विश्वास था। अत: वह थकाने की नीति पर डटा रहा।

प्रमुख रणक्षेत्र-एट्टिका, थ्रेस व पश्चिमी यूनान

थकाने की नीति

इस युद्ध का तात्कालिक कारण एथेंस व थीबिस के बीच प्लैटेइआ को लेकर छिड़ने वाला संघर्ष था। प्लेटेइआ एथेंस का मित्र राज्य था किन्तु वहाँ के कुछ असन्तुष्ट सरदारों ने थीबिस को आक्रमण का बुलावा दिया। एक अन्धेरी रात में थीबिस के ३०० सैनिक प्लेटेइया नगर में प्रविष्ट हो गये। और उसे बोयोशियन संघ की सदस्यता-स्वीकार करने को कहा। परन्तु एथेंस द्वारा सहायता का आश्वासन देने पर प्लैटेइआ ने सदस्यता स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। प्लैटेइया वासियों ने रातो-रात सड़कों व मकानों की किलेबन्दी कर थीबन सैनिकों को पलायन के लिये विवश कर दिया। उन में से जो भागने में सफल न हो सके वे कैद कर लिये गये—वे स्वयं

एथेन्स व थीबिस के बीच संघर्ष

ही एक विशाल भवन के द्वार को नगर से बाहर जाने का द्वार समझ कर उसमें प्रवेश कर गये थे। शेष थीबन सेना जो पीछे आ रही थी उसने भी कैदियों की वापसी की शर्त पर प्लैटेइया के दुर्ग के बाहर उनकी सम्पत्ति को क्षति न पहुँचाना स्वीकार किया, परन्तु जैसे ही प्लैटेइया वासी अपनी सम्पत्ति दुर्ग को प्राचीर के अन्दर ले आये उन्होंने एथेंस के निर्देश के बावजूद थीबन कैदियों (१२०) को मौत के घाट उतार दिया। अब स्पार्टा के रोष तथा थीबिस के विरोध की आशंका से एट्टिका में स्थित समस्त बोयोशियन नागरिकों को कैद कर लिया साथ ही प्लैटेइआ की सुरक्षा की दृष्टि से आबाल-वृद्धों व स्त्रियों को नगर से हटा दिया और एथीनियन सेना व रसद भी वहाँ भेज दी।

Plataea द्वारा १२० थीबन कैदियों की हत्या

४३१ ई० पू० में स्पार्टा ने स्वयं एट्टिका पर आक्रमण कर तथा फसलों को नष्ट कर युद्ध का श्री गणेश कर दिया। एक विशाल सेना लेकर स्पार्टा-नरेश आर्किडेमस एट्टिका में प्रविष्ट हो गया और मेलेसिप्पस (Melesippus) को दूत बनाकर एथेंस भेजा, परन्तु पेरीक्लीज के निर्देशानुसार एथेंस ने उसे सूर्यास्त के पूर्व एट्टिका छोड़ने का आदेश दिया। इस पर हीरोडोटस लिखता है,-कि वापस जाते समय मेलेसिप्पस ने कहा, आज से यूनान के लिए विभीषिकाओं का सूत्रपात होगा। आर्किडेमस ने सिथेरान पर्वत पर स्थित ओइनो (Oenoe) के दुर्ग पर आधिपत्य करने का असफल प्रयास किया। इल्युसिस आदि सीमावर्ती नगरों को जीतता हुआ अंततः वह एथेंस के निकट ७ मील दूर (Acharnae) पहुँच गया, परन्तु फिर वह बोयोशिआ की ओर मुड़ गया।

स्पार्टा द्वारा एट्टिका पर आक्रमण ई० पू० ४३१

इस बीच एथेंस भी तैयारियों में व्यस्त रहा। एथेंसवासी अपनी सम्पत्ति व परिवार आदि को नगर के अन्दर ले आए और पशुओं आदि को यूबोइआ के टापू पर पहुँचा दिया। नगर में जनसंख्या की वृद्धि की समस्या को पिरायस व लम्बी दीवारों के बीच निवास की व्यवस्था करके हल किया गया।

एथेंस का प्रतिरोध

तत्पश्चात् एथेंस ने मेसानिया के तट पर स्थित मिथोन पर आक्रमण किया जो स्पार्टन सेनापति ब्रेसिडस (Brasidas) के शौर्य व वीरता के समक्ष असफल हुआ। परन्तु उत्तर में एथेंस ने सेफालेनिया (Cephallenia) व अकार्नेनिया के कतिपय तटवर्ती प्रदेशों पर विजय प्राप्त की। यूबोइआ व अटलाण्टा के टापू पर भी अपनी स्थिति को सुदृढ़ बना लिया। सैरोनिक खाड़ी में अपनी स्थिति की सुरक्षा के निमित्त एथेंस ने एजिना से मूल निवासियों को निष्कासित कर वहाँ अपने नगरवासियों को बसाया। निष्कासित एजिना वासियों को स्पार्टा ने लेकोनिआ के उत्तर में थाइरेटिस (Thyreatis) में बसाया।

एथेंस का Methone पर विफल आक्रमण (Messenion shore)

सेफालेनिआ व अकार्नेनिया के कुछ तटवर्ती प्रदेशों पर एथेंस का अधिकार

आगामी युद्धों में सम्भावित आकस्मिक आवश्यकता के लिए पेरीक्लीज ने १००० टैलेण्ट सुरक्षित रख दिये, साथ ही प्रतिवर्ष १०० तिमंजिले पोतों के निर्माण का लक्ष्य भी निर्धारित किया।

सामूहिक दाहक्रिया ई०पू०—४३०

आगामी शीतऋतु में परम्परानुसार युद्धक्षेत्र में वीरगति-प्राप्त एथेंसवासियों के सम्मान में सार्वजनिक दाहक्रिया सम्पन्न की गयी। दस जातियों के निमित्त दस मंजूषाओं की व्यवस्था की गयी जिनमें मृत सैनिकों की अस्थियाँ रख कर नगर के बाहर स्थित समाधिस्थल (Outer Ceramicus) में समाधिस्थ कर दी गयीं। लापता सैनिकों के लिए रिक्त मंजूषा ले जाई गयी। इस अवसर पर मृत वीरों के सम्मान में उद्गार प्रकट करते हुए पैरीक्लीज ने अपना प्रसिद्ध वक्तव्य प्रसारित किया जिसे इतिहासकार थूसिडाइड्स ने हमारे लिये प्रस्तुत किया है। इस वक्तव्य में उसने एथेंस व वहाँ के निवासियों की चरित्रगत विशेषताओं, एथेंस के लोकतंत्र तथा उसकी शक्ति व समृद्धि का उल्लेख किया है। श्री सी० ई० राबिन्सन ने अपनी पुस्तक "हेलास" में उसका पूरा वक्तव्य उद्धत किया है जिसका सारांश इस प्रकार है :—

पेरीक्लीज का वक्तव्य

"एथेंस का लोकतंत्रीय विधान, जिसमें प्रत्येक नागरिक के लिए वैधानिक दृष्टि से समान अवसर होते हुए भी गुणों को महत्व दिया जाता है, अन्य नगर राज्यों के लिए अनुकरणीय है। विधान की हमारे यहाँ अत्यधिक मान्यता है।

वैयक्तिक जीवन व सार्वजनिक जीवन में उदारता बरती जाती है। यही वैचारिक-स्वातंत्र्य का स्रोत है।"

इसके बाद उसने अनेकानेक उत्सवों, समृद्धि, तथा उच्छृंखलता विहीन सौन्दर्यबोध पर जोर दिया।

अपनी सैन्य व शिक्षा-व्यवस्था को भी उसने स्पार्टा आदि राज्यों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ बतलाया।

उसका सबसे महत्त्वपूर्ण उल्लेख इस प्रकार था—

"हम सौन्दर्य प्रेमी हैं, और यह हम सबकी पहुँच के अन्दर है। हम मस्तिष्क-पक्ष की ओर अधिक ध्यान देते हैं, लेकिन इससे हम नितांत कोमल नहीं हो जाते। सम्पत्ति हमारे समक्ष सृजनात्मक सक्रियता का साधन है। हम निर्धनता को स्वीकार करने में अपमान नहीं समझते, वरन् इसके विरुद्ध संघर्ष में असफलता ही असम्मान का वास्तविक हेतु समझी जाती है। वैयक्तिक और सार्वजनिक जीवन के हित परस्पर टकराते नहीं, व्यक्तिगत व्यवसाय हमें राजनीति से विमुख नहीं करते। एक समुदाय के रूप में हम उनकी निन्दा करते हैं जो राजनीति से दूर भागते हैं। इसे हम दायित्व से पलायन मानते हैं। वाद-विवाद में हम समीक्षात्मक होने के साथ ही रचनात्मक भी हैं और यद्यपि कार्य के पूर्व हम विचार कर लेते हैं, तथापि यह हमें कार्य से विरत नहीं करता। अन्यत्र कहीं भी परिषद् के कार्यों में शांति व साहसपूर्ण पहल की भावना एक साथ नहीं पायी जाती। अन्य जातियों के साहस का स्रोत उनकी कल्पना-शक्ति का अभाव है। सोचना बन्द करते ही कल्पनाशक्ति उनसे पृथक् हो जाती है। श्रेष्ठ वही व्यक्ति है जिसने जीवन के आनन्द और लड़ाई के खतरों को भलीभाँति आत्मसात् किया है, और इन दोनों के द्वारा कर्त्तव्य-पथ से विचलित न किया जा सके।"

निष्कर्ष के रूप में वह कहता है कि "एक राष्ट्र के रुप में हम हिलास के लिए शिक्षा हैं।—हमने अपनी शक्ति के प्रमाणस्वरूप अनेक कार्य किये हैं जो आज और भविष्य में हमारे लिए प्रशंसा के स्रोत रहेंगे। अतः हमें किसी होमर की आवश्यकता नहीं जो हमारी प्रशस्ति प्रस्तुत करे। इस प्रकार की प्रशस्ति बाद में असत्य सिद्ध हो सकती है। हमारा प्रमाण इससे कहीं ठोस है। हर भूमि पर और हर समुद्र में हमारे अन्वेषकों ने प्रवेश कर वहाँ हमारी शक्ति के प्रमाण छोड़ दिये हैं।"[1]

---

१. Hellas. C. E. Robinson pp. 77-81

४३० ई० पू० में स्पार्टा पुनः एट्टिका पर आक्रमण कर लौरियॉन तक घुस आया, परन्तु एथेंस उस समय स्पार्टा

ई०पू० ४३० की महामारी

से भी भयंकर शत्रु प्लेग (महामारी) से त्रस्त था। थूसिडाइड्स ने जो विवरण दिया है उससे ज्ञात होता है कि चिकित्सा की अव्यवस्था से लोग अकालमृत्यु के ग्रास हो गये, मृतकों को न तो समाधिस्थ करने का सुचारू प्रबन्ध था, न तो उनके परम्परागत अंतिम संस्कार की ही व्यवस्था थी, राहों और मंदिरों तक में लाशें पड़ी हुयी थीं। कहा जाता है कि लोगों को इसकी सूचना पहले ही ऑरेकल से मिल चुकी थी।

इस महामारी के उद्गम के विषय में अनेक मत हैं। थूसिडाइड्स के मतानुसार इथिओपिया से प्रारम्भ होकर मिस्र व परशिया के साम्राज्य से होते हुए महामारी एजियन क्षेत्र में पहुँची। परन्तु रोम में भी उसी समय महामारी फैली इससे अन्य इतिहासकारों का अनुमान है कि इसका प्रसार कार्थेज से हुआ। इसमें कुछ सत्यता भी प्रतीत होती है क्योंकि कार्थेज के मार्ग से इस रोग के रोम व एथेंस में फैलने का समुचित समाधान हो जाता है। एथेंस पर इस महामारी का अत्यंत घातक प्रभाव पड़ा। जनसंख्या १००,००० से घटकर ८०,००० से भी कम हो गयी। पिलोपोनेसस इससे मुक्त रहा।

आर्गोलिस की ओर अभियानः

४३० ई० पू० एथेंस के बेड़े ने आर्गोलिस के तटीय प्रदेशों (इपीडारस, ट्रॉजन हर्मिआने, आदि) पर पेरीक्लीज के नेतृत्व में आक्रमण किया परन्तु सफलता न मिल सकी। दूसरी ओर स्वयं इपीडॉरस अन्य मित्र राज्यों सहित एट्टिका की ओर अभियान में व्यस्त था।

इपीडॉरस-अभियान विफल

परन्तु Amphilochian Argos व अम्ब्रेसिया के संघर्षरत होने से उसे भी सफलता न मिल सकी। एथेंस ने आर्गास के एम्फीलोकियनों की सहायता के लिये सेनापति फोर्मिओ (Phormio) के नेतृत्व में ३० जहाज भेजे। फोर्मिओ अपना कार्य सफलतापूर्वक समाप्त कर क्रिसेअन खाड़ी (Crisaean gulf) पर नियंत्रण रखने के लिए नोपेक्टस चला आया।

पेरीक्लीज का पतन

पेरीक्लीज के विरोधी व अन्य एथेंसवासी महामारी व दीर्घकालीन युद्ध और उससे उत्पन्न होने वाले दुष्परिणामों से ऊब कर स्पार्टा से शांति संधि करने के पक्ष में आ गये थे। इपीडॉरस के विरुद्ध अभियान में असफल होने से

जनमत पेरीक्लीज के विरुद्ध हो चला था अतः पदच्युत कर उसे काउंसिल के समक्ष प्रस्तुत किया गया। १५०१ न्यायाधीशों के न्यायालय ने उस पर ५ टैलेण्ट की चोरी का और जनता के धन के अपव्यय का आरोप लगाया। यद्यपि वह मुक्त कर दिया गया और संकटकालीन अवस्था (चाल्सीडिस में स्पार्टोलस नामक स्थान पर एक एथीनीयन सैनिक टुकड़ी की पराजय, स्पार्टा द्वारा जैकिंथस पर आधिपत्य का असफल प्रयत्न) के कारण एक वर्ष तक पदमुक्त रहने के बाद (४३०-४२६) वह पुनः सेनापति (स्ट्रैटेगॉस) पद के लिए निर्वाचित किया गया। फिर भी ५० टैलेण्ट अर्थदण्ड उसे देना ही पड़ा।

स्पार्टोलस में एथेंस की पराजय

शांतिवादी दल द्वारा उसकी सैनिक नीतियों का विरोध किये जाने के कारण वह अधिक दिनों तक पद पर न रह सका। उसके जीवन का साध्यकाल स्वयं दो पुत्रों व बहन की मृत्यु तथा रानी एस्पेसिया व मित्र फिडियास व एनेक्सागोरस पर लगाये गये आरोपों से उद्विग्न हो चला था। (यद्यपि एस्पेसिया बाद में मुक्त कर दी गई और उसके पुत्र पेरीक्लीज को भी वैध घोषित कर दिया गया।)

पेरीक्लीज के अंतिम दिवस

ई० पू० ४२९ में उसकी मृत्यु हो गयी उस समय उच्चारित उसके अंतिम वाक्य उसके चरित्र की समस्त विशिष्टताओं को प्रकट कर देते हैं:—"कोई भी एथीनिअन कभी भी मेरे किसी कार्य के कारण शोकतप्त नहीं हुआ।"

पेरीक्लीज की मृत्यु

उसकी सर्वप्रमुख देन थी लोकतांत्रिक व्यवस्था और सर्वोच्च स्थान पर विधान की प्रतिष्ठा। यद्यपि इन सभी क्षेत्रों में उसकी सफलता को समीक्षात्मक दृष्टि से देखा जाता है और उसकी कड़ी आलोचना की जाती है फिर भी इतना तो असंदिग्ध है ही कि सफलता की दृष्टि से वह भले ही आलोच्य हो अपने प्रयोजन की दृष्टि से वह लोकतांत्रिक सुधारकों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

मूल्यांकन

प्लैटेइआ का घेरा और अधिकार :—(४२९-४२७ ई० पू०)

बोयोशिया व पिलोपोनेसस के बीच संचार-परिवहन को सुचारू रखने के निमित्त प्लैटेइया को अधिकृत करना स्पार्टा के लिए अत्यावश्यक था क्योंकि हैलास

को परशियन आतंक से मुक्ति प्रदान करने वाला यह पवित्र प्रदेश मेगारा व थीबिस के बीच के मार्ग पर नियंत्रण रखता था। थीबिस के अनुरोध पर स्पार्टा नरेश आर्किडेमस ने प्लैटेइआ पर घेरा डाल दिया और वहाँ के निवासियों से अनुरोध किया कि युद्ध की समाप्ति तक वे नगर से चले जाएँ, उसने इस अवसर पर उन्हें पूर्ण सम्पत्ति की वापसी का आश्वासन भी दिया। परन्तु एथेंस से पुनः सहायता का आश्वासन मिलने पर भी प्लैटेइआ-वासी स्पार्टा की माँग स्वीकार करने को प्रस्तुत नहीं हुए। अगले वर्ष (४२८ ई० पू०) की शीत ऋतु तक दोनों पक्षों में घात-प्रतिघात चलते रहे। परन्तु अन्ततः जब महामारी से त्रस्त होने व प्रायद्वीपीय युद्धों में न पड़ने की नीति के अनुसार एथेंस ने अपना वचन पूरा नहीं किया तो कुछ प्लैटेइअन भाग कर एथेंस पहुँचे और शेष ने खाद्यान्न की विषम स्थिति के कारण आत्मसमर्पण कर दिया (४२७ ई० पू०)। स्पार्टा से ५ व्यक्ति उनका भाग्य निर्णय करने के निमित्त भेजे गए जिन्होंने तलवार की लेखनी से उन्हें अमर कर दिया। इन मृतकों में २०० के लगभग प्लैटेइअन और २५ के लगभग एथीनियन भी थे। प्लैटेइआ नगर भी ध्वस्त कर दिया गया। तत्पश्चात् स्पार्टा को मिगारा व थीबिस के मार्ग पर नियंत्रण प्राप्त हो गया। लेस्बास द्वीप के प्रमुख नगर ने तीन अन्य नगरों को मिलाकर कुलीन शासन स्थापित किया।

मिटीलिनी (Mytilene) का विद्रोह (४२८-४२७ ई० पू०)

पेरीक्लीज की मृत्यु के बाद एथेंस का नेतृत्व क्लिआन (Cleon) नामक व्यक्ति के हाथों में चला आया, जो किसी भी दृष्टि से अपने पूर्वाधिकारी की समता नहीं कर सकता था। क्लिआन चमड़े का व्यापारी था। पेरीक्लीज की भाँति वह किसी सम्भ्रांत कुल का सदस्य न था। वह एक साधारण व्यक्ति था जो केवल अपनी बुद्धिमता (अथवा धूर्त्तता) और परिश्रम के बल पर एथेंस की असेम्बली का नेता बन बैठा था।

महामारी फैलने के कुछ ही समय उपरांत (४२८ ई० पू०) एथीनियन साम्राज्य के अधीनस्थ लेस्बास टापू के नगरों ने (मेथिम्ना Methymna को छोड़ कर जहाँ लोकतंत्रीय शासन था), विद्रोह कर दिया। विद्रोह का समाचार प्राप्त होने पर एथेंस ने उस समय मिटीलिनी पर आक्रमण करने की योजना निर्धारित की जब वे उत्सव में व्यस्त हों। परन्तु यह योजना सफलता न प्राप्त कर सकी क्योंकि एक तो मिटीलिनी ने उत्सव का आयोजन ही नहीं किया, दूसरे औलम्पिक उत्सवों में उसने अपना पक्ष भलीभाँति उपस्थित

किया और अनेक यवन राज्यों की सहानुभूति अर्जित कर ली, साथही पिलोपोनीसिअन संघ की सदस्यता स्वीकार कर सहायता का आश्वासन भी प्राप्त कर लिया। महामारी और पेरीक्लीज की मृत्यु के आघात से एथेंस निर्बल हो चला था, अतः लेस्बास का जहाजी बेड़ा इस समय वास्तविकता से अधिक प्रबल हो चला। दूसरे लेस्बास के एण्टिस्सा (Antissa) इरेसस (Evesus) व पिर्रा (Pyrraah) आदि नगर राजनीतिक रूप से मिटीलिनी के साथ मिल गये। इसी समय पहली बार एथेंस में प्रत्यक्ष युद्ध कर (eisphora) आरोपित किया गया।

एथेंस ने Paches के नेतृत्व में मिटीलिनो के दो बन्दरगाहों पर घेरा डाल दिया व १०० जहाज एजियन सागर तथा १०० जहाज पिलोपोनेसस की ओर भेज दिए। स्पार्टा ने भी जवाब में एटटिका पर आक्रमण किया तथा मिटीलिनी की ओर अल्सीडस (Alcidas) के अधीन एक जहाजी बेड़ा भेजा जो मिटीलिनी न पहुँच सका और अल्सीडस वापस पिलोपीनेसस चला गया। स्पार्टा का दूत अवश्य वहाँ पहुँचा। उसने नगरवासियों को एथेंस के विरुद्ध शस्त्र धारण के लिए उकसाया परन्तु सफल न हो सका। खाद्यान्न के अभाव से त्रस्त लोगों ने इसमें कोई उत्साह प्रदर्शित नहीं किया वरन् स्वयं कुलीनतंत्रीय शासकों को ही आत्मसमर्पण के लिए विवश कर दिया। विद्रोह के बन्दी नेता एथेंस ले जाए गए जहाँ उन्हें प्राणदण्ड दिया गया। यह भी निर्णय किया गया कि मिटीलिनी के समस्त पुरुष नागरिकों का बध कर दिया जाय और स्त्रियों व बच्चों को दास बना लिया जाय। परन्तु बाद में डायाडोटस (Diodotus.) नामक शांतिवादी वक्ता के प्रभाव से यह आदेश रद्द कर दिया गया। एथेंस लाये गये विद्रोही नेताओं को मौत के घाट अवश्य उतारा गया। एथेंस ने इस के बाद लेस्बाँस के जहाजी बेड़े को भी हस्तगत कर लिया। नगर की दीवार भी ध्वस्त कर दी गयी। मिटीलीनी की भूमि का कुछ अंश देवताओं के लिए सुरक्षित रख कर शेष क्लेरूची के रूप में एथेंस के नागरिकों में वितरित कर दिया गया। लेस्बास वासियों को दास बना लिया गया और उन पर वार्षिक कर भी लाद दिया गया। (४२७ ई० पू०)

स्पार्टा का एथेंस पर आक्रमण

स्पार्टा का दूत मिटिलिनी में, परन्तु विफल

विद्रोह का दमन एवं विद्रोही नेता दण्डित

पश्चिम यूनान में युद्ध का घटनाक्रम

पश्चिम यूनान में एथेंस का सर्वप्रमुख सहायक कोरिन्थ का शत्रु अकर्नेनिआ था जो अम्ब्रेसिया का भी शत्रु था। एथेंस ने अम्ब्रेसिया के विरुद्ध एम्फीलोकिअनों को सहायता दी थी इस कारण अम्ब्रेसिआ उससे रुष्ट था। अतः उसने पश्चिम में एथेंस को नीचा दिखाने के लिए एकार्नेनिया पर आक्रमण करने के लिए स्पार्टा को उभाड़ा। तद्नुसार स्पार्टा ने सेनापति क्नेमस (Cnemus) को १००० होपलाइट सैनिकों के साथ स्ट्रेटस (Stratus) नगर पर अधिकार करने को भेजा परन्तु यह प्रयत्न निष्फल रहा। कोरिन्थ से उनकी सहायता के लिए आने वाला ४७ जहाजों का पिलोपोनीसिअन बेड़ा कुछ तो तूफान के कारण नष्ट हो गया और कुछ एथीनिअन नौसेनापति फार्मिओ की रण नीति के कारण (जो केवल २० जहाज लेकर कोरिंथ की खाड़ी में डटा हुआ था) खुले समुद्र में बुरी तरह पछाड़ा गया। स्पार्टा के कुछ जहाज नष्ट हुए, एक डूब गया और १२ पकड़ लिए गए। फिर भी क्नेमस हतोत्साहित नहीं हुआ और फार्मिओ के कौशल को समझ कर ७७ जहाज लेकर वह नौपेक्टस की ओर अग्रसर हुआ जहाँ एथेंस के भारी जहाजों को संचालित करना अत्यंत दुष्कर होता। पहले तो एथीनिअन बेड़ा पराजित होता प्रतीत हुआ परन्तु तभी एक एथीनिअन पोत ने पीछा करने वाले पिलौपोनीसियन पोत को, बीच रास्ते में लंगेर डाले एक व्यापारी जहाज की स्थिति से लाभ उठा कर, डुबा दिया। पिलोपोनेसस का बेड़ा किं-कर्त्तव्य विमूढ़ सा खड़ा रह गया और उस स्थिति में एथेंस का बेड़ा पुनः विजयी हुआ। अपने खोए जहाजों के साथ एथेंस ने शत्रु के भी ६ जहाज ले लिए।

नौपेक्टस में पुनः एथेंस की विजय हुई

इस बीच फार्मिओ की मृत्यु हो गई (४२८ ई० पू०) और उसके पुत्र एसोपस (Asopus) को अकार्नेनिया की सहायता के लिए भेजा गया। ओइनिड़ी में यद्यपि वह सफल न हो सका परन्तु शीघ्र ही ओनिडी (Oenidaea) को एथीनिअन पक्ष में सम्मिलित होना पड़ा (४२५-२४ ई० पू०)। दूसरा महत्व-पूर्ण स्थल ल्यूकस घातक और अविजित बना रहा।

कोरसिरा में गृहयुद्ध (४२० ई० पू०)

कोरिन्थ को आशा थी कि कोरसिरा से अभी भी सम्बंध सुधर सकते हैं। इसी आशा पर उसने इपीड़ैमनस के युद्धबन्दी कोरसिरावासियों को मुक्त कर

दिया। कोरसिरा पहुँच कर इन लोगों ने राज्य को दो दलों में विभक्त कर दिया। फलतः वहाँ विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो गयी। ये दो दल थे—कुलीन-तंत्रयी और लोकतंत्रीय जिनकी सहानुभूति क्रमशः पिलोपोनेसस व एथेंस के साथ थी। कुलीनतंत्रीय दल ने लोकतंत्र शासन का तख्ता उलटने के ध्येय से उनके एक नेता पीथियस (Peitheus) पर यह आरोप लगाया कि वह कोरसिरा को एथेंस के हाथों बेचना चाहता है परन्तु इस आरोप के सिद्ध न हो सकने से पीथियस मुक्त कर दिया गया। मुक्त होने पर उसने प्रतिशोध लेने के लिए विरोधी दल के पांच सर्वाधिक धनी व्यक्तियों पर अभियोग लगाया कि उन्होंने जीयस देवता और अल्कीनस के मंदिरों से अंगूर की लतरें काटी है। अतः उन पर अर्थदण्ड आरोपित किया गया और किश्तों में चुकता करने की उनकी प्रार्थना भी ठुकरा दी गयी। फलतः रूष्ट होकर उन्होंने असेम्बली में घुस कर ६० अनुयायियों सहित पीथियस का बध कर डाला। यहीं से गृहयुद्ध का श्रीगणेश हो गया। जनता भाग कर किले और बन्दरगाह में चली गयी। बाजार और नगर के निचले हिस्से सहित दूसरे बन्दरगाह पर कुलीनों ने अधिकार कर लिया। इस संघर्ष में जनता को विजयी होता देख, कुलीनों ने शस्त्रागार की ओर उनका मार्ग अवरूद्ध करने की दृष्टि से बाजार के समीपवर्ती मकानों आदि में आग लगा दी।

कुलीनों द्वारा ६० अनुयायियों सहित पीथियस की हत्या की गई

अगले दिन १२ जहाजों का बेड़ा लेकर एथेंस से नौसेनापति निकोस्ट्रेटस (Nicostratus) आ पहुँचा। उसने दोनों दलों में समझौता कराने का प्रयत्न किया परंतु असफल रहा। जनता अब कुलीनों पर विश्वास करने को प्रस्तुत न थी। उसने निकोस्ट्रेटस से आग्रह किया कि वह पांच एथीनिअन जहाज वहीं छोड़ कर कोरसिरा के ५ जहाजों को बंधकस्वरूप कुलीनों सहित अपने साथ एथेंस ले जाए। एथेंस भेजे जाने के भय से ये कुलीन भाग कर एक मंदिर में छुप गये। अतः रूष्ट होकर जनता ने पुनः शस्त्र धारण कर लिए तथा कुलीनों को मंदिर में घेर लिया और उन्हें दूसरे द्वीप पर चले जाने को बिवश किया गया।

एथीनिअन नौसेनापति ने समझौता का प्रयत्न किया

अल्सीडस भी (५३ जहाज का) एक वृहत् पिलोपोनिसिअन बेड़ा साथ लेकर आ पहुँचा। पहले तो उसकी स्थिति प्रबल प्रतीत होने लगी परन्तु तभी एथेंस से ६० जहाजों के आगमन का समाचार पाकर अल्सीडस पुनः वापस चला गया।

अब जनसाधारण ने कुलीनों से प्रतिशोध लेना आरम्भ किया। अन्य द्वीप पर गये हुए कुलीन वापस आ कर हीरा देवी के मंदिर में शरणागत हो गये थे। इन्हें पकड़ कर ५० पर अभियोग चला कर उन्हें मृत्युदण्ड दिया गया। भीषण प्रतिशोध के भय से शेष कुलीनों ने एक दूसरे की सहायता से आत्महत्या कर ली। तदुपरांत एथीनिअन बेड़े की उपस्थिति में ही धर्म व समाज के नियमों को परे हटा कर लोकतंत्र के विरोधियों का बड़ी क्रूरता पूर्वक दमन किया गया। इस हत्याकाण्ड में व्यक्तिगत द्वेष का खुल कर ताण्डव हुआ। इस प्रतिशोध भावना के बावूजद ब्यूरी विद्रोह व गृहयुद्ध का दायित्व कुलीनों पर ही आरोपित करते हैं। फ्रांस की राज्यक्रांति से इसकी तुलना करते हुए ब्यूरी कहते हैं कि हो सकता है शांति काल में क्रान्ति इतना भीषण रूप न धारण करती, परन्तु जबकि दो महान् शक्तियों में संघर्ष चल रहा था, किसी भी देश में किसी बाह्य शक्ति का हस्तक्षेप देश के लिए आंतरिक रूप से विभाजनकारी सिद्ध होता है। यही कोरसिरा में भी हुआ जहां कुलीन सहायता के लिए लैसिडेमान की ओर उन्मुख हुए और वहीं लोकतंत्रीय एथेंस की ओर। फ्रांस की क्रांति में इतिहास की पुनरावृति हुयी।[1]

शरणागत की भी हत्या की गई

लोकतंत्र दल के प्रतिशोधात्मक हत्या काण्ड से सुरक्षित शेष कुलीनों ने इस्टोन पर्वत (Mt. Istone) पर स्थित किले पर अधिकार कर लिया और वहीं से जनता पर प्रहार करने लगे। इसी बीच यूरीमिडान (Eurymedon) और सोफोक्लीज के अधीन सिसीलि जाता हुआ एथीनिअन बेड़ा कोरसिरा पहुँचा जिसकी सहायता से लोकतंत्रीय दल ने उक्त दुर्ग पर अधिकार कर लिया। कुलीनों ने अपना निर्णय एथेंस द्वारा किये जाने की शर्त पर आत्मसमर्पण कर दिया। पलायन के विरूद्ध चेतावनी दे कर उनकी शर्त स्वीकार कर ली गयी और वे प्टोसिआ (Ptychia) के टापू पर नजरबन्द कर दिए गये। एथीनिअन बेड़े के आगे बढ़ते ही लोकतंत्रीय दल ने एक षडयंत्र रचा। बन्दियों के कुछ मित्रों द्वारा यह संदेश प्रेषित किया गया कि एथेंस उन्हें वस्तुतः लोकतंत्रीय दल की दया पर छोड़ जाना चाहता हैं अतः प्राण रक्षार्थ वे भाग जायें। उन्हें जहाज भी प्रदान किये गये और जब उनमें से कुछ लोग प्रस्थान करने वाले थे, षडयंत्र के अनुसार पकड़ लिये गये और विरोधियों

शेष कुलीनो ने इस्टोन किले पर अधिकार किया

कोरसिरा में लोकतंत्र की स्थापना हुई

१. A History of Greece J. B. Bury p. 403.

के हवाले कर दिये गये। पुनः पहले से भी भीषण, क्रूर, जघन्य और दारूण हत्याकाण्ड का प्रारम्भ हुआ। इस बार भी भयभीत होकर कुलीनों ने स्वयं आत्मघात कर लिया। ब्यूरी इसका दायित्व यूरीमिडॉन की महत्वाकांक्षा व उदासीनता पर आरोपित करते हैं जो उचित ही है।

तथापि 'अंत भला तो सब भला' की कहावत के अनुसार कोरसिरा में लोकतंत्र की स्थापना के पश्चात् शासन शांतिपूर्ण और सुचारू रूप से चलने लगा। तथापि एथेंस के पैर वहाँ न जम सके।

डिमास्थनीज (DEMOSTHENES) का पश्चिमी अभियान ई० पू० ४२६

डिमास्थनीज ने ४२६ ई० पू० में ल्यूकस द्वीप पर आक्रमण किया। परन्तु डोरिस व बोयोशिआ पर पश्चिम की ओर से आक्रमण के समय संचार-साधनों में अवरोधन उत्पन्न हो इसके लिए वह पहले एइटोलिआ को दलित करना चाहता था। यद्यपि बोयोशिया व पश्चिमी समुद्र के मध्य एथेंस के अनेक मित्र राज्य फोकिस, लोक्रिस, एकार्निनिआ आदि, थे। फिर भी वह ल्यूकस का अभियान अधूरा छोड़ कर एइटोलिया की ओर मुड़ गया। स्थल-सैन्य के मार्ग को सुगम और सुरक्षित बनाने के ध्येय से यह आवश्यक भी था। सम्भवतः, जैसा कि इतिहासकारों का अनुमान है, वह यूबोइआ के समुद्र को कोरिन्थ की खाड़ी से संयुक्त करना चाहता था, नौपेक्टस स्थित मेसानिआ-वासी भी उसे इस ओर उभाड़ रहे थे। यूबोइआ व चाल्सीडिस प्रायद्वीप में सैनिक अभियान की सुविधा की दृष्टि से और डोरिस व ट्रेकिस द्वारा ओएटा पर्वत की जंगली जातियों से सुरक्षा की याचना के उत्तर में स्पार्टा ने थर्मोपली के निकट ट्रेकिस (थेसाली का नगर) में हिराक्ली (Heraclea) नामक उपनिवेश की स्थापना की थी। परन्तु थेसाली की शत्रुता और अपनी अक्षमता के कारण स्पार्टा इस स्थिति का लाभ न उठा सका। यहाँ पर अपनी स्थिति सुदृढ़ बनाने के लिए अब एथेंस ने भी डोरिस पर आधिपत्य की योजना बनायी।

डिमास्थनीज एइटोलिया में असफल रहा

ल्यूकस का अभियान त्याग देने पर अकार्नेनिआ ने डिमास्थनीज का साथ देना अस्वीकार कर दिया। एइटोलिआ के अभियान में डिमास्थनीज को सफलता भी न मिली क्योंकि एक तो स्वयं एइटोलिआ ने वीरतापूर्वक उसके सैन्य

का प्रतिरोध किया, दूसरे उनके युद्धकौशल से परिचित **ओजोलियन लोक्रियनों** (Ozolian Locrians) की प्रतीक्षा न करने से डिमास्थनीज का पक्ष निर्बल हो गया। क्षणिक विजय के बाद पराजित होकर निराश डिमास्थनीज एथेंस वापस न जा कर नौपेक्टस चला गया।

स्पार्टन उपनिवेश हिराक्ली से कुछ सेना व ३००० होपलाइट सैनिक लेकर लैसिडेमानियन सेनापति यूरीलोकस (Eurylochus) नौपेक्टस पर आक्रमण करने को बढ़ा। परन्तु डिमास्थनीज के कौशल से उसकी पराजय हुई और वह अब अम्ब्रेसिया से मिलकर आर्गास पर चढ़ाई करने के ध्येय से दक्षिणी एइटोलिया चला गया। अम्ब्रेसिया की सेनाओं ने आगर्स के उत्तर में स्थित दुर्ग ओल्पेइ (Olpae) पर अधिकार कर लिया था, वहीं यूरीलोकस भी अपनी सेना लेकर उनसे जा मिला। इससे अकार्नेनिआ के लिए संकट-जनक स्थित उत्पन्न हो गयी अतः उसने डिमास्थनीज से सहायता याचना की; याचना स्वीकृत की गयी। फलतः अर्गास व ओल्पेइ के मध्य अम्ब्रेसिअन खाड़ी में जो संघर्ष हुआ उसमें पिलोपोनीसियन सेनाओं की पराजय हुयी और सेनापति यूरीलोकस को अपने प्राणों से हाथ धोने पड़े। पिलोपोनीसियन सेनाओं ने डिमास्थनीज से संधि कर ली और उससे आग्रह किया कि अम्ब्रेसिआ वालों को उनके पीछे हटने का ज्ञान न हो। परन्तु शीघ्र ही अम्ब्रेसिया वालों को वस्तुस्थिति का ज्ञान हो गया और वे स्पार्टनों का पीछा करने लगे। सुअवसर देख कर अकर्नेनिआ वालों ने अम्ब्रेसिआ वालों पर आक्रमण कर असख्य सैनिको को मौत के घाट उतार दिया। इस प्रकार इस संघर्ष में पिलोपोनीसियन सेना को सैनिक और कूटनीतिक पराजय का सामना करना पड़ा। डिमास्थनीज ने अपनी कूटनीति से पिलोपोनेसस की नैतिकता व चरित्र पर गहरा आघात किया।

यूरीलोकस ने नौपेक्टस पर आक्रमण किया परन्तु विफल रहा

पिलो पोनी सियन व डिमास्थनीज सेनाओं की से संधि

घटनाक्रम से अनभिज्ञ अम्ब्रेसिआ की नयी सेना को डिमास्थनीज की सेनाओं ने ओल्पेई के उत्तर में इडोमिनी पर्वत (Mt. Idomene) के निकट परास्त किया।

अम्ब्रेसिआ के आक्रमण की अशंका समाप्त हो जाने से अकार्नेनिआ का स्वार्थ-साधन हो गया अतः अब वे डिमास्थनीज को अपने प्रदेश में और आगे बढ़ने की अनुमति देने को प्रस्तुत नहीं थे। उन्होंने

अम्ब्रेसिश्रा व एम्फीलोकिस में शतवर्षीय संधि हुई

अम्ब्रेसिश्रा व आर्गास के एम्फीलोकिस से शतवर्षीय मैत्री संधि कर ली जिसके अनुसार प्रादेशिक अखण्डता की रक्षा में उन्होंने परस्पर सहयोग का निश्चय किया, यद्यपि उन्हें इस बात की स्वतंत्रता थी कि किसी युद्ध में उन्हें अपने मित्र के विरूद्ध शामिल न होना पड़े।

कुछ कालोपरांत एनोक्टोरिया (४२५ई०पू०) व ओइनिडी ने भी (४२४ ई० पू०) एथेंस से मैत्री संधि कर ली और एथेंस को भी इस ओर की चिन्ता से मुक्ति मिल गयी।

एथेंस की आंतरिक स्थिति:—पेरीक्लीज की मृत्यु इस संघर्षकालीन अवस्था में एथेंस के लिए सर्वाधिक सांघातिक सिद्ध हुयी। उसकी मृत्यु के पश्चात् एथेंस में कोई योग्य राजनीतिज्ञ नहीं रह गया जो राजनीतिक व सैनिक पृथक्करण की प्रणाली के आरम्भ हो जाने पर एथेंस की राजनीति में स्थिरता ला सके। इस परिस्थिति में केवल एक अपवाद अल्सीबाइडीज था, परन्तु अन्य सेनापतियों व राजनीतिज्ञों की आयोग्यता के कारण उसकी योग्यता भी एथेंस का अभिष्ट सिद्ध न कर सकी। वह जिस औद्योगिक वर्ग का सदस्य था उसमें योग्य नेतृत्व के कोई गुण न थे। इसका प्रभाव असेम्बली पर भी पड़ा जिस पर इस नवीन वर्ग का आधिपत्य हो चला था। अत: असेम्बली भी राजनैतिक अस्थिरता से अछूती न रह सकी, अरिस्टोफेनीज इस पर भी व्यंग करने से न चूका। एथेंस में पिलो-पोनीसियन युद्ध को लेकर भी अनेक मत प्रचलित हो रहे थे। युद्ध का सर्वाधिक दुष्परिणाम भूस्वामी वर्ग को ही सहना पड़ रहा था अत: वह युद्ध की समाप्ति के पक्ष में था, किन्तु दूसरी ओर का व्यापारी-वर्ग जो इस युद्ध के आर्थिक पक्ष पर जोर दे रहा था। वह इस संघर्ष में कोरिन्थ के व्यापारिक प्रभुत्व को ध्वस्त करने का सुअवसर देख कर युद्ध के पक्ष में था। प्रथम वर्ग का प्रतिनिधि नीसियस (Nicias). और द्वितीय वर्ग का नेता क्लिश्रान था जो नये व्यापारी व लोकतंत्रीय दल का प्रतिनिधि भी था।

नेतृत्व का अभाव एवं अस्थिरता

इस समय असेम्बली पर क्लिश्रान का ही प्रबल प्रभाव था। वह एक कुशल-अर्थवेत्ता भी था और इस बात से भिज्ञ था कि युद्धव्यय के कारण एथेंस का राज-कोष निरंतर क्षीण होता जा रहा है। इसके समाधान के निमित्त उसने आयकर तथा सदस्य राज्यों के कर में वृद्धि की और नाममात्र के सूद पर मंदिर के कोष

क्लिश्रॉन का प्रभाव

से ऋण लिया (यद्यपि कुलीनों के 'नवयुवक-दल' ने एण्टीफान (Antiphon) के नेतृत्व में, और प्रहसनकार एरिस्टोफेनीज ने अपने-अपने ढंग से इसका विरोध किया (४२६-४२३ ई० पू०) । एट्टिका पर होने वाले आक्रमणों से क्षतिपूर्ति के लिए उसने न्यायाधीशों का वेतन ३ ओबोल कर दिया, परन्तु सैनिक दृष्टि से वह अधिक कुशल सिद्ध न हो सका ।

क्लिआन ने उच्च शिक्षा प्राप्त की थी और उच्च शिक्षा के प्रवर्तक सोफिस्टों के सम्पर्क से उसने अपने को लाभान्वित किया था । जनता की भावनाओं को उभाड़ने और उससे अपना स्वार्थ-साधन करने में वह अत्यंत निपुण था । राबिन्सन लिखते हैं कि उसकी वक्तृत्वकला प्रभावशाली होते हुए भी छिछोरे किस्म की थी । आवाज के उतार-चढ़ाव द्वारा, चिल्ला कर प्रभाव डालने और लबादे को हटा कर जांघों पर ताल देने के बुरी लत का शिकार था । एरिस्टो-फेनीज लिखता है कि वह बाढ़ग्रस्त धारा के समान गर्जन करता था । एरिस्टोफेनीज व थूसिडाइडीज ने उसे निम्नकोटि का स्वार्थी, भीरू, और दर्पयुक्त जननेता (Demagogue) चित्रित किया है । परन्तु इन दोनों ने वैयक्तिक शत्रुता के कारण ही उसे जानबूझ कर निम्न चरित्र का दिखलाया है अतः उन पर पूर्ण विश्वास नहीं किया जा सकता । इस वैयत्तिक द्वेष का कारण यह था कि एरिएटोफेनीज के एक प्रहसन 'बैबिलोनियन्स' पर उसने आपत्ति की थी, और थूसिडाइडीज के निर्वासन में भी उसी का सर्वाधिक सहयोग था । इतना अवश्य माना जा सकता है कि अपने राजनैतिक विरोधियों पर वह तीव्र प्रहार करता था, विद्रोहियों के प्रति अत्यंत क्रूर था जैसा कि मिटीलिनी के हत्याकाण्ड में उसकी भूमिका से ज्ञात हो जाता है । उसने इस बात का विफल आग्रह किया था कि "उचित या अनुचित रूप से ही सही, यदि एथेंस शासन करना चाहता है तो लेस्बास को दण्डित किया जाना चाहिए । उसके साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा वह इस स्थिति में तुम्हारे साथ करता" ।[1]

पाइलॉस व एम्फीपोलिस के विफल अभियान उसके अतिशय आत्मविश्वास व दर्प की कहानी स्वयं कह देते है । स्फेक्टेरिआ की सफलता ने उसे लोकप्रियता अवश्य प्रदान की परन्तु मेगारा व बोयोशिआ के विरूद्ध अभियानों में उसे मेगारा में आंशिक सफलता मिली और बोयोशिआ में डेलियम नामक स्थान पर उसकी पराजय घातक सिद्ध हुई (४२४ ई० पू०) । चाल्सीडिक प्रायद्वीप में विद्रोह

---

१ Hellas C E. Robinson, P. 171.

का दमन करने में भी वह सफल न हो सका, (विद्रोही स्पार्टा की सहायता प्राप्त करने में सफल हुए)। वहीं उसकी ई० पू० ४२२ में मृत्यु हो गई।

क्लिआन का प्रमुख विरोधी नीसियस एक पूर्णतः सज्जन पुरुष था। थूसिडाइड्स के शब्दों में उसके युग का कोई अन्य व्यक्ति आदर्श पालन में इतना उद्यत नहीं था यह दूसरी बात है कि उसका आदर्श कितना निम्न था। वह धनिक भूस्वामी-वर्ग का सदस्य था जो अपनी रूढ़िवादी प्रवृत्ति के कारण एथेंस की बौद्धिक, व राजनितिक प्रगति से कोई सहानुभूति न रखता था। वह एक साधारण योग्यता का व्यक्ति था जिसमें कुशल नेतृत्व की क्षमता न थी परन्तु अयोग्य होते हुये भी वह सेना के प्रमुख अधिकारियों में था, उसकी विश्वसनीयता, ईमानदारी, कष्ट सहने की क्षमता व दूषणों के प्रति सजगता पर सन्देह नहीं किया जा सकता। इन्हीं तथा कतिपय अन्य कारणों से वह एथेंस में काफी प्रभावशाली था।[1]

निसियस की विशेषता

वह स्पार्टा से मैत्री संबंध रखने का समर्थक और शांतिवादी दल का आधार स्तम्भ था। जनता को तुष्ट करने के लिए उनकी धार्मिक-रूचियों व अन्धविश्वास से लाभ उठाने में भी वह पीछे नहीं रहता था। महामारी से त्राण पाने के निमित्त अपोलो देवता को प्रसन्न करने की दृष्टि से उसने डेलास द्वीप को शुद्ध करने का आयोजन किया। सभी समाधियां वहां से हटा दी गयीं साथ ही उस द्वीप को जन्म व मृत्यु के लिए निषिद्ध कर दिया गया। वहां के सभी निवासी बाद में अन्यत्र भेज दिये गये जिन्हें परशिया के ऐड्रमिशन (Adramytion) ने शरण दी। अपोली के उत्सव व खेल-कूद भी पुनः प्रारम्भ किये गये (४२२ ई०पू०)।

अपनी इन सभी विशेषताओं के साथ वह लोकतंत्र के प्रति ईमानदार बना रहा। क्लिआन व डिमास्थनीज के सम्मिलित विरोध के होते हुए भी दीर्घ काल तक वह ऐथेंस में प्रभावशाली बना रहा।

---

१. "Yet he possessed a solid and abiding injluenec at Athens through his impregnable respectability his Superiority to bribes, aid his scruplous superstition, as well as his acquaintance with the details of military affairs.

A History of Greece. J. B. Bury. P. 408.

पाइलॉस[1] पर एथेंस का अधिकार :—कोरसिरा की ओर पिलोपोनीसियन सैन्य के बढ़ाव को अवरूद्ध करने के ध्येय से यूरीमिडान व सोफोक्लीज (कवि का हमनाम) ४० जहाजों का बेड़ा लेकर पश्चिमी अभियान पर निकले। अनधिकारिक रूप से डिमास्थनीज भी इनके साथ भेजा गया था, उसने कोरसिरा पहुँचने के पूर्व पश्चिमी पिलोपोनेसस में एक सैनिक-केन्द्र स्थापित करने के ध्येय से मेसानियन तट पर स्थित पाइलॉस के बन्दरगाह को अधिकृत कर उसकी किलेबन्दी का सुझाव दिया। एक माह के अन्दर ही एक मील से भी कम विस्तार वाले इस बन्दरगाह को किलेबन्दी कर तथा पांच जहाजों के साथ डिमास्थनीज को वहाँ सुरक्षार्थ छोड़ कर शेष एथीनियन बेड़ा अपने अभियान पर अग्रसर हुआ।

स्पार्टा का पाइलॉस की ओर प्रयाण

स्पार्टा भी पाइलॉस पर एथेंस के आधिपत्य से सशंक हो चला अतः एट्टिका पर आक्रमण की योजना त्याग कर अपने मित्र राज्यों सहित वह पाइलॉस की ओर बढ़ा। कोरसिरा से भी उसने अपना बेड़ा वापस बुला लिया। स्पार्टा के इस बढ़ाव से सशंक डिमास्थनीज ने भी यूरीमिडान को वापस लौट आने का सन्देश भेजा।

लैसिडेमानिआ वालों ने पाइलॉस के दक्षिणी सिरे पर स्थित स्फेक्टेरिआ के टापू को, जो एक जलडमरूमध्य द्वारा पाइलॉस से पृथक् था, विजित कर पाइलॉस के उत्तरी सिरे पर अपना शिविर स्थापित किया ताकि एथेंस से आने वाली खाद्यान्न व सैनिक-रसद के मार्ग में अवरोध उत्पन्न कर सकें और जल व स्थल दोनों ओर से पाइलॉस पर आक्रमण कर सकें। डिमास्थनीज अपने रण कौशल से स्पार्टन सेनापतियों थ्रेसिमाकस व ब्रेसिडस के आक्रमणों को विफल करता रहा। इस संघर्ष में ब्रेसिडस के आहत हो जाने पर लैसिडेमोनियन भी खाड़ी में जहाजी युद्ध की तैयारी करने लगे। इसी बीच अवसर पाकर जैकिन्थस से लौटा हुआ ५० जहाजों वाला एथीनिअन बेड़ा दो ओर से खाड़ी में प्रविष्ट हो गया। तट के समीप भीषण संघर्ष में अनेक स्पार्टन जहाज एथीनियनों ने अपने अधिकार में ले लिए। फलतः स्फेक्टेरिआ में स्पार्टा की

युद्ध विराम समझौता

स्थिति संकटप्रद हो चली क्योंकि एथेंस उस पर घेरा डालने में सफल हो गया था। इसकी सूचना पाकर स्पार्टा से कुछ इफोर भेजे गये जिन्होंने एथेंस से युद्ध विराम समझौता कर लिया जिसकी शर्तें इस प्रकार थीं:—

---

१. आधुनिक नैवारिनो (Navarino)

१. लैसिडेमानिअन, विराम संधि की अवधि तक, लैकोनिआ में स्थित अपने जहाजों सहित, सभी जहाज एथेंस को सौंप दें।

२. वे समुद्र अथवा स्थल की ओर से पाइलॉस पर आक्रमण न करें। इसके बदले में वे एथीनिअनों के निरीक्षण में खाद्य-सामग्री स्फेक्टेरिआ में घिरे अपने सैनिकों तक पहुँचा सकेंगे।

३. पाइलॉस पर अधिकार कायम रखते हुए भी एथेंस द्वारा अनाक्रमण की शर्त की स्वीकृति !

इस समझौते की अवधि स्पार्टन दूतों के एथेंस से वापस लौट आने तक रखी गयी।

स्पार्टन दूत निराश लौट आये

एथेंस से स्पार्टा के दूतों को निराश होकर लौट आना पड़ा क्योंकि शांतिवादी दल की क्लिआन के समक्ष एक न चली। क्लिआन का ध्येय तीस वर्षीय संधि के उल्लंघन का प्रतिशोध लेना व २० वर्ष पूर्व खोए हुए प्रदेशों को वापस लेना था। इतना ही नहीं स्फेक्टेरिआ में घिरे हुए स्पार्टनों की प्राणरक्षा के बदले में उसने निसेइआ (Nisaea) तथा पेगेइ (Pagae) नामक मेगारिअन बन्दरगाह और एकेइआ व ट्रांजन की भी मांग की। अतः स्पार्टा के दूत निराश हो कर वापस चले गये और विराम समझौता भंग हो गया। उन पर समझौता भंग करने का आरोप लगा कर एथीनिअनों ने बन्धक रखे गये जहाजों को लौटाने से भी इन्कार कर दिया। इस बीच एथेंस से २० और जहाज आ पहुँचे और अब खाड़ी व समुद्र दोनों ओर से एथीनिअनों ने घेरा डाल दिया।

इस समय एथीनिअनों की सतर्कता के बावजूद स्फेक्टेरिआ में घिरे स्पार्टन सैनिकों को सहायता पहुँचा कर अनेक हिलाट दासों ने पुरस्कार स्वरूप दासता से मुक्ति प्राप्त की।

इस घेरे में होने वाली असुविधाओं एवं विलम्ब के समाचार से एथेंस में क्लिआन के प्रति विरोध बढ़ता जा रहा था। अंततः नीसियस की चुनौती पर वह

क्लिआन-पाइलास-अभियान एवं सफलता

एक वृहत् सेना लेकर पाइलास की ओर प्रयाण पर निकल पड़ा। प्रस्थान करनेसे पूर्व उसने घोषित किया कि या तो वह शत्रुओं को वहीं समाप्त कर देगा अथवा उन्हें जीवित कैद कर लाएगा। इस तरह उसने अपने विरोधियो को दोनों हाथों में लड्डू थमा दिये। क्योंकि यदि वह वचन का पालन

करता तो शत्रुओं से मुक्ति मिल जाती अन्यथा विरोधियों को स्वयं क्लिग्रान से मुक्ति मिलती।

परन्तु विरोधियों को उसे नीचा दिखाने का अवसर न मिल सका। क्लिग्रान मैसानियनों व बड्वाग्नि की सहायता से स्पार्टनों को पराभूत करने में सफलीभूत हुआ और ४२० स्पार्टनों में से २९२ को जीवित बन्दी बनाकर एथेंस ले आया जहाँ वे एट्टिका पर स्पार्टा के आक्रमण से सुरक्षा के रूप में बन्धक रखे गये।

क्लिग्रान की सफलता के समक्ष अपनी स्थिति को अक्षुण्ण रखने के ध्येय से नीसियस भी कोरिन्थ के विरुद्ध अभियान पर रवाना हुआ। इस अभियान में उसने आंशिक रूप से सोलीजिया (Solygea) ट्राजन व इपीडारस के मध्य स्थित मिथोन (Methone) व सिथेरा (Cythera) द्वीप (४२४ ई० पू०) पर विजय प्राप्त की। स्थलडमरूमध्य के आर-पार उसने एक दीवार भी निर्मित्त की और मिथोन में सैनिक छावनी भी रखी। पाइलास के पश्चात् मिथोन व सिथेरा के भी अधिकृत किये जाने से पिलोपोनेसस के मुकाबले एथेंस की स्थिति सुदृढ़ हो गयी। इस विजय के स्मारक स्वरूप मेसाना वालों ने आल्टीस (Altis) के जीयस के मन्दिर में विजय देवी की प्रतिमा भेंट स्वरूप प्रदान की।

नीसियस का कोरिन्थ के विरुद्ध अभियान एवं विजय

पाइलास की विजय से उत्साहित एथेंस ने जोर-शोर से मेगारा पर आक्रमण करने की योजना बनायी। निसेइग्रा के प्रवेश द्वार पर स्थित मिनोग्रा को विजय कर नीसियस ने वहाँ पहले से ही (४२७ ई०पू०) किलेबन्दी कर ली थी। फलत: मेगारा के लिए अब पेगेई के बन्दरगाह व क्रिसेइग्रन खाड़ी का मार्ग ही निर्बाध यातायात का मार्ग रह गया। परन्तु ४२४ ई० पू० में मेगारा से निष्कासित एक दल ने जब पैगेई पर अधिकार कर लिया तो मेगारा की स्थिति और भी भयावह हो चली। सत्तारूढ़ दल ने विरोधियों की वापसी और एथेंस के समक्ष आत्मसमर्पण के दो विकल्पों में से दूसरे को ही चुना और एथेंस से गुप्तवार्त्ता आरम्भ कर दी। डिमास्थनीज व हिप्पोक्रैटीज जहाजी बेड़ा लेकर मिनोग्रा की ओर (४२४ ई० पू०) बढ़े। चार हजार (४०००) होपलाइट सैनिक व ६०० अश्वारोहियों की सेना भी इल्युसिस

निसेइग्रा पर अधिकार

मेगारा का षडयन्त्र

के स्थलमार्ग से निसेइआ की ओर आगे बढ़ी। रात में डिमास्थनीज व हिपोक्रेटीज सैन्यसहित मेगारा की भूमि पर उतर गये। पूर्वी दीवार और निसेइआ के किले के संयोजन के निकट स्थित प्रवेश द्वार के समीप हिप्पोक्रेटीज होपलाइट सैनिकों को लेकर छुप गया तथा डिमास्थनीज भी निकट ही युद्ध देवता (Enyalios) के मन्दिर में डट गया। षड्यन्त्रकारियों की सहायता से वे रात में ही प्रवेश द्वार से अन्दर प्रवेश कर मेगारा की लम्बी दीवारों को स्पार्टन सैनिकों से छीनने में सफल हो गये। प्रातः मुख्य एथीनियन सेना भी आ मिली। स्पार्टन सेना निसेइआ चली गई; अब षड्यंत्रकारियों ने मेगारियनों को फाटक खोलकर एथीनियनों का सामना करने को ललकारा। अपने बचाव के लिए पहचान के तौर पर उन्होंने अपने शरीर पर तेल मल रखा था। परन्तु इसी बीच षडयंत्र प्रकट हो गया अतः नगर का फाटक नहीं खोला गया। स्थिति को विगड़ता देख कर एथोनिअनों ने अब निसेइआ पर घेरा डाला। खाद्यान्न के अभाव में निसेइआ की स्पार्टन सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया। ब्रैसिडस की सहायता के बावजूद निसेइया एथोनिअनों के हाथों में बना रहा।

[शीघ्र ही मेगारा में क्रांति हुई। निष्कासित दल ने वापस पहुंच कर विरोधियों को परास्त कर कुलीनतंत्र की स्थापना की। तथापि एथेंस का उद्देश्य तो सफल हो ही चुका था।]

बोयोशियन अभियान (४२४ ई० पू०)

उक्त सफलताओं से उत्साहित डिमास्थनीज व हिप्पोक्रेटीज ने अब कोरोनिआ की लड़ाई में खोये प्रदेशों की वापसी की योजना बनायी। इस पर टिप्पणी करते हुए ब्यूरी ने लिखा है कि:—

एथेंस को बोयोसिया की जगह थ्रेस में आए संकट पर अपेक्षाकृत अधिक ध्यान देना चाहिए था। उनका कथन है कि दूसरे ओइनोफीता के स्वप्न की अपेक्षा दूसरे कोरोनिआ की आशंका कहीं अधिक वास्तविक थी।

बोयोशिआ में इस समय दो विरोधी दल थे। लोकतंत्रीय दल और कुलीनो का दल। लोकतंत्रीय दल कुलीनतंत्र की समाप्ति के ध्येय से एथेंस के साथ एक षडयंत्र में शामिल हो गया जिसका उद्देश्य कुलीनतंत्र के साथ ही बोयोशिअन संघ को भी भंग करना था। षडयंत्र के अनुसार बोयोशिआ पर तीन ओर से आक्रमण की योजना बनाई गयी।

बोयोशिया पर आक्रमण

१—डिमांस्थनीज को हेलिकान पर्वत के नीचे एक अंतरीप में स्थित थेस्पिए (Thaspiae) के बन्दरगाह सिफेइ (Siphae) पर अधिकार करने का भार सौंपा गया;

२ —हिप्पोक्रेटीज को उत्तर-पूर्व में स्थित डेलियम के अपोलो के मंदिर पर अधिकार करना था;

३—सुदूर पश्चिम प्रदेश चिरोनिआ (Chaeronea) की विजय का भार षडयंत्रकारियों को सौंपा गया।

परन्तु षडयंत्र प्रकट हो गया। फलतः कोई भी योजना सफल न हो सकी। बोयोटार्क नामक संघीय आयुक्तों ने पहले ही सुरक्षा का समुचित उपाय कर डिमास्थनीज को असफल कर दिया। डेलियम की लड़ाई में हिप्पोक्रेटीज को भी विफलता ही हाथ लगी और टंगारा की लड़ाई (४२४ ई० पू०) में वह मारा गया। ब्यूरी के शब्दों में डेलियम की लड़ाई ने कोरोनिआ के निर्णय को अंतिम स्वीकृति प्रदान कर दी। मंदिर के मोर्चे पर भी १७ दिनों के घेरे के पश्चात् बोयोशिआ सफल रहा। एथेंस के मृत होपलाइट सैनिको के शव एथेंस को लौटा दिये गये जिनकी संख्या १००० के लगभग थी।

थ्रेस व मैसिडोनिआ

डेलियम की पराजय से किंचित भी हतोत्साह न होकर शीघ्र ही एथेंस ने थ्रेस की ओर ध्यान दिया। इस क्षेत्र में थ्रेस-नरेश सैडोक्लीज (Sadocles) (जिसे एथीनियन नागरिकता से विभूषित किया गया था) तथा मैसिडोनिआ-नरेश पर्डिक्कस का व्यापक प्रभाव था। पर्डिक्कस अत्यंत अस्थिर प्रवृत्ति वाला अवसरवादी पुरुष था। इस दीर्घकालीन युद्धावधि में वह निरंतर दोनों शत्रु पक्षों के बीच झूलता रहा। उसकी नीति के बावजूद मिथोन का नगर निरंतर एथेंस के प्रति विश्वसनीय बना रहा। पर्डिक्कस उसे अपने प्रलोभन में न उलझा सका। परन्तु चाल्सिडिक प्रायद्वीप के ओलिन्थस नगर को अपने जाल में फंसाने में वह सफल हो गया जो पाइलॉस की एथीनिअन विजय से आशंकित हो चला था। उससे मिल कर पर्डिक्कस ने स्पार्टा से सहायता याचना की जिसके उत्तर में स्पार्टा ने ब्रैसिडस[1] के आधीन ७०० होपलाइट सैनिक तथा कुछ अन्य सैन्य

---

१. ब्रैसिडस के विषय में ब्यूरी लिखते हैं कि वह गलती से स्पार्टन के रूप में उत्पन्न हुआ क्योंकि उसमें अनेक ऐसी विशेषताएं थीं जो स्पार्टनों में नहीं मिलतीं। वह बड़ा ही साहसिक वृति वाला, व शक्ति प्रदर्शन के लिए आतुरता

अपने उपनिवेश हिराक्ली की ओर रवाना कर दिया। थेसाली से होता हुआ (पर्डिक्कस के प्रभाव के कारण ही उसे थेसाली ने मार्ग दिया) वह मैसिडोनिया पहुँचा। पर्डिक्कस ने ब्रेसिडस से ऊपरी मैसिडोनिया के अरहेबियन शासकों के विरुद्ध सहायता मांगी परन्तु इस याचना को ठुकरा कर ब्रेसिडस चाल्सीडिस की ओर अग्रसर हुआ। वहां उसने एकेन्थस और स्टैगिरा व आर्गिलस को एथेंस से विमुख कर अपनी ओर मिला लिया। आर्गिलस की सहायता से उसने थ्रेस के प्रमुख नगर एम्फीपोलिस को भी जीत लिया। थ्रेस में स्थित अपनी इस महत्वपूर्ण चौकी के खोने से एथेंस को अत्यधिक क्षति उठानी पड़ी। इसके लिए डयुक्लीज (Eucles) व थूसिडाइडीज (इतिहासकार) नामक दो सेनानायक उत्तरदायी थे। ड्युक्लीज ने स्ट्राइमॉन नदी के पुल की सुरक्षा का समुचित व्यवस्था नहीं की थी और थूसिडाइडीज भी अपने खानों के निरीक्षणार्थ थैसास चला गया था, यद्यपि स्ट्राइमान नदी के मुहाने पर स्थित इग्रान (Eion) पर उसने अधिकार बनाये रखा था। अपने अनुत्तरदायित्व के लिए वे दोनों दण्डित किये गये।

ब्रेसिडस का आगमन एवं थ्रेस में सफलता

ब्यूरी इस असफलता का वास्तविक उत्तरदायी स्वयं एथेंस को ही मानते हैं जिसने थ्रेस की रक्षा की समुचित व्यवस्था की अपेक्षा बोयोशिआ में डिमास्थनीज की नवीन असफल रणनीति का समर्थन किया था। थूसि-डाइडीज के पक्ष में उनका कहना है कि एक तो उसका क्षेत्र चाल्सीडिस से थ्रेस तक विस्तृत था अतः थैसॉस या इग्रान ही उपयुक्त केन्द्रस्थल हो सकते थे परन्तु इग्रॉन में कोई उपयुक्त बन्दरगाह न था इससे स्थिति निर्बल हो गई।

अपनी प्रथम सफलताओं के पश्चात् ब्रेसिडस ने चाल्सीडिस के पूर्व में स्थित एक्टी (Acte), व सिथोनिआ (Sithonia) के सर्वाधिक शक्तिशाली पर्वतीय नगर टोरोन (Torone) को लैसिथस (Lecythus) नामक

चाल्सिडिस में ब्रेसिडस को सफलता

रखने वाला था। अन्य स्पार्टनों के विपरीत वह एक अच्छा वक्ता भी था और राजनितिक प्रश्नों के प्रति सहिष्णु एवं विवेकयुक्त था और नर्म विचार रखता था। स्पार्टनों से उसे पृथक करने वाला सबसे महत्वपूर्ण गुण था, सुदूर देशों में उसकी ख्याति। उसकी वक्तृत्व शक्ति का सर्वोतम उदाहरण एकेन्थस में मिला, जिसे उसने एथेंस से विमुख कर अपनी ओर मिला लिया था।

A History of Greece, J. B. Bury, p.427.
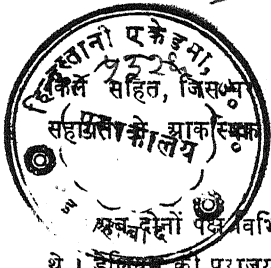
किले सहित, जिसमें एथीनिअन सैन्य का आधिपत्य था, पंचमांगियों की सहायता के आकस्मिक आक्रमण द्वारा जीत लिया।

शांति-वार्त्तार्थ प्रयास

अब दोनों पक्ष विभिन्न कारणों से शांतिवार्ता के लिए प्रयत्नशील हो रहे थे। डेलियम की पराजय से प्रतिष्ठा पर आघात पहुँचने के कारण एथेंस थ्रेस में ब्रेसिडस का सामना करने की अपेक्षा शांति के लिए उत्सुक हो चला था।

एथेंस में शांति-दल का प्रभाव

क्योंकि एथेंस में नीसियस व लैचेस (Laches) के नेतृत्व में शांतिप्रिय दल के प्रभाव में वृद्धि हो रही थी। लैसिडेमानिअन भी इस समय शांति के लिए उत्सुक थे। एक तो वे स्फेक्टेरिआ के बन्दियों को मुक्त कराना चाहते थे, दूसरे ब्रेसिडस की सफलताओं का लाभ उठा कर एथेंस के साथ मनमानी शर्तों पर संधि का सुअवसर समझ रहे थे। अनेक स्पार्टन ब्रेसिडस की सफलताओं से ईर्ष्यालु भी हो चले थे। स्पार्टा नरेश **प्लिस्टोनेक्स** भी कतिपय कारणों से शांति-संधि के पक्ष में था।

स्थायी संधि की तैयारी के निमित्त ४२३ ई० पू० में एक-वर्षीय विराम संधि पर हस्ताक्षर किये गये। इसका प्रारूप स्पार्टा ने तैयार किया। एथेंस की असेम्बली में लैचेस ने इसे प्रस्तुत किया। इसकी शर्तें थीं :—

१. डेल्फी के आरेकल का मार्ग सभी के लिए उन्मुक्त हो,

२. दोनों पक्ष डेल्फी के कोष की सुरक्षा का आश्वासन दें,

३. इस अवधि में विजित प्रदेशों पर वे अपना अधिकार बनाये रखें,

४. लैसिडेमानिअन अपने समुद्री तट पर भी एक निश्चित भार से अधिक का सैनिक अथवा वाणिज्यिक पोत न ले जायें,

५. शांति वार्ता के निमित्त दूतों को आवागमन की स्वतंत्रता दी जाय,

६. कोई भी पक्ष दूसरे पक्ष से भागे हुए लोगों को शरण न दे,

७. विवादास्पद विषयों का निर्णय वार्ता द्वारा हो,

सिओने नगर का विद्रोह संधि का उलंघन

इसी बीच चाल्सीडिस के एक एथीनिअन उपनिवेश सिओने (Scione) ने विद्रोह कर दिया और ब्रेसिडस को बुला कर "हैलास के मुक्तिदाता" के रूप में उसका भव्य स्वागत किया। इसे विराम संधि का उल्लंघन करार दे कर सिओने को संधि में सम्मिलित करने से इन्कार करने के साथ ही क्लिआन ने एक डिक्री के द्वारा सिओने को ध्वस्त करने व समस्त पुरुष नागरिकों के वध की आज्ञा प्रसारित की। शीघ्र ही पड़ोसी

नगर मेण्डे (Mende) के विद्रोही कुलीनों की सहायता कर ब्रैसिडस ने पुनः विराम संधि का उलंघन किया। इसके बाद वह पर्डिक्कस की सहायता के लिए आगे बढ़ा क्योंकि उसकी सेना के वेतन का अधिकांश पर्डिक्कस ही प्रदान कर रहा था। परन्तु इलीरियन सेना के आक्रमण से घबरा कर पर्डिक्कस स्वयं अपने उत्तरी शत्रुओं (Lyncestians) के विरुद्ध अभियान छोड़कर पलायन कर गया। ब्रैसिडस एकाकी रह गया और उसे भी पीछे हट जाना पड़ा। पर्डिक्कस ने ब्रैसिडस की सहायता के लिए भेजी गयी सेना को थेसाली से होकर आने की सुविधा भी भंग कर दी और एथेंस के प्रति मैत्री भाव प्रदर्शित किया।

ब्रैसिडस अब टोरोन चला गया जहाँ उसे ज्ञात हुआ कि ५० जहाजों वाले एथीनिअन बेड़े ने निसियस व निसरेटस (Niceratus) के नेतृत्व में मेण्डे को विजित कर सिओने पर घेरा डाल रखा है।

क्लिऑन के प्रभाव में वृद्धि

एथेंस में भी क्लिऑन का युद्धवादी दल दिनोंदिन प्रभावशाली होता रहा था। क्लिआन एथीनिअन साम्राज्य की क्षतिपूर्ति किये बिना संधि करने को प्रस्तुत न था, साथ ही थ्रेस में ब्रैसिडस की बढ़ती हुई शक्ति पर अंकुश भी लगाना चाहता था। अतः विराम संधि की अवधि समाप्त होते ही (मार्च ४२२ ई०पू०) उसने नीसियस व उसके शांतिवादी दल के विरोध के रहते हुए मैसिडोनिया के नगर एम्फीपोलिस[1] की विजय का प्रस्ताव स्वीकृत करवा लिया।

---

१. मैसिडोनिआ में स्ट्राइमान के तट पर स्थित नगर जो उत्तर, दक्षिण व पश्चिम दिशाओं में नदी से घिरा हुआ था और केवल पूर्व की ओर से अरक्षित था। नदी द्वारा घिरे होने के कारण ही वह एम्फपोलिस अर्थात् "जल से आवृत नगर" कहलाता था उसका पहला नाम "नौ मार्ग ("Nine Ways") था इसे एम्फीपोलिस नाम, ४३७ ई०पू० मे एथीनिअन औपनिवेशिकों ने प्रदान किया। स्ट्राइमान नदी के जहाजरानी के लिए उपयुक्त होने के कारण व उर्वर भूमि के कारण व्यापार आदि की दृष्टि से यह प्रदेश अत्यंत महत्वपूर्ण था। पूर्व मे स्थित पैंगेइयस पर्वत की स्वर्णखानों के कारण भी यह अमूल्य था। पश्चिम में, नदी के दक्षिण तट पर सार्डिलिआन (Cerdylion) की पहाड़ी थी। दोनों पहाड़ियों को जोड़ने वाली एक चोटी के आरपार नगर की दीवार थी। इस दिवार के दक्षिण-पश्चिम सिरे के निकट ही स्ट्राइमान नदी का पुल था। ब्रैसिडल ने दीवार व पुल को संयुक्त करवा दिया।

एम्फीपोलिस की लड़ाई

तीस जहाजों का बेड़ा लेकर क्लिग्रान एम्फीपोलिस की ग्रोर रवाना हुग्रा। मार्ग में सिग्रोने स्थित एथीनिग्रन सेना का कुछ भाग ग्रपने साथ लेकर वह ग्रागे बढ़ा ग्रौर टोरोन पर ग्रधिकार कर वहाँ के लैसिडेमानिग्रन राज्यपाल को बन्दी बना लिया। इसके पश्चात् इग्रॉन (एम्फीपोलिस का प्रमुख बन्दरगाह) पहुँच कर वह थ्रेस व मैसिडोनिग्रा से ग्राने वाली कुमुक की प्रतीक्षा करने लगा।

ब्रैसिडस कुछ सेना लेकर सर्डिलिग्रान की पहाड़ी पर मोर्चा जमाए हुए था ग्रौर शेष सेना सहित उसके द्वारा नियुक्त गवर्नर क्लिएरिडस (Cleaidas) नगर में ही डटा हुग्रा था। क्लिग्रॉन भी ग्रपनी सेना लेकर नगर की दीवार के निकट की एक चोटी पर जा पहुँचा। यह देख कर ब्रैसिडस भी नगर में उतर ग्राया। वह एथीनिग्रनों को सहायता पहुँचने से पूर्व ही ग्राकस्मिक ग्राक्रमण द्वारा समाप्त कर देना चाहता था। ब्रैसिडस की चाल को ताड़ कर क्लिग्रॉन इग्रॉन चला गया परन्तु इससे उसकी सेना का ग्रसुरक्षित पार्श्व नगर के ग्रन्दर स्थित शत्रुसेना के सामने पड़ गया। ग्रत: जब नगर-द्वार से निकल कर ब्रैसिडस की एक सैनिक टुकड़ी ने उन पर ग्राक्रमण किया तो उनमें भगदड़ मच गयी ग्रौर बाम-पार्श्व पलायन कर गया। इसी बीच क्लिएरिडस ने भी उत्तर के एक प्रवेश-द्वार से बाहर ग्राकर दक्षिण पार्श्व को भी तितर-वितर कर दिया। ६०० एथीनिग्रन सैनिकों के मुकाबले स्पार्टा ने केवल ७ सैनिक गंवाए। इस संघर्ष में क्लिग्रान व ब्रैसिडस दोनों को ही ग्रपने प्राणों की ग्राहुति चढ़ानी पड़ी। क्लिग्रान की ग्रसफलता के लिए ब्यूरी ने नीसियस को ही उत्तरदायी बतलाया है क्योंकि उसी ने क्लिग्रान को वस्तुस्थिति से ग्रनभिज्ञ रखा था।

एम्फीपोलिस में एथेंस की विफलता एवं क्लिग्रॉन व ब्रैसिडस का ग्रंत ४२२ ई० पू०

एम्फीपोलिस ने ग्रपनी कृतज्ञता के प्रदर्शनार्थ उपनिवेश के वास्तविक संस्थापक एथेंसवासी हैगनान के स्थान पर ब्रैसिडस को संस्थापक पद पर प्रतिष्ठित किया ग्रौर उसके सम्मान में वार्षिक क्रीड़ा-प्रतियोगिताग्रों के ग्रायोजन के साथ उसे बलि ग्रादि भी चढ़ाई।

ब्रैसिडस व क्लिग्रान (जिन्हें एरिस्टोफेनीज मूशल (Pestle) ग्रौर खरल (mortar) कहा करता था जिनके कारण युद्ध की प्रवृति यवन-

नगरों को आच्छादित किये हुए थी) के विदा हो जाने से शांति-संधि के मार्ग की बाधाएँ भी विदा हो गयीं और नीसियस व प्लिस्टोनेक्स (Pleistoanax) की बन आयी। स्पार्टा संधि के लिए अधिक उत्सुक था क्योंकि एक तो बन्दियों की मुक्ति अत्यावश्यक थी, दूसरे मेण्टिनी निरंतर दक्षिण की ओर बढ़ता जा रहा था और एलिस भी स्पार्टा से असंतुष्ट था क्योंकि उसने लेप्रिआन (Lepreon) की सहायता की थी; आर्गास भी स्पार्टा से मैत्री करने को प्रस्तुत न था, और स्पार्टा इस भय से आतंकित था कि वह एथेंस के पक्ष में न चला जाय। एथेंस का संचित कोष भी, जो ४३९ ई० पू० में ६००० टैलेण्ट तक पहुँच गया था, समाप्त हो चला।

नीसियस की संधि— ई० पू० ४२१

४२२ ई० पू० के पतझड़ में वार्ता प्रारम्भ हुई और मार्च ४२१ में एक पचास वर्षीय संधि सम्पन्न हो गयी जो नीसियस की संधि कहलाती है इस संधि के अनुसार:—

१. एथेंस ने युद्ध में विजित प्रदेशों, पाइलॉस, सिथेरा, मियोन, एटलाण्टा और थेसाली के नगर टेलियान (Pteleon) को लौटाना स्वीकार किया, परन्तु सोलिआन (Sollion), एनेक्टारिऑन, और निसेइआ के बन्दरगाहों को अधिकृत किये रहने का निश्चय किया। जब तक बोयोशिआ का अधिकार प्लैटेइआ पर रहे;

२. एम्फीपोलिस को छोड़ कर (जिसे गवर्नर क्लिएरिडस ने लौटाने से इन्कार कर दिया था) लैसिडेमानिआ वालों ने आर्गिलस, स्टैगिरा, एकेन्थस, स्कालस (Scolus), ओलिन्थस, स्पार्टोलस, (Spartolus) आदि को लौटाना स्वीकार किया। ये नगर स्वतंत्र होते हुए भी एरिस्टाइडीज द्वारा निर्धारित कर-राशि प्रतिवर्ष एथेंस को प्रदान करते रहते। अर्थात् चाल्सिडिस के नगर स्वतंत्र होकर भी एथेंस के करद बने रहे;

३. बोयोशिआ द्वारा अधिकृत, सिथेरान पर्वत पर स्थित, पैनेक्टान (Panacton) का दुर्ग भी एथेंस को लौटाया जाना था;

४. टोरोन आदि नगर भी एथेंस की इच्छा पर छोड़ दिये गये।

और ५. दोनों ओर के युद्ध बन्दियों की मुक्ति भी स्वीकृत की गयी।

थूसिडाइडीज ने अन्य शर्तें भी गिनवाई हैं जो विराम संधि में शामिल थीं और जिनका सम्बन्ध धार्मिक-स्थलों आदि के मार्ग की सुविधा, वार्ता द्वारा

विवादों के निर्णय, व कतिपय चाल्सीडियन नगरों के स्वायत्त-अधिकारों आदि से था ।

पिलोपोनीसियन संघ के प्रमुख सदस्य कोरिन्थ, बोयोशिआ, एलिस, व मेगारा आदि ने इस संधि का विरोध किया । कोरिन्थ सोलिआन व एनेक्टोरिआन के समर्पण के कारण, एलिस लिप्रिआन के कारण, मेगारा निसेइआ की क्षति के कारण और बोयोशिआ पैनेक्टान की हानि के कारण असंतुष्ट था । बोयोशिआ प्लैटेइआ को त्यागने के लिए भी तैयार न था, फलतः स्थायी शांति की स्थापना में नोसियस असफल रहा और संधि अस्थायी होने के साथ ही आंशिक भी सिद्ध हुई, यद्यपि स्थिति को सामान्य बनाने में सफलता अवश्य प्राप्त हुयी क्योंकि स्पार्टा को स्वयं कोई हानि होने को न थी और एथेंस भी लगभग अछूता ही बच निकला था ।

पिलोपोनीसियन संघ पर इसका बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा । संघ लगभग भंग हो चला । एलिस, कोरिन्थ, एकेइआ व मेण्टिनी तथा चाल्सिडिअन नगरों ने आर्गास से संधि कर ली आर्गास के साथ स्पार्टा की संधि की अवधि भी बीत चुकी थी । कालांतर में थ्रेस, बोयोशिआ, व मेगारा भी उनसे आ मिले ।

संधि भंग ई० पू० ४२०

एथेंस व स्पार्टा की यह संधि अगले ही वर्ष (४२० ई० पू०) टूट गयी । बोयोशिआ ने पैनेक्टॉन को एथेंस को सौंपने के बजाय ध्वस्त कर दिया और स्पार्टा ने बोयोशिआ से संधि कर के एथेंस के साथ हुयी संधि का उल्लंघन किया । एथेंस ने भी पाइलॉस पर अधिकार बनाए रखा और आर्गास, मैण्टिनी और एलिस के साथ, जो कि स्पार्टा से संघर्षरत थे, शतवर्षीय मैत्री संधि कर ली । इस नवीन संघ ने प्रथम अभियान इपीडॉरस के विरुद्ध आयोजित किया जिसकी पीठ पर स्पार्टा ने अपना हाथ रखा और इस प्रकार एथेंस के नये राजनीतिज्ञों—हाइपरबोलस (Hyperbolus) व अल्सीबाइडीज (Alcilbiades) को लैसिडेमानिआ पर संधि-भंग का आरोप लगाने का अवसर प्रदान कर दिया । एथेंस के ये नवीन राजनेता स्वयं किस प्रकार एथीनिअन साम्राज्य की ही भित्ति पर प्रहार करने वाले हथौड़े सिद्ध हुए, अगले अध्याय में इसी का विवरण दिया जाएगा ।

२ | पिलोपोनीसियन युद्ध द्वितीय चरण

★

एथेंस के साम्राज्य का अपकर्ष

बिलग्रान के पतन के पश्चात् एथेंस के नये राजनितिज्ञों में अल्सीबायडीज सर्वप्रमुख नेता था क्योंकि उसमें सैनिक प्रतिभा भी थी जिसका उसके प्रतिद्वन्द्वी हाइपरबोलस (Hyperbolus) में नितांत अभाव था। अन्तरात्मा, परम्परा आदि का बिना ख्याल किए ही वह युवावस्था और प्रारम्भिक प्रौढ़ावस्था में उग्रभावना से पूरित था' (बिलडूरांट)। लोकतंत्रीय एवं उदारवादी विचारों की अपेक्षा वह मौलिक एवं उग्र विचारों वाला व्यक्ति था। अपने स्पार्टा के प्रवासकाल में उसने लोकतंत्र को "स्वीकृत बुद्धिहीनता" कहा था। यद्यपि वह स्वयं लोकतंत्रीय दल का नेता था और पेरीक्लीज से उसके सम्बन्धों की घनिष्टता के भी विवरण मिलते हैं। वह एक कुलीन, स्वस्थदेह से युक्त, धनवान और रूपवान युवक होने के साथ ही अत्यंत महत्वाकांक्षी भी था। बाल्यावस्था से ही उसमें नेतृत्व की प्रवृत्ति विद्यमान थी। २० वर्ष की आयु में पोटिडे की लड़ाई में और २६ वर्ष की आयु में डेलियम की लड़ाई में (४२४ ई० पू०) उसने अपनी वीरता का भी प्रदर्शन किया। उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली था, उसकी बौद्धिक क्षमता उच्चकोटि की थी और वक्तृत्व-कला में भी वह अत्यंत निपुण था। उसका तुतलाना भी इतना आकर्षक था कि सभी नवयुवक उसके सक्रिय प्रशंसक हो गए थे।

एथेंस में हाइपरबोलस व अल्सीबाइडीज का उदय

अल्सीवायडीज अपने व्यक्तित्व के कारण जनप्रिय रहा

किन्तु इन सब गुणों के होते हुए भी उसमें अनेक चारित्रिक दुर्बलताएं थीं। हठ, महत्वाकांक्षा व राजनीतिक कूटनीति के साथ ही स्वार्थपरता भी उसके चरित्र की सबसे बड़ी निर्बलता थी। नैतिकता नाम की कोई चीज उसमें न थी। इसी लिए कहा जाता है कि साक्रेटीज (सुकरात) का मित्र होते हुए भी वह भटके हुए मार्ग से वापस न आ सका। ब्यूरी ने भी कहा है कि किसी भी राज-नितिज्ञ, के लिए विवेकशील हो वा विवेकहीन, वांछनीय संतुलन का उसमें अभाव था। अपने ऐश्वर्य व भोग-विलास के लिये भी वह अत्यन्त प्रख्यात था। प्रेम में अपनी विजय का प्र दर्शन करने के लिए वह सुनहली ढाल पर बज्रवाहिनी इरोस, की मुर्ति धारण किए रहता था। अपने आकर्षक व्यक्तित्व और बुद्धिमता आदि के कारण वह धनी निर्धन, आबालवृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी में समानरूप से लोकप्रिय था। कहते है कि एक बार लोकप्रियता में कमी आते देख उसने अपने कुत्ते की दुम काट डाली। एक धनी कुल की युवती, हिप्पानिकस (Hipponicus) की पुत्री हिप्परिटि (Hipporete); (उसका प्रवासी आयोनिअन स्त्रियों hetairai से घनिष्ट सम्बन्ध था) से परिणय सम्बन्ध स्थापित कर जहाँ उसने स्वयं को अधिक समृद्धशाली बनाया वहीं ओलम्पिक खेलों में तीन बार बिजयी हो कर अपरिमित ख्याति भी अर्जित की। कहा जाता है कि विजय की प्रसन्नता में उसने एथेंस की संपूर्ण जन सभा को भोजन पर आमंत्रित किया था। जहाजों-नाट्य व नृत्य-कार्य क्रमों के व्यय व युद्ध सम्बन्धी करों की पूर्त्ति में वह सबसे आगे रहता था। इन्ही सब कारणों से एरिस्टोफेनीज ने लिखा है कि एथेंस वासी चाहे उसे स्नेह करते हो या घृणा, परन्तु किसी भी हालत में उसे खोना नहीं चाहते थे। अपनी इस जन-प्रियता का उसने अपनी राजनितिक स्वार्थसिद्धि में उपयोग किया।[१] नीसियस के सामंती व शांतिवादी दल के विरुद्ध उसने साम्राज्यवादी लोकतंत्रीय दल का नेतृत्व ग्रहण किया। ई० पू० ४२० में वह सेनापति चुना गया और तभी से उन योजनाओं कों अग्रसर करना आरम्भ किया जिन्होंने एथेंस को पुनः रणक्षेत्र में ला खड़ा किया और अततः पतन के कगार पर जा पहुँचाया।

वह सोफिस्टों द्वारा प्रचारित इस धारणा का प्रतीक था कि मनुष्य स्वयं अपने कार्यों का निर्णायक अथवा मापदण्ड है। इसी आधार पर उसने निजी स्वार्थसाधन को औचित्य प्रदान किया और स्वार्थ व अहम् की प्रवृतियों का

---

१. "Charlton and genius in one, he was to Prove for the next fifteen years the evil demon of Athens."

Hellas, C. E, Robinson, p. 113.

स्वच्छन्द रूप से प्रदर्शन किया। अपनी योग्यताओं के फलस्वरूप वह नीसियस के मुकाबले सेनापति (Strategus) चुन लिया गया। ४१६ ई० पू० में आर्गास आदि राज्यों के साथ सम्पन्न १०० वर्षीय मैत्री संधि व इपीडारस का अभियान उसी के नायकत्व काल की प्रमुख घटनाएँ थीं। ४१८ ई० पू० में उसके स्थान पर यद्यपि नीसियस स्ट्रेटेगस चुना गया फिर भी उसके प्रभाव में कोई कमी न आई और आर्गास आदि से मैत्री सम्बन्ध बने रहे।

इस महत्वाकांक्षी और स्वार्थ-प्रवण राजनीतिज्ञ को नीसियस की संधि पसन्द न थी। वह अनुभव करता था कि एथेंस की राजनीति में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए राष्ट्र को किसी बृहत् कार्य के लिए उभाड़ना चाहिए; ऐसा करने से एथेंस का यश-सौरभ फैलेगा और उसे भी कीर्ति मिलेगी। अतः उसने एथेंस को ऐसे कार्य के लिए उद्यत किया जो एथेंस के इतिहास में सर्वनाशकारी सिद्ध हुआ। यह था सिरा-क्यूज पर आक्रमण जो सिसीलियन-अभियान के नाम से प्रसिद्ध है। इस अभियान में उसका उद्देश्य इटली, कार्थेज व पिलोपोनेसस को विजय करना था। सिराक्यूज सिसली का प्रमुख नगर था और कोरिन्थ का उपनिवेश होने के कारण पिलोपोनीसियन-संघ के सदस्य राज्यों का मित्र था। थूसिडाइडीज लिखता है कि अलसीबायडीज ने एथेंसवासियों को विश्वास दिलाया कि सिरा-क्यूज को जीत कर वे पश्चिमी-हिलास में अपना राज्य स्थापित कर सकते हैं। उसने यह भी कहा कि यदि राज्य विस्तार में वे सफल न भी हों तो भी सिसिली को विजय कर वे पिलोपोनेसस का गौरव अवश्य चूर्ण कर देंगे। उसे विश्वास था कि इस विजय से वह यवन-संसार का सबके प्रमुख व्यक्ति बन जाएगा।[1] इसी हेतु उसने सिसली पर आक्रमण की योजना बना कर नीसियस की संधि को तोड़ डाला। नीसियस इस युद्ध के विरूद्ध था परन्तु उसकी बात को हंसी में उड़ा दिया गया। वस्तुतः एथेंस एक ऐसे नगर पर आक्रमण कर रहा था जो एथेंस से सैकड़ों मील दूर स्थित था। कहते हैं डेल्फी से भी इसके पक्ष में एथेंस को शुभ संकेत नहीं मिला, परन्तु अधिकांश संकेत स्पार्टा के पक्ष में मिलने से एथेंस उससे चिढ़ गया, अतः बिना शकुन के ही इस अभियान की तैयारी कर ली गयी। फलतः उसका जो दुष्परिणाम होना था वह होकर रहा।

सिसीलियन-अभियान एवं अलसीवायडीज का उद्देश्य

---

१. Thurcy. vi, 6, 15, Towetts translation.

इपीडॉरस के आक्रमण का बदला लेने के लिए स्पार्टा का राजा एजिस (Aegis) एक विशाल सेना लेकर मेण्टिनी (आर्केडिया) की ओर रवाना हुआ। बाद में उसमें कोरिन्थ व फिलस (Philus) की सेनाएँ भी आ मिलीं। दूसरी ओर से थ्रेसिलस (Thrasillus) के सेनापतित्व में आर्गास, एलिस तथा मेण्टिनी की सेनाएँ भी उत्तर की ओर से आर्गास के प्रवेशद्वार के एक मुख्य दर्रे पर मोर्चा जमा कर डट गयीं, (आल्सीबाइडीज ने बड़ी चतुराई से एथेंस को अलग रख कर स्पार्टा के रुष्ट मित्रों को उसके सामने ला खड़ा किया था) और शीघ्र ही अपने रण-कौशल से थ्रेसिलस को घेरे में बांध कर एजिस उससे ४ माह के लिए विराम-संधि पर हस्ताक्षर कराने में सफल हो गया। स्फेक्ट्रिआ के रणक्षेत्र में उठायी पराजय के अपयश को मेटने में स्पार्टा समर्थ हो गया। थ्रेसिलस को उसके सैनिकों ने पत्थरों से मार-मार कर अधमरा कर दिया। इसी बीच लैचेस (Laches) व निकोस्ट्रेटस (Nicostratus) के नेतृत्व में आई हुई एथीनियन सेना के साथ अल्सीबायडीज भी आर्गास आ पहुँचा और विराम संधि को भंग कर उसने सेना को आर्केडिया पहुँच कर आर्कोमिनस (Orchomenous) पर अधिकार करने के लिए तैयार कर लिया। इससे एलिस रुष्ट होकर संघ से पृथक् हो गया क्योंकि उसकी अभिलाषा लेप्रिआन पर आक्रमण करने की थी। शीघ्र ही स्पार्टा व टीगिआ की सेनाओं का एजिस के नेतृत्व में मेण्टिनी की ओर बढ़ने का समाचार मिलने पर एथेंस की सेना मेण्टिनी की ओर मुड़ चली। इस युद्ध में स्पार्टा लैसिडेमॉन की विजय हुयी (४१८ ई० पू०)। परन्तु यह विजय, एथेंस के दोनों सेनानायकों लैचेस व निकोस्ट्रेटस के मारे जाने पर भी, आंशिक ही सिद्ध हुयी। तथापि अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा के जीर्णोद्धार में सफल होने के उपलक्ष में स्पार्टा में कार्निअन अपोलो (Carnean Apollo) के उत्सव का आयोजन किया गया। आर्गास, मेण्टिनी, व एलिस तथा अनेक एकेयअन नगर स्पार्टा से आ मिले और एथेंस पुनः एकाकी हो चला।

स्पार्टा एवं एथेंस आर्केडिया व आर्गास में

स्पार्टा की विजय
४१८ ई० पू०

आर्गास में पुनः लोकतंत्र के स्थान पर कुलीन तंत्र की स्थापना हुयी। एथेंस में हाइपरबोलस ने नीसियस पर आरोप लगाया कि उसी की निष्क्रियता के कारण यह सम्भव हो सका अतः उसे निष्कासित किया जाना चाहिए। परन्तु नीसियस व अल्सीबाय-

एथेंस में राजनीतिक

संघर्ष : हाइपरबोलस निष्कासित

डीज के मिल जाने से उसे स्वयं ही निष्कासन-दण्ड सहन करना पड़ा (४१८–१७ ई० पू०)। तथापि नोसियस सतर्क हो गया और अपनी प्रतिष्ठा की पुनर्स्थापना के ध्येय से उसने चाल्सीडिस की ओर अभियान ले जाने की तैयारी की (४१७ ई० पू०)। एम्फापोलिस में तो वह असफल रहा परन्तु मेलॉस को उसने अधिकृत कर लिया। मेलॉस स्पार्टा का करद् राज्य था परन्तु विलग्रान ने उसका नाम एथेंस के करद् राज्यों में संयुक्त कर लिया था। अल्सीबायडीज ने मेलॉस पर संघ के प्रति द्रोह का आरोप लगाया (यद्यपि अधिकांश विद्वान यही कहते हैं कि मेलॉस ने कोई विवाद नहीं पैदा किया था) और आकस्मिक घेरे में उसे विजित कर लिया। वहाँ (थ्रेस में सिआन Scion) के सभी पुरुषों को मार डाला तथा शेष लोग दास बना कर बेच दिये गए और मेलॉस को एथेंस का उपनिवेश (Cleruchi) बना लिया गया। इतिहासकार थूसिडाइडीज ने मेलॉस के विरुद्ध अभियान को 'जिसकी लाठी उसकी भैंस" के सिद्धांत पर आधृत बताया है।

इसके परिणाम के विषय में विलडूराण्ट ने लिखा है कि:—"Athens rejoiced in the conquest and prepared to illustrate in a living tragedy the theme of her dramatists that a vengeful nemesis pursues all insolent succes.[1]

पश्चिमी अभियानः—पश्चिम की ओर एथेंस की नीति डोरियन-प्रसार को रोक कर अपना प्रभाव क्षेत्र विस्तृत करने की थीं, इसी ध्येय से सेगेस्टा, लिओॉण्टिनी, व रेगियम आदि (४३३ ई० पू०) से मैत्री सम्बन्ध स्थापित किये गये थे और थूरी नामक उपनिवेश की स्थापना की गयी थी। कोरिन्थ से व्यापार-वाणिज्य के क्षेत्र में प्रतिद्वन्द्विता बढ़ने पर उसे सिसली व इटली की ओर आधिपत्य-स्थापनार्थ बढ़ना पड़ा। इस क्षेत्र में सिराक्यूज ही उसका सबसे बड़ा सिरदर्द था। सिसली के पश्चिम में सेगेस्टा व डोरियन नगर, सेलिनस के मध्य, और पूर्व में डोरियन बस्ती, तथा सिराक्यूज और आयोनिअन नगर लिओण्टिनी का आपस में संघर्ष चल रहा था। सेगेस्टा, लिओण्टिनी व रेगियम के द्वारा सिराक्यूज के विरुद्ध शिकायत किये जाने पर (बाद में नैक्सॉस, कैटाने व कैमेरिना भी उनसे मिल गये) एथेंस को पश्चिम की ओर प्रसार का बहाना

---

१. The Life of greece, p. 444.

मिल गया। लिग्रॉण्टिनी के प्रख्यात् वक्ता जार्जियास की वाक्पटुता, हाइपरबोलस की कल्पनाशक्ति, सेगेस्टा के दूतों द्वारा अपनी अपार समृद्धि का विवरण एथेंस को लियाण्टिनी आदि नगरों के पक्ष में ले आया। इसमें सिसली से पिलोपोनेसस को मिलने वाली रसद में रुकावट पहुँचाने, सिराक्यूज के प्रसार को बाधित करने और पच्छिभ की ओर एथिनियन सम्राज्य विस्तार का स्वप्न पूरा करने का सुअवसर भी प्रेरक हुआ। अल्सीबाइडीज का कहना था कि सिसिलिअन यवनों में पूर्ण अनैक्य है, पूरे द्वीप को जीतकर साम्राज्य में सरलतापूर्वक मिलाया जा सकता है, साम्राज्य को निरंतर विकसित होते रहना चाहिए। अन्यथा उसका विघटन शुरू हो जायगा, और यह एक शाही जातिके लिए जब तब होने वाले अभ्यास के तौर पर अनिवार्य ही हैं।"

सिसिलिअन नगरों की नीति

एथेंस के प्रथम अभियान की असफलता के बाद सशंक सिसीलिअन नगरों ने गेला (Gela) में एक सम्मेलन का आयोजन किया था जहाँ सिराक्यूज के हर्मोक्रेटीज (Hermocrates) ने 'सिसीलिआट नीति' (सिसली के आंतरिक विवादों में बाह्य हस्त-क्षेप पर निषेध) का प्रतिपादन किया साथ ही इटली व कार्थेज से संधि करने और यूनान में कोरिन्थ ब स्पार्टा का एथेंस के विरुद्ध उभाड़ने का प्रस्ताव रखा था। फलतः एथेंस के सेनानायकों को आह्वान का नकरात्मक उत्तर मिला। सिसली के नगर सिराक्यूज के विरुद्ध एथेंस से आ मिलें। कुछ ही दिनों में लिआण्टिनी में कुलीनतंत्र की स्थापना हो गयी और वह भी सिराक्यूज का एक गढ़ बन गया। परन्तु उसका स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त होते देख अन्य नगर संशकित हो पुनः एथेंस की ओर उन्मुख हो चले, फलतः एथेंस को पश्चिमी-अभियान के सफल होने की आशा हो गयी।

[**सिसीलिआन अभियान (Sicylian Expedition)** (४१६–१५ ई० पू०)—] सेगेस्टा ने सेलिनस के विरूद्ध एथेंस से सहायता याचना की। लिआण्टिनी भी सेगेस्टा के पक्ष में आ गया क्योंकि उसे भी सिराक्यूज के विरूद्ध सहायता की आवश्यकता थी। एथेंस द्वारा वस्तुस्थिति का सही ज्ञान प्राप्त करने के लिए भेजे गए दूतों पर वहाँ की सम्पति व समृद्धि का बड़ा प्रभाव पड़ा, यद्यपि बाद में वह असत्य सिद्ध हुआ। सेगेस्टा से अभियान का व्यय स्वयं वहन करने का आश्वासन मिलने पर, नीसियस के परामर्श के विरूद्ध, एथेंस की जन-सभा ने इस अभियान के लिए सौ जहाजों की स्वीकृति प्रदान कर दी। विजय

द्वारा ख्याति अर्जित करने के साथ ही इसे अभियान में अल्सीबायडीज ने कोरिन्थ के पश्चिमी व्यापार को क्षति पहुँचाने का सुअवसर देखा। अपनी स्वप्नमय आशावादिता में एथेंसवासी भी पहले ही सिसली की समृद्धि पर अपना अधिकार समझने लगे थे। लैमाकस व अल्सीबायडीज के साथ ही नीसियस को भी सेना का नेतृत्व सौंपा गया। अभियान की असफलता के मूल कारणों में यह भी एक प्रमुख कारण था।

अभियान के लिए प्रस्थान करने से पूर्व एक अप्रत्याशित घटना घटित हुई। एक सुबह (मई ४१५ ई० पूर्व) लोगों ने देखा कि घरों व मंदिरों के प्रवेश द्वार पर स्थित हर्मी (Hermae) नामक वर्गाकार पाषाण-आकृतियों का किसी ने अंग-भंग कर दिया है। इससे एथेंस की धार्मिक-भावना को गहरा आघात पहुँचा साथ ही इसे अभियान के लिए अपशकुन भी समझा गया। (एथेंस एक ऐसा नगर था जिसने सदाचार को तो छोड़ दिया था, परन्तु अन्धविश्वासों से चिपका हुआ था !) इसका दोषारोपण सॉफिस्ट मत से प्रभावित अल्सीबायडीज पर किया गया, लेकिन इसका निर्णय अभियान की समाप्ति तक के लिये स्थगित कर दिया गया।

प्रतिमा भंजन। एक अप्रत्याशित घटना

लगभग ३० हजार विविध सैन्यों (१३४ के लगभग जहाज, कुछ छोटे जहाज, ५१०० होपलाइट व ३० अश्वारोहियों आदि) के साथ एथेंस के तीनों सेनानायक अभियान पर रवाना हुए जो थूसिडाइडीज के अनुसार हेलेनिक जगत का परिणामों की दृष्टि से सर्वाधिक-उल्लेखनीय युद्ध सिद्ध हुआ, जो विजेता के लिए सर्वाधिक लाभप्रद और पराजित के लिए अत्यंत ध्वंसकारी था।[१]

सेनानायकों ने रेगियम में युद्ध परिषद् की बैठक बुलायी, लेकिन अगामी कार्यक्रम के सम्बन्ध में उनका मतैक्य न हो सका। नीसियस सेलिनस के विरुद्ध सेगेस्टा की सहायता करने के पश्चात् वापस लौट जाने के पक्ष में था। उसका उद्देश्य शक्ति-प्रदर्शन मात्र था, लैमाकस का विचार सीधे अपने अंतिम लक्ष्य सिराक्यूज पर धावा बोलना था। परन्तु अंततः अल्सीबायडीज की सम्मति विजयी हुयी कि सिसली के नगरों को अपनी ओर मिला कर सेलिनस व सिराक्यूज पर सेगेस्टा व लिओण्टिनी के साथ न्याय करने के लिए कूटनीतिक दबाव डाला जाय।

---

[१] Thu, vii, 87.

एथीनियन बेड़े ने आगे बढ़ कर नेक्सास (सिसिली का एक प्रमुख नगर) व कैटाने पर अधिकार कर लिया और सिराक्यूज के बन्दरगाह में जा पहुँचा।

अल्सीबायडीज का पलायन

वहाँ उसने सिराक्यूज के एक जहाज को अधिकृत कर लिया। तभी एथेंस से अल्सीबायडीज का बुलावा आ गया। ब्यूरी के मतानुसार यह कार्य कोरिन्थ व सिराक्यूज द्वारा समर्थित कुछ पंचमांगियों का था।[1] अल्सीबायडीज वापस जाते समय वह थूरी तक तो गया परन्तु वहाँ से भाग निकला। एथेंस के लिए उसने कहा कि, "मै उन्हें दिखाऊँगा कि मैं जीवित हूँ।"[2] स्पार्टा पहुँचने पर उसने ऐसा ही किया। एथेंस में उसकी अनुपस्थिति में ही उसके कुछ सम्बन्धियों को मृत्युदण्ड दिया गया और उसकी सम्पत्ति भी जब्त कर ली गयी।

अल्सीबायडीज के जाने के पश्चात् नीसियस ही प्रमुख सेनानायक बन बैठा। बड़ी कुशलतापूर्वक उसने सिराक्यूज की सेना को कैटाने के एथीनियन शिविर पर आकस्मिक धावे के लिए उकसाया और इस बीच सारी एथीनियन

अल्सीबायडीज के परामर्श से जिलिप्स सिराक्यूज की सहायता में

सेना सिराक्यूज के बन्दरगाह के पश्चिम में, नगर से दो मील दूर ओलम्पियन जीयस के मंदिर के निकट जा डटी। सिराक्यूज की सेना के कैटाने से वापस आने पर जो लड़ाई हुयी उसमें एथेंस की विजय हुयी, परन्तु नीसियस ने इस विजय का लाभ उठाने के बजाय सेना को कैंटाने लौटने का आदेश दिया, जो सिराक्यूज के लिए, आगामी युद्ध की दृष्टि से, अत्यंत लाभदायक सिद्ध हुआ। अवसर पाकर सिराक्यूज ने सहायता याचना के साथ अपने दूत कोरिन्थ व स्पार्टा भी भेज दिए। स्पार्टा में अल्सीबायडीज के उपस्थित रहने से उसके परामर्श पर जिलिप्पस (Gylippus) को सिराक्यूज की सहायता के लिए भेजा गया और कोरिन्थ ने भी कुछ जहाज भेजे। अल्सीबायडीज पर अभियोग लगाना एथेंस के लिये अत्यंत घातक सिद्ध हुआ, उतना ही जितना कि नीसियस को सेनानायकत्व सौंपना। प्रतिशोध की भावना से (न कि देशद्रोह की) प्रेरित होकर अल्सीबायडीज ने स्पार्टा पहुँच कर पश्चिमी-यूनान सम्बन्धी एथेंस की महत्वाकांक्षाओं का उद्घाटन कर दिया और स्पार्टा को सिसली की

---

१. A history of Greece, J. B. Bury, P. 452,

२. Alcibiades, Plutarch, P. 22.

सहायता करने के लिये व साथ ही एट्टिका में डिसिलिग्रा के महत्वपूर्ण-स्थल को अधिकृत करने के लिए उकसाया ।

एथेंस-सिराक्यूज युद्ध (४१४ ई० पू०)

सिराक्यूज का आर्टीजिया (Ortygia) द्वीप ही नगर का प्रमुख केन्द्र था जो बीच का समुद्र सूख जाने के कारण मुख्यभूमि के नगर से संयुक्त हो गया था; आर्टीजिया की दीवारें उत्तर में इपीपोले (Epipolae) के पहाड़ से मिलती थीं । इपीपोले के पूर्व में एक्रेडिना और एक्रेडिना के उ०प० में टीकिया (Tychia) को भी मुख्य नगर में मिला दिया गया था (४६३ ई०पू०) दोनों नगर आर्टीजिआ व बहिरंग-नगर सिराक्यूज के सामने, पूर्व में लघु बन्दरगाह स्थित था । विशाल बन्दरगाह (Great Harbour) के लिए आर्टीजिया एक बांध (Break water) था । विशाल बन्दरगाह के दक्षिण में प्लेमीरियम (Plemyrium) था । सिराक्यूज वालों ने उत्तर की ओर इपीपोले के आरपार समुद्र तक एक दीवार भी निर्मित कर ली था ।

४१४ ई०पू० में निसियस ने सिराक्यूज पर घेरा डाल दिया और एक वर्ष तक वहीं डटा रहा । दूसरी ओर सिराक्यूज ने हर्माक्रिटीज को अपना सेनापति नियुक्त किया और एक्रेडिना के समीप नगर की दीवार के बाहर स्थित अपोलो टेमेनि-टीज (Temenites Apollo) के मंदिर और इपीपोले पर्वत के दक्षिण में ओलम्पियन जीयस के मंदिर के निकट स्थित पालिक्ना (Polychna) के किले को भी सुदृढ़ बना लिया ।

सिराक्यूज का घेरा

इस बीच उत्तर की ओर से नीसियस की सेना भी इपीपोले तक जा पहुँची और वहां उत्तर में एक सर्वोच्च स्थल पर लेबडेलान (Labdelon) का दुर्ग निर्मित किया और पुरानी दीवारों के समानान्तर दुहरी दीवारें निर्मित करवाई । हर्मोक्रिटीज के नायकत्व में भेजी गयी ६०० सैनिकों की टुकड़ी ने एथेंस की किलेबन्दी को रोकने के लिए लम्बवत अवरोधक दीवार बनाने का प्रयत्न किया परन्तु असफल हो कर उन्हे पीछे हट जाना पड़ा । इस विजय के लिए एथेंस को लेमाकस के प्राणों में मूल्य चुकाना पड़ा । लापरवाही-वश एथेंस ने इपीपोले की पश्चिमी चोटी यूरीलस (Eurylus) की सुरक्षा का कोई प्रयत्न नहीं किया और उत्तरी दीवार का निर्माण

मोर्चे बन्दी

भी अधूरा छोड़ दिया. जो एथेंस के लिए अत्यंत घातक सिद्ध हुआ। इसका लाभ उठा कर स्पार्टन सेनानायक जिलीप्पस गेला, सेलिनस और हिमेरा से सेनाएं एकत्रित करता हुआ उसी समय सिराक्यूज आ पहुँचा जिस समय सिराक्यूज एथेंस के समक्ष आत्म-समर्पण करने वाला था। अब जिलीप्पस ने सिराक्यूज की सेनाओं का नेतृत्व ग्रहण कर लिया। लैबडेलान के किले पर अधिकार करने के बाद उसने एथीनियनों के मार्ग अवरुद्ध करने के लिए एक प्रतिस्पर्धी-दीवार का निर्माण आरम्भ किया और दीवार को यूरीलस तक बढ़ा कर बीच-बीच में चार किले भी निर्मित किये।

इस बीच एथीनियन बेड़ा विशाल बन्दरगाह में जा पहुँचा, विशाल बन्दरगाह के दक्षिण में स्थित प्लेमीरियम के प्रदेश पर अधिकार कर एथेंस ने तीन किले भी निर्मित कर लिए फलतः कोरिन्थ की ओर से आने वाले जहाजों पर नियंत्रण रखना सम्भव हो गया।

सिराक्यूज ने भी बन्दरगाह के दक्षिणी तट की रक्षा के लिये एक अश्वारोही सैनिक टुकड़ी पॉलिक्ना के किले में भेज दी। शीतकाल में कैमारिना भी सिराक्यूज की ओर आ मिला। केवल एक्रागस, नैक्सास व कैटाने ही अलग रहे। कोरिन्थ, स्पार्टा, थीबिस व थेस्पिए (Thespiae) से भी उसे सैनिक सहायता मिल गयी। इस बीच

स्पार्टा का डिसिलिआ पर अधिकार ४१३ ई० पू०

४१३ ई० पू० में अल्सीबायडीज के परामर्श पर स्पार्टा ने डिसिलिआ को अधिकृत कर राजा एजिस के नेतृत्व में एक सैनिक छावनी भी स्थापित कर ली क्योंकि एट्टिका व बोयोशिया दोनों ओर प्रयाण के लिए यह उपयुक्त और सुविधाजनक केन्द्र स्थल था।

इधर नीसियस ने रसद के अभाव व अपनी रूग्णता के समाचार भेजते हुए एथेंस से नई सेना मंगायी। फलतः एथेंस से डिमास्थनीज व यूरीमिडॉन को नई सेना सहित, जिसमें १० तिमंजिले जहाज, ६५ अन्य जहाज, कुछ होपलाइट सैनिक और कुछ हल्के शस्त्रास्त्रों वाली सेना थी, नीसियस की सहायता के लिये भेजा गया। एक सैनिक टुकड़ी नौपेक्टस की ओर भी भेजी गयी ताकि कोरिन्थ की कार्यवाहियों को अवरूद्ध किया जा सके।

आगामी संघर्ष के लिए सिराक्यूज अपनी स्थल व जलसेना को सुदृढ़ सुसंगठित करने में संलग्न हो गया क्योंकि जिलीप्पस का ध्येय प्लीमीरियम में स्थल व जल दोनों ओर से एथीनियनों पर आक्रमण करना था। बसंत-ऋतु

समाप्त होते-होते सिरावयूज ने ८३ जहाजों का बेड़ा तैयार कर लिया। आगामी समुद्री संघर्ष में असफल होने पर भी सिरावयूज की स्थल सेना प्लैमीरियम के कुछ किलों को जीतने में सफल हो गयी; एथीनियन बेड़ा बन्दरगाह के उत्तर की ओर हट गया, बन्दरगाह के प्रवेश-द्वार पर सिरावयूज का नियंत्रण स्थापित हो गया और एथेंस की सेना दोनों ओर से घिर गयी क्योंकि ओलिम्पियन मे स्थित स्पार्टन सैन्य ने एथीनियन सेना का द० प० की ओर भी प्रसार अवरूद्ध कर दिया था। इटली से एथेंस की सहायता के लिए आने वाले एक जहाज पर भी सिरावयूज ने अधिकार कर लिया। एथेंस से आने वाली नयी सहायता सेना के पहुँचने से पूर्व ही सिरावयूज की सेना ने नीसियस पर एक और समुद्री विजय प्राप्त की जिसमें एथेंस के ७ जहाज डुबा दिये गये।

सिरावयूज की सफलता

डिमास्थनीज के नेतृत्व में सिरावयूज की अवरोधक दीवार पर दक्षिण से किया गया आक्रमण और पश्चिम में यूरीलस (Euryalus) की ओर से नगर में प्रवेश करने का प्रयास भी हमोक्रेटीज के कारण विफल रहा। डिमास्थनीज ने अब समुद्र पर नियंत्रण बने रहने तक पीछे हट जाने का प्रस्ताव रखा जिसे नीसियस ने ठुकरा दिया क्योंकि उत्तरदायित्व का भय नीसियस के चरित्र का सर्वोच्च कारण था।[1] परन्तु इसी बीच नयी सेनायें लेकर जिलीप्पस भी आ पहुँचा। फलतः नीसियस को पीछे हटने का प्रस्ताव स्वीकार करना पड़ा, परन्तु जिस रात वे पीछे हटने वाले थे अचानक चन्द्रग्रहण होने के कारण अंधविश्वासी नीसियस को अपने सेनानायकों से अगली पूर्णिमा तक रूक जाने का आग्रह करना पड़ा (२७ अगस्त को चन्द्रग्रहण था) नीसियस और इस चन्द्रग्रहण ने मिलकर एथेंस के दुर्भाग्य की पुष्टि कर दी। सिरावयूज ने इस स्थिति का लाभ उठा कर एक बार पुनः एथेंस की जलसेना को परास्त किया और १८ जहाज भी छीन लिये। इस संघर्ष में एथेंस ने एक अन्य नायक यूरी-मिडान को भी खो दिया (३ सितम्बर)।

सिराक्यूज को संभलने का अवसर मिलता गया

तत्पश्चात् सिराक्यूज की सेना ने नावों तथा ८० जहाँजों की श्रृंखला से बन्दरगाह का प्रवेश द्वार अवरूद्ध कर दिया। इस प्रकार एथीनियन बेड़े का मार्ग अवरूद्ध हो गया। नीसियस ने अपनी सेना को प्रोत्साहित करने का भरसक प्रयत्न किया। एथेंस का शेष ११० जहाजों का बेड़ा ब्यूह भंग करने को आगे बड़ा

---

१. A History of Greece J. B. Bury p 472.

परन्तु दीर्घ संघर्ष के पश्चात् उसे पीछे हट जाना पड़ा। डिमास्थनीज के परामर्श पर स्थल मार्ग से पीछे हटने की योजना बनाई गयी; परन्तु हमोक्रेटीज ने कूटनीतिक चाल चली। उसने कुछ लोगों को एथीनियनों का मित्र बना कर यह संदेश भेजा कि स्थल मार्ग घिर गये हैं अत: उन्हें पूरी तैयारी करके पीछे हटना चाहिए। इस पर विश्वास कर एथीनियन रूक गये, और इस बीच सिराक्यूज ने उन मार्गों को भी अवरूद्ध कर दिया।

एथेंस की सेनाएं घेराव में

नीसियस व डिमास्थनीज के नेतृत्व में एथीनियन सैन्य पश्चिमी मार्ग से एनापस नदी को पार कर कैटाने की ओर रवाना हुई। एक्रिअन (Acraean) चोटी पर पहुँचने पर उन्हें मार्ग अवरूद्ध मिला। अतः दक्षिणी मार्ग पकड़ कर वे गेला की ओर बढ़े। अनेकानेक बाधाओं से संघर्ष करते हुए अंततः वे लोग एरिनिआस (Erineos) नदी के तट पर पहुँचे। यहाँ पहुँचने पर नीसियस को सूचना मिली कि डिमास्थनीज व उसके ६००० सैनिक पालीजेलस (Polygelus) के जैतून-उद्यान में घिर गये हैं। डिमास्थनीज ने आत्महत्या का प्रयत्न भी किया परन्तु असफल रहा इस पर नीसियस ने एथेंस पहुँचने पर युद्धव्यय की पूर्ति करने व तब तक प्रतिटैलेण्ट एक व्यक्ति को बन्धक रखने का प्रस्ताव सिराक्यूज के समक्ष रखा जो अस्वीकृत कर दिया गया, क्योंकि सिराक्यूज वाले पूरी एथीनियन सेना को बन्दी बनाने का यश प्राप्त करना चाहते थे। निराश नीसियस कठिनाइयों से जूझता हुआ अंततः एस्सीनारस (Assinaros) की धारा तक पहुँचा जहां, प्यासे एथीनियनों का तृष्णा बुझाते समय, निर्मम रूप से सामूहिक वध किया गया। अंत में नीसियस ने जिलीप्पस के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।

नीसियस व डियमस्थनीज को मृत्यु दण्ड

हत्याकान्ड से बचे हुए सैनिक बन्दी बना लिए गये। कुछ तो उसी समय दास बना कर बेच दिये गये। ७००० बन्दी सैनिक एक्रेडिना के पत्थरों की खदान में डाल दिये गये जहां एथेंस वालों को ६ माह तक, और शेष मित्रों को ७० दिन तक खुले आकाश के नीचे, दिन की कड़कती धूप और रात की कंपकंपाती सर्दी सहते हुए रहना पड़ा। यहा से जीवित बच निकलने वालों को भी दास बना लिया गया। कहा जाता है कि अनेक दास यूरीपिडीज की रचनाओं के कण्ठस्थ रहने से मुक्त हो गये और पुनः अपनी मातृभूमि पहुँचने में सफल हुए। एथेंस के दोनों सेनानायक नीसियस व डीमॉस्थ-नीज मौत के घाट उतार दिये गए। विजय के उपलक्ष में सिराक्यूज में एस्सी-

नैरियन खेलों का आयोजन किया गया (एस्सीनारस नदी के नाम पर)। इस पर नए सिक्के भी ढाले गये जो अंकन के उत्कृष्ट नमूने हैं।

पराजय के परिणामस्वरूप एथेंस ने २०० के लगभग जहाज और ४००० के लगभग एथीनियन होपलाइट सैनिक गंवए। एथेंस की आधी जनसंख्या समाप्त हो गयी या दास बना ली गयी परन्तु उसने उत्साह नहीं खोया।

इस सर्वथा अनुचित और अन्यायपूर्ण अभियान के कारण एथेंस यवन-नगरों में अप्रिय हो चला। इस असफलता का दायित्व नीसियस और उसको नियुक्त करने वाली जनता या जनसभा पर ही है; दलीय राजनीति की विकृति का यह सर्वोत्तम उदाहरण माना जा सकता है।

एथेंस की आन्तरिक परिस्थितियाँ

एथेंस की स्थिति के निर्बल होने से ही लैसिडेमॉन की सेना डिसिलिआ में डटी रही, फलतः वहां भूमि की उपज कम हो गयी; लॉरियम की खानें भी बंद हो गयीं जिसका मुद्राप्रणाली पर बुरा प्रभाव पड़ा। मुद्रा की कमी को पूरा करने के लिए एथेंस को देवी देवताओं की मूर्तियों से धातुओं को निकाल कर सिक्के ढलवाने पड़े और ताम्र सिक्कों का भी चलन करना पड़ा। डिसिलिआ एथेंस के पलायित दासों के लिए एक शरणास्थल भी बन गया।

नीसियस व डिमॉस्थनीज के मृत्यु के पश्चात् एथेंस के संविधान में सुधार किया गया और ५०० की परिषद् 'बूले' के स्थान पर १० सदस्यों की एक नयी परिषद् प्रॉबुली (Probuloi) संगठित की गयी।

संधीय राज्यों से लिया जाने वाला कर भी समाप्त कर देना पड़ा और उसके स्थान पर एथेंस सहित सभी राज्यों पर समान रूप से ५ प्रतिशत आयात-निर्यात कर आरोपित करना पड़ा।

थ्रेस से मिलने वाले भाड़े के सैनिकों को आर्थिक अभाव में छोड़ देना पड़ा।

एथेंस के विरूद्ध स्पार्टा व परशिया की नीति

स्पार्टा ने एथेंस के खाद्यान्न-पूर्ति के स्रोत को अवरूद्ध करने व उसके अधीनस्थ आयोनिअन राज्यों को विद्रोह के लिए उभाड़ने के प्रयोजन से एशिया माइनर में एथेंस की क्षीण नौ-शक्ति से टक्कर लेने की योजना बनायी। स्पार्टा की सहायता की आशा में यूबोइआ; लेस्बॉस,

किश्रॉस आदि एथेंस से विद्रोह करने को तैयार बैठे थे। विद्रोही राज्यों को स्पार्टा व बोयोशिया दोनों ने ५०-५० जहाज देने स्वीकार किये।

सार्डिस के परशियन क्षत्रप टिसाफर्नीज (Tissaphernes) व हेले-स्पॉण्टाइन फ्रीजिया के क्षत्रप फर्नाबाजस ने एथेंस द्वारा अधिकृत तटीय परशियन राज्यों को वापस लेने का सुअवसर देखा। स्पार्टा को भी एथेंस से सघर्षरत देख कर फर्नाबाजस ने अपना एक दूत स्पार्टा भेज कर आग्रह किया कि वह हेलेस्पाण्ट में अपनी शक्ति बढ़ाए। टिसाफर्नीज व अल्सीबायडीज ने उससे किश्रॉस की सहायता करने का भी आग्रह किया जिसे स्पार्टा ने स्वीकार कर लिया। परशिया व स्पार्टा से प्रोत्साहन पाकर किश्रॉस (Chios) के साथ ही माइलेटस, टिश्रॉस, लैबेडस, मेथिम्ना, मिटीलिनी, साइम व फोशिया ने भी एथेंस के विरूद्ध विद्रोह कर दिया (४१२ ई० पू०)।

माइलेटस की संधि :-स्पार्टा व परशिया के बीच माइलेटस में एक संधि सम्पन्न हुयी। इस संधि के द्वारा जहाँ स्पार्टा ने साथी यवन-राज्यों की स्वतंत्रता को अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए बेच दिया वहीं परशिया का सम्राट यूनान के विवादों में मध्यस्थ बन बैठा। परशिया के सम्राट ने दावा किया कि उसके एशियायी राज्यों तथा उनसे मिलने वाले करों पर एथेंस ने ८० वर्षो तक अनधिकारिक रूप से अधिकार जमाए रखा था। अब वह उसे वापिस पाना चाहता है। स्पार्टा ने इस दावे को इस शर्त के साथ स्वीकार किया कि पिलोपोनीसियन बेड़े के व्यय का भुगतान वह करे। इस तरह स्पार्टा और पर-शिया अपने-अपने स्वार्थ-साधन के लिए सामान्य शत्रु एथेंस के विरूद्ध संयुक्त हो गये।

उक्त संकट की आशंका से एथेंस ने भी सनियम अंतरीप की किलेबन्दी करा ली तथा सुरक्षा कार्यो के निमित्त रखे हुए १००० टेलेण्ट से तिमंजिले जहाजो (Trieremes) का निर्माण किया। सैनिक संगठन के पश्चात् उसने आर्गोलिक तट पर स्थित किश्रॉस पर घेरा डाल दिया, और साथ ही लेस्बॉस भी वापस ले लिया किन्तु माइलेटस में आंशिक रूप से ही सफलता मिली। परंतु यह सफलता क्निडस (Cnidus) व रोड्स (Rhodes) के कारण अधूरी रह गई। ई० पू० ४११ के बसंत तक एथेंस ने उत्तर व हेलेस्पांट में स्थित अपने संघीय मित्र राज्यों को तो पुन: अधिकृत कर लिया परंतु लेस्बॉस, सैमॉस, कॉस व हैलिकार्नेसस ही उसके साथ रह

एथेंस की सुरक्षा व्यवस्था

गये थे, दूसरी ओर शत्रु पक्ष में लैसिडेमानियन मित्र राज्यों के साथ सिराक्यूज व परशिया की सेनाएँ भी थीं। सिराक्यूज ने भी २० जहाजी बेड़े के साथ हर्मेक्रेटीज को किग्रास के सहायतार्थ भेजा।

परन्तु शीघ्र ही स्थिति बदलने लगी। स्पार्टा व परशिया के मध्य कर-सम्बन्धी विवाद उठ खड़ा हुआ जिसे सुलझाने के लिए उन के बीच एक नयी संधि सम्पन्न हुयी। अल्सीबायडीज भी स्पार्टा से विमुख होकर माइलेटस चला गया और टीसाफर्नीज से मिल कर स्पार्टा व परशिया की मैत्री को भंग कर परशिया की सहायता एथेंस के पक्ष में उपलब्ध कराने का प्रयास करने लगा। उसका ध्येय एथेंस की सहायता करके अपना स्वदेश वापसी का मार्ग प्रशस्त करना था।

अल्सीबाइडीज की वापसी

एथेंस की स्थिति और कुलीनों का विद्रोह:–इस दीर्घकालीन संघर्ष, परशिया के भय, डिसिलिआ में लेसिडेमानिअन सेनाओं के जमाव आदि के कारण जनता क्षुब्ध हो चली थी, और इस जन-भावना का उपयोग करने में कुलीनों तथा उनके सहायकगण, जिनमें थेरामिनीज (Theramenes) फ्रीनिकस (Phrinicus) सैमास स्थित बेड़े का नायक पिसाण्डर (Pisander) व एण्टिफान (Antiphon) आदि प्रमुख थे, लोकतंत्रीय विधान को समाप्त कर कुलीनतंत्र की स्थापना के लिए प्रयत्नशील थे प्राय: सभी ड्रैको के विधान को लागू करने के पक्ष में थे। परराष्ट्र नीति की असफलता ही लोकतंत्र के विरूद्ध सबसे बड़ा अभियोग था। प्रॉबुली के अधिकांश सदस्य व बेड़े के अधिकारीगण भी प्रस्तुत थे। एथेंस का राजनैतिक वातावरण इतना तनावपूर्ण था और अन्दर ही अन्दर लोकतंत्र का इतना विरोध बढ़ता जा रहा था कि क्रांति के लक्षण प्रकट होने लगे थे जिनमें गुप्त संगठनों का प्रमुख हाथ था। अंततः अल्सीबायडीज भी लोकतंत्र की स्थापना का ध्येय रख कर अपनी वापसी के लिए लोकतंत्र को समाप्त करना चाहता था। बदले में वह एथेंस के पक्ष में टीसाफर्नीज की सहायता उपलब्ध कराने का वचन देने को प्रस्तुत था। परन्तु इसमें उसे सफलता न मिल सकी, क्योंकि कुलीन सोंलोन, थेमिस्टोक्लीज, एरिस्टाइडीज व पेरीक्लीज आदि के विधान का विरोध करने लगे थे। इनमें थेरामिनीज सर्वप्रमुख था।

इस सम्बन्ध में इतिहासकार थूसिडाइड्स ने लिखा है—"With the growth of the revolutionary spirit stratagems became more ingenious and methods of revenge more extravagant.

Words lost their familiar meaning. A new sect of circumstances demanded a new use of terms. So now the reckless fanatic became "the loyal partyman." Cautious states manship was a cloak for cowardice', moderation 'the weakling's subterfuge', and intellegence was written off as 'ineffective.' Act like a maniac and you are styled a 'real-man.' Walk warily and your fellow conspirators set you down as a renegade......claims of party took precedence over family ties;........., and their strength springs not from the moral law but from partnership in crime.

Religion had no hold,.........Sincerity was killed by mockery and the atmosphere of general suspicion made conciliation impossible. No body would trust an oath and nobody would keep one. Nothing was taken for granted, and having lost faith in human nature, men took their own precautions........."

एरिस्टोफेनीज ने भी अपनी हास्य रचनाओं में इस पर व्यापक प्रकाश डाला है।

एथेंस के संविधान में सुधार

अल्सीबायडीज के प्रयत्नो के बावजूद भी टीसाफर्नीज ने स्पार्टा का ही पक्ष लिया; तथापि एथेंस पर आक्रमण में उसने निकट भविष्य में स्पार्टा को कोई सहायता नहीं पहुँचायी। परशिया की सहायता उपलब्ध कराने के वचन को पूरा करने में असफल होने के बावजूद अल्सीबायडीज के पक्ष में एथेंस के कुलीनों ने विद्रोह कर दिया और उसके प्रमुख शत्रु एण्डोसिडीज को, जिसने प्रतिमा भंग के अपराधियों में अल्सीबायडीज का नाम लिखवाया था, मार डाला। एबाइडस व लैम्पास्कस आदि स्थानों पर हुए विद्रोहों से भी इस विद्रोह को प्रोत्साहन मिला। विद्रोह के पश्चात् संविधान में भी अनेक सुधार किये गये। दस प्रॉबुली व २० अन्य गणमान्य नागरिकों की एक समिति नियुक्त की गयी जिसे राज्य की रक्षा के लिए प्रस्ताव का प्रारूप तैयार कर निश्चित तिथि को जनसभा के समक्ष उपस्थित करने को कहा गया। निश्चित तिथि को

डिसिलिआ के निकट (ताकि स्पार्टनों से आत्मरक्षार्थ पूर्ण शस्त्रसज्जित कुलीन ही भाग ले सकें) कॉलोनस स्थित पाँजीडान देवता के मंदिर में जनसभा की बैठक का आयोजन किया गया। जनसभा की सदस्य संख्या ५००० कर दी गयी जिनका निर्वाचन धन व बल की दृष्टि से होना निश्चित हुआ। इस सभा का कोई अधिवेशन न बुलाया जा सका। इन ५००० सदस्यों का निर्वाचन दस जातियों में से समान रूप से निर्वाचित १०० प्रतिनिधियों को करना था। सभी सार्वजनिक पदों को अवैतनिक बना दिया गया। ये सभी सुधार युद्धावधि तक के लिए किये गये थे।

पदाधिकारियों व जनसभा के द्वारा काउंसिल के कार्यों में पड़ने वाले अवरोध की समाप्ति के लिए भी अनेक कदम उठाए गए। १०० जातीय प्रतिनिधियों ने संविधान का जो प्रारूप तैयार किया उसमें यह व्यवस्था भी रखी गयी कि ५००० की सभा को चार भागों में विभक्त कर दिया जाय और हर भाग वर्ष भर के लिए प्रशासन का दायित्व ग्रहण करे। उच्चायुक्तों आदि की नियुक्ति का भार भी इन्हीं को प्रदान किया गया। परिषद् में आयुक्तों व सेनानायकों के लिए भी स्थान रखा गया। परन्तु यह योजना लागू न हो सकी जिसका सबसे बड़ा कारण इसका विशाल आकार ही था। इसके स्थान पर १०० आयुक्तों ने ४०० की काउंसिल (जिसमें प्रत्येक जातिके ४०-४० प्रतिनिधि होते थे) की स्थापना का प्रस्ताव रखा।

परिषद के निर्वाचन की पद्धति

इस परिषद् के निर्वाचन की पद्धति यह थी कि ५००० सदस्यों वाली प्रस्तावित जनसभा ५ अध्यक्षों (Proedri) का निर्वाचन करती जो १०० पार्षदों का नामांकन करते जिनमें से फिर प्रत्येक अपने तीन सहयोगियों का नामांकन करता। ये सभी पार्षद १० जातियों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों में से ही लिये जा सकते थे। अस्थायी रूप से गठित होते हुए भी इस परिषद् को वित्तीय मामलों में तथा आयुक्तों आदि की नियुक्ति पर पूर्ण नियंत्रण प्रदान किया गया। साथ ही जनसभा के अधिवेशन बुलाने का अधिकार भी इसी को सौंपा गया

इस प्रकार अपने अधिकार का लाभ उठाकर ई० पू० ४११ के लगभग अंत में नई परिषद के ४०० सदस्यों ने सैन्यबल से व षड्यंत्र की सहायता से वैद्य पार्षदों को अपदस्थ कर स्वयं परिषद् पर अधिकार कर लिया।

तत्पश्चात् शीघ्र ही यह कुलीनतंत्रीय नई परिषद् स्पार्टा से संधि के प्रयत्न

करने लगी। पिरायस की किलेबन्दी भी प्रारम्भ कर दी गयी। इसका समाचार पाकर शीघ्र ही सैमॉस स्थित एथीनियन बेड़े के लोकतंत्रीय तत्वों ने विरोध प्रकट किया और अंततः तीन माह के अंदर ही इस नयी परिषद् का शासन समाप्त हो गया। थ्रैसिलस व थ्रेसिबुलस के नेतृत्व में सैमॉस स्थित बेड़े ने सेना के कुलीन अधिकारियों आदि को अपदस्थ कर दिया (एथेंस से निष्कासित हाइपरबोलस की हत्या का दायित्व इन्ही कुलीनों पर था) और लोकतंत्र के पक्ष में मत प्रकट किया। सैमॉस में ही पुरानी जनसभा की बैठक भी बुलायी गयी। थ्रेसिबुलस आदि ने परशिया की सहायता अर्जित करने की आशा में अल्सीबायडीज को वापस बुला कर उसे नायक का पद भी सौंपा। परन्तु स्पार्टा का प्रकटतः साथ न देते हुए भी टीसाफर्नीज ने एथेंस की सहायता करने में भी कोई रूचि प्रकट न की। सम्भवतया, जैसा कि थूसिडाइड्स से ज्ञात होता है, तटस्थ रह कर वह दोनों शक्तियों को श्रांत-क्लांत कर देना चाहता था।

परिषद का षडयन्त्र एवं शासन की समाप्ति

अल्सीबायडीज के परामर्श पर सैमॉस की एथीनियन सेना ने एथेंस की ओर प्रयाण की योजना स्थगित कर दी क्योंकि आयोनिआ व हेलेस्पाण्ट में सेना की अनुपस्थिति में एथेंस की स्थिति अरक्षित होजाने की आशंका थी। अल्सीबायडीज ने एथेंस की तत्कालीन कुलीन सरकार से वार्ता आरम्भ कर दी और ५००० की नवीन जनसभा को इस शर्त पर मान्यता प्रदान की कि ४०० की परिषद् भंग कर दी जाय। स्वयं ४०० पार्षदों की नवीन सरकार अपनी स्थिति से संतुष्ट न थी। नर्मपंथी नेता थेरामिनीज भी, जो एण्टिफॉन व फ्रीनिकस प्रभृति कट्टरवादियों का विरोधी था, सैमॉस स्थित लोकतंत्रवादियों के सहयोग से मध्यममार्गी शासन प्रकार—पॉलिटी (Polity) की स्थापना करना चाहता था।

अल्सीबायडीज की नीति

एथेंस के कट्टर कुलीनों ने अपने ऊपर संकट आसन्न देख कर पिरायस के उत्तरी हिस्से (Ectionea) की किलेबन्दी कर स्पार्टा से सहायता वार्ता आरम्भ कर दी। स्पार्टा ने याचना स्वीकार कर सैरोनिक खाड़ी में अपने जहाज भेज दिये जिन्हें देख कर जन-साधारण में कुलीनों के प्रति तीव्र रोष उमड़ आया जिसमें फ्रीनिकस को अपने प्राणों की आहुती चढ़ानी पड़ी। कुलीनों के पक्षपाती सैनिक भी थेरामिनीज के पक्ष में चले आए और उनकी किलेबन्दी भी ध्वस्त कर दी गयी। म्यूनिशिया की

इरिट्रिया में एथेंस की पराजय

ढाल पर स्थित रंगशाला में ४०० पार्षदों के साथ शांति-वार्ता आरम्भ हुयी जिसका प्रमुख विषय ५००० की जनसभा के विधान का आधार प्रस्तुत करना था। परन्तु निश्चित तिथि को सैलेमिस में लैसिडेमानियन बेड़े के आगमन से वार्ता भंग हो गयी। स्पार्टन बेड़े के सैलेमिस पहुंचने से एथेंस की रक्षा पंक्ति के मर्मस्थल यूबोइआ पर संकट उपस्थित हो गया। इरीट्रिया में एथेंस व स्पार्टा के बेड़े में टक्कर हुयी जिसमें स्पार्टा की विजय हुयी यद्यपि इस विजय से स्पार्टा को एथेंस के बन्दरगाह पिरायस को घेरने में तत्काल कोई सफलता न मिल सकी। फिर भी एथेंस की इस पराजय से उत्तरी यूबोइआ के एथीनियन उपनिवेश ओरोपस को छोड़ शेष समस्त यूबोइआ को विद्रोह करने का अवसर मिल गया। जहाजों के अभाव में, सेमॉस स्थित सेना के विरोध, यूबोइआ के विद्रोह और एथंस के दलीय संघर्ष के कारण एथेंस की स्थिति अत्यंत जटिल हो चली। फलतः अल्सीबायडीज का वापस बुलाना अनिवार्य हो गया और जनसभा ने उसकी वापसी का प्रस्ताव पारित कर दिया।

जनतंत्र की पुनर्स्थापना

पिसाण्डर आदि देशद्रोहियों को प्राणदण्ड का प्रस्ताव रखा गया। पिसाण्डर भाग कर डिसिलिआ चला गया; अन्य कुलीन पकड़कर मार डाले गये जिनमें एण्टिफान आदि प्रमुख थे। ४०० की परिषद् का पतन अवश्यम्भावी हो गया। प्निक्स (Pnyx) में एकत्रित होकर एक जनसभा ने इस परिषद् को भंग कर ५००० की जनसभा की विधिवत स्थापना की जिसमें सभी शस्त्रधारण-योग्य-जन सम्मिलित हो सकते थे। नोमोथीटी (Nomothetae) नामक विधायकों की नियुक्ति की गयी जिन्हें संविधान का विस्तुत प्रारूप तैयार करने का कार्य सौंपा गया। सभी पद अवैतनिक कर दिए गए। इस सुधार का प्रमुख प्रणेता थेरामिनीज था। नये शासन-विधान में अल्पमत व बहुमत के समन्वय पर उचित ध्यान दिया गया।

सिनोसेमा (Cynossema) की लड़ाई (४११ ई० पू०) :-इस बीच मिण्डारस के नेतृत्व में ७३ जहाजों का पिलोपोनीसियन बेड़ा फर्नाबाजस के निमंत्रण पर हेलेस्पॉण्ट की ओर बढ़ रहा था। इस ओर स्पार्टा के बढ़ाव का अर्थ था एथेंस का भूखों मरना क्योंकि एथेंस का अधिकांश खाद्यान्न यहीं से आयात होता था। अतः थ्रेसिलस व थ्रेसिबुलस के नेतृत्व में ७६ जहाजों के एथीनियन बेड़े ने स्पार्टन बेड़े का पीछा किया और सिनोसेमा के संकीर्ण जलमार्ग में उन्हें पूरी तरह पछाड़ा, दूसरी ओर यूबोइया स्थित पिलो-पोनीसियन बेड़े को, जो मिण्डारस की सहायता के लिए आ रहा था, मार्ग में

तूफान के कारण गहरी क्षति उठानी पड़ी । एथीनियनों ने सीजिकस (Cyzicus) व एबाइडस (Abydus) को भी ले लिया (४१० ई० पू०)। एथेंस की इस सफलता से रूष्ट होकर टीसाफर्नीज ने सार्डिस आए हुए अतिथि अल्सीबायडीज को कैद कर लिया परन्तु किसी तरह अल्सीबायडीज कैद से भाग निकला ।

सीजिकस की लड़ाई (४१० ई० पू०):—सीजिकस (प्रोपॉण्टिस) की लड़ाई में फर्नाबाजास की सहायता के बावजूद स्पार्टन पक्ष पराजित हुआ । मिण्डारस मारा गया और पिलोपोनीसियन बेड़े के लगभग ६० जहाज डूब गये व कुछ एथीनियनों ने छीन लिए । अल्सीबायडीज, थेरामिनीज व थ्रेसीबुलस के नेतृत्व में यहाँ एथेंस को स्पार्टा व परशिया पर जल व स्थल में दुहरी विजय प्राप्त हुयी । इस विजय का जो समाचार एथेंस भेजा गया वह इस प्रकार था:—

"The ships are gone Mindar us is dead, the men are starving; we do not Know what to do"[1]

अब भयभीत होकर स्पार्टा ने यथास्थिति के आधार पर समझौते का प्रस्ताव रखा, परन्तु एथेंस ने अदूरदर्शिता से इसे ठुकरा दिया जिसका दायित्व अल्सीबायडीज पर ही है । वस्तुतः वह एजिना व एशिया माइनर में एथेंस के खोये हुए अधिकारों की वापसी के पूर्व किसी समझौते के लिए तैयार न था ।

सीजिकस की विजय का एथेंस की आंतरिक स्थिति पर भी प्रभाव पड़ा और वहाँ थेरामिनीज की 'पालिटी' की समाप्ति के पश्चात् पूर्ण लोकतंत्र की स्थापना की ओर कदम उठाए गए ।

एथेंस पूर्ण लोकतंत्र

क्लिआफान के नेतृत्व में क्लिस्थनीज द्वारा स्थापित ५०० की परिषद् पुनः गठित की गयी, साथ ही असीमित मताधिकार की पुनर्स्थापना भी की गयी । सभी पद भी पुनः वैतनिक कर दिए गए ।

एक्रोपोलिस की सर्वोच्च उत्तरी चोटी पर एथेना पोलियस के नये मंदिर का निर्माण किया गया जिसमें एथेना देवी की काष्ठ की प्राचीन प्रतिमा प्रतिष्ठित की गयी । इस मंदिर में एथेना देवी के जैतून वृक्ष व पॉजीडॉन देव के लवण-स्रोत को भी रखा गया । (दो वर्ष पश्चात् अग्निकाण्ड में नष्ट हो जाने के बाद काफी समय पश्चात् इसका पुनः जीर्णोद्धार हो सका ।)

---

१. C. D. Edmonds Greek History for Schools P. 212.

ई० पू० ४१०-०६ के मध्य की अवधि में अल्सीबायडीज के नायकत्व में थैसॉस, सेलिम्ब्रिया (Selymbria), क्राइसापोलिस (Chrysopolis) कॉलोफॉन (Colophon), चाल्सीडान, व बाइजेंतियम में भी एथेंस को भारी सफलता मिली। क्राइसोपोलिस में चुंगी-चाकी स्थापित की गयी जहाँ पर आने-जाने वाले जहाजों पर १० प्रतिशत कर आरोपित किया गया। इस प्रकार बासफोरस पुनः एथेंस के नियंत्रण में आ गया। केवल निसेइआ व पाइलॉस क्रमशः मेगारा व स्पार्टा के अधिकार में बने रहे।

एथेंस की सफलताएँ ४१०-०६ ई० पू०

इस बीच फर्नाबाजस परशिया व एथेंस के बीच संधि के लिए प्रस्तुत हो गया। परंतु ४०८ में आयोजित ओलम्पिक खेलों में लिओण्टिनी के नेता जार्जियास ने इस का विरोध करके परशिया के साथ युद्ध का आह्वान किया।

परशिया में भी इच बीच महत्वपूर्ण परिवर्तन हो चले। पश्चिमी गोलार्द्ध की घटनाओं से व दोनों क्षत्रपों की पारस्परिक स्पर्धा से सशंक सम्राट डेरियस ने कैप्पाडोसिआ, फ्रीजिया व लीडिया का शासनाधिकार अपने कनिष्ठ पुत्र काइरस को सौंपा और टीसाफर्नीज केवल केरिया तक ही सीमित रह गया। काइरस प्रकटतः एथेंस का विरोधी और स्पार्टा का पक्षपाती था। स्पार्टा की स्थिति को सुदृढ़ बनाने में काइरस के साथ ही लिसाण्डर ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया जिसे अपना नौसेनापति नियुक्त कर स्पार्टा ने अंततः एथेंस को झुकने के लिए विवश कर दिया। स्पार्टा के एक निम्न और निर्धन परिवार में उत्पन्न लिसाण्डर एक दृढ़निश्चयी और सुयोग्य सेनापति के साथ ही एक कुशल कूटनीतिज्ञ भी था।

काइरस व लिसाण्डर

"Brave, able. anticorruptible, but ambitious, cruel, and unscruplous, this was the man who was to bring Athens to her knees."[१]

नोटियम (Notium of Notion) ४०७ ई० पू० :—सीजिकस की विजय से प्रफुल्लित होकर एथेंस ने अल्सीबायडीज को वापस बुला कर उसका भव्य स्वागत किया और उसे सैन्य संचालन के समस्त अधिकार प्रदान किये। ४०७ ई० पू० में १०० जहाजों का एक शक्तिशाली बेडा लेकर वह नोटियम्

---

१. C. D. Edmonds, Greek History for. schools, P. 213.

परन्तु वहाँ अल्सीबायडीज की अनुपस्थिति में ही उसके एक अधीनस्थ नायक ने बिना आज्ञा के ही लिसाण्डर की सेना पर आक्रमण कर दिया फलत: एथेंस की पराजय हुयी और उसके १५ जहाज छीन लिये गये। इस का दायित्व अल्सीबायडीज पर लादा गया और उसे सेनापति पद से हटा दिया गया तथा उसके स्थान पर क्लिग्राफान व कॉनान (Conon) को नियुक्त किया गया। अल्सीबायडीज भाग कर हेलेस्पाण्ट चला गया। वहीं किसी स्पार्टन या परशियन के हाथों उसकी हत्या भी हो गयी।

आर्गिनूसे (ARGINUSAE) का युद्ध (४०६ ई० पू०)

लिसाण्डर का उत्तराधिकारी कैलीक्रेटिडस (Callicratidas) डेल्फीनिअन (Delphinian-किऑस) का दुर्ग और मेथिम्ना (Methymna लेस्बास) को अधिकृत कर मिटिलिनी पहुँचा और वहाँ कॉनन को ४० जहाजों सहित घेर लिया। ३० एथीनियन जहाज पहले ही मेथिम्ना में नष्ट हो चुके थे। घेरे के समाचार एथेंस पहुँचने पर ८ सेनानायकों के नेतृत्व में लगभग १५० जहाज कॉनन की सहायता के लिये भेजे गये। इस नये बेड़े को आता देख कर कैलिक्रेटिडस ५० जहाजों को घेरे पर छोड़ कर शेष लगभग १२० जहाजों को लेकर शत्रु का सामना करने के लिए आगे बढ़ा। आर्गीनूसे के निकट समुद्री युद्ध में स्पार्टनों की पराजय हुई और कैलिक्रेटिडस मारा गया। स्पार्टा के ७० जहाज भी छीन लिए गए, एथेंस को भी २० जहाजों की क्षति पहुँची। विजयी होते हुए भी उसका पूर्ण लाभ न उठाने के अपराध में एथीनियन नायकों को पद मुक्त कर दिया गया। उन्होंने प्रत्युत्तर में थेरामिनीज आदि नायकों (ट्रायरार्क-Trierarchs) पर आरोप लगाया परन्तु जनसभा ने अपने निर्णय में नायकों को ही दोषी ठहराया, यद्यपि सुकरात ने (जो अध्यक्षों में से एक था) इसका विरोध किया। नायकों को मृत्युदण्ड दिया गया और उनकी सम्पति जब्त कर ली गयी। थ्रेसिलस, व पेरीक्लीज महान् के हमनाम पुत्र सहित ६ नायकों को मौत के घाट उतार दिया गया, शेष दो नायक किसी तरह बच निकले।

संधि का प्रस्ताव

इस विजय से पूर्वी एजियन क्षेत्र पर पुन: एथेंस का नियंत्रण स्थापित हो गया। पराजय से हतोत्साहित न होकर स्पार्टा ने पुन: यथास्थिति के आधार पर संधि का प्रस्ताव रखा। वह डिसिलिआ को खाली करने को भी तैयार था। परन्तु हठी नेता कॉलोफॉन के नेतृत्व में एथेंस ने यह प्रस्ताव भी ठुकरा दिया।

४०५ ई० पू० में लिसाण्डर पुनः स्पार्टा के सेनापति पद पर नियुक्त किया गया और काइरस की सहायता से वह २०० जहाजों का बेड़ा तैयार करने में सफल हो गया। काइरस पर लिसाण्डर का प्रबल प्रभाव था। यह इसी से ज्ञात हो जाता है कि जब डेरियस की रुग्णता का समाचार पा कर काइरस परशिया गया तो अपने शासनाधिकार लिसाण्डर को सौंप गया।

एगोस्पोटामी (AEGOSPOTAMI) का युद्ध (४०५ ई० पू०)

इफीसस में कॉनन के आक्रमण का प्रतिरोध किए बिना उसके पीछे हटने पर लिसाण्डर रोड्स और एजियन होता हुआ, एटटिका में राजा एजिस से परामर्श लेकर एथेंस की खाद्यान्नपूर्ति पर रोक लगाने के ध्येय से हेलेस्पाण्ट की ओर लैम्पास्कस तक बढ़ आया और वहां घेरा डाल दिया। एथीनियन बेड़े (१८० जहाज) के पहुँचने से पहले ही उसने लैम्पास्कस पर अधिकार भी कर लिया। एथीनियन नौसेनापति कॉनन भी लैम्पास्कस के सामने एगोस्पोटामी आ पहुँचा। यहाँ एथेंस के सैन्य की स्थिति स्पार्टनों की अपेक्षा असुविधापूर्ण थी क्योंकि स्पार्टा के पास लैम्पास्कस का अच्छा बन्दरगाह था और पूर्ति के सुचारू साधन भी थे, जबकि एथीनियन सैन्य सेस्टास पर निर्भर था। ४ दिनों तक लिसाण्डर ने कोई आक्रामक कारवाई नहीं की जिससे एथीनियन लापरवाह हो चले और रसद-पूर्ति के लिए सेस्टास से सम्पर्क स्थापित करने लगे। अल्सीबायडीज द्वारा प्रदर्शित संकट की आशंका को भी उन्होंने धृष्टतापूर्वक ठुकरा दिया। फलतः स्पार्टा की विजय हुयी। एथेंस के १६० जहाज शत्रु के हाथ लग गए और शेष २० किसी तरह बच कर भाग निकले। ४००० के लगभग एथीनियन मौत के घाट उतार डाले गये। ८ जहाज साथ लेकर कॉनन साइप्रस चला गया।

पिरायस का घेरा एगोस्पोटामी की लड़ाई पिलोपोनीसियन युद्ध की अंतिम और निर्णायक कड़ी थी। जेनोफॉन लिखता है कि :—एगोस्पोटामी का विषादपूर्ण समाचार जब रात्रि के समय पिरायस पहुँचा तो समस्त नगरवासियों में भीषण आर्तनाद फूट पड़ा और दुःख की यह आर्त्तध्वनि शीघ्र ही लम्बी दीवारों को भेद कर एथेंस तक जा पहुँची। उस रात को कोई सो न सका क्योंकि वे केवल युद्ध के मृतकों के लिए ही दुखी न थे, उन्हें अपने लिए भी यह चिंता हो रही थी कि परास्त होने पर उनकी भी वही गत होगी जैसी उन्होंने मेलॉस व अन्य नगरों के साथ किया था। तथापि घुटने टेकने को वे तैयार न थे।

कुछ सप्ताह पश्चात् थ्रेस व हेलेस्पॉण्ट से एथीनियन साम्राज्य को समाप्त व एजिना को अधिकृत कर लिसाण्डर ने पिरायस पर घेरा डाल दिया। स्पार्टा-नरेश पाजेनियस व एजिस ने भी एकेडेमी में मोर्चा जमा लिया। एथेंस-वासियों को भूखों मारने के लिए एथीनियन उपनिवेश के निवासियों को भी एट्टिका में खदेड़ दिया गया। अब एथीनियन संधि के लिए तैयार थे परन्तु संधि की शर्त्त के रूप में इफोर द्वारा लम्बी दीवार को १० स्टेड (Stads) तक गिराने की मांग का क्लिआफॉन आदि ने विरोध किया। अंतत: कठिन दुर्भिक्ष ने एथेंस को आत्म समर्पण के लिए तैयार कर लिया (४०४ ई० पू०) क्लिआफॉन को मृत्युदण्ड दिया गया और थेरामिनीज को संधि-स्थापनार्थ पूर्ण अधिकार प्रदान किये गये।

एथेंस का पतन व संधि की शर्तें

संधि की शर्तो के निर्धारण के लिए स्पार्टा में पिलोपोनीसियन मित्र राज्यों की बैठक बुलायी गयी। इनमें कोरिन्थ व थीबिस आदि एथेंस को पूर्णत: नष्ट-भ्रष्ट करने के पक्ष में थे, किन्तु स्पार्टा ने इतनी कटुता प्रदर्शित करना उचित नहीं समझा। परशियन आक्रमण के भीषण संकट के अवसर पर यूनान की रक्षा करने वाले एथेंस का सर्वथा विनाश स्पार्टा को उचित प्रतीत न हुआ। साथ ही कोरिन्थ व थीबिस की वृद्धिमान शक्ति पर अंकुश लगाने की दृष्टि से भी राजनीतिक शक्ति के रूप में एथेंस का बना रहना आवश्यक था। अत: स्पार्टा ने एथेंस के समक्ष संधि की निम्नलिखित शर्तें रखीं :—

१—एथेंस लम्बी दीवारों व पिरायस की किलेबंदी को ध्वस्त कर डाले; यह कार्य लिसाण्डर ने स्वयं अपनी उपस्थिति में आरम्भ करवाया।

२—एटटिका व सैलेमिस के अतिरिक्त विदेशी अधिकार क्षेत्र एथेंस से ले लिए जायें,

३—१२ युद्धपोतों को छोड़ कर शेष सब स्पार्टा को सौंप दिए जायें;

४—सभी निष्कासित व्यक्तियों को वापस बुला लिया जाय जिनमें थूसिडाइड्स व क्रीटियस (Critias) प्रमुख हैं,

५—स्पार्टा का मित्र बन कर वह स्पार्टा का नेतृत्व स्वीकार करे।

इन शर्तो को स्वीकार कर लिए जाने के पश्चात्, जेनोफान लिखता है, :—किलिसण्डर पिरायस गया और वहां उसने गाजे-बाजे के साथ किलेबन्दी व

ऊंची दीवारों को तुड़वाना आरम्भ किया, उस दिन को स्पार्टनों ने यूनान की स्वतंत्रता का पार्थमिक दिवस समझा।"

इस प्रकार एक महान् नगर राज्य एथेंस का पतन हो गया। जो शताब्दी एथेंस के उत्थान के साथ प्रारम्भ हुयी थी वह उसके पतन के साथ ही समाप्त हो गई।[1]

---

१. Thus the century which had begun so gloriously for Athens with the repulse of Persia, the century which under the leadership of such men as The mistocles, and Pericles had seen her rise to supremacy in all that was best and noblest in Greek life closed with the annihilation of the Athenian Empire:—Ancient Times, Dr. Breasted, p. 392.

"Athens was fallen, was fallen that great city." Hellas, C. E. Robinson, p. 123.

३ पिलोपोनीसियन युद्ध के पश्चात स्पार्टा का प्रभुत्व

★

पिलोपोनीशियन युद्धों में विजयी होने के पश्चात् स्पार्टा यूनान और एजियन द्वीपों का नेता बन बैठा। एथेंस के गर्व को चूर कर उसने यूनानी नगरों को एथीनियन प्रभुता से मुक्त कर दिया।

स्पार्टा का उत्थान

अब यह आशा की जाने लगी थी कि मुक्त यवन-नगर राज्यों को वह स्वतंत्र रहने देगा, किन्तु ऐसा नहीं हुआ। लिसाण्डर के नेतृत्व में स्पार्टा ने अपनी सीमाओं का प्रसार कर साम्राज्यवादी नीति की ओर चरण बढ़ाने आरम्भ कर दिये।

स्पार्टा सर्वदा से ही प्रजातंत्र का विरोधी रहा था। अतः अपनी विजयों से सुदृढ़ हो कर उसने यूनान के रहे-सहे लोकतंत्रों को भी ध्वस्त करना आरम्भ कर दिया व लिसाण्डर ने प्रत्येक राज्यों में कुलीनतंत्रीय शासन स्थापित करना शुरू किया। यूनानी राज्यों को अब ज्ञात हुआ कि एथेंस के नरम शासन के स्थान पर उन्होंने अपने ऊपर स्वेच्छाचारी स्पार्टन शासन स्थापित करने में स्वंय सहयोग दिया है। आयोनिआ और हेलस्पाण्ट के यवन नगर, जो अब स्पार्टा के अधीन चले आए थे, उनमें शासन के लिए स्पार्टा ने डीआर्की (Diearchy) की स्थापना की जिसको दस

स्पार्टन साम्राज्यवाद

कुलीनों की शासन समिति भी कही जाती है। प्रत्येक डिआर्की राज्य की सहायता के लिए स्पार्टन राज्यपाल (हर्मोस्ट, Harmost) और उसके अधीनस्थ एक सेना भी नियुक्त की गई थी। राज्यपाल कैलीबिअस (Callibeus) के अंतर्गत एक सेना एथेंस के

दुर्ग में भी रखी गयी थी। इस प्रकार स्पार्टा ने यवन नगरों के साथ वही साम्राज्यवादी नीति बरती जिसका विरोध करने के लिए वे पिलोपोनीसियन युद्ध लड़े थे।

स्पार्टन शासन की भीष्णता व स्वेच्छाचारिता एथेंस में स्थापित तीस स्वेच्छाचारियों के शासन से प्रकट हो जाती है।

तीस स्वेच्छाचारियों का शासन:–एथेंस में लिसाण्डर के परामर्श से क्रीटियस के नेतृत्व में तीस व्यक्तियों की एक सभा शासन के निमित्त नियुक्त की गयी जो तीस स्वेच्छाचारियों की सभा के नाम से प्रसिद्ध है। इस सभा के सदस्यों में थेरामिनीज का नाम प्रमुख लोगों में था। इन 'तीस' में से बहुत से ४११ ई० पू० की क्रांति में शत्रु का साथ दे चुके थे और एगोस्पोटामी की पराजय में भी इनका हाथ माना जाता था। इन्होंने एथेंस की लोकतंत्रीय जनसभा व जन न्यायालयों के समस्त अधिकार छीन कर ५०० कुलीनों की एक अन्य परिषद् (सिनेट) को सौंप दिये। इस प्रकार लोकतंत्र के ध्वंस के उपरांत 'तीस' ने अपने राजनैतिक विरोधियों को समाप्त करना आरम्भ कर दिया। स्पार्टन सेना की सहायता से समस्त नागरिक निशस्त्र कर दिये गए। शस्त्रास्त्र धारण करने तथा कांउसिल द्वारा न्याय पाने का अधिकार केवल ३००० कुलीनों तक सीमित रखा गया। प्रमुख विरोधी नागरिकों को निशस्त्र करने के बाद बिना किसी न्यायिक कार्यवाही के मृत्युदण्ड दिया गया। इस कार्य को पूरा करने का भार सैंटीरस के अधीनस्थ ११ व्यक्तियों की एक समिति को सौंपा गया। पुलिस के अतिरिक्त सामान्य नागरिकों पर भी प्रतिशोध का भार डाला गया; सॉक्रेटीज ने इस प्रकार का कार्य करने से इन्कार कर दिया था। इन हत्याओं से बचने के लिए अनेक नागरिक घर छोड़ कर भाग गये। अत्याचारों से स्वयं थेरामिनीज भी घबड़ा उठा; फलतः उसे विषपान कर प्राण गंवाने पड़े। उसकी मृत्यु के पश्चात् प्रतिक्रांति के भय से 'तीस' का अत्याचार और भी बढ़ गया, फलतः लोकतंत्र के समर्थकों की संख्या भी बढ़ती गयी, वे एथेंस से भाग कर कोरिन्थ, मेगारा और थीबिस में एकत्रित होने लगे।

'तीस' व लिसाण्डर के स्वेच्छाचारी शासन से यवन राज्यों में एथीनियन लोकतंत्र के पक्ष में प्रतिक्रिया प्रारम्भ हो गयी थी और वे भागे हुए एथेंसवासियों को शरण दे रहे थे। थीबिस की सहायता से थ्रेसिबुलस और एमाइटस (Amylus) ने अन्य ७० निष्कासितों का एक दल लेकर फाइली (Phylae) के किले पर आक्रमण कर के उसको

कुलीनों का लोकतंत्र के समर्थकों से संघर्ष

अपने अधिकार में कर लिया। "तीस" स्वेच्छाचारियों द्वारा स्पार्टा की सहायता से दुर्ग को वापस लेने का प्रयत्न किया गया परन्तु असफल रहा। एकार्नी (Acharnae) की लड़ाई (४०३ ई०पू०) में भी स्वेच्छाचारी मार भगाये गये। भागे हुए स्वेच्छाचारी इल्युसिस चले गये। शीघ्र ही थ्रेसिबुलस ने पिरायस पर भी अधिकार कर लिया। परन्तु एक्रोपोलिस पर कुलीनों का ही अधिकार बना रहा। लोकतंत्रवादियों से संघर्ष में 'तीस' के नेता क्रीटियस को प्राणों से हाथ धोना पड़ा और स्वेच्छाचारियों की सेना को पुनः इल्युसिस चला जाना पड़ा।

दस सदस्यों की नई समिति

"तीस" के सैनिक अब हत-प्रभ हो चले थे। 'तीन हजार' की समिति और ५०० की परिषद् में ही नहीं वरन् 'तीस' स्वेच्छाचारियों में भी परस्पर तनाव में वृद्धि होती जा रही थी। अतः नए शासन का आवश्यकता भी अनुभव होने लगी थी। इस प्रकार एक सार्वजनिक सभा में 'तीस' को अपदस्थ कर दस सदस्यों का एक निकाय नियुक्त किया गया जिसमें प्रत्येक जाति समूह का एक-एक प्रतिनिधि लिया गया। 'तीस' में से केवल एक सदस्य इनमें शामिल किया गया था। यह नई समिति भी क्रीटियस की चरम उग्रपंथी नीति के विरुद्ध होते हुए भी कुलीनतंत्रीय थी अतः थ्रेसिबुलस से समझौता न हो सका और गृहयुद्ध चलता रहा।

पाजेनियस

नई सदस्यों की समिति गठित होने के पश्चात् शीघ्र ही कुलीनों की सहायता के लिए लिसाण्डर व लीबिस (Libys) के अधीन स्पार्टन सेना व बेड़ा भी आ पहुँचा. परन्तु लिसाण्डर के उद्दण्ड व स्वेच्छाचारी व्यवहार से असंतुष्ट इफोर व राजा ने, जो उसकी महत्वाकांक्षाओं से भयभीत रहते थे, उसे वापस बुला कर (४०२ ई० पू०) पद मुक्त कर दिया। उसके स्थान पर स्पार्टा नरेश पाजेनियस को नियुक्त किया गया। पाजेनियस स्वेच्छाचारियों के पक्ष में न था अतः उसने १० नर्मदलीय सदस्यों की एक समिति गठित की तथा एथेंस की समस्या को सुलझाने के लिये उसने निम्नलिखित समझौता किया :—

१—एथेंस के निष्कासित व्यक्ति वापस बुला लिये जायें,

२—'तीस' और उनके निकटतम सहायकों को छोड़ कर शेष को क्षमा कर दिया जाय,

३— इल्युसिस को स्वतन्त्र कर दिया जाय और निश्चित अवधि के अन्दर लोग एथेंस अथवा इल्युसिस की नागरिकता का निश्चय कर लें,

(परन्तु दो ही वर्ष पश्चात् इल्युसिस पुनः एथेंस में शामिल कर लिया गया) ।

४—यह भी स्वीकार किया गया कि संविधान में संशोधन के लिये विधायकों की नियुक्ति की जाय और इस बीच प्रशासन ड्रेको व सोलोन के विधानों के आधार पर चलाया जाय । फलतः मताधिकार प्रथम तीन वर्गों तक ही सीमित रह गया । अन्ततः विधायकों ने शासन भार सम्हाल लिया और असीमित मताधिकार सहित पुरातन लोकतंत्र की स्थापना हुयी ।

स्पार्टा की शक्ति क्षीण

इस प्रकार अगामी १००-१२५ वर्षों तक के लिए एथेंस कुलीनतंत्रीय क्रांतियों की आशंका से प्रायः मुक्त हो गया । एथेंस में कुलीनों के पतन से अन्य यवन राज्यों को भी (जो स्पार्टा के अधीन थे) डीआर्की को उखाड़ फेंकने का प्रोत्साहन मिला । सम्भवतः स्पार्टा ने इस स्थिति को बनाये रखने का प्रयत्न भी नहीं किया; तथापि दीर्घ काल तक एजियन पर उसका आधिपत्य कायम रहा ।

स्पार्टा एवं परशिया का मनमुटाव

जहाँ मुख्य यूनान के राज्यों व एथेंस के क्षेत्र में स्पार्टा की स्थिति क्षीण होती जा रही थी वहीं परशिया के साथ भी उसके सम्बन्धों में परिवर्तन आता जा रहा था । पिलोपोनीसियन युद्ध के अन्तिम दिनों में किये गये समझौते के अनुसार हेलेस्पांट को छोड़ कर तटीय आयोनिअन प्रदेश परशिया को दे दिये गये थे । उक्त क्षेत्र में स्थित अधिकांश एथीनियन साम्राज्य के प्रांतों को स्पार्टा ने अपने आधीन रखा था और इनसे होने वाली १००० टेलेण्ट की वार्षिक आय को सैनिकों का वेतन चुकाने और अपना अधिकार बनाये रखने में उपयोग किया करता था । लेकिन अब इस धन का उपयोग उसने परशिया के आधिपत्य से आयोनिअन राज्यों को मुक्ति दिलाने में करना आरम्भ कर दिया ।

परशिया की अंतरिक स्थिति

इस बीच परशिया की स्थिति में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हो चले थे । सम्राट डेरियस द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् ४०४ ई० पू० में उसका ज्येष्ठ पुत्र आर्टाजर्कसेज द्वितीय सिंहासन पर आया । उसके छोटे भाई काइरस द्वितीय ने उसके विरूद्ध षडयंत्र रचा जो समय से पहले ही प्रकट हो गया और काइरस को मृत्युदण्ड दिया गया लेकिन काइरस की माता पैरीसैटिस ने बीच में पड़ कर उसे बचा लिया । काइरस सार्डिस चला

गया और अपने भाई से प्रतिशोध लेने की तैयारी करने लगा। उसकी गतिविधियों का संकेत देने के लिए टीसाफर्नीज भी सॉर्डिस भेजा गया।

सार्डिस पहुँच कर काइरस ने ऊँचे वेतन पर लगभग एक लाख एशियायी और १३ हजार यवन सैनिकों की सेना खड़ी की। यवन सैन्य का नेतृत्व क्लिआर्कस को सौंपा गया। स्पार्टा भी प्रच्छन्न रूप से उसकी सहायता कर रहा था तथा एथेंसवासी जेनोफोन भी उसके सहायकों में था। अपने इन यवन सहायकों को काइरस ने वास्तविक योजना से अनभिज्ञ रखा; अभियान का प्रकट उद्देश्य पिसिडिया (Pisidia) की पहाड़ी जनजाति का दमन करना बताया गया। सेना को साथ ले कर काइरस लीडिया व फ्रीजिया से होकर युफ्रेटीज नदी की ओर बढ़ता चला गया। यूनानी इतनी दूर आने को तैयार न थे अतः उन्होंने आगे बढ़ने से असहमति प्रकट की। किन्तु काइरस ने उन्हें अधिक वेतन दे कर बेबिलोन तक लाने में सफलता प्राप्त कर ली, जहाँ कुनक्सा के पास उसके बड़े भाई आर्टाजर्कसीज द्वितीय ने उसके इस सेना पर आक्रमण कर दिया (४०१ ई० पू०)। इस युद्ध में यद्यपि विजय काइरस की ही हुयी परन्तु उसे अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। ब्यूरी इसे यूनान के लिये सौभाग्यपूर्ण बतलाते हैं, क्योंकि काइरस एक योग्य नेता था उसकी महत्वाकांक्षाएँ और योग्यताएँ समान थीं; उसमें नीति और उत्साह का संतुलन था। उसके सम्राट होने पर यूनान पर संकट आ सकता था।

कुनक्सा की लड़ाई (ई० पू० ४०१)

काइरस की मृत्यु के उपरान्त यवन सैनिकों के सामने पूर्ण रूप से परशिया के साथ लड़ने का कोई कारण नहीं रह गया था। फिर भी परशिया को परास्त कर उन्होंने काइरस के सेनानायक एरियस को परशिया का सम्राट बनाने का बिचार किया परन्तु उसके इनकार करने पर उन्होंने आर्टाजर्कसीज से चुपचाप वापस चले जाने की अनुमति मांगी। परशिया के सम्राट ने उनकी मांग को स्वीकार कर उन्हें रास्ता दिखलाने के लिए एशियामाइनर के क्षत्रप टीसाफर्नीज को साथ भेज दिया। बेबिलोनिया व मीडिया को पार कर जब ये सैनिक बड़ी जैब [Zab] नदी के तट पर पहुँचे तो परशियनों के साथ उनका झगड़ा हो गया। टीसाफर्नीज ने विवाद सुलझाने के बहाने एक सभा बुलायी जिसमें उनके अनेक यवन सैनिकों व नायकों को मार

यूनानी सैनिकों की वापसी के समय विश्वासघात

डाला गया और सेनापतियों को परशिया भेज दिया गया जहाँ उन्हें मृत्युदण्ड दिया गया। इस प्रकार १०००० यवन सैनिक नेतृत्व विहीन हो चले। टीसाफर्नीज समझता था कि वे अब आत्मसमर्पण कर देंगे परन्तु उसे निराश होना पड़ा।

इस समय विश्वासघात से बचे हुए यवन सैनिक अपने गृहराज्य से १००० मील की दूरी पर थे। उनकी दशा बहुत नाजुक थी। वापस जाने का मार्ग बड़ा बीहड़ था और चारों ओर शत्रु राष्ट्र थे। इस दुरावस्था में युवक जेनोफोन ने आगे आकर यूनानियों को नया सेनापति चुनकर आगे बढ़ने को प्रोत्साहित किया। यह निश्चय किया गया कि बिना किसी हिंसात्मक कार्यवाही के वे आगे बढ़ते चलेंगे, किन्तु यदि शत्रु उनका मार्ग रोकेंगे तो वे तलवार से अपना पथ प्रशस्त करने के लिए तैयार रहेंगे। अतः वीर यवन आगे बढ़ते रहे। मैदान में टीसाफर्नीज ने उन्हें घेरना चाहा किन्तु वे अनजान पहाड़ियों में घुस गये। इस प्रकार जेनोफ़ोन के नेतृत्व में यवन सैन्यदल असीरिया और आर्मीनिया होते हुए, भूखे-प्यासे, पहाड़ी जातियों से लड़ते हुए अन्त में जिमनियास पहुँचे, जहाँ उनका मित्रवत् स्वागत हुआ। वहाँ से यवन उपनिवेश ट्रैपेजस व बाइजेंतियम होते हुए अन्त में वे लोग वापस यूनान पहुँचने में सफल हो गए। बहुत से सैनिकों ने स्पार्टा की सेवा करना स्वीकार कर लिया। जेनोफोन एथेंस पहुँच कर पुनः एशिया माइनर वापस चला गया ताकि परशिया से लड़ने की तैयारी कर सके। परन्तु एथेंस का परशिया के पक्ष में आ जाने से उसे निष्कासित होना पड़ा। २० वर्ष तक (३७० ई० पू० तक) वह बाहर ही रहा, परंतु उसके अंतिम दिन एथेंस में ही व्यतीत हुए। निष्कासन के दिनों में ही उसने 'दस हजार यवन सैनिकों की वापसी' का विवरण भी एनाबेसिस (Anabasis) नामक पुस्तक के रूप में तैयार किया और इफीसस में आर्टेमिस देवी के मंदिर के निर्माण की भी योजना बनायी।

एथेंसवासी जेनोफोन (Zenophone) का नेतृत्व

'दस हजार यवन सैनिकों की वापसी' की विशेषता:—काइरस के आक्रमण और दस हजार सैनिकों की वापसी के परिणाम अत्यंत प्रभावपूर्ण थे। यवन सैनिकों की कुनक्सा की लड़ाई में विजय और परशिया के बीच से निधड़क वापस लौट आने से यह प्रकट हो गया कि यूनान के समक्ष परशिया एक निर्बल राष्ट्र था। यूनानियों को अपनी इस सफलता से ज्ञात हो गया कि वे

परशिया को दबा सकते हैं। यह परशिया पर अलेक्जेण्डर की विजय की भूमिका थी।

परशिया के सैन्य शक्ति का महत्व यवनों की दृष्टि में इतना गिर गया कि ४०० ई० पू० में स्पार्टा ने मैत्री संबंध त्याग कर शत्रुतापूर्ण रूख अपना लिया। परशिया ने भी स्पार्टा के साथ युद्ध की आशंका को समझ कर टीसाफर्नीज को पुनः सार्डिस का क्षत्रप बना कर भेजा जिसने एशिया माइनर के यवन नगरों को रौंदना आरम्भ कर दिया। फलतः स्पार्टा व परशिया में युद्ध आरम्भ हो गया।

स्पार्टा व परशिया के बीच तनाव

एशिया माइनर के यवनों ने स्पार्टा से टीसाफर्नीज के विरुद्ध सहायता याचना की। स्पार्टा ने तुरन्त थिब्रान (Thibron) के नेतृत्व में एक सहायक सेना भेज दी किन्तु वह अयोग्य सिद्ध हुआ, अत: उसके स्थान पर डर्कीलिडस को सेनापति बना कर भेजा गया (३९९ ई० पू०) जिसने ट्रॉड को परशियनों से खाली करवा लिया और परशिया के कुछ नगर भी ले लिये। तत्पश्चात् उसने परशिया से सन्धि वार्ता आरम्भ की, परन्तु परशिया ने उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया और अपनी सैनिक तैयारियाँ करता रहा। उधर दूसरी ओर, डर्कीलिडस भी थ्रेस के आक्रमणों से सैस्टॉस आदि नगरों की रक्षा का प्रबन्ध कर विजय लाभ करता हुआ केरिया तक जा पहुँचा (३९७ ई० पू०)। स्पार्टा की ट्रॉड विजय से क्षत्रप फर्नाबाजस सशंकित हो गया, उसने टीसाफर्नीज के साथ मिल कर स्पार्टा के प्रतिरोध की तैयारी आरम्भ की और नौ-सेना का संगठन करना आरम्भ कर दिया।

स्पार्टा सहायता के लिए एशिया माइनर में

स्थिति की गम्भीरता को समझ कर इफोर ने और अधिक कठोर कदम उठाने की आवश्यकता अनुभव की। उन्हें एक योग्य नेता की आवश्यकता थी। अत: लिसाण्डर तो नहीं लेकिन उसका समर्थित प्रत्याशी इस कार्य के लिये नियुक्त किया गया। क्योंकि लिसाण्डर ने स्पार्टा के संविधान में यह परिवर्तन लाने का प्रयत्न किया था कि स्पार्टा का राज्य पद चले आ रहे दो वंशों तक ही सीमित न रहे। वह सेना पर भी अपना पूर्ण नियंत्रण स्थापित करना चाहता था और उसके निमित उसने आरेकल का समर्थन प्राप्त करने का भी विफल प्रयास किया। अतः उसे स्पार्टा

सेनापति स्पार्टा नरेश एजेसिलॉस

की आंतरिक राजनीति के लिये संकटप्रद समझ कर हेलेस्पॉण्ट की ओर भेज दिया गया (३९६ ई० पू०)। डर्कीलिडस के स्थान पर स्पार्टा-नरेश एजेसिलॉस (लिसाण्डर का प्रत्याशी) सेनापति चुना गया जो एक योग्य नायक सिद्ध हुआ।

परशिया ने भी एथेंस के सेनापति कॉनन को अपनी ओर मिला कर नौसेना का नेतृत्व सौंप दिया। जहाजी बेड़ा साथ लेकर वह भी केरिया पहुँच गया जहाँ स्पार्टा की सेना पहले से ही डटी हुयी थी।

एजेसिलास, सार्डिस के प्रवेशद्वार पर

सेनापति नियुक्त होने के कुछ ही समय उपरान्त एजेसिलास ने समुद्र पर नियंत्रण स्थापित कर लिया और इस प्रकार वह टीसाफर्नीज व फर्नाबाजस को मिलने से रोके रहा। धीरे-धीरे प्रगति करता हुआ वह फ्रीजिया और फिर परशिया के प्रवेशद्वार सार्डिस तक पहुँच गया (३९६–९५ ई० पू०)। यह आघात टीसाफर्नीज के लिए प्राणघातक सिद्ध हुआ।

विराम-संधि

क्षत्रप टीसाफर्नीज के बारंबार की पराजय से सशंकित होकर आर्टाजर्क्सीज ने उसको मौत के घाट उतरवा दिया, तथा उसके स्थान पर टिथ्रास्टस (Tithraustas) को सार्डिस का नया क्षत्रप नियुक्त किया गया जिसने एजेसिलास के साथ ६ माह के लिये विराम-संधि कर ली। अब एजेसिलास ने पुनः फ्रीजिया की ओर बढ़ना आरम्भ किया परन्तु क्षत्रप फर्नाबाजस की शूरता व ईमानदारी से प्रभावित होकर उसे अपना मित्र बना लिया। अपनी विजयों के फलस्वरूप यद्यपि एशिया माइनर को मुक्त कराने में वह सफल न हो सका तथापि आयोनिआ को अपनी ओर आकृष्ट कर एक विशाल सैन्य (२००० सैनिक) एकत्रित करने व इफोर की अनुमति से १२० जहाजों का एक बेड़ा अपने बहनोई पिसाण्डर (Pisander) के नेतृत्व में संगठित करने में सफल हो गया। परन्तु इस शक्ति का प्रयोग करने का अवसर उसे प्राप्त न हो सका। जब वह परशिया के हृदय प्रदेश पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा था उसी समय स्पार्टा की गृहस्थिति अशांत होने की सूचना मिली, और वह वापस बुला लिया गया। स्पार्टा में बहुसंख्यक दासों के विद्रोह की आशंका भी उत्पन्न हो चली थी और मित्र-राज्य भी स्पार्टा के प्रतिकूल जाने लगे थे। उसका प्रायो

स्पार्टा में गृहस्थिति निम्रा की मुक्ति के संग्राम का नारा भी अब एजियन क्षेत्र अशांन्त होने लगी पर स्पार्टा के १० वर्ष के कुशासन को और अधिक वहन कराने में सफल न रहा। यवन राज्यों में अब असन्तोष तीव्र रूप धारण करने लगा था इसका कारण स्पार्टा का स्वेच्छाचारी शासन ही था। प्रमुख यवन राज्यों–एथेंस, थीबिस, कोरिन्थ व अर्गास ने अपनी स्वतंत्रता बनाये रखने के लिए एक संघ स्थापित कर लिया था। स्पार्टा के इन शत्रुओं को परशिया के क्षत्रप टिथ्रास्टस ने और भी उभाड़ा और उन्हें धन व युद्धपोत दे कर सहायता पहुंचाई।

अशान्त गृह स्थिति से उत्पन्न युद्ध

हलियारतुस का युद्ध (Haliartus) :—ई० पू० ३९५ में फोसिस व लोक्रिस के बीच सीमाविवाद उठ खड़ा हुआ, जिसमें स्पार्टा ने फोसिस का पक्ष लेकर लोक्रिस के मित्र बोयोशिया (थीबिस) पर आक्रमण कर दिया। दक्षिण की ओर से पाँजेनियस व पश्चिमोत्तर से कोरिन्थ की खाड़ी को पार कर पिसाण्डर को आक्रमण करने के लिए भेजा। थीबिस ने इस आक्रमण का प्रतिरोध करने के लिये अपने पुराने शत्रु एथेंस से संधि कर ली और इस प्रकार हलियारतुस के मैदान में होने वाली लड़ाई में स्पार्टन सेना को बुरी तरह पछाड़ा। लिसाण्डर इस लड़ाई में वीरगति को प्राप्त हुआ। फलतः पाँजेनियस को थीबिस से संधि कर बोयोशिया से पीछे हट जाना पड़ा। इस प्रकार उत्तरी यूनान स्पार्टा के घृणित आधिपत्य से मुक्त हो गया।

इस युद्ध में पराजय का कारण पाँजेनियस पर युद्ध में लापरवाही का आरोप लगाया गया जिससे स्पार्टा वापस न जाकर वह टीगिया चला गया; वहीं उसने अपना अन्तिम जीवन व्यतीत किया।

कोरिन्थ की लड़ाई :—हलियारतुस के युद्ध के पश्चात् थीबिस, एथेंस, कोरिन्थ व आर्गास की सेनाएँ मुख्य नगर स्पार्टा पर आक्रमण के हेतु एकत्रित हुयीं स्पार्टा ने भी प्रतिरोध की प्रबल तैयारियाँ कीं। कोरिन्थ में नीमिया (Nimea) नामक स्थान पर दोनों दलों में भीषण संघर्ष हुआ जिसमें स्पार्टा की विजय हुई और थीबिस,, एथेंस आदि बुरी तरह पछाड़े गये; परन्तु यह विजय थलसेतु पर नियंत्रण करने के सिवाय और किसी प्रकार निर्णायक सिद्ध न हो सकी।

टिथ्रास्टस का वह उद्देश्य पूरा हो रहा था जिसके लिये उसने टिमो-

क्रेटिज को ५० टैलेण्ट दे कर यूनान भेजा था। यूनान के राज्य परस्पर संघर्षरत हो चले थे और इसी गृह युद्ध की सूचना स्पार्टा ने एजेसिलास को एशिया माइनर में भेजी थी। जिससे एजेसिलास वापस लौट रहा था।

कोरोनिया की लड़ाई (३९४ ई० पू०)—वापसी यात्रा में एजेसिलास शत्रु-राष्ट्र थेसाली से होता हुआ किसी प्रकार कोरिन्थ की लड़ाई के एक माह पश्चात् बोयोशिया पहुँचा। एजेसिलास के बोयोशिया पहुँचने के पहले दो लड़ाइयाँ समाप्त हो गयी थी। वहाँ से होता हुआ वह कोरोनिया पहुँचा। वही उसे क्निडस की लड़ाई (१४ अगस्त ३९४ ई० पू०) की सूचना मिली। हलियारतुस के निकट कोरोनिया (Choronea) में स्पार्टा के शत्रु मित्र-राष्ट्र युद्ध के लिए सन्नद्ध मिले। अतः वही पर दोनों में भीषण संघर्ष हुआ। यद्यपि विजय-श्री एजेसिलास के ही हाथों पड़ी लेकिन वह बुरी तरह आहत हुआ और स्पार्टा की शक्ति को इतनी क्षति पहुँची कि वह विजय का कोई लाभ न उठा सका। केवल बोयाशिया को खाली कर उसे वापस लौटने का मार्ग मात्र मिल गया। मित्र राष्ट्रों ने अब उसे पिलोपोनेसस तक ही सीमित रखने की योजना बनाई। अतः कोरिन्थ के थलसेतु तक ही संघर्ष का क्षेत्र सीमित रहा। कई वर्षों तक कोरिन्थ ही संघर्ष का केन्द्र बना रहा और युद्ध का क्रम चलता रहा, इसी बीच एक बार उसने अपनी लम्बी दीवारें व बन्दरगाह लीकियम (Lyceium) भी गंवा दिया। परन्तु एथेंस के सेनापति इफीक्रेटीज (Iphicrates) के नेतृत्व में आने वाली सहायक सेना पेलेटेस्टस (Peletastes) की सहायता से उसने स्पार्टा के घेरे से मुक्ति पाई। अतः स्पार्टा की प्रतिष्ठा को बड़ा आघात पहुँचा। उसकी ६०० सैनिकों की पूरी बटालियन ध्वस्त कर दी गयी। उत्तरी यूनान पर से उसका आधिपत्य समाप्त हो गया। एशिया की विजय का स्वप्न पहले ही भंग हो चुका था; अब पिलोपोनेसस में भी अपनी स्थिति को यथावत् रखना उसे कठिन प्रतीत हो रहा था। परशिया की नौसेना ने उसे एजियन से भी भगा दिया था।

क्निडस का युद्ध (३९४ ई० पू०):—इसी वर्ष कोरोनिया के युद्ध के एक रात पहले ही स्पार्टा क्निडस के युद्ध में भी कॉनन द्वारा परास्त किया गया। कॉनन एथेंस व परशिया के संयुक्त बेड़े का सेनापति था। उसने रोड्स को स्पार्टा के विरूद्ध विद्रोह के लिये भड़काया और मिस्र के एक शासक द्वारा लैसिडेमॉन की सहायता के लिए भेजा गया रसद लाने वाला एक जहाज भी

पकड़ लिया। एजेसिलॉस ने उसका प्रतिरोध करने के लिए पिसान्डर को भेजा। पिसाण्डर बड़ी वीरता से लड़ा किन्तु उसके जहाज पर अधिकार कर शत्रुओं ने उसे मार डाला। स्पार्टा के लगभग आधे जहाजों का इस युद्ध में विनाश हो गया। इस क्षति से स्पार्टा का लगभग सारा समुद्री राज्य ही नष्ट हो गया। एजियन द्वीपों व एशिया माइनर के तटवर्ती नगरों से स्पार्टान शासक मार भगाये गये। उन नगरों पर परशिया का आधिपत्य स्थापित हो गया। विनडस की विजय के फलस्वरूप एथेंस का पुनरूद्धार हुआ।

एशिया माइनर पर परशिया का प्रभुत्व एवं एथेंस का पुनरूद्धार

कॉनन की सफलता से प्रसन्न हो कर परशिया ने एथेंस को अपनी लम्बी दीवारों और पिरायस की किलेबन्दी का पुर्ननिर्माण करने में सहायता पहुँचाई। फलतः दो वर्षों के अन्दर एथेंस ने पुनः पर्याप्त शक्ति संचित कर ली। एजियन राज्य अब एथेंस की ओर उन्मुख हो गये। रोड्स, इरीट्रिया आदि के साथ उसने संधि कर ली। लेमनॉस, इम्ब्रॉस व स्काइरॉस पर पुनः अधिकार कर लिया। डेलॉस व कियॉस आदि भी एथेंस से मिल गये। इन सफलताओं के उपलक्ष में कॉनन ने पिरायस में देवी एफ्रोडाइट के मंदिर का निर्माण करवाया।

अन्तालकिडस (Antalcidus) की संधि (३८६ ई० पू०):— शत्रुओं से पददलित हो कर स्पार्टा ने परशिया से सहायता लेनी चाही। परशिया के अधीनस्थ एशिया माइनर से स्पार्टन आधिपत्य समाप्त हो जाने से दोनों शक्तियों के बीच अब संघर्ष का कोई कारण न रह गया था। परशिया के इस भय से कि एजियन कहीं एथेंस के आधिपत्य में न चला जाय, व एथेंस द्वारा सैलेमिस के विद्रोही शासक की मदद किये जाने से भी परशिया सशंक हो चला था। स्पार्टा को यह एक सुअवसर मिल गया; इस अवसर पर स्पार्टा ने अपने प्रतिनिधि अन्तालकिडस (Amtalcidus) को सूसा भेज दिया। उसने क्षत्रप टिरिबाँजस (Tiribazus) के समक्ष संधि की निम्नलिखित शर्तें रखीं :—

१. एशिया के यवन नगर परशिया के अधीन रहें, और

२. अन्य यवन नगरों को स्वतंत्र कर दिया जाय।

(इसका उद्देश्य बोयोशिया में थीबिस की स्थित को नीचे गिराना और ३९२ ई० पू० में स्थापित कोरिन्थ व आर्गास के संघ को तोड़ना था)।

परन्तु उसी समय टिरिबाजस के स्थान पर स्पार्टा के प्रति उदासीन

स्ट्रूथस (Struthas) को क्षत्रप नियुक्त किये जाने से संधि कुछ वर्षों के लिए टल गयी।

परशिया व स्पार्टा की संयुक्त शक्ति की आशंका से एथेंस ने भी कानन को अपना दूत बना कर सूसा भेजा था परन्तु उसे कैद कर लिया गया और साइप्रस में ही उसकी मृत्यु हो गयी। स्पार्टा में भी एथेंस के दूत एण्डोसिडीज को सफलता न प्राप्त हो सकी। कुछ वर्षों तक एथेंस व स्पार्टा विभिन्न क्षेत्रों में संघर्षरत रहे परन्तु कोई निर्णायक विजय उन्हें न मिल सकी।

एथेंस की पुनः सफलता व थ्रेसिबुलस की मृत्यु ई० पू० ३८८.

एथेंस को थ्रेसिबुलस के नेतृत्व में उल्लेखनीय सफलता यह प्राप्त हुयी (३८९ ई० पू०) कि थैसॉस, सैमोथ्रेस, चर्सोनियस, बाइजेंतियम व चाल्सीडान को अपनी ओर मिलाने में, और इस प्रकार हेलेस्पाण्ट पर नियंत्रण स्थापित करने में उसे सफलता प्राप्त हो गयी। लेस्बास से भी स्पार्टन हार्मोस्ट को मार भगाया गया और वहां लोकतंत्र की स्थापना की गयी। क्लैजोमिनी में भी एथेंस को सफलता ही हाथ लगी। अब कृष्ण सागर के व्यापार मार्ग के स्वतंत्र उपयोग का अधिकार एथेंस को प्राप्त हो गया। इन्हीं विजयों के मध्य पैम्फीलिया में थ्रेसिबुलस की हत्या हो गयी (३८८ ई० पू०)। कॉनन के पश्चात् एथेंस के लिए यह दूसरी अपूर्णीय क्षति थीं। थेसिब्रुलस के बिषय में ब्यूरी ने लिखा है कि उसने एथीनियन लोकतंत्र को एक नया जीवन प्रदान किया था और उसमें समझौते व संयम की एक नयी भावना फूक दी थी। एक विवेकपूर्ण नागरिक के रूप में वह हमें सर्वाधिक प्रभावित करता है। वह उन लोगों में था जो सभी के विश्वासपात्र होते हैं और किसी पूर्वाग्रह या महत्वाकांक्षा से युक्त नहीं होते। उसके गुण बौद्धिक की अपेक्षा नैतिक अधिक थे[1]। थ्रेसिबुलस के मृत्यु के पश्चात् स्पार्टा को क्षणिक विजय अवश्य प्राप्त हुयी किन्तु अंततः इफीक्रेटीज ने पुनः हेलेस्पॉण्ट व बॉसफोरस पर नियंत्रण स्थापित कर लिया।

स्थिति के इस प्रकार अपने प्रतिकूल हो जाने पर स्पार्टा ने पुनः अन्तालकिडस को सूसा भेजा। अब फर्नाबाजस भी स्पार्टा से संधि करने के पक्ष में आ गया था। परशिया के साथ ही सिराक्यूज के निरंकुश शासक डायोनीसस से भी अन्तालकिडस २० जहाजों की सहायता प्राप्त करने में सफल हो गया। फलतः पुनः हेलेस्पाण्ट में एथेंस को नीचा दिखाने

१. A History of Greece J. B. Bury, P. 535.

सम्राट की संधि
ई० पू० ३८७.

में उसे सफलता मिल गयी। अब एथेंस को भी संधि के लिए विवश होना पड़ा। ३८७ ई० पू० में यवन राज्यों को सारडिस में निमंत्रित किया गया जहां टिरीबाजस ने सम्राट की यह घोषणा पढ़ कर सुनाई :—

"सम्राट आर्टाजर्कसीज यह उचित समझता है कि एशिया के यवन नगर तथा साइप्रस व क्लेजोमिनी उसके अधिकार में रहें। उसकी इच्छा है कि लेमनॉस, इम्ब्रॉस व एकाइरॉस को छोड़कर, जो एथेंस के अधिकार में हैं व बने रहेंगे; शेष यवन राज्य स्वतंत्र रहें। यदि कोई सम्बंद्ध पक्ष इस संधि को अस्वीकार करता है तो मैं, आर्टाजर्कसीज, अपने साथियों सहित उसके विरूद्ध जल, थल और धन एवं जहाजों से युद्ध करूँगा।

इसी को सम्राट की शांति-संधि (Kings peaee) "सम्राट की संधि" नाम से भी पुकारा जाता है।

इस संधि के परिणामस्वरूप जहां एक ओर एशिया के यवन-नगर परशिया के नियंत्रण में चले गयें वहीं एथेंस का नये एजियन संघ का स्वप्न भी भंग हो गया; थीबिस को बोयोशिया के अन्य राज्यों पर से अधिकार का त्याग करना पड़ा; कोरिन्थ व बोयोशिया का सम्बन्ध विच्छेद हो गया। उधर स्पार्टा अपने हित में शर्तों का पालन कराने के निमित तत्पर था।

"सम्राट की संधि
का परिणाम

उसकी सहायता के लिए परशिया उपस्थित था। उसके पुराने शत्रुओं की की एकता नष्ट हो चुकी थी। अब वह धीरे-धीरे अपनी खोई हुयी प्रभुता को प्राप्त कर सकता था। अपने इस अवसर का उपयोग वह उसी धृष्टता से करने लगा जैसा लिसाण्डर के समय में किया था। इसी को लक्ष्य करके राबिन्सन ने लिखा है कि शीघ्र ही यवन-राज्यों को 'सम्राट की संधि' के नाम से किये गये सौदे की हानि समझ में आने लगी। उन्हें ज्ञात हो गया कि यह संधि शांति की जन्मदात्री न थी क्योंकि यह अपने साथ एक तलवार (स्पार्टा की सहायता के लिए) ले कर आयी थी। स्पार्टा ने बड़ी नीचता के साथ एशिया के यवनों को परशिया के हाथ बेच डाला था और घरेलू संघर्षो को सुलझाने के लिए परशिया की सहायता स्वीकार कर ली थी। परशिया के साथ मिलकर उसका ध्येय एथेंस व परशिया के सम्बन्ध तोड़ कर स्वयं परशिया की सहायता से यूनान में अपने प्रमुत्व का मार्ग प्रशस्त करना था।

स्पार्टा के प्रभुत्व का अन्त

परशिया की नीतिः–उक्त संधि के पश्चात् परशिया ने यूनान के आंतरिक संघर्षों में यदाकदा हस्तक्षेप करना प्रारम्भ किया। पिलोपोनेसियन युद्ध के अंतिम वर्षों में प्रारम्भ सूसा की परम्परागत नीति ने अपना काम कर लिया था। आर्थिक व सैनिक सहायता दे कर तथा षडयंत्रों द्वारा यवन राज्यों को आपस में लड़ा कर उसने उन्हें निस्तेज कर दिया था; अब इस संधि के द्वारा वह अधीनस्थ राज्यों के विद्रोह दमन में मदद लेना चाहता था। परशिया की इस सफलता को लक्ष्य कर ही राविन्सन ने परशिया को ही पिलोपोनीसियन युद्धों का विजेता बतलाया है !

साइप्रस का विद्रोह ई० पू० ३९८

साइप्रस पर शासन करने वाले यूनानी राजकुमार इवागोरस ने ई० पू० ३९८ में विद्रोह कर दिया था। मिस्र, जो ४०५ ई० पू० में स्वतंत्र हो चुका था, उसकी सहायता कर रहा था (३८६–८४ ई० पू०) तथा एथीनियन सेनापति चैब्रियस भी उसका सहायक था। परन्तु इसी बीच एक जलयुद्ध में पराजित होकर इवागोरस को सैलेमिस में ही बंधा रह जाना पड़ा; परन्तु शीघ्र ही पलड़ा कुछ इस तरह पलट पड़ा कि परशिया को युद्ध-नीति त्याग कर समझौते की नीति अपनानी पड़ी। टिरीबाजस ने इवागोरस को इस शर्त पर स्वतंत्र शासक मानने का प्रस्ताव रखा कि इवागोरस परशिया के अधीनस्थ राज्य की भाँति कर प्रदान करता रहे। इवागोरस ने इससे इन्कार किया। अन्त में टिरिबाजस के क्षत्रप-पद से हटाये जाने पर नए क्षत्रप ने इवागोरस की शर्तें को स्वीकार कर लिया (३८१ ई० पू०)। कुछ ही समय पश्चात् (३७४ ई० पू०) एक षडयंत्र में इवागोरस मारा गया। तत्पश्चात् उसका पुत्र निकोक्लीज, जो स्वयं अखिल-यवन-विचारधारा वाला था, उत्तराधिकारी नियुक्त हुआ। निकोक्लीज यवन दर्शन व कला आदि का प्रेमी होने के साथ ही अखिल-यवन-विचारधारा के प्रचारक ऐथीनियन वक्ता आइसाक्रेटीज (Isocrates) के मित्रों में से था।

शीघ्र ही स्पार्टा की सहायता से परशिया ने मिस्र में कई बार असफल होने के बाद विद्रोह का दमन कर दिया। किन्तु इसके परिणाम परशिया के लिये अशुभ सिद्ध हुए। परशियन साम्राज्य की अस्थिरता एक बार पुनः प्रकट हो गयी।

यूनान की स्थिति:—इसी बीच यूनान सम्राट की संधि के प्रभाव आशा के विपरीत दृष्टिगोचर हो रहे थे। यह सत्य है कि इस संधि से एशिया माइनर के यवन-नगरों को भौतिक लाभ हुए थे जिनसे उनका राजनैतिक क्षोभ थोड़ा बहुत संतुलित हो गया था! पूर्व के साथ व्यापार मार्ग के पुन: उन्मुक्त हो जाने से उनका समृद्धि का मार्ग भी प्रशस्त हो चला था। रोड्स, इफीसस, सेमॉस, बिनडस व इआॅसस (Iasus) में मैत्री संघ की स्थापना हुयी। सिराक्यूज के भय से जैकिन्थस व क्रोटोन ने भी संघ की स्थापना की। इसका प्रसार सिजिकस व लैम्पास्कस तक हुआ। इससे ब्यूरी का अनुमान है कि :—

यवन नगरों में स्वतंत्रता की रक्षा के लिए एक सौहार्द की भावना अवश्य विद्यमान थी परन्तु मुख्य यूनान की स्थिति भिन्न थी। संधि के बाद के समय में उसकी स्थिति इतनी दयनीय हो चली थी जितनी उसके इतिहास में कभी न रही होगी। लोभ तथा पारस्परिक द्वेष का ज्वर, जिसमें यूनान के राज्य लगभग अर्द्ध-शती से पीड़ित थे, अभी शमित न हो सके थे। जीवन के सभी क्षेत्रों में स्वार्थ को ही सर्वोपरि स्थान प्राप्त हो चला था। व्यक्ति और राज्य कोई भी इससे अछूता न था।

स्पार्टा ने इस स्थिति को जो वैतनिक सैनिकों तथा समुद्री लुटेरों के कारण और भी भ्रष्ट हो गयी थी, नियंत्रित करने का कोई प्रयत्न नहीं किया। इसके विपरीत अवसर आने पर वह इन सबका अपनी स्थिति दृढ़ करने के लिये उपयोग करने को प्रस्तुत रहता था। आक्रामक नीति में स्पार्टा सबका अगुआ था। उसका ध्येय अब यूनान में हर सम्भव अवसर पर स्पार्टा परस्त दलों को शासन में प्रमुख बनाना था। इस नीति का प्रथम उपयोग आर्कैडिया के मेण्टिनी नगर पर किया। ३८५ ई० पू० में बिना किसी कारण के स्पार्टा ने उस पर आक्रमण कर दिया। बाढ़ग्रस्त नदी का रूख कच्ची ईंटों वाले अरक्षित किले की ओर करके उनकी किलेबन्दी नष्ट कर दी गयी। नगर पर अधिकार करने के पश्चात् नगर-वासियों को गाँवों की ओर खदेड़ दिया गया और उन्हें कुलीनतंत्र स्वीकार करने को बाध्य किया गया। फ्लियस नामक नगर में भी कुछ निष्कासित राजनीतिज्ञों के आमंत्रण पर कुलीनतंत्र की स्थापना की गयी (३८१–७६ ई० पू०)। इस प्रकार स्पार्टा के आक्रामक प्रयत्नों से पिलोपोनेसस लगभग दब गया। अब स्पार्टा ने उत्तरी यूनान की ओर ध्यान दिया। थीबिस पहले ही अपमानित हो चुका था क्योंकि

स्पार्टा का मेण्टिनी पर आक्रमण

संधि के अनुसार बोयोशियान संघ के सदस्य-राज्यों को स्वायत्त.शासन के अधिकार प्रदान कर दिये गये थे।

उत्तर में चाल्सिडिक प्रायद्वीप के नगरों ने ओलिन्थस के नेतृत्व में एक संघ की स्थापना की थी। इसका ध्येय मैसिडोनिया से अपनी रक्षा करना था।

चाल्सिडिक संघ

३८२ ई० पू० में स्पार्टा, ओलिन्थस के दो पड़ोसी नगरों एकेन्थस व अप्पोलोनिया के आग्रह से उस पर आक्रमण कर दिया। दो वर्ष के घेरे के उपरांत पॉलिबायडॉस के नेतृत्व में स्पार्टन सैन्य ओलिन्थस पर आधिपत्य करने में सफल हो गई और वहाँ का संघ भंग कर दिया गया (३७९ ई० पू०)।

थीबिस के विरुद्ध स्पार्टा की धोखा-धड़ी

इस संघ के विरुद्ध प्रयाण के समय स्पार्टा के फीबिडास (Phoebidas) की सहायता से थीबिस के स्पार्टा-समर्थक कुलीन दल ने लिआनटिडस (Leontidas) के नेतृत्व में थेस्मोफोरिया (Thesmophoria) नामक उत्सव के अवसर पर, जब कि किले में केवल स्त्रियाँ रह जाती थीं, उस के दुर्ग कैडमिया पर धोखे से अधिकार कर लिया एवं वहाँ स्पार्टा-समर्थक शासनतंत्र की स्थापना की गयी। केवल दिखावे के लिये स्पार्टा ने फीबिडास पर १ लाख ड्रेक्मी का अर्थदण्ड आरोपित किया। लिआनटिडस के विरोधी इस्मेनियस (Ismenius) को मृत्युदंड दिया गया। प्लेटेइआ का जीर्णोद्धार किया गया। प्रत्येक बोयोशियन नगर में संकीर्ण कुलीनतंत्र की स्थापना की गयी। थीबिस के दुर्ग कैडमिया में स्पार्टन सेना की छावनी रखी गयी। प्रतीत होता था कि सदैव की अपेक्षा स्पार्टा का प्रबल प्रभुत्व उत्तरी यूनान पर स्थापित हो जायेगा। प्रतिक्रांति के विरुद्ध स्पार्टा ने हर सावधानी बरती थी। स्पार्टा द्वारा पोषित लिआनटिडस ने अपने विरोधियों को समाप्त कर या निष्कासित कर अपनी स्थिति दृढ़ कर ली। लेकिन तीन वर्षों में ही बहिष्कृत लोगों के एक दल ने जिसमें मेलॉन व पिलोपिडस प्रमुख थे, एथेंस में प्रतिक्रांति की योजना तैयार कर ली।

स्पार्टा को अपने किये का भुगतान शीघ्र ही मिल गया। थीबिस की गुड़िया सरकार बहुत ही स्वेच्छाचारी व निष्ठुर थी। उसके पॉलेमार्क-गण बहुत ही अत्याचारी थे। पॉलेमार्क का एक सचिव फिलिडस (Philidas) निष्कासित पिलोपिडस से मिल गया। उन्होंने मिल कर कुलीनों

थीबिस से स्पार्टा द्वारा निष्काषित पिलोपिडस का षडयंत्र

को समाप्त कर स्पार्टन सत्ता को समाप्त करने के लिये षडयंत्र रचना की। जाड़े की एक शाम को पिलोपिडस अपने सात साथियों के साथ शिकारियों के वेश में थीबिस में प्रवेश कर गया। उस रात व दूसरे दिन वे चेरान नामक एक व्यक्ति के घर में छिपे रहे। अगले दिन फिलिडस ने पालेमार्क-गणों को एक सहभोज पर आमंत्रित किया और थीबिस की सर्वसुन्दर रमणियों से मिलाने का लोभ दिया। इस प्रलोभन में आर्कियस व फिलिप्पस नामक दोनों आर्कन भोज में उपस्थित हुए यद्यपि उसी शाम को किसी प्रमुख आयुक्तों में से एक ने आर्कियस को पत्र भेज कर षडयंत्र की सूचना दे दी थी, परन्तु उसने "काम की बात कल" कह कर पत्र को बिना खोले ही तकिया के नीचे रख दिया। दावत समाप्त होने पर पिलोपिडास और उसके साथी महिलाओं की पोशाक में पर्दे से आवृत्त प्रस्तुत किये गए। जैसे ही मदिरा के नशे में मदहोश पालेमार्क ने उन के आवरण को हटाना चाहा, चमकते हुए खड्ग उनके सीनों में भोंक दिये गये। तत्पश्चात् लिआनटिडस भी षडयंत्रकारियों का शिकार हुआ और कारागार के अधीक्षक को मार कर राजनीतिक बन्दी भी मुक्त करा लिये गये। इसी बीच अन्य निष्कासित व्यक्तियों व कुछ एथीनियन सेना को भी बुला लिया गया। जनता को भी शस्त्र दिये गये और सबने मिल कर कैडमिया की स्पार्टन छावनी पर धावा बोल दिया। स्पार्टन सेना हार गयी और उसने आत्म समर्पण कर दिया। इस प्रकार विप्लव सफल हुआ और ३७९ ई० पू० में ही थीबिस स्वतंत्र हो गया। थीबिस में २ पालेमार्क नियुक्त किये गये व पुन: लोकतंत्रीय शासन विधान लागू किया गया। स्पार्टा ने पुन: थीबिस पर अधिकार के प्रयत्न किये परन्तु सफलता न मिली। थीबिस अब बोयोशियान नगरों पर प्रमुत्व स्थापित करने के लिये स्वतंत्र था। उधर एथेंस भी नाविक शक्ति बढ़ा रहा था। अन्तालक्डिस की सन्धि के पश्चात् भी एजियन क्षेत्र में एथेंस का प्रभाव किसी प्रकार घट न सका था। वाइजैंतियम, क़ियास, मीटिलिनी, और रोड्स के साथ उसने पुन: घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित कर लिये।

थीबिस स्वतंत्र हो गया ३७९ ई० पू०

द्वितीय एथिनियन संघ की स्थापना एवं उसका उद्देश्य

थीबिस के विप्लव की सूचना पाकर इफोर्स ने क्लिऑम्ब्रोटस को थीबिस की ओर भेजा था परन्तु मेगारा में ही उसकी भेंट हार कर वापस लौट रही स्पार्टन सेना के साथ हो गयी। तत्पश्चात् वह भी मित्र राज्य थेस्पिये (Thespiae) की रक्षा के निमित्त एक सेना, सेनापति स्फोड्रियस के आधीन छोड कर वापस चला गया। स्फोड्रियस ने धोखे से एथेंस के बन्दरगाह पिरायस पर अधिकार करना चाहा परन्तु उसका यह प्रयत्न सफल न हो सका। एथेंस उसके इस दुर्व्यवहार के लिये स्पार्टा से शिकायत कर दण्डित कराना चाहता था लेकिन जब स्पार्टा ने उसे दण्डित करने के स्थान पर क्षमा कर दिया तो क्रोधित होकर एथेंस ने थीबिस से संधि कर ली और स्पार्टा पर आक्रमण की तैयारी करने लगा (३७८ ई० पू०)।

संघ के स्थापन का कारण स्पार्टा व एथेंस का मनमुटाव

परशिया के विरुद्ध जिस तरह एथेंस ने पहले डेलॉस के संघ की स्थापना की थी उसी तरह इस बार स्पार्टा के विरूद्ध एक नया संघ स्थापित किया। इस संघ में उन सब राज्यों को सदस्य बनने को कहा गया जो परशिया के अधिकार में न थे और स्पार्टा की पराधीनता का जुआ उतार फेंकना चाहते थे। यह एक रक्षात्मक संघ था परन्तु यूनान की मुख्य भूमि के राज्यों से निराशाजनक ही उत्तर प्राप्त हुए क्योंकि उनके मत में एथेंस का बेड़ा प्रतिरक्षा के लिये अपर्याप्त था; तब भी समुद्री शक्ति वाले राज्यों ने बड़ा उत्साह प्रदर्शित किया। लगभग ७० राज्य इस संघ के सदस्य बने जिनमें बाइजेंतियम, मिटिलिनी, मेथिम्ना, रोड्स, यूबोइआ के नगर, थीबिस, इपीरस, व थेसाली (फीरी (Phereae)—के राजकुमार जैसान के नेतृत्व में) आदि प्रमुख थे। संघ का नेता एथेंस था; संघीय कोष व सेना का नियंत्रण एथेंस को ही प्राप्त था परन्तु नेतृत्व की पुरानी त्रुटियों की पुनरावृत्ति न होने देने के लिए वह सचेत रहा। अत: संघ के सभी सदस्य स्वतंत्र व समान माने गये। नये संघ के सदस्यों से लिया जाने वाला कर अनुदान के रूप में ही लिया जाने लगा। संघ राज्यों की एक परिषद् बनायी गयी। पुरानी कुख्यात क्लेरूची प्रणाली की पुनरावृति के संदेह को दूर करने के ध्येय से एथेंस वासियों को मित्र राज्यों में भूमि व सम्पत्ति

अर्जित करने का निषेध कर दिया गया। संघ के प्रारम्भिक दिनों में उस पर केलिस्ट्राटस (Calistratus) का बड़ा प्रभाव था। वह एक दूरदर्शी एवं व्यापक दृष्टि वाला शासक व वक्ता था। सैनिक संगठन एवं नेतृत्व संबंधी कार्यों का प्रमुख नेता चैब्रियस था। इसने मिस्त्र में भाड़े के सैनिकों का नेतृत्व किया था और वहाँ रण-नीति में निपुणता प्राप्त कर आया था। एथीनियन बेड़ा भी उसी के आधीन रखा गया था। नेक्सॉस के समीप स्पार्टा के बेड़े को परास्त व ध्वस्त कर उसने पुन: एजियन पर एथेंस का प्रभुत्व स्थापित करने में सहायता पहुँचायी। इसी विजय के परिमाण स्वरूप डेलॉस भी वापस मिल सका और ओलिन्थस व चाल्सिडिक संघ को नये एथीनियन संघ में शामिल करने में सफलता मिल सकी (३७६ ई० पू०) एथेंस के बेड़े ने पश्चिमी यूनान के द्वीप कोरसिरा तथा ओरोपस पर भी अधिकार कर लिया। इसी बीच थीबिस ने भी स्पार्टा को टिगिरा के युद्धस्थल में पराजित किया और स्पार्टन नगर प्लेटेइआ को ध्वस्त कर दिया।

संघ से युद्ध में स्पार्टा पराजित

पराजय के पश्चात् स्पार्टा घबरा कर संधि के लिये प्रस्तुत हो गया। एथेंस भी प्लेटेइआ को ध्वस्त किये जाने और थीबिस की शक्ति का इतना बढ़ते जाना देख कर असंतुष्ट हो चला था। इधर सफलताओं के बावजूद भी एथेंस के कोष पर निरन्तर दबाव बढ़ता जा रहा था जो कि सम्पति पर कर लगा कर पूरा किया जा रहा था। अत: स्पार्टा से संधि का प्रस्ताव आने पर संधिवार्ता प्रारम्भ हो गयी। एथीनियन संघ का अभिप्राय जो कि स्पार्टा की शक्ति को तोड़ने के लिए संगठित की गयी थी; जब स्पार्टा का पतन होने लगा तो संघ भी समाप्त कर देने का विचार हुआ। वस्तुत: संघ तो क्षीण हो ही चला था।

शीघ्र ही (३७१ ई० पू०) दोनों में संधि हो गयी जो कैलेस (Callias) की संधि के नाम से प्रसिद्ध है। इस संधि के अनुसार प्रत्येक यूनानी नगर-राज्य की स्वतंत्र सत्ता स्वीकार कर ली गई और शक्तिपूर्वक संघ स्थापित करने की चाल को अस्वीकृत कर दिया गया। एथेंस को नये संघ को कायम रखने का अधिकार दिया गया। यह प्रस्ताव भी रखा गया कि यदि किसी एक राज्य पर आक्रमण हो तो शेष राज्य अपनी इच्छानुसार उसकी रक्षा में सहायता करें। स्पार्टा व

कैलेस की संधि ई० पू० ३७१

एथेंस ने स्थल व जल के क्षेत्रों को परस्पर बांट लिया। लेकिन एक अशांत स्थिति उत्पन्न हो चली जब एजेसिलांस द्वारा पिलोपोनीसियन संघ के नाम पर हस्ताक्षर करने के पश्चात् इपैमिनाण्डस ने भी बोयोशियन संघ के नामपर हस्ताक्षर करने का प्रस्ताव रखा। स्पार्टा ने उसके अधिकार को चुनौती दी। एजेसिलांस ने क्रोधित होकर कहा कि 'क्या तुम प्रत्येक बोयोशियन नगर को स्वतंत्र कर दोगे? इस पर इपैमिनाण्डस ने उत्तर दिया कि, 'क्या तुम प्रत्येक लैकोनियन नगर को स्वतंत्र कर दोगे? इस पर क्रुद्ध होकर एजेसिलांस ने थीबिस का नाम संधिपत्र से हटा दिया। फलतः सम्मेलन के किये-कराये पर पानी फिर गया। एक ही माह के अन्दर कैलेस की संधि एक कागज का टुकड़ा मात्र रह गयी।

ल्यूक्ट्रा का युद्ध (३७१ ई० पू०):—एजेसिलांस अब किसी भी बहाने थीबिस से संघर्ष मोल लेना चाहता था। इस समय थीबिस लगभग मित्रविहीन और अकेला था। अतः सुअवसर देख कर एजेसिलांस ने उस पर आक्रमण कर दिया। तद्नुसार स्पार्टा नरेश क्लिओम्ब्रोटस को ११००० सेना लेकर बोयाशिया पर आक्रमण करने के लिए भेजा गया। वह बढ़ता हुआ कोरोनिया के निकट प्रतिरोधक बोयोशियन सेना को पीछे छोड़ते हुए क्यूसिस के बन्दरगाह को अधिकृत कर, ल्यूक्ट्रा के निकट जा पहुँचा। वहीं बोयोशियन सेनाएँ भी उसका सामना करने के लिये आ पहुँची जिनका नेतृत्व इपैमिनाण्डस व पिलोपिडस कर रहे थे। इन के नेतृत्व में थीबिस ने छिपे युद्ध की प्रणाली को त्याग कर शक्ति परीक्षण की उत्सुकता प्रदर्शित की। उनका अपने पर विश्वास ही पक्का आधार था। उनके पास न केवल सुशिक्षित एवं सुसज्जित सेना ही थी वरन् उन्होंने युद्ध में आक्रामक रण-नीति का प्रत्यक्ष एवं मौलिक प्रयोग भी किया। इससे पूर्व शत्रु के सबसे अशक्त पार्श्व पर धावा बोला जाता था लेकिन इपैमिनाण्डस ने सीधे उस पार्श्व पर हमला किया जिसका नेतृत्व स्वयं क्लिओम्ब्रोटस कर रहा था। थीबन् सैन्य ने संख्या में कम होते हुए भी इतनी तीव्र गति से आक्रमण किया कि अल्प समय में ही स्पार्टा के १०००० सैनिक अपने सम्राट सहित धराशायी हो गये। इस पराजय से स्पार्टा वालों में लड़ने की शक्ति शेष न रही और उन्होंने पराजय स्वीकार कर ली। इस पराजय से स्पार्टा का प्रभुत्व व सामरिक-सम्मान धूल में

थीबिस के लिये इपैमिनाण्डस का नेतृत्व

इपैमिनाण्डस द्वारा स्पार्टा पराजित

मिल गया। उसकी अपराजेयता का विश्वास भी समाप्त हो गया। ल्यूकट्रा के इस युद्ध के पश्चात् सभी राज्यों द्वारा प्रशिक्षण व अनुशासन-युक्त सैन्य-अभ्यास के अपनाए जाने के कारण विजयश्री पर स्पार्टा का एकाधिकार समाप्त हो गया। स्पार्टा का यूनान व पिलोपोनेसस का नेतृत्व भी समाप्त हो गया। दूसरी ओर, इस विजय ने थीबिस को यूनान की अग्रणी शक्तियों में ला बिठाया। अतः ल्यूक्ट्रा के युद्ध में स्पार्टा का पराभव हुआ और थीबिस का उद्भव होने लगा।

स्पार्टा ने बड़े शौर्य के साथ ल्यूक्ट्रा के आघात को सहा। यह सांघातिक सूचना स्पार्टा में एक उत्सव के अंतिम दिन पहुँची। इफौर ने उत्सव को जारी रख कर मृतकों के नाम प्रकाशित कर आज्ञा प्रसारित की, कि शांति के साथ लोग विपत्ति को सहन करे और कोई विषाद न करें ! फलतः दूसरे दिन वे सब, जिनके सम्बन्धी युद्ध में मारे गये थे, राजमार्गों पर प्रफुल्ल चेहरों के साथ प्रसन्नवदन घूम रहे थे और, जिनके सम्बन्धी बच गये थे वे नीची गर्दन किए हुए थे। निःसंदेह स्पार्टा ने यह दिखला दिया था कि बड़ी से बड़ी विपत्ति को किस तरह हंसते हुए सहन किया जा सकता है।

---

४ | थेसाली, थीबिस व केरिया का क्षणिक उत्कर्ष

★

ल्यूक्ट्रा के युद्ध में पराजय के पश्चात ही उत्तरी यूनान पर अधिपत्य स्थापित करने की स्पार्टन आशाएं समाप्त हो गयी, क्योंकि थीबिस अब यूनान के अग्रणी शक्तियों में आ गया था। थीबिस, अकार्नेनिआ, यूबोइया व चाल्सि-डियन नगर एथिनियन संघ से पृथक हो गये थे। ई० पू० ३७० में ही थीबिस के सहयोग से आर्केडिया के नगरों का एक संघ स्थापित किया गया। मेण्टिनी स्वतंत्र नगर घोषित किया गया। आर्केडियन संघ का शासन भार १०००० स्वतंत्र नागरिकों की सर्वसत्ताधारी (युद्ध, शान्ति आदि के क्षेत्र में) असेम्बली, संघीय नगरों को अनुपातिक प्रतिनिधित्व देने वाली (Damiurgoi) की परिषद, सैनिक व नागरिक अधिकारियों (Strategoi) की संस्था और एक वैतनिक सेना (Eparitoi) के जिम्में सौप दिया गया[1]। मेसानिया को भी स्पार्टा के चंगुल से मुक्ति दिलाई गयी। आर्केडिया ने संघीप राजधानी के लिए मैगालो पोलिस (Megalopolis) नगर का निर्माण किया।

नए आर्केडियन संघ की राजधानी मैगालोपोलीस में

(थीबिस के इसी बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर ई० पू० ३६९ में एथेंस व स्पार्टा आपस में मित्र बन गये। भले ही अल्पकाल के लिए बने हो।)

अब थीबिस ने आक्रामक रूख अपनाया व स्पार्टा ने रक्षात्मक। एथेंस की नीति में भी परिवर्तन आ गया। स्पार्टा से पृथक आर्केडिया आदि पिलोपोनि

---

१. An Encyclopedia of word History. W.L. Langsam. p.73

सियन राज्यों के अभ्युदय पर भी इसका अनुकूल प्रभाव पड़ा। पिलोपोनेसस व अन्य राज्यों से स्पार्टा के नियुक्त शासक निष्काशित किये जाने लगे। स्पार्टा द्वारा समर्थित कुलीन शासन का हर स्थान पर विरोध होने लगा। निष्काशित लोकतंत्रवादी नेता ससैन्य वापस पहुँच कर विद्रोह फैलाने लगे और इस प्रकार स्पार्टा के बचे-खुचे प्रभाव पर भी संघातिक प्रहार हो गया, जिससे एथेंस में स्पार्टा-समर्थक कैलीस्ट्रेटस (Callistratus) के दल का पतन हो गया। उसका स्थान टिमोथियस (Timotheus) के दल ने ग्रहण किया, जिसने सत्तारूढ़ होते ही थीबिस के साथ यथास्थिति के अधार पर मैत्री संधि कर ली (३६५ ई० पू०)।

थेसाली का क्षणिक उत्कर्ष

स्पार्टा तथा यूनान के अन्य नगरों के दुर्बल हो जाने के पश्चात् शक्ति का केन्द्र-स्थल पहले मध्य यूनान अर्थात् थेसाली की ओर स्थानन्तरित हो चला। थेसाली के एक प्राचीन नगर फीरी (Pherae) में ४०५ ई० पू० के लगभग लाइकोफ्रॉन (Lycophron) ने कुलीन शासन की समाप्ति के पश्चात् निरंकुश शासन की स्थापना की। ई० पू० ३९५ में उसका पुत्र जैसॉन गद्दी पर बैठा। जैसान ने पूरे थेसाली को जीतने की योजना बनायी और सफल भी हुआ। थेसाली का केवल एक नगर फारसेलस ही स्वतंत्र रह गया जहां पॉलीडेमस का शासन था। ३७५ ई० पू० के लगभग जैसॉन ने उसे भी विजित कर लिया। अगले ही वर्ष वह थेसाली का "नायक" (टैगौस : Tagos) चुन लिया गया। यवन राज्यों की निर्बलता व पारस्परिक संघर्ष से भी उसे सहायता मिलीं। वह पूरे यूनान की विजय करना चाहता था परन्तु अपनी शक्ति व सत्ता के चरम शिखर पर पहुंचते ही उसकी हत्या हो गयी (३७० ई० पू०)। वह एक बहुत ही योग्य कूटनीतिज्ञ एवं सेनापति था। जैसॉन के मृत्यु के बाद पॉलीडोरस (Polydorus) व पालीफ्रॉन गद्दी पर आए। पॉलीफ्रान ने पालीडोरस को मार डाला और स्वयं भी शीघ्र ही (३६९ ई० पू०) अपने भतीजे अलेक्जाण्डर के हाथों मार डाला गया। अलेक्जाण्डर भी दो वर्ष बाद (३६७ ई० पू०) अपनी पत्नी थीब (Thebe) व उसके तीन भाइयों द्वारा मारा गया।

जिस समय फीरी में अलेक्जाण्डर गद्दी पर आया था उसी समय मेसिडो-

निया में अमिण्टास (Amyntas) की मृत्यु के पश्चात् अलेक्जाण्डर गद्दी पर आया था । थेसाली के नगरों ने फीरी के आधिपत्य को मानने से इन्कार कर दिया और मेसिडोनिया से सहायता याचना की, परन्तु जब सहायता के बदले मैसिडोनिया ने क्रैनान (Cranon) लेरिसा (Larissa) आदि नगरों पर अधिकार कर लिया तो थेसाली के नगर चौकन्ने हो गये और उन्होंने दोनों अलेक्जेण्डरों के विरूद्ध थीबिस से सहायता याचना की । थीबिस ने पिलोपिडास (Pelopidas) को भेज पर कर लेरिसा तथा उत्तरी थेसाली के अनेक नगरों पर संरक्षण स्थापित किया (३६९ ई० पू०) । थेसाली में एम्फीक्टिआनिक-संघ के आधार पर फीरी को छोड़ 'थेसालियन-संघ' की स्थापना की गयी जिसका प्रमुख एक 'आर्कन' होता था जिसका कार्यकाल १ वर्ष के लगभग था । पूरे संघ को चार भौगोलिक भागों में बाँटा गया और प्रत्येक के लिए पॉलेमार्क अथवा नायक की नियुक्ति की गयी जिसके अंतर्गत अश्वारोहियों व पदातियों की सेनाएं रखी गयीं ।

थेसाली का पक्ष लेकर थीबिस-मैसिडोनिया युद्ध

मैसिडोनिया अब अपनी ही गृह-समस्याओं के कारण फिर इस ओर ध्यान न दे सका । अलेक्जाण्डर की सौतेली मां यूरीडिस (Eurydice) की सहायता से अलोरस (Alorus) के टॉलेमी ने विद्रोह कर दिया था । दोनों पक्षों ने निर्णय का अधिकार पिलोपिडास को सौंपा । पिलोपिडास ने दोनों में समझौता करा दिया और स्वयं भी मैसिडोनिया के साथ संधि कर ली । परन्तु उसके लौटते ही टॉलेमी ने अलेक्जाण्डर को कत्ल कर यूरीडिस से शादी कर लिया । इसी समय सिंहासन का एक और दावेदार पाजेनियस उठ खड़ा हुआ जिसने चाल्सीडिअन सीमा के भू-प्रदेशों पर अपना अधिकार जमा बैठा । इस पर यूरीडिस ने एथीनियन नौसेनापति इफीक्रेटीज (अमिण्टास का दत्तक पुत्र) की सहायता माँगी । इफीक्रेटीज सेना सहित मैसिडोनिया के निकट थेरामिक खाड़ी (Theramic) में पहुँच गया । यूरीडिस और इफीक्रेटीज की सम्मिलत शक्ति ने पॉजेनियस को पराजित कर खदेड़ने में सफलता प्राप्त कर ली । अब पर्डिक्कस सिंहासन पर बैठा और टालेमी उसका संरक्षक नियुक्त हुआ । इफीक्रेटीज के प्रभाव के फलस्वरूप चाल्सीडियन व निकटवर्ती तटीय प्रदेशों में एथेंस का प्रभाव बढ़ता रहा ।

मैसोसिडोनिया की आन्तरिक स्थिति

पिलोपिडास एथेंस के वृद्धिमान् प्रभाव से चिंतित हो चला और इसका

विरोध करने के लिए टाँलेमी को थीबिस से संधि करने पर बाध्य किया, साथ ही विश्वास के लिये कुछ व्यक्तियों को बन्धक के रूप में भी साथ ले गया जिनमें बालक फिलिप, मेसिडोनिया का भावी उत्थानकर्त्ता, भी था। फिलिप इससे बहुत लाभान्वित हुआ क्योंकि वहाँ रहते हुए उसे इपेमिनाण्डस (Epaminondas) के संरक्षण व निरीक्षण में योग्य सैनिक शिक्षा उपलब्ध हुई (३६८ ई० पू०) मेसिडोनिया के इस प्रकार थीबिस के प्रभाव के अन्तर्गत आ जाने से एथेंस को एम्फीपोलिस पर आधिपत्य स्थापित करने में मेसिडोनिया की सहायता मिलने की आशाओं पर पानी फिर गया। इसी बीच चाल्सीडियन संघ के नगर भी एथेंस की मैत्री को तोड़ कर एम्फीपोलिस से जा मिले।

बालक फिलिप मेसिडोनिया का भावी उत्थानकर्त्ता

वापसी के समय पिलोपिडास अलेक्जाण्डर से मिलने फीरी भी गया था किन्तु एथेंस के प्रभाव के कारण कैद कर लिया गया। शीघ्र ही दो आक्रमणों में थीबिस ने इपैमिनाण्डस के नेतृत्व में उसे मुक्त करा लिया। इपैमिनाण्डस पहले सेना में एक निम्न पद पर था परन्तु अन्य सेनापतियों की अयोग्यता सिद्ध हो जाने पर उसे प्रधान सेनापति पद पर नियुक्त किया गया था। फीरी व थीबिस के मध्य एक माह के लिये विराम-संधि हो गयी। सम्भवतया इसी समय इपैमिनाण्डस ने फारसेलस को भी स्वतंत्र होने में सहायता दी, तथापि थेसाली को नियंत्रित रखने के लिये अलेक्जाण्डर को शासक बना रहने दिया—जिसकी क्रूरता की अनेक भीषण कथाएँ प्रचलित हैं।

इपैमिनाण्डस

इस बीच एथेंस निरन्तर अपना प्राचीन गौरव व वैभव प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील बना रहा और साम्राज्य की पुनर्स्थापना के हर सम्भव उपाय करता रहा, इसमें उसको यदा-कदा सफलता भी मिलती रही परन्तु पुराना समय फिर न लौट सका।

पूर्वी एजियन में एथेंस :—फ्रिजिया (Phrygia) के क्षत्रप एरिओबार्जेनस के विद्रोह में सहायता देने के लिये एथेंस ने टिमोथियस (Timotheus) के नेतृत्व में ३० जहाज व ८००० सैनिक भेजे (यद्यपि एथेंस परशियन सम्राट से विरोध मोल लेना नहीं चाहता था, क्योंकि एम्फीपोलिस के अधिपत्य के लिये यही अनुकूल होता, साथ ही "राजा की

संधि" को भी वह तोड़ना नहीं चाहता था)। टिमोथियस ने दस माह के घेरे के पश्चात् सैमास पर अधिकार कर लिया और वहाँ एक उपनिवेश (Cleruchy) की स्थापना की। लीडिया व कोरिया के क्षत्रपों के विरूद्ध भी उसने एरिआबार्जेनस को सहायता पहुचाई। इस सहायता के बदले एथेंस ने थ्रेसियन प्रायद्वीप के दो नगर प्राप्त किये। इन नगरों के हेलेस्पॉण्ट में स्थित होने के कारण एथेंस को कृष्ण सागर के तटों से होने वाले आवागमन व खाद्यान्न के आयात-निर्यात प्राप्त पर नियंत्रण हो गया। लेकिन समस्त यूनान के समक्ष एथेंस के साम्राज्य की पुनर्स्थापना की अभिलाषा भी स्वतः प्रकट हो गयी।

टिमोथियस की सफलताओं से हर्षित होकर एथेंस ने उसे मेसिडोनिया में भी इफीक्रेटीज (Iphicrates) के स्थान पर वहाँ के बेड़े का नायक नियुक्त किया। इफीक्रेटीज के मुकाबले टिमोथियस एक सफल कूटनितिज्ञ भी सिद्ध हुआ और परिस्थितियों ने भी उसका बहुत साथ दिया। ई० पू० ३६५ में पडिक्स ने अपने संरक्षक टालेमी की हत्या कर दी और थीबिस के स्थान पर एथेंस की मैत्री को स्वीकार किया।

चाल्सीडिक प्रदेश में नायक टिमोथियस:—स्थिति के इस प्रकार अनुकूल हो जाने से उत्साहित होकर टिमोथियस थेरामिक खाड़ी के प्रदेशों को दबाने के लिए बढ़ा। मिथोन (Metnone) व पिड्ना (Pydna) को एथीनियन-संघ में शामिल कर उसने चाल्सीडिस की ओर बढ़ना आरम्भ किया, और पोटिडे व टोरोन आदि पर अधिकार कर लिया। परन्तु एम्फीपोलिस पर अधिकार के लिए किए गए दो-दो प्रयास विफल हो गये। एथेन्स की सफलता से यूबोइआ के लिए उत्पन्न खतरे को देख थीबिस भी सचेत हो चला क्योंकि यूबोइआ की ओर एथेन्स का प्रसार को बोयोशिआ के लिए संकटजनक था। अतः इपैमिनाण्डॉस के प्रस्ताव पर नौसैनिक-नीति अपनाई गई, यद्यपि मेनेक्लीडस (Meneclidas) ने इसका विरोध किया। इस नीति की आलोचना आधुनिक इतिहासकारों ने भी की है क्योंकि बोयोशिआ वाणिज्यिक राष्ट्र न होने के कारण सफल नौसैनिक शक्ति के रूप में समर्थ न था और इसलिए उसे अपनी सफलता के लिए स्थल-सैन्य पर ही जोर देना चाहिए था; तथापि १०० जहाज तैयार किए गए और बोयोटार्क इपैमिनाण्डस के नेतृत्व में प्रोपोण्टिस की ओर रवाना किये गए (३६४ ई० पू०)।

इस बेड़े के आगमन से एथीनियन आधिपत्य के अन्तर्गत नगरों को विद्रोह

करने का सुअवसर मिल गया। एथेंस-अधिकृत सैमास में भी विद्रोह पनप रहा था, बाइजैन्तियम, रोड्स, सिआस, (एलिस के निकट) आदि भी विद्रोही हो चले थे और सहायता के लिए थीबिस की ओर उन्मुख हो रहे थे। यद्यपि सिऑस (Ceos) अंततः एथेंस के अधीन ही रहा, तथापि यह ३६५ ई० पू० के एक और विद्रोह के दमन के बाद ही संभव हो सका।

एथेंस के विरुद्ध विद्रोह

चर्सोनीज में एथेंस के प्रसार का विरोध थ्रेस आदि प्रदेश कर रहे थे। अपदस्थ होने के पश्चात् इफीक्रेटीज उनसे जा मिला था; क्योंकि वह थ्रेस के शासक कोटिस (Cotys) का दामाद भी था।

पिलोपिडास का थेसाली पर आक्रमण:—३६४-३६३ ई० पू० में पिलोपिडास ने फिरी के स्वेच्छाचारी शासक अलक्जेन्डर से अपना प्रतिशोध लेने के लिए पुनः थेसाली पर आक्रमण किया। यद्यपि उसके प्रस्थान के साथ ही सूर्य ग्रहण लगने से अपशकुन समझकर सभी आशंकित हो चले थे फिर भी १३ जुलाई को साइनोसेफेली (Cynocephalae) के मैदान में दोनों में भिड़न्त हो गयी। इस युद्ध में पिलोपिडास को सफलता मिली लेकिन उसको अपने प्राण से हाथ धोना पड़ा। पिलोपिडास के मारे जाने पर भी उन पर प्रतिकूल प्रभाव नही पड़ा, और थीबन बिजयी रहे। पिलोपिडस की मृत्यु उनके लिए एक असहनीय क्षति थी। ई० पू० ३६३ में फिर थेसाली पर चढ़ाई की गई और पिलोपिडस की मृत्यु का बदला ले लिया गया। अलेक्जेण्डर के राज्य फिरी के नगर को छोड़कर और नगरो को छीन लिया गया, जिसने थीबिस का नेतृत्व स्वीकार कर लिया।

ई० पू० ३६४ में ही थीबिस को आर्कोमिनस (orchomenus) को ध्वस्त करने का अवसर मिल गया, क्योंकि कतिपय थीबन निष्कासितों ने आर्कोमीनस के सैनिक-सरदारों की सहायता से थीबिस के संविधान को उलटने का षड़यन्त्र रचा, लेकिन निश्चित तिथि के एक दिन पूर्व ही षड़यन्त्र प्रकट हो गया जिससे कुछ लोगों को कत्ल कर शेष को दास बना लिया गया।

मैण्टिनी का युद्ध

ट्रिफिलिया (Triphylia) के आधिपत्य (जिसे परशिया ने एलिस के पक्ष

में निर्णीत किया था) के प्रश्न को लेकर एलिस और आर्केडिया में संघर्ष उठ खड़ा हुआ (३६५ ई० पू०)। इस संघर्ष में थीबिस तटस्थ ही रहा। स्पार्टा यद्यपि जानता था कि ट्रीफिलिया एक स्वतन्त्र नगर है परन्तु मेसानिया के विरूद्ध एक सहायक की प्राप्ति की आशा में उसने एलिस के दावे का ही अनुमोदन किया। विवाद का दूसरा कारण ओलिम्पिया के उ० पू० में 'स्थित प्रदेश था जहाँ से क्षणिक अधिपत्य के बाद एलिसवासी आर्केडिया द्वारा निकाल बाहर किए गये थे, (३६५ ई० पू० में)।

एलिस वनाम आर्केडिया

आर्केडिया का प्रथम प्रयास ओलिम्पिया की ओर हुआ, और क्रोनस (Cronus) के पहाड़ पर अधिकार कर वहाँ किलेबन्दी भी कर ली। तत्पश्चात् उसने एलिस पर चढ़ाई कर दी। आक्रमण विफल रहा। परन्तु दूसरे ही वर्ष (३६४ ई० पू०) उन्होंने पुनः एलिस पर आक्रमण कर दिया। इस पर एलिस ने स्पार्टा से सहायता मांगी। अतः स्पार्टा नरेश आर्किडेमस ने मेसानिया व मेगैलोपोलिस के बीच के मार्ग पर नियंत्रण रखने वाले क्रोम्नॉन (cromanan) के किले पर चढ़ाई कर उस पर अपना अधिकार कर लिया। अब आर्केडिया वालो को एलिस से पिछे हट जाना पड़ा, और सहायता के लिए भी सहायकों को पुकारना पड़ा। आर्गास व मेसानिया की सहायता से आर्केडिया ने स्पार्टा-अधिकृत क्रोम्नॉन पर घेरा डाल दिया। परन्तु किले में स्थित कुछ स्पार्टनो ने किसी तरह बाहर आकर आर्केडिया व मेसानिया की राजधानियों के बीच का मार्ग अवरूद्ध कर दिया। अब आर्की-डेमस क्रोम्नान से आर्केडिय वालों को पीछे हटाने का प्रयास किया, परन्तु स्पार्टा को विफलता ही हाथ लगी। आर्केडियां द्वारा सम्पूर्ण स्पार्टन छावनी कैद कर ली गई।

यह ओलम्पिक खेलो का वर्ष था (३६४ ई० पू०)। आर्केडिया ने ओलम्पिक खेल के लिए एलिस के मुकाबले प्राचीन अधिष्ठाता पिसा (Pisa) का ही समर्थन किया अतः उत्सव की अध्यक्षता पिसा को ही सौंपी गई। सुरक्षा व्यवस्था के लिए आर्गास व एथेंस से २००० बर्छीधारी सैनिक व ४०० अश्वारोही भी बुला लिए गयें। इस पर भी एलिस व आर्केडिया के मध्य उत्सव के प्रागंण में ही संघर्ष छिड़ गया। जिसमें एलिस पीछे हट

ओलम्पिल खेलो का वर्ष ३६४ ई० पू०

गया और उस वर्ष के उत्सव को अवैधानिक घोषित कर ३६४ ई० पू० को ओलम्पिक रहित (Anoeympied) अंकित किया गया। अब समस्त यूनानी संसार की सहानुभूति विशेष रूप से एलिस के साथ हो गई। आर्केडिया द्वारा ओलम्पियन कोष पर अधिकार किये जाने से भी उसका विरोध और तीव्र होने लगा। इसके साथ ही आर्केडियन संघ का विघटन भी प्रारंभ हो गया। टीगिया व मेण्टिनी इनमें सर्वप्रथम रहे। मेण्टिनी तो स्पार्टा के पक्ष में चला गया, लेकिन आर्केडिया से विच्छेद के पश्चात् भी टीगिया व मेगौलोपोलिस स्पार्टा के प्रमुख विरोधी बने रहे क्योंकि वह पहले से ही थीबिस के समर्थक थे। अनेक आर्केडियन नगर कुलीनों के अधिपत्य में चले गये, जिन्होंने Elis व Achaea से संधि कर ली टीगिया व मेगैलोपिस इससे अलग ही रहे। स्वयं आर्केडिया के (विशेषतः धनीवर्ग) लोग थीबिस के विरुद्ध स्पार्टा के पक्ष में चले जाने का विचार करने लगे। जिससे थीबिस को अपना प्रभुत्व पुनः खतरे में दीख पड़ा।

नए आर्केडियन संघ का विघटन आरम्भ होने लगा

इस बीच आर्केडिया ने एलिस के साथ संधि कर ओलम्पिक खेल के उत्सव पर उसका अधिकार स्वीकार किया। संघ के सभी नगरो ने इसके पक्ष में शपथ ग्रहण की। टीगिया में भी शपथ ग्रहण के उत्सव के लिए लोग निकटवर्ती स्थानों से एकत्रित हुए थे (३६२ ई० पू०)। इस अवसर का लाभ उठा कर बोयोसिया के सेना-नायको ने थीबिस-विरोधी लोगों को बन्दी बनाने का विचार किया और कुछ लोगों को बन्दी बना भी लिया परन्तु बन्दी होने वाले दलो में से मेण्टिनों वालो के तीव्र विरोध के कारण उन्हें बन्दियों को छोड़ देना पड़ा (थीबिस से अलग होकर मेण्टिनी पहले ही स्पार्टा से मिल गया था, जिससे वह भी थीबिस विरोधी था)। इपैमिनाण्डँस ने कैदियो के छोड़ जाने का विरोध किया, और उसने घोषित किया कि बिना थीबिस के अनुमोदन के आर्केडियन संघ को एलिस से संधि करने का कोई अधिकार नहीं था। साथ ही उसने आर्केडिया पर चढ़ाई करने की घोषणा भी कर दी।

एलिस व आर्केडिया में संधि हुई

मेण्टिनी युद्ध का प्रकट कारण

एथेंस ने स्पार्टा के पक्षपाती आर्केडिया-वासियों से मिल कर ई० पू० ३६२ मे ही मेण्टिनी, एलिस, एकिआ और फ्लीयस (Phlius) के साथ संधि कर

ली। यह संधि रक्षात्मक थी। इस संधि में मेण्टिनी को ही आर्केडियाका प्रतिनिधि मान्य किया गया।

थीबिस व उसके मध्य-यूनान के सहायकों (फोकिसको छोड़कर) की विशाल सेना लेकर इपैमिनाण्डस ने नीमिया (Nemea) पहुँच कर एथेन्स के बढ़ाव के मार्ग को अवरुद्ध करने का विचार किया। वह टीगिया की ओर अपने सहायकों आर्गास, आर्केडिया व मेसानिया वालों से मिलने के लिए बढ़ गया इधर दूसरी ओर मेण्टिनी में भी शत्रुदल एकत्रित हो रहे थे और शीघ्र ही एजेसिलाँस के अधीन एक स्पार्टन सेना भी वहाँ पहुँचने वाली थी; इपैमिनाण्डस ने इसके पूर्व ही उन पर धावा बोल दिया। परन्तु उसका प्रयास विफल गया, और वह पुन: टीगिया वापस लौट गया।

युद्ध के लिए प्रयास

इपैमिनाण्डस ने अब स्पार्टा पर ही आक्रमण करने की योजना बनाई, परन्तु यह योजना भी एक क्रीटन दूत द्वारा एजेसिलाँस को मालूम हो गई जिससे वह आक्रमण के पहले ही स्पार्टा की रक्षा के लिए वहाँ पहुँच गया। अब इपैमिनाण्डस ने मेण्टिनी पर, जो स्पार्टा को सहायता के लिए सेना भेजने के कारण रिक्त हो गया था, आक्रमण करने का विचार कर अपने अश्वारोहियों सहित मेण्टिनी पर धावा बोल दिया। परन्तु इसी बीच वहाँ पर भी एथिनियन आश्वारोहियों के पहुँच जाने से उसे पीछे हट जाना पड़ा।

स्पार्टन, एथिनियन व मेण्टिनियन सेनाओं के एकात्रित हो जाने से मेण्टिनी की स्थिति सुदृढ़ व सुरक्षित हो चली थी। अब इपैमिनाण्डस ने अपने सहायकों से विचार कर रणकौशल अपना कर धोखे से मेण्टिनी पर आक्रमण कर दिया जिसमें उसको विजय प्राप्त हुई। इस संघर्ष में उसको सांधातिक चोट लगी और उसको अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। फलत: थीबन सेना विजय का पूरा लाभ न उठा सकी। मरने के पहले उसने पूछा था "मेरी ढ़ाल कहाँ है ?" साथ ही अपने निर्धारित उत्तराधिकारियों के विषय में भी पूछा, जो पहले ही वीरगति को प्राप्त हो चुके थे। अंत में उसने संधि कर लेने का आदेश दिया, जिसको मान्यता देकर संधि कर ली गई। मेगैलोपोलिस व मेसानिया की स्वतंत्रता को मान्यता दी गई, परन्तु मेसानियां की स्वतंत्रता को स्वीकार न करने की नीति के कारण स्पार्टा ने संधि का विरोध किया अत: पूर्ण व स्थायी संधि न हो सकी।

मेण्टिनी के युद्ध में इपैमिनाण्डस की मृत्यु

इपैमिनाण्डस की चरित्रगत विशेषताएँ

एक योग्य सैनिक और बुद्धिमान एवं चरित्रवान मनुष्य होने के बावजूद इपैमिनाण्डस एक साधारण कोटि का राजनीतिज्ञ था। वह अपने उत्तराधिकारियों को अपनी विशेषताएँ नहीं प्रदान कर पाया यह उसकी सबसे वड़ी कमजोरी थी इसीलिए सी० डी० एडमॉण्ड्स ने लिखा है कि, "वस्तुतः थीबिस कभी महान नहीं हुआ था, यह केवल अपने दो महान बेटों की चमक से ही जगमगाया था"।[1]

विभिन्न इतिहासकारों के मतानुसार इपैमिनाण्डस की सबसे वड़ी गलती थी बिना वित्तीय अवस्था का अध्ययन व समुचित प्रबन्ध किए नौसैनिक क्षेत्र में एथेंस से प्रतिस्पर्धा का विचार।
दूसरी गल्ती पड़ोसियों से रक्षा का समुचित प्रबन्ध न करना था यद्यपि उसने एम्फिक्टिआनिक संघ को अपनी नीति का मुख्य आधार-बिन्दु बनाया था।

इतिहासकारों के मतानुसार इपैमिनाण्डस

उसकी अन्तिम लेकिन महत्वपूर्ण भूल थी बोइओशिया की आन्तरिक, राष्ट्रीय-एकता पर आवश्यकतानुकूल ध्यान न देना और पहले ही बोइओशियन साम्राज्य के स्वप्न देखना। इसी कारण उसे अपने देशवासियों का पूर्ण समर्थन नहीं मिल पाया। जो सफलताएँ मिली वे थीबिस की न होकर केवल इसकी निजी सफलताएँ थी। अतः उसके पश्चात् थीबिस अपनी सभी उपलब्धियाँ खो बैठा।

अतः, निष्कर्ष निकालते हुए ब्यूरी कहते हैं कि—"वह एक महान सेनानायक था, परन्तु महान राजनेता नहीं"।[2]

राजनीतिक क्षेत्र में उसकी असफलताओं का दायित्व राबिन्सन उस पर नहीं आरोपित करते। उनके अनुसार उस पर यह आरोप नहीं लगाया जा सकता कि बोइओशिया में वह राष्ट्रीय महानता की भावना को अंकुरित नहीं कर पाया और ना ही इसके लिए आवश्यक संवैधानिक प्रणाली ही लागू कर पाया। इसका, तथा साथ ही नौसैनिक बेड़े के निर्माण कार्य की असफलता का, दायित्व थीबिस की अर्थव्यवस्था पर है।

---

१. Greek History, C. D. Edmonds P. 250
२ The History of greece, J. B. Bury, P. 710.

इपैमिनाण्डस के प्रयासों पर प्रकाश डालते हुए वे कहते हैं कि उसने बिखरे हुए बोइओशियन नगरों को सामान्य नागरिकता के अधिकार प्रदान कर संगठित करने का यत्न किया। यदि वह डायोनीसियस या जेसॉन के पद-चिन्हों का अनुसरण करता तो शायद बोइओशिया को और भी महान बना लेता लेकिन यह उसके चरित्र के प्रतिकूल था। एक सैनिक की भांति वह सदैव सत्ता के समक्ष नतमस्तक रहा। देशभक्ति और सम्मान की भावना से वह ओत-प्रोत था। "यदि वह अपने से पूर्व देश का ख्याल रखता था, तो देश के ऊपर सम्मान का भी ख्याल उसे था।" (राबिन्सन)

वह छलकपट व षड्यन्त्र के इतना विरुद्ध था कि स्पार्टा से मुक्ति-प्राप्ति के विद्रोह में भाग लेने से भी एक बार पीछे हटने लगा था। इसको ध्यान में रखकर राबिन्सन के साथ हम भी कह सकते हैं कि

"The man who steered his course through times so difficult-on such high principles was deserving of a better country and of a nobler cause."

अर्थात् "समय की कठिनाइयों की उपेक्षा कर वह ऊँचे आदर्शों को अपनाकर जिस प्रकार आगे बढ़ता गया उससे तो यही कहना पड़ता है कि उसे किसी अपेक्षाकृत अच्छे राष्ट्र में जन्म लेना चाहिए था और अधिक ऊँचे (आदर्श) लक्ष्य को अपनाना चाहिए था।"

एजेसिलास का अन्तिम अभियान :—मैण्टिनि के युद्ध से हुई क्षति और युद्ध के बाद हुई संधि के पश्चात् थीबिस पुनः द्वितीय श्रेणी की शक्ति हो गया। निःसंदेह थीबिस की प्रभुता इपैमिनाण्डस व पिलोपिडास के प्रयत्नों का ही फल था जिनके अन्तरध्यान होते ही थीबिस का प्रमुख स्थान भी जाता रहा। थीबिस के पतन के उपरान्त एथेंस व स्पार्टा पुनः यूनान में अपनी प्रभुता स्थापित करने के प्रयत्न करने लगे।

पश्चिमी एशिया में एजेसिलास

पश्चिमी एशिया में हेलेस्पॉण्ट से नील नदी के तट तक परशिया के विरुद्ध पनप रहे विद्रोह ने स्पार्टा को सुअवसर प्रदान किया। स्पार्टा ने राजा एजेसिलास को इस विद्रोह का लाभ उठाने और इस प्रकार अपनी प्रभुता जमाने के उद्देश्य से एशिया माइनर की ओर भेजा। एजेसिलास ने विद्रोही क्षात्रप एरिओबार्जेनस की सहायता लेकर अपनी कार्यसिद्धि करने की चेष्टा आरम्भ कर दी। साइप्रस के पश्चात् मिस्र से होते हुए विद्रोह

की ज्वाला कैप्पाडोसिया, फ्रीजिया आयोनिआ, केरिया, लीडिया, फीनिसिया और सीरिया तक जा पहुँची। विद्रोहियों को मिश्र के शासक टैकास, स्पार्टा, और एथीनिअन सेनानायक चैब्रियस (यद्यपि एथेंस तटस्थ था) की सहायता प्राप्त थी।

मिश्र का आन्तरिक विद्रोह

शीघ्र ही मिश्र में आन्तरिक विद्रोह हो गया। मिश्र के शासक टैकास के भाई नेकैटेमबास (Nekatambos) ने उस समय विद्रोह कर दिया जब टैकास फीनिशिया की ओर गया हुआ था। टैकास विद्रोह का दमन करने के लिए वापस आया, परन्तु स्पार्टन-राजा व सेनापति एजेसिलास की सहायता के कारण विद्रोही नेकैटेमबास सत्ता-प्राप्ति में सफल हो गया और टैकास भाग कर सूसा चला गया एवं परशियन सम्राट आर्टीजर्कसेज से मिल गया। अन्य विद्रोही भी धीरे-धीरे समाप्त होने लगे। उनका पारस्परिक बन्धन ढीला हो चला। फ्रीजिया का क्षत्रप पकड़ कर सूली पर चढ़ा दिया गया, शेष क्षत्रप भी मार डाले गये अथवा उन्होंने स्वयं ही आत्मसमर्पण कर दिया। इस प्रकार विद्रोह विफल रहा और पश्चिमी एशिया पर पुनः आर्टीजर्कसेज की पताका फहराने लगी।

एजेसिलास की मृत्यु ई०पू० ३६१-६०

विद्रोह के विफल हो जाने के पश्चात् एजेसिलास भी वापस लौट चला परन्तु ई० पू० ३६१-६० में मेनेलॉस के बन्दरगाह पर उसकी मृत्यु हो गई। साम्राज्य विस्तार की मृग मरिचका वृद्धावस्था के अन्त में भी एजेसिलास को पश्चिमी एशिया में खीच लाई थी, जिसमें उसका वृद्धपन साथ न दे सका। और स्पार्टा के उत्थान, प्रभुत्व व पतन तीनों के इस समान दर्शक व प्रमुख अभिनेता का अन्त हो गया।

थीबिस के पतन के पश्चात्

इपैमिनाण्डस की मृत्यु से भी एथेंस पूर्णतः मुक्त न हो सका क्योंकि इपैमिनाण्ड्स फीरी के शासक अलेक्जण्डर को एथेंस के विरुद्ध उकसा गया था। अतः अवसर पाकर अलेक्जण्डर ने पिरायस पर आक्रमण कर उसे लूटा और फिर वापस चला गया। अब अपनी रक्षा के ध्येय से एथेन्स ने थेसाली व उसके मित्र राज्यों से फीरी के विरुद्ध संधि कर ली। पराजय और, एलेक्जण्डर के आक्रमण से उत्पन्न नैराश्यपूर्ण क्रोध के कारण एथेंस ने प्रमुख राजनेता व सेनानायक कैलिस्ट्राट्स को निष्कासित कर दिया; कुछ दिन पश्चात् कैलिस्ट्राटस की मृत्यु हो गई।

एथेंस के दुर्भाग्य का अभी भी अन्त न हुआ था। शीघ्र ही थ्रेस के शासक कोटिस (Cotys) ने सेस्टांस (Sestos) व प्राय: समस्त थ्रेसियन प्रायद्वीप पर, जो एथेंस के अधिकार में थे, आक्रमण कर उससे छीन लिए परन्तु कुछ ही वर्ष पश्चात् राजा कोटिस की मृत्यु हो गई। कोटिस की मृत्यु के पश्चात् उसके तीन पुत्रों में उत्तराधिकार के प्रश्न पर युद्ध उत्पन्न हो गया जिसमें हस्तक्षेप कर लाभान्वित होने का अवसर एथेंस को प्राप्त हो गया (३६०-५६ ई० पू०) कोटिस के पुत्र राजकुमार सर्सोब्लेप्टीज (Cersobleptes) ने यूबोइया के चैरिडेमस (Charidamus) की सहायता से समस्त थ्रेसियन प्रायद्वीप को अपने अधिकार में कर लिया। वह कार्डिया को छोड़ समस्त थ्रेसियन प्रायद्वीप एथेंस को सौंपने को प्रस्तुत था। परन्तु ३५७ ई०पू० में एथेंस के नौसेनापति चेरस (Chares) ने थ्रेस प्रायद्वीप के साथ ही सेस्टॉस को भी ले लिया। जिसको क्लेरूची के रुप में एथेंस के प्रवासियों में वितरित कर दिया गया। उसी वर्ष यूबोइयां को पुनः एथेंस में मिला लिया गया और एम्फीपोलिस पर विजय की भी योजनाए बनने लगी। परन्तु इसी बीच ई०पू० ३५७ में ही एथेंस को एक नए संघर्ष में उलझना पड़ा जो 'सामाजिक युद्ध' या 'मित्रो की लड़ाई' के नाम से प्रसिद्ध है।

एथेंस की स्थिति थ्रेसियन प्रायद्वीप में

समाजिक युद्ध या मित्रों की लड़ाई

(SOCIAL WAR OR THE WAR OF ALLIES)

मैण्टिनी के लड़ाई के पश्चात् प्राय: सभी राज्य थक चले थे, और इपेमिनाण्डस की मृत्यु के बाद, जैसा कि उसने संकेत कर दिया था, शीघ्र ही शान्ति-संधि हो गई थी। आर्केडिया का एकीकरण सम्पन्न न हो सका था। स्पार्टा का भी पतन हो गया था, और पिलोपिडास व इपेमिनाण्डस की मृत्यु के पश्चात् थीबिस भी उत्थान न कर सका था। इस स्थिति का लाभ अपने सेनानायकों (इफीक्रेटीज आदि) के नेतृत्व में एथेंस ने उठाया। यद्यपि मत वैभिन्य के कारण विशाल बेड़े के बावजूद भी प्रसार-नीति को पुनः न अपनाया जा सका, फिर भी पिड्ना (Pydna) पोटिड़े (३६१ ई० पू०) सैमांस व थ्रेसियन प्राय: द्वीप के अधिकांश नगरों पर अधिकार कर लिया गया था। पुराने उपनिवेश एम्फीपोलिस को अधिकृत करने की भी आकांक्षा एथेंस रखता था। परन्तु सैमास की विजय (३६५ ई० पू०) के कारण

एथिनियन संघ के सदस्य राज्यों वाइजैंतियम, चिग्रॉस, रोडस, व कॉस ग्रादि ने केरिया के द्वारा भड़काये जाकर एथेंस के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया, जो 'सामाजिक युद्ध'' (Social war) के नाम से कहा जाता है। इसका एक प्रमुख कारण एथेंस द्वारा सदस्य राज्यों का ग्रार्थिक शोषण भी था (३५७–३५५ ई० पू०)।

''ब्यूरी के मतानुसार 'समाजिक युद्ध' उपयुक्त नाम नहीं है, उसे वह लैटिन के शाब्दिक ग्रनुवाद के अधार पर लिया गया बताते हैं।''[1]

युद्ध को दबाने के ध्येय से एथेंस ने सेनापति चैब्रियस व चेरस को ६० जहाजों के साथ चिग्रॉस के विरुद्ध भेजा। सेनापति चैब्रियस इस युद्ध में मारा गया (३५७ ई० पू०), जिससे चेरस को युद्ध बन्द कर देना पड़ा। इसमें फिलहाल चिग्रॉस की विजय हुई ग्रौर उन लोगों ने सैमास से एथिनियन नागरिकों को निष्काशित करना ग्रारंभ कर दिया। तत्पश्चात् इफीक्रेटीज व टिमोथियस भी चिग्रॉस के साथ होने वाले युद्ध को दबाने के लिए भेजे गये, परन्तु उन्हें ग्राक्रमण करने का साहस नहीं हुग्रा। एक ग्रन्य युद्ध में चेरस भी पीछे ढ़केल दिया गया। ग्रसफलता के तत्पश्चात् रूष्ट होकर एथिनियनों ने इर्फीक्रेटीज को पदच्युत कर दिया ग्रौर टिमोथियस पर १०० टैलेण्ट ग्रर्थ दण्ड लगाया गया जिससे वह भाग कर चाल्किस चला गया ग्रौर वहीं उसकी मृत्यु हो गई। ग्रब एकाकी चेरस ही रह गया था जिसने फ्रिजिया के क्षत्रप ग्राटीबाजस को सहायता देकर परशिया के सम्राट को रूष्ट कर दिया जिसका प्रभाव ऐथेंस के लिए बुरा हुग्रा। ग्रतः घबरा कर एथेंस ने चेरस को वापस बुला लिया ग्रौर संघ के सदस्य राज्यों को स्वतंत्र कर दिया। कौस व रोडस् को केरिया के राजा मौसोलस ने ग्रपने राज्य में मिला लिया। इस प्रकार इस होने वाले 'सामाजिक युद्ध' में किसी भी राज्य को हानि के ग्रतिरिक्त विशेष लाभ प्राप्त न हुग्रा।

राजा मौसोलस का शासन-काल

केरिया-स्वतंत्र राज्य

केरिया के निवासी दो जातियों-यवन व केरियनों — के मिश्रण से उत्पन्न हुए थे। केरिया पर यवन-प्रवासियों के द्वारा यवन सभ्यता एवं संस्कृति का गहन प्रभाव पड़ा था—यवन भाषा वहाँ मुख्यतः प्रचलित थी। लैगिना (Lagina) स्थित जीयस के मन्दिर में केरियन नगरों के धर्म-संघ (Amphi-

१. A History of Greece J. B. Bury, P. 679.

ctyonic Council) के अधिवेशन आयोजित किये जाते थे । परशियन क्षत्रप टिस्साफर्नीज (Tissaphernese) की मृत्यु के बाद (३९५–९० ई० पू० में) हिकैटोमनस नामक केरियन ने नये राजवंश की स्थापना कर केरिया को राजनीतिक रूप से एकता के सूत्र में ग्रथित किया था । परशियन सम्राट ने इस नये राजवंश को अपने अधिकारिक क्षत्रप के रूप में मान्यता प्रदान कर दी थी । उसकी मृत्यु के बाद (३७७ ई० पू०) उसका पुत्र मौसोलस केरिया का महानतम् शासक हुआ । केरिया के संविधान के अनुसार विधान-निर्माण का अधिकार वहाँ की जन-सभा को था जिस पर "तीन जातियाँ" स्वीकृति प्रदान करती थीं ।

मौसोलस व उसके पिता के शासन काल में तटवर्ती यवन -नगर हैलिकार्नेसस, क्निड्स, माइलेट्स इत्यादि केरियन साम्राज्य में मिला लिए गये थे । लीसिया भी अधिकृत कर लिया गया था । आगामी विजय-योजनाओं की दृष्टि व समुद्री शक्ति के रूप में ख्याति-प्राप्ति के ध्येय से मौसोलस ने तटवर्ती नगर हैलिकार्नेसस को अपनी राजधानी बनाया था ।

सामाजिक युद्ध नामक प्रमुख घटना उसके शासन काल में ही हुई थी । ३५३ ई० पू० में उसकी मृत्यु हो जाने पर उसकी रानी आर्टेमिसिया (Artemysia) ने योग्यतापूर्वक शासन – सूत्र सम्हाला । रोड्स ने, जो मौसोलस के शासन काल में उसके आधीन था, उसकी मृत्यु के बाद स्वतंत्र होने के लिये विद्रोह कर दिया और सहायता के लिये एथेंस से याचना की । यद्यपि डिमौस्थनीज सहायता देना चाहता था, परन्तु किसी कारणवश याचना अस्वीकृत कर दी गई। अतः शीघ्र ही आर्टोमिसिया ने रोड्स के विद्रोह को दबा दिया, जिससे रोड्स आर्टोमिसिया के आधीन ही बना रहा ।

२० वर्ष के स्वतंत्र अस्तित्व के पश्चात् केरिया पर अलेक्जाण्डर महान ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया ।[1]

---

१. मौसोलस व उसकी रानी की प्रतिमाएँ ब्रिटिश म्युजियम में रखी हुई हैं । ये प्रतिमाएँ पहले उनके भव्य समाधि-गृह में प्रस्थापित थीं जो हैलिकार-नैसेस के बन्दरगाह के तट पर स्थित था । इस गृह के शिखर पर एक रथ निर्मित किया गया था । यह भवन समकालीन शिल्पकारों की कलाकृतियों द्वारा अलंकृत था । मौसोलस के इस समाधि भवन के नाम पर ही आंग्ल भाषा को Mausoleum शब्द की प्राप्ति हुई ।

५ सिराक्यूज का संक्षिप्त इतिहास

★

भूमध्य सागर के सिसिली नामक द्वीप के पूर्व में दक्षिणी तट पर प्राचीन सिराक्यूज का समृद्धिशाली नगर स्थित था जिसका नामकरण अनापस नदी के निकटवर्ती दलदल वा झील सिराको (Syraco) के नाम पर हुआ था। ७३४ ई० पू० में एकियस (Achias) नामक कोरिन्थवासी के नेतृत्व में कोरिन्थ एवं अन्य डोरियन नगरों के सम्मिलित प्रयास से इस उपनिवेश की स्थापना की गई थी। उपनिवेश की स्थापना के पश्चात् यवनों ने वहाँ के प्राचीन निवासी फीनीशियनों को निकालना शुरू किया जो सिसिली के पश्चिमी तट पर मोटिया (Motya) पेनॉरमस (Panormus) व सोलस (Solus) आदि स्थानों में आकर डट गये और अंत तक वहाँ बने रहे। फीनीशियनों का सर्वशक्तिशाली केन्द्र कार्थेज ('नया नगर') था जो अफ्रीका के उत्तरी तट पर स्थित था। इसकी स्थापना ८२३ या ८१४ ई० पू० के लगभग टायर (Tyre) के फीनीशियनों (भूमध्य सागर के तट पर लेबनान के पश्चिम में स्थित फीनीशिया नामक प्रदेश के वासी) द्वारा की गयी थी। तभी से इन दोनों के बीच शत्रुभाव प्रारम्भ हो गया जो आने वाली शताब्दियों तक निरन्तर कायम रहा। सिसिली भी संघर्ष का एक प्रमुख केंद्र था जहाँ दोनों के मध्य औपनिवेशिक क्षेत्र में चिरकालीन होड़ आरम्भ हुयी। यूनानियों एवं फीनीशियनों के सतत सघर्ष के कारण छठीं शताब्दी ई० पू० में पश्चिमी भूमध्य सागर में उनके सघर्ष अत्यन्त तीव्र थे। कार्थेज ने इस क्षेत्र में शक्ति व समृद्धि अर्जित कर ली

सिराक्यूज का नामकरण

फीनीशियनों से द्वन्द्ध

थी जिसका कारण सिसिली स्थित फीनीशियन उपनिवेशों के साथ निकट सम्पर्क, और मध्य इटली की महान् जलदस्यु शक्ति इट्रूरिया (Etruria) से मैत्री सम्बन्ध ही था। इसी कारण फ्रांस व स्पेन से इटली के तट तक उसकी शक्ति का विस्तार हो सका। जिस समय यूनान पर परशिया का आतंक छाया हुआ था, उसी समय कार्थेज ने भी सिसिली पर आक्रमण करने का सुअवसर देखा। ऐसा प्रतीत होता है कि एक ही समय पर युद्ध की योजनायें कार्यान्वित करने के सम्बन्ध में कोई दुर्भिसंधि परशिया व कार्थेज के बीच अवश्य रही होगी।

पांचवीं शती ई० पू० में सिसिली[1] के वृहत साम्राज्य में चार प्रमुख निष्ठुर शासकों का शासन था:—

सिसिली के चार निष्ठुर शासक

१. **जैंकल या मेसाना**—में रेगियम का निष्ठुर शासक एनाक्सिलस (Anaxilas) शासन करता था। उसने इट्रूरिया के (Etruria-मध्य इटली) जलदस्युओं को नियंत्रित कर लिया था।

२. **हिमेरा**—का शासक टेरीलस (Terrilus), जो जैंकल के शासक एनेक्सीलस का श्वसुर था।

३. **सिराक्यूज**–जिसमें गेलो या गेलॉन (Gelo or Gelon) का शासन था।

४. **एक्रागस**—यहाँ गेलान का श्वसुर थेरान (Theron) शासन करता था जिसने आगे चल कर हिमेरा पर भी आधिपत्य स्थापित कर लिया।

---

१. गेलों (Gela)—**सिसिली के दक्षिणी तट पर स्थित यूनानी नगर; ई०पू० ६९० में** Lindos **के** Rhodians **व,** Cretans **द्वारा स्थापित। प्रारम्भ में** Lindii **नाम से प्रसिद्ध; ई० पू० ५८२ में इसने** Agrigentum **नामक उपनिवेश को स्थापित किया**– Dr Smiths Classical Dictionary P. 358.

एक्रागस (Acragas) Agrigentum—**सिसिली के दक्षिणी तट पर समुद्र से २½ मील के अन्तर पर स्थित समृद्ध यवन उपनिवेश गेला के डोरियनों द्वारा स्थापित; ५६० ई० पू० में यहाँ क्रूर निष्ठुर शासक** Phalasis **का शासन था और ४८८–४२० तक** Theron **का; ४०६ में कार्थेनिअनों के हाथों इसका ध्वंस हुआ—और** Timolearn **ने ही इसका पुनर्निर्माण किया।**

Dr. Smiths clarssical Dictionry P. 38

इन चारों राज्यों में आगे चल कर सिराक्यूज सर्वप्रमुख हो चला जिसका श्रेय उसके योग्य और कुशल शासक गेलॉन को ही है। वह सिसिली के ही एक

सेनानायक गेलॉन

अन्य यवन-उपनिवेश गेला (Gela सिसिली के दक्षिणी तट पर स्थित) के निष्ठुर शासक हिप्पोक्रेटीज (Hippocrates) का सेनानायक था। हिप्पोक्रेटीज ने नेक्सॉस, जैंकल, आदि अनेक यवन नगरों पर आधिपत्य स्थापित

हिमेरा (Himera)—सिसिली के उत्तरी तटपर हिमेरा नदी के किनारे स्थित यूनानी उपनिवेश जिसकी स्थापना ई० पू० ६४८ में Zancle के चाल्सिडियनों ने की थी। कालाँतर में वहाँ डोरियन जाति के लोग भी जा बसे। अपेक्षाकृत शक्तिशाली पड़ोसियों से अपनी रक्षा के लिए इसने एक्रागस के निष्ठुर शासक Phalarias का संरक्षण स्वीकार किया और उस की मृत्यु तक उसके अन्तर्गत बना रहा।

ई० पू० ५०० के लगभग वहाँ Terrilus नामक निष्ठुर शासक का शासन था जिसे Acragas के शासक Theron ने निकाल बाहर किया। इस पर Terrilus ने कार्थेजीनिअनों की सहायता मांगी। ई० पू० ४८० हिमेरा की लड़ाई में Gelo व Theron की सम्मिलित सेनाओं ने कार्थेजीनिअनों को पराजित कर दिया। वहाँ Theron के नाम पर उसका बेटा Thrasydaeus शासन करने लगा। वहाँ के निवासियों के विद्रोह का क्रूरता पूर्वक दमन किया गया; लोगों को निकाल कर मुख्यतः डोरियन लोगों को लाकर वहाँ बसाया। ई०पू० ४७२ में Theron की मृत्यु हो जाने पर यह स्वतंत्र हो गया और आगामी ६० वर्षों तक स्वतंत्रता का उपभोग करता रहा।

ई० पू० ४०६ में हन्नीबाल ने इसको ध्वस्त कर दिया और हिमेरा नदी के दूसरे तट पर Thermae नामक बस्ती बसाई।

Dr. Smith's Classical dictiorary P. 415.

Zancle or Meessana—सिसिली के उ० पू० तट पर स्थित सिसेल नगर जिसे इटली के यूनानी नगर Cumae के Chalcidians ने बसाया था। इटली और सिसिली के जलडमरू मध्य के तट पर स्थित होने व अच्छे बन्दरगाह से युक्त

कर गेला के शासन क्षेत्र को विस्तृत कर लिया था, तत्पश्चात् वह सिराक्यूज की विजय करना चाहता था। ४९२ ई० पू० में हेलोरस (Halorus) नदी के तट पर उसे सिराक्यूज को पराजित करने में सफलता मिल गयी परन्तु कोरसिरा व कोरिन्थ के हस्तक्षेप के कारण वह नगर पर अधिकार न कर सका; तथापि सिराक्यूज के अधीनस्थ नगर कैमेरिना पर उसका आधिपत्य स्थापित हो गया। एक घेरे के अवसर पर उसकी मृत्यु हो जाने पर गेला निवासियों ने उसके पुत्रों को शासक मानने से इन्कार कर दिया। इस पर सेनानायक गेलान ने युवराजों का पक्ष लेकर विद्रोह को दबा दिया लेकिन उनकी जगह पर स्वयं ही शासक बन बैठा, तत्पश्चात् उसने सिराक्यूज की ओर ध्यान दिया। उसे अनुकूल अवसर भी प्राप्त हो गया जब सिराक्यूज के निष्कासित सामंतों 'गमोरी' या 'जियोमोरी' (Gamori or Geomori) ने जनसाधारण के विरूद्ध उसकी सहायता मांगी। गेलॉन ने उनका पक्ष लेकर सिराक्यूज की ओर प्रस्थान किया। अतः, उसके आक्रमण के संकट को देखकर, सिराक्यूज को झुकना पड़ा और वहाँ गेलॉन की सत्ता स्थापित हो गयी। सिराक्यूज पर अधिकार करने के पश्चात् उसने सिराक्यूज के पूर्वी भाग एक्रेडिना (Achradina) को जो 'बाहरी-नगर' कहलाता था, सिराक्यूज के दूसरे भाग, आर्टीजिया (Ortygia) द्वीप से एक लम्बे बांध के द्वारा संयुक्त कर दिया और एक्रेडिना के किले से बन्दरगाह तक एक दीवार का निर्माण करवाया। गेलॉन की इस नई दीवार में ही सिराक्यूज का नया प्रवेशद्वार, बन्दरगाह के निकट ही निर्मित किया गया। समीप ही अगोरा नाम से नये बाजार का निर्माण किया गया, साथ ही गोदियों की भी व्यवस्था की गयी। एक्रेडिना के दक्षिण पश्चिम में निएपोलिस (Neapolis') 'नया नगर' को आबाद करने के निमित्त उसने अन्य नगरों, यथा गेला, कैमारिना, मेगारा व यूबोइआ आदि से भी लोगों को आकर बसने के लिए निमंत्रित किया।

गेलॉन का अभ्युदय

होने के कारण यह एक वाणिज्य-प्रधान समृद्ध नगर बन गया।

इसका 'Zancle' नाम 'Sackle' (हंसिया) की आकृति के कारण पड़ा और मेसाना नाम इसे मेसेनिया से आने वाले औपनिवेशिकों ने अपनी प्रवलता स्थापित होने पर प्रदान किया।

Dr. Smith's classical Dictionary. P. 554.

अपनी स्थिति को दृढ़ बनाने की दृष्टि से उसने कुलीन वर्ग को प्रोत्साहित किया। नागरिकता के अधिकारों के वितरण में भी इसका ध्यान रखा गया। इसी दृष्टि से उसने विभिन्न राज्यों के साथ सम्बन्ध भी स्थापित किए। इसी सिलसिले में एक्रागस के निरकुंश शासक थेरॉन की पुत्री से उसने अपना विवाह किया, व साथ ही अपने भाई पालीजेलस (Polyjalus) की पुत्री का विवाह थेरॉन से कराया। इस तरह मैत्री सम्बन्ध स्थापित कर उसने अपनी स्थिति को सुदृढ़ बना लिया, और आने वाले संकट का सामना करने को प्रस्तुत हो गया।

कार्थेज का आक्रमण और हिमेरा का युद्ध ४८० ई० पू०

जिस समय यूनान परशिया के साथ संघर्षरत था, सिसिली के यूनानी भी भयंकर शत्रुओं से जूझ रहे थे। यह शत्रु कार्थेज था। ५ वीं शती ई० पू० तक यह नगर पश्चिमी भूमध्य सागर में अग्रगण्य शक्ति बन गया था। अब उसने सिसिली में प्रसार करना चाहा। ४८० ई० पू० में जब यूनान परसियन सम्राट जर्कसेज के साथ भिड़ा हुआ था, कार्थेज ने सिसिली पर आक्रमण करने का अच्छा अवसर समझा और आक्रमण के लिए पूरी शक्ति एकत्रित कर ली। सम्भवतया परशियनों व कार्थेज के बीच पहले से ही यह समझौता हो चुका था कि वे एक ही समय अपने सामान्य शत्रु यूनान पर आक्रमण कर देंगे। ब्यूरी व हट्टन बेब्स्टर आदि विद्वज्जनों का यहीं मत है। इसी कारण गेलॉन अपने मातृ देश यूनान की सहायता-याचना को स्वीकार न कर सका।

परम्परागत शत्रुता के अतिरिक्त कार्थेज के आक्रमण के कुछ अन्य कारण भी थे। एक्राग्रस के शासक थेरॉन ने, जो गेलॉन का सम्बन्धी था, हिमेरा के निष्ठुर शासक टेरीलस को हिमेरा से निकाल बाहर किया। टेरीलस भाग कर रेगियम चला गया और कार्थेज से सहायता याचना की। कार्थेज भी गेलॉन व थेरॉन के संयुक्त हो जाने से आशंकित था। टेरीलस के आग्रह पर हिमेरा की पुनर्प्राप्ति को प्रथम लक्ष्य निर्धारित किया गया। योजना के अनुसार कार्थेज का शासक हेमिल्कार (Hamilcar) अपनी विशाल-वाहनी (३ लाख सैनिक, २०० तोप, आदि) सेना लेकर पैनोरमस के तट पर उतरा। वहाँ से सेना व बेड़ा को लेकर हिमेरा पर घेरा डालने के लिए आगे बढ़ाया जहाँ थेरॉन स्वयं प्रतिरोध करने के निमित्त डटा हुआ था। थेरॉन ने भी अपनी सहायता के लिए निकट संबंधी गेलॉन के पास दूत भेजा था। गेलॉन शीघ्र ही

कार्थेज के आक्रमण का कारण

५०००० पदाति व ५००० अश्वारोहियों की सेना लेकर सहायतार्थ आ पहुँचा।

शीघ्र ही दोनों सेनाओं के बीच घमासान युद्ध हुआ जिसमें कार्थेज बुरी तरह परास्त हुआ और सिसिली के यवन नगर कार्थेज की फीनीशियन शक्ति द्वारा आच्छादित होने से बच गए। गेलॉन की कुशलता व योग्यता ने हिमेरा के युद्ध में पश्चिमी हेलास को उसी प्रकार बचा लिया जिस प्रकार थेमिस्टोक्लीज और सैलेमिस के युद्ध तथा पाजेनियस एवं प्लेटेइआ के युद्ध ने यूनान को परशिया के चंगुल से बचाया था। सैलेमिस व हिमेरा की विजयों को दृष्टि में रख कर कालांतर में यह प्रचलित हो चला कि दोनों विजयें एक ही दिन प्राप्त हुयी थीं। हिमेरा के युद्ध के पश्चात् शांति-संधि हो गयी। कार्थेज ने युद्ध के हर्जाने के तौर पर २००० टैलेण्ट सिराक्यूज को दिये। कार्थेज वालों के शिविर की लूट से प्राप्त चांदी के सिक्के ढलवाए गये जो गेलॉन की पत्नी के नाम पर डेमरेटियन (गेलॉन की पत्नी एक्रागस की राजकुमारी का नाम डैमेरिटा Damerita था) रखा गया।

हिमेरा के युद्ध में कार्थेज की पराजय

शांति-संधि

हिमेरा में कार्थेज की पराजय के विषय में एक अत्यंत विस्मयजनक आख्यान कहा जाता है। कहते हैं कि हैमिल्कार ने यूनानी देवताओं को अपनी ओर शामिल करने के ध्येय से बलि द्वारा पॉजीडॉन देवता को प्रसन्न करने का आयोजन किया था। इसकी विधि का सही प्रतिपादन करने के निमित वह कुछ यूनानियों का सहयोग चाहता था। अतः उसने कार्थेज के एक आश्रित यूनानी नगर सेलिनस को कुछ अश्वारोही भेजने का संदेश भेजा। यह पत्र किसी प्रकार गेलॉन के हाथ पड़ गया और उसने कूटनीति-पूर्वक इस पत्र का लाभ उठाया। सेलिनस के अश्वारोहियों के रूप में निश्चित तिथि को सिराक्यूज के अश्वारोही जा पहुँचे। हैमिल्कार उनमें अंतर न समझ पाया। फलतः हैमिल्कार स्वयं पॉजीडान की वेदी के पास मार डाला गया और उसके जहाज अग्नि में भस्म कर दिये गये। उत्साहित हो कर गेलॉन व थेरॉन ने अपनी-अपनी सेनाएँ लेकर कार्थेज की सेनाओं का पूर्णतः परास्त कर दिया।

हेमिल्कार की मृत्यु के संबंध में किम्वदंतियाँ

हैमिल्कार की मृत्यु के सम्बन्ध में कार्थेज में भी एक गाथा प्रचलित है। उसके अनुसार हैमिल्कार दिन भर 'बाल' (Baal) देवता की वेदी के समीप

खड़ा अग्नि को बलि चढ़ाता रहा जिसमें पशु व मानव शरीर अर्पित किये जा रहे थे। अंत में जब बह जल या पेय पदार्थ अर्पित कर रहा था तो सेना को भागते देखा अंत: बलिदान की सर्वोच्च घड़ी समीप देखकर स्वयं अपने को ही अग्नि में होम कर दिया। [१]

हिमेरा की विजय के पश्चात् थेरॉन ने वहाँ अपने पुत्र थ्रेसीडियस (Thrasydaeus) को शासक नियुक्त किया लेकिन वह लोकप्रिय न हो सका। उसके विरुद्ध विद्रोह हुआ जिसे क्रूरता पूर्वक दबा दिया गया—अन्य नगरों से लाकर डोरियन लोग वहाँ बसाए गए, परन्तु थेरॉन की मृत्यु हो जाने के बाद (४७५ ई० पू०) हिमेरा स्वतंत्र हो गया और आगामी ६० वर्षों तक स्वतंत्र बना रहा।

४७८ ई० पू० में गैलान की मृत्यु के पश्चात् उसकी वसीयत के अनुसार उसका भाई हिरॉन (Hieron) सिराक्यूज का शासक नियुक्त हुआ। दूसरे भाई पॉलीजेलस को सेनापतित्व का भार सौंपने के साथ ही अपनी रानी डिमेरेटा से विवाह करने का आग्रह भी उसकी वसीयत में किया गया था।

गेलान की मृत्यु

सिराक्यूज में इस वसीयत की व्यवस्था को अनौपचारिक समझा गया जिसके कारण गृहयुद्ध की स्थिति उठ खड़ी हुई। पॉलीजेलस भाग कर एकाग्रस चला गया जिसके शासक थेरॉन से उसके दुहरे सम्बन्ध थे। यह संघर्ष प्रकट युद्ध में परिवर्तित न होने दिया गया इसका श्रेय कवि सिमानिडीज को है।

४७४ ई० पू० में इटली के उत्तरी तट पर स्थित यवन उपनिवेश क्यूमे के आग्रह पर हिरॉन ने इट्रस्कन (Etruscan-इट्रूरिया) वेड़े को पराजित किया। इस विजय के उपलक्ष्य में हिरॉन ने लूट में से कांस्य निर्मित एक शिरस्त्राण ओलिम्पिया में अर्पित किया। थीबिस के महान् कवि पिण्डार ने प्रथम 'पीथियन-काव्य' की रचना भी इसी विजय के उपलक्ष्य में को।

अपने शासन काल में ही एटना (Actna) नामक प्राचीन नगर को कैटाने के नाम से पुर्ननिर्माण किया जो स्थायी सिद्ध हुआ। कैटाने निवासियों को लिओण्टिनी भेज दिया गया। कुछ दिन पश्चात् कैटाने में ही हिरॉन की मृत्यु हो गयी (ई० पू० ४६७।) मृत्यू से पूर्व उसने एक उल्लेखनीय कार्य और किया,

हिरॉन की मृत्यु
ई० पू० ४६७

---

१. History of Greece, J. B. Bury P. 291.

२. History of the Ancient World, Hutton Webster, P. 209.

एकाग्रस या एग्रीगेण्टम के शासक थेरान ने पालीजेलस का पक्ष लेकर सिराक्यूज पर आक्रमण किया था जिसे हिरॉन ने विफल कर दिया। पालीजेलस ने आक्रमण का रूख कड़ा देखकर अपने भाई से पुनः सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बना लिया। इसके पश्चात् ४७२ ई० पू० में थेरान की मृत्यु हो जाने पर हिरान ने उसके उत्तराधिकारी व पुत्र थ्रेसिडियस पर आक्रमण कर उसे एकाग्रस से निकाल बाहर किया।

शासन में यद्यपि हिरॉन अत्यन्त कठोर था तथापि साहित्यकारों का संरक्षक भी था। उसके शासनकाल में सिराक्यूज ने एस्चीलस, पिण्डार व सिमानिडीज आदि काव्यकारों को प्रश्रय दिया।

हिरॉन का भाई थ्रेसिबुलस

हिरॉन की मृत्यु के पश्चात् उसका भाई थ्रेसीबुलस शासक बना, लेकिन शीघ्र ही उसके विरुद्ध विद्रोह उठ खड़ा हुआ। अन्य सिसिलियन नगरों ने भी विद्रोहियों का साथ दिया। थ्रेसीबुलस पलायन कर गया। सिराक्यूज ने स्वतंत्रता की सांस ली और इस उपलक्ष्य में इल्यूथीरिया (Eleutheria) नामक उत्सव का आयोजन किया। शीघ्र ही सिराक्यूज के पुराने वासियों और गेलान द्वारा बुला कर बसाये गये नये आप्रवासियों में गृहयुद्ध छिड़ा जिसमें नये वाशिन्दों को निष्कासित कर सिराक्यूज के पुराने वासियों ने जनतंत्र की स्थापना की। आगामी पचास वर्षों में सिसिली के सभी नगरों ने पर्याप्त समृद्धि अर्जित कर ली। सेलिनस

थ्रेसिबुलस के पलायन के पश्चात् सिराक्यूज में जनतंत्र की स्थापना

भी इस बीच फीनीशिया से मुक्त हो गया। एक्रागस में थेरॉन द्वारा प्रारम्भ किया गया मंदिरनिर्माण को पूर्ण किया गया। इसी काल में हिमेरा में प्रसिद्ध कवि, दार्शनिक, वैद्य व संविधानवादी एम्पीडोक्लीज (Empedocles) का प्रादुर्भाव हुआ।

४६०-४५८ ई० पू० के लगभग एक नया संकट ड्यूसेटियस (Ducetius) के रूप में उठ खड़ा हुआ जो सिसिली के आदि-नगरों के प्रभुत्व की पुनर्स्थापनार्थ सक्रिय था। उसने यवन नगरों की विजय के हेतु प्राचीन नगरो का एक संघ गठित किया तथा कुछ नगरों की स्थापना भी की उसने एक्रागस व सिराक्यूज़ से युद्ध छेड़ दिया परन्तु उसे हरा दिया ग या (Noac ४५० ई० पू०) और कैद कर वह कोरिन्थ भेज दिया गया। पाँच वर्ष पश्चात् वापस लौट कर, सम्भवतया सिराक्यूज की सहमति से, उसने 'कैल एक्टी' (Kale Akte or Fair Shore) नगर की स्थापना की, परन्तु

राजनैतिक दृष्टि से वह पुनः उभर न पाया। उसकी पराजय से यह निर्णय अन्तिम रूप से हो गया कि सिसिली के नगरों में सर्वोच्च स्थान यवन नगरों का ही रहेगा।

सिराक्यूज व एक्रागस के बीच विजय के लाभ के बंटवारे के प्रश्न पर संघर्ष छिड़ा जिसमें विजयी होने पर सिराक्यूज सिसिली का नेता मान लिया गया (४४५ ई० पू०) । सिसेल नगरों का संघ भी पूर्णतः भंग कर दिया गया (४४०-३९ ई० पू०) ।

सिसिली-४४० ४१३ ई० पू० तक

४४३ ई० पू० के लगभग सिसिली की राजनीति में एक नवीन अध्याय का सूत्रपात हुआ जब लिओण्टिनी, रेगियम, कैटाने व नैक्सॉस आदि नगरों ने एथेंस से संधि करली। ४२७-२४ ई० पू० के आसपास इनका सिराक्यूज से संघर्ष आरम्भ हुआ। सिराक्यूज का साथ गेला, मैसाना या जैंकल; हिमेरा, लिपारा (स्पार्टन उपनिवेश) व लोक्रिस ने दिया। फलतः जो युद्ध हुआ, वह निर्णायक न सिद्ध हो सका। गेला में इन सभी नगरों की सभा आयोजित की गयी जिसमें सिराक्यूज के हर्मोक्रेटीज ने परस्पर संधि सम्बन्ध स्थापित करने व एथेंस का आश्रय ग्रहण न करने का प्रस्ताव रखा, परन्तु उसकी यह नीति कोई उल्लेखनीय सफलता न पा सकी। शीघ्र ही (४१६ ई० पू०) सेगेस्टा ने, जो ४५३ ई० पू० में एथेंस से संधि कर चुका था।, पुनः सेलिनस के विरुद्ध एथेंस से सहायता याचना की। एथेंस द्वारा सिराक्यूज के विरुद्ध भेजे गये अभियान के पीछे यह भी एक प्रमुख कारण था जिसमें अन्ततः एथेंस को निराशा ही हाथ लगी।

४१५–१३ ई०पू० में एथेंस के आक्रमण (सिसिलियन अभियान) के विफल होने के पश्चात् सिराक्यूज ने नैक्सॉस व कैटाने पर अधिकार कर लिया, परन्तु एक्रागस अधिकृत न किया जा सका।

डायोक्लीज प्रमुख जनतंत्रवादी नेता

सिराक्यूज की राजनीति में लोकतंत्रात्मक शक्तियाँ प्रबल होने लगी थीं। लोकतंत्रवादी नेताओं में सर्वप्रमुख स्थान डायोक्लीज (Diocles) को प्राप्त था जिसने हर्मोक्रेटीज (Hermocrates) जैसे विरोधियों की अनुपस्थिति का लाभ उठा कर उन्हें केवल निष्कासित ही नहीं किया (४१० ई०पू०) वरन् लोकतंत्र का मार्ग भी प्रशस्त कर लिया। हर्मोक्रेटीज स्पार्टा की सहायता के लिये भेज दिया गया था। ४१२ ई०

पू० के लगभग कतिपय अन्य व्यक्तियों सहित वह विधि-संहिता के निर्माणार्थ नियुक्त किया गया। डायोक्लीज ने आयुक्तों के निर्वाचन में 'भाग्य' की पद्धति को अपनाया, आयुक्तों को जनसभा की अध्यक्षता (सीमित अधिकारों के साथ) सौंप कर सेनापतियों से जनसभा से सम्बन्धित अधिकार छीन लिये।

सेगेस्टा व सेलीनस के विवाद में कार्थेजीनियन हन्नीबाल की सहायता

इसी बीच सेगेस्टा व सेलिनस के बीच भूमि सम्बन्धी विवाद उठ खड़ा होने से पुनः कार्थेज के आक्रमण का संकट उत्पन्न हो चला क्योंकि सेगेस्टा ने कार्थेज से सहायता-याचना की। इसमें सैलिनस का दायित्व कम न था, उसने विवादग्रस्त प्रदेश मिल जाने पर भी और अधिकारों की मांग की थी (४१० ई० पू०)। सेगेस्टा ने न केवल कार्थेज से सहायता ही मांगी वरन् उसकी आधीनता भी स्वीकार कर ली। अतः हिमेरा में वीरगति-प्राप्त कार्थेजिनियन नायक हैमिल्कार के पोते हन्नीबाल (Hannibal) की अध्यक्षता में लगभग १ लाख पचास हजार सेना व ६० जहाजों का बेड़ा भेजा गया। हन्नीबाल ने सेलिनस पर घेरा डाल दिया (४०९ ई० पू०)। सेलिनस ने सिराक्यूज, गेला व एक्रागस से सहायता मांगी। सिराक्यूज ने याचना स्वीकार कर सहायक सेना भेजी परन्तु इससे पूर्व ही ९ दिनों के घेरे के पश्चात् सेलिनस पराजित हो चुका था। नगर को लूट कर अग्नि के हवाले कर दिया गया, समस्त पुरुषों को कत्ल कर दिया गया और स्त्री बच्चों को बंधक बना लिया गया। बचे-खुचे लोग किसी प्रकार भाग कर एक्रागस जा पहुँचे।

हैमिल्कार का पोता हन्नीबाल

सेलीनस की पराजय

हिमेरा का विनाश—हिमेरा के रणक्षेत्र से हन्नीबाल की दुःखद् स्मृतियां जुड़ी हुयी थीं और उसका उद्देश्य इसी अपमान का प्रतिशोध लेना था। इसी कारण ब्यूरी लिखते हैं कि 'सेलिनस में हन्नीबाल केवल कार्थेज का सेनानायक था हिमेरा में वह हैमिल्कार का पोता था।'[१] अतः सेलिनस के तुरंत पश्चात् उसने हिमेरा पर घेरा डाल दिया। सिराक्यूज ने डायोक्लीज के नेतृत्व में लगभग ५००० सेना व २५ जहाज हिमेरा की सहायता के लिये भेजे परन्तु हन्नीबाल की कूटनीति के समक्ष यह सेना नगण्य सिद्ध हुयी। हन्नीबाल ने यह असत्य सूचना प्रसारित करवा दी कि सिराक्यूज पर आकस्मिक आक्रमण

१. A History of Greece, J. B. Bury, p. 615.

किया जाने वाला है। फलतः डायोक्लीज ने सिराक्यूज की वापसी की तैयारी की। एक बार में वह आधी के करीब सेना साथ ले जा सका। दुबारा उसके वापस आने के पूर्व ही हन्नीबाल का घेरा सफल हो चुका था। हन्नीबाल ने अपने दादा के बलिस्थान पर ही ३००० बलियां चढ़ा कर प्रतिशोध की ज्वाला शांत की। नगर को ध्वस्त कर उसे धूल में मिला दिया। हिमेरा का नाम केवल इतिहास के पृष्ठों में रह गया। एक माह के अन्दर दो यवन नगरों को ध्वस्त कर हन्नीबाल वापस अफ्रीका चला गया। सेगेस्टा व पैनोरमस में कार्थेज की अधीनता के प्रतीक स्वरूप नयी मुद्रा ढलवायी गयी। इसी मुद्रा का हिमेरा ने भी अनुसरण किया।

हन्नीबाल अपने दादा का बदला चुकाया

सिराक्यूज से हर्मोक्रेटीज की वापसी (४०८ ई० पू०)—वापस आने पर हर्मोक्रेटीज ने सैलिनस व हिमेरा की पराजय का प्रतिशोध लेने का निश्चय किया। सिराक्यूज से कोई सहायता न मिलने पर वह स्वयं अपने १००० वैतनिक सैनिकों, १००० हिमेरियन शरणार्थियों की सेना व ५ जहाज लेकर सैलिनस की ओर निकल पड़ा, और बिना किसी रुकावट के उसने सैलिनस पर अधिकार कर उसे अपना केन्द्र बनाया। इस बीच उसकी सैन्य संख्या बढ़कर ६००० हो गयी। फीनीशियनों के सभी गढ़ों यथा मौटिया, पेनोरमस, सोलस व सेगेस्टा में भी वह कार्थेज की शक्ति को परास्त करने में सफल रहा। इन विजयों के बावजूद भी सिराक्यूज में अपने प्रतिद्वन्द्वी डायोक्लीज के प्रबल होने के कारण वह नगर-प्रवेश में सफल न हो सका यद्यपि उसने हिमेरा के वीरगति प्राप्त सैनिकों की अस्थियों को (जिन्हें छोड़ आने के कारण डायोक्लीज की तीव्र आलोचना हुयी थी) वापस सिराक्यूज भेजकर जनता की धार्मिक भावना को अपनी वापसी के अनुकूल बनाने का अथक प्रयत्न किया। वापसी के लिए उसने परशियन क्षत्रप फर्नाबाजस से भी सहायता ली। अन्त में यदि किसी तरह वह सफल भी हुआ तो अगोरा के एक संघर्ष में मार डाला गया। (ई० पू० ४०९) जहाँ सिराक्यूज का भावी निष्ठुर शासक—'डायोनीसियस'—आहत अवस्था में मरने के लिये छोड़ दिया गया था।

एक्रागस पर कार्थेज का आक्रमण (४०६ ई० पू०)—सिराक्यूज ने भले ही हर्मोक्रेटीज को न स्वीकार किया हो लेकिन कार्थेज ने हर्मोक्रेटीज के कार्यों के लिए उसे ही दोषी माना और इसका जबाब मांगा। सिराक्यूज व कार्थेज के बीच वार्ता चलती रही और युद्ध का तैयारियां भी चलती रही।

अपनी स्थिति दृढ़ करने के ध्येय से कार्थेज ने हिमेरा के ध्वस्त नगर के निकट ही थर्मी (Thermae) या गर्म स्रोत नामक उपनिवेश की स्थापना की परन्तु यहाँ यवन तत्व ही प्रबल सिद्ध हुआ।

कार्थेज का प्रथम शिकार एक्रागस था, क्योंकि एक तो यह कार्थेज के सामने के तट पर स्थित था, दूसरे यहाँ के निवासी आराम-तलब हो चले थे। कार्थेज को बढ़ता देखकर एक्रागस ने गेला स्थित स्पार्टन सेनानायक डेक्सीप्पस (Dexippus) व सिराक्यूज आदि नगरों से सहायता मांगी। सिराक्यूज, गेला व कैमारिना आदि द्वारा भेजी गयी सहायक सेना (लगभग ३५०००-पदाति व अश्वारोही) से एक्रागस की विजय हुयी, परन्तु इस विजय का कोई लाभ न उठा सका। इस युद्ध में हन्नीबाल की मृत्यु हो गई; उसकी मृत्यु के पश्चात् कार्थेज की सेना भाग कर मुख्य शिविर पहुँचने में किसी तरह सफल हो गयी। विजय के पश्चात् भी किसी प्रकार का लाभ न उठाने से एक्रागस के सेनानायकों को दोषी ठहरा कर चार नायकों को पत्थरों से ही मार डाला गया।

हन्नीबाल की मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारी हिमिल्को (Himilco) ने सैनिकों को एकत्रित कर फिर से एक्रागस पर घेरा डाल दिया, और ८ माह के घेरे के बाद नगर पर अधिकार कर लिया। इस सफलता का कारण एक तो यह था कि वह सिराक्यूज आदि नगरों से आने वाली रसद व सेना के मार्ग को अवरूद्ध कर चुका था; दूसरे स्पार्टन सेनापति डेक्सीप्पस, जो सहायता में आया था, रिश्वत लेकर कार्थेज की ओर मिल गया। नगर में प्रवेश कर कार्थेज की सेना ने लूटमार की और नगर में रह गये वृद्धों व अपाहिजों को मौत के घाट उतार दिया। ओलिम्पियन जीयस के अर्द्धनिर्मित मन्दिर को छोड़ अन्य मन्दिर आदि जला डाले गये। नगर को ध्वस्त करने के बजाय कार्थेज की विजय के प्रतीक स्वरूप एक महान् नगर में विकसित करने का निश्चय किया गया।

हिमिल्को का अगला कदम था —गेला की विजय।

सिराक्यूज में डायोनीसियस का स्वेच्छाचारी शासन

एक्रागस की पराजय से सिराक्यूज की प्रजातंत्र-सरकार के विरूद्ध भावनायें उभड़ उठीं। जनतंत्र के विरोधियों में हर्मोक्रेटीज का सहकारी डायोनिसियस भी था जो पहले एक सरकारी कार्यालय में लिपिक रह चुका

था। एक जनसभा का आयोजन कर उसने लोकतंत्रीय शासन के सेनानायकों पर विश्वासघात का आरोप लगाया। उसके प्रयत्न से पुराने सेनानायकों को अपदस्थ कर एक नयी सैनिक-समिति की स्थापना की गयी जिसमें डायोनीसियस भी नियुक्त किया गया। सैनिक-समिति में आने के पश्चात् उसने अपने सहयोगी हर्मोक्रेटीज के निष्कासित सहयोगियों को भी वापस बुलवाना आरम्भ किया। साथ ही समिति के सहकर्मी सदस्यों पर विश्वासघात का आरोप लगा कर बदनाम करना आरम्भ किया और शीघ्र ही वह एकमात्र सेनानायक बन बैठा। अपनी हत्या के षडयंत्र की सम्भावना का समाचार प्रचारित-प्रसारित कर उसने अपने लिये ६०० अंगरक्षक भी स्वीकृत करा लिये जिनकी संख्या बढ़ कर शीघ्र ही १००० हो गयी। संक्षेप में उसने स्वयं को पूर्ण स्वेच्छाचारी शासक बना लिया यद्यपि जनतंत्र का बाह्य रूप बना रहने दिया गया। कार्थेज के विरुद्ध एक शक्तिशाली शासक की आवश्यकता ने लोगों को उसके स्वेच्छाचारी शासन के प्रति सहिष्णु बना लिया।

गेला पर, जो सिराक्यूज के साथ था, हिमिल्को के घेरे (ई० पू० ४०५) के समय उसने आधे हृदय से सहायता पहुंचायी और गेला व कैमारिना के निवासियों को नगर खाली करने को बाध्य किया। उन सबको साथ लेकर वह सिराक्यूज की ओर चला। रुष्ट होकर इटली के सैनिक वापस चले गये और सिराक्यूज ने डायोनीसियस के शासन को उलटने का सुअवसर समझ कर विद्रोह कर दिया; परन्तु विद्रोह शीघ्र ही दबा दिया गया। विद्रोही भाग कर एटना चले गये।

डायोनीसियस के प्रति जनता की यह धारणा निराधार न थी कि वह स्वयं कार्थेज से मिला हुआ था, क्योंकि सिराक्यूज में अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने के निमित्त व कार्थेज से मान्यता व सहायता प्राप्त करने की आकांक्षा रखता था। उसकी आकांक्षा की पूर्ति कहीं से भी हो यही उसका ध्येय था। इसी कारण उसे 'व्यक्तिवादी युग की सच्ची सन्तान' कहा जाता है। प्रारम्भ से अन्त तक वह एक अहंवादी था और जीवनपर्यन्त अहं की तुष्टि में ही लीन रहा।

यथा स्थिति के आधार पर डायोनीसियस व हिमिल्को के बीच संधि सम्पन्न हो गयी। डायोनीसियस ने कार्थेज को साइकन (Sican—मूल सिसिलियन) समुदायों के साथ-साथ उत्तर दक्षिण तट के सभी यवन राज्यों का अधिस्वामी मान्य कर लिया। एक्रागस, सैलिनस्, गेला व कैमारिना कार्थेज के अधीन चले गये। हिमेरा भी कार्थेज को समर्पित कर दिया गया: एक्रागस व

हिमिल्को में संधि ४०५ ई० पू०

सैलिनस अधीनस्थ राज्य एवं गेला व कैमारिना करद् राज्यों के रूप में रखे गये। सैगेस्टा भी कार्थेज का अधीनस्थ नगर बन गया। इस प्रकार अधिकांश सिसिली पर कार्थेज का आधिपत्य स्थापित हो गया।

सिसेल नगर स्वतंत्र मान लिये गये। लिम्राण्टिनी भी स्वतंत्र मान लिया गया। पहले यह सिराक्यूज का अधीनस्थ राज्य था; फिर भी डायोनीसियस ने प्रतिरोध न किया क्योंकि बदले में उसे अपने स्वेच्छाचारी शासन को मान्यता प्राप्त हो रही थी। नैक्सास व कैटाने डायोनीसियस की स्वेच्छा पर छोड़ दिये गये।

मेसाना व सिसेल नगर स्वतन्त्र घोषित

इस सफलता में डायोनीसियस की तलवार की अपेक्षा स्वर्ण ही अधिक प्रभावी सिद्ध हुआ। नेक्सास पर प्राचीन सिसेल जाति का अधिकार हो गया। लिम्राण्टिनी पुनः सिराक्यूज से आ मिला। केवल मेसाना ही स्वतंत्र रह गया।

डायोनीसियस का शासन—एथेंस की पराजय के पश्चात् की अर्द्धशती में समृद्धि, शक्ति, वैभव व प्रभाव में सिराक्यूज सर्वप्रथम यवन नगर बन गया। इसका श्रेय डायोनीसियस को ही है। जीवन पर्यन्त (३८ वर्ष) वह सिराक्यूज का निरंकुश शासक बना रहा यद्यपि शासन का बाह्य रूप संवैधानिक ही बना रहा तथापि वस्तुततः शासन का आधार शक्ति ही थी। शक्तिपूर्ण होते हुए भी निजी स्वार्थसाधन के निमित उसने सत्ता का दुरुपयोग नहीं किया। इसी कारण उसको समाप्त करने के षडयंत्र सफल न हो सके। दूसरे, लोग बाह्य शत्रुओं से रक्षा के निमित्त डायोनीसियस जैसे शक्तिशाली शासक का होना पसन्द भी करते थे। डायोनीसियस इस बात को समझता था व इसका लाभ उठाने से न चूकता था।

अपने शासन काल के आरम्भ में सर्वप्रथम उसने नगर की रक्षा-योजना पर ही ध्यान दिया। लिम्राण्टिनी के पुनः सिराक्यूज से आ मिलने से कार्थेज के साथ हुयी संधि का उल्लंघन हुआ अतः कार्थेज की ओर से आक्रमण की आशंका हो चली थी। द्वीप की किलेबन्दी की गयी। स्थलडमरूमध्य के उत्तरी सिरे पर दीवार का निर्माण कर द्वीप (आर्टीजिया) को मुख्यभूमि से पृथक् कर दिया गया। स्थलडमरूमध्य के निकट उत्तर में व द्वीप के बीच ५ प्रवेशद्वार निर्मित किये गये। इस किलेबन्दी के अन्दर केवल डायोनीसियस के निकट सम्पर्क वाले व विश्वस्त व्यक्ति ही निवास कर सकते थे। नौसैनिक अड्डे के लिये लघु बन्दरगाह (Lesser Harbour) की भी किलेबन्दी की

डायोनिसियस की सुरक्षा व्यवस्था

गयी। इस बन्दरगाह का प्रवेशद्वार पूर्णतः बन्द कर दिया गया, अब यहाँ से एक से अधिक जहाज एक साथ नहीं गुजर सकते थे। इस प्रकार जल व स्थल दोनों ही ओर से डायोनीसियस ने सिराक्यूज को सुदृढ़ व शक्तिशाली बना लिया।

इतना होने पर भी उसे विद्रोह के भय से मुक्ति न थी। एक बार जब वह एक सिसेल नगर हर्बेस्सस के विरूद्ध अभियान पर गया हुआ था, सिराक्यूज की जनता ने उसके विरूद्ध विद्रोह कर दिया। डायोनीसियस के वापस आने पर उसे द्वीप में ही घेर लिया गया (४०३ ई० पू०)। शीघ्र ही मेसाना, रेगियम व हिमिल्को की सेना की सहायता से उसने विद्रोह का दमन कर दिया, परन्तु विद्रोहियों को क्षमादान देकर कूटनीतिक विजय भी प्राप्त कर ली। इसी अवसर पर डायोनीसियस की राय से इटालियन सहायक सेना ने सिसिली में इण्टेल्ला Entella) नाम की नयी बस्ती बसा डाली। सेना के विभिन्न अंगों के संगठन व समन्वय की भी योजनायें बनायीं गयीं। उसी ने कैंटेपुल्ट नामक यंत्र का भी अविष्कार किया जिससे भारी-भारी पत्थरों को दूर-दूर तक प्रक्षेपण किया जा सकता था। नौसेना के विस्तार के लिए विशालकाय जहाजों का निर्माण करवाया जिनमें चप्पुओं की ५ कतारें होती थीं। सिराक्यूज के बेड़े में छोटे-बड़े सब मिला कर लगभग ३०० जहाज हो गये। इस प्रकार डायोनीसियस ने हर ओर से अपनी स्थिति सुदृढ़ और सुरक्षित बना ली और किसी भी सम्भावित संघर्ष के लिए प्रस्तुत हो गया। इसके अतिरिक्त भेंट-उपहार आदि द्वारा भी उसने लोगों की भक्ति अपनी ओर आकृष्ट की। दासों को मताधिकार देकर जनता के एक नए वर्ग को जन्म दिया; साथ ही अपने शत्रुओं की सम्पत्तियाँ छीन कर अपनी शक्ति व प्रभाव में भी वृद्धि की।

डायोनीसियस के विरुध्द विफल विद्रोह

तैयारियां पूरी कर लेने के पश्चात् (३९८-९७ ई०पू०) वह सिसिली के फीनीशियन नगरों की विजय के लिए चल पड़ा। मार्ग में कार्थेज के अधीनस्थ यवन नगर कैमेरिना, गेला, एक्रागस, थर्मिए, हरिक्स आदि उससे आ मिले। सेगेस्टा ने उसकी ओर शामिल होने से इन्कार कर दिया। ८०००० पदाति व लगभग ३०००अश्वारोही सेना लेकर वह मोटिया की ओर बढ़ा। मोटिया की विजय के पूर्व उसने साइकनों (Sicans) को अपनी ओर मिला लिया और सेगेस्टा तथा इण्टेल्ला पर भी घेरा डाल दिया, लेकिन दोनो ही स्थलों पर निराश होकर

सुरक्षा व्यवस्था के बाद डायोनिसियस का प्रथम अभियान

उसे वापस मोटिया लौट आना पड़ा। कार्थेज ने उसका ध्यान बँटाने के उद्देश्य से स्वयं सिराक्यूज पर आक्रमण कर विशाल-बन्दरगाह में स्थित कुछ जहाजों को ध्वस्त कर दिया, किन्तु डायोनीसियस को विचलित न कर सका। कार्थेनियन हिमिल्को अपना जहाजी बेड़ा लेकर खाड़ी में प्रविष्ट हो गया किन्तु डायोनीसियस के प्रक्षेपण-यंत्रों आदि के समक्ष उसकी एक न चली और उसे पीछे हट जाना पड़ा। डायोनीसियस आगे बढ़ कर अपने जहाजों को खुले समुद्र में ले आया; हिमिल्को उसका सामना न कर सका और वापस कार्थेज चला गया, मोटिया असहाय एवं एकाकी रह गया।

अन्त में आकस्मिक रात्रि-आक्रमण द्वारा डायोनीसियस को मोटिया की विजय में सफलता मिल गई। हिमेरा में हन्नीबाल द्वारा किये गये अत्याचारों का प्रतिरोध मोटिया के फीनीशियन नगर से लिया जाने लगा परन्तु डायोनीसियस ने सार्वजनिक हत्याकाण्ड रोक दिया यद्यपि लूटपाट चलती ही रही। वहाँ के निवासी दास बना कर बेच दिये गये। जिन यूनानियों ने कार्थेज का साथ दिया था उन्हें प्राणदण्ड दिया गया। मोटिया में एक सिसेल सैनिक छावनी स्थापित कर दी गई।

३९७ ई० पू० के बसन्त में वह सेगेस्टा की ओर बढ़ा। इस बीच मोटिया की पराजय के समाचार से अशंकित होकर हिमिल्को भी बृहद् सैन्य सहित पैनोरमस की ओर प्रयाण कर गया। यद्यपि उसके बेड़े का बड़ा भाग डायोनीसियस के भाई व सिराक्यूज के नौ-सैनापति ने डुबा दिया था तथापि मोटिया, इरिक्स आदि नगरों को अधिकृत करने में हिमिल्को को सफलता मिल गयी। इस का समाचार मिलते ही सेगेस्टा का घेरा अधूरा छोड़ कर डायोनीसियस वापस सिराक्यूज चला गया। हिमिल्को ने मोटिया की खाड़ी के दक्षिण में लिलिबीयम (Lilybaeum) नामक नगर की स्थापना की जो कालांतर में कार्थेजीनियन शक्ति का सुदृढ़ गढ़ सिद्ध हुआ। इसके पश्चात् उसने शिराक्यूज के विरुद्ध प्रयाण की योजना बनायी और मेसाना को तहस-नहस कर मोटिया की पराजय का प्रतिशोध लिया। तत्पश्चात् नेक्सास की सिसेल जातियों के बीच डायोनीसियस के बढ़ते हुए प्रभाव का प्रतिरोध करने के ध्येय से हिमिल्को ने टारस (Taurus) पर्वत पर दो किलेबन्द नगरों की स्थापना की।

मोटिया के पराजय के पश्चात् हिम्लिको का पुनः बढ़ाव

दूसरी ओर डायोनीसियस ने भी अपने भाई लेप्टीनिज (Leptines) के

नेतृत्व में लगभग २०० जहाजों का एक बेड़ा संगठित कर लिया। इस बेड़े तथा विशाल स्थल-सेना के साथ वह कैटाने की ओर रवाना हुआ परन्तु विफल होकर उसे वापस चला आना पड़ा। वापस आकर उसने कोरिन्थ, स्पार्टा इटली आदि को सहायता-सन्देश भेजे।

कैटाने में पराजय

डायोनीसियस व हिमिल्को का प्रथम संघर्ष—शीघ्र ही हिमिल्को जल व स्थल सेना सहित सिराक्यूज आ पहुँचा। उसका बेड़ा तो विशाल बन्दरगाह में जम गया और स्थल सेना के साथ उसने अपना शिविर ओलिम्पियन जीयस के मन्दिर के समीप पालिक्बना (Polychna) के मैदान में स्थापित किया। उसने डिमीटर देवी के मंदिर को लूट कर यवनों की धार्मिक भावना को भी ठेस पहुँचाई। शीघ्र ही हिमिल्को के शिविर में महामारी फैल गयी जिसमें उसके असंख्य सैनिक क्रूर-काल के ग्रास बन गये। डायोनीसियस भी अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने की दृष्टि से किलेबन्दी करता रहा। उसने पालिक्ना, डेस्कान (Dascon) बन्दरगाह के पश्चिमी तट पर और प्लेमीरियन में तीन किलो का निर्माण करवाया। दूसरी ओर स्पार्टा से भी उसे ३० जहाजों की सहायता मिली। उनकी सहायता से डायोनीसियस ने फीनीशियनों के रसद वाले एक जहाज पर अधिकार कर लिया फलतः संघर्ष हुआ जिसमें सिराक्यूज की विजय हुयी। परन्तु उसकी ये छोटी-छोटी सफलताएँ सिराक्यूज की जनता के असंतोष को शमित न कर पायीं। जब उसने एक परिषद् की बैठक का आयोजन किया तो स्पष्ट रूप से जन-भावना का भी उसे ज्ञान हो गया। उसके विरोधी उसे अपदस्थ करने के लिए पिलोपोनीसियनों की सहायता लेने को भी उत्सुक थे परन्तु उनके हाथ निराश लगी। जनभावना का आभास मिलने से डायोनीसियस भी स्वयं को लोकप्रिय बनाने का यत्न करने लगा। इस बीच हिमिल्को के शिविर में महामारी का लाभ उठाकर डायोनीसिय ने उन पर दुहरा आक्रमण कर दिया। जिससे शीघ्र ही पॉलिक्ना डैस्कान व अन्य किलों पर उसका अधिकार हो गया। डायोनीसियस यह भी समझता था कि अपनी निरंकुश सत्ता को अक्षुरण रखने के लिए जनता को वाह्य आक्रमण से सदैव त्रस्त रखना चाहिए। अतः कार्थेजीनिअनों की स्थिति का लाभ उठा कर उसने उन्हें ३०० टैलेण्ट लेकर वापस चले जाने दिया। कोरिन्थ वालों को उसकी योजना का ज्ञान न था अतः हिमिल्को को वापस जाते

डायोनीसियस की कूटनीति

देख और डायोनीसियस को उधर से निश्चित देख कर उन्होंने स्वयं हिमिल्को का पीछा कर उसके कुछ जहाजों को डुबा दिया। उसकी सेना तहस-नहस कर दी गयी। इस प्रकार कार्थेज के साथ प्रथम संघर्ष में डायोनीसियस काफी सीमा तक सफल रहा। कार्थेज का साम्राज्य केवल अपनी ही प्राचीन सीमा तक पश्चिमी कोने में आबद्ध रह गया। सिसिली का शेष भाग प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रुप से सिराक्यूज के प्रभाव क्षेत्र में चला आया।

डायोनीसियस व कार्थेज का दूसरा संघर्ष (३९३ ई० पू०) उक्त सफलताओं के पश्चात् डायोनीसियस ने पुनः विजय यात्रा आरम्भ की और सोलस हेन्ना व टारोमेनियम आदि नगरों को विजित कर अपने साम्राज्य में मिला लिया तथा कतिपय नगर राज्यों के निरंकुश शासकों से मैत्री संधि भी कर ली। इस प्रकार उसकी बढ़ती हुयी शक्ति से कार्थेज पुनः सशंक हो चला; सम्भवतया यही द्वितीय 'प्यूनिक युद्ध' का कारण था। डायोनीसियस के साथ इस युद्ध में कार्थेज का एक अन्य सेनापति मैगो युद्ध का संचालन कर रहा था, जो हिमिल्को के समान यशस्वी व वीर नहीं था; प्रथम युद्ध में हेमिल्को के पराजय का भी प्रभाव काफी था अतः शीघ्र ही ३९२ ई० पू० के इस युद्ध में डायोनीसियस की विजय हुयी। इस विजय में एगीरियम के शासक एगीरिस का भी बड़ा हाथ रहा। अतः यवनों व सिसेल जातियों का सहयोग भी इस युद्ध की एक विशेषता थी। डायोनीसियस की सफलता के कारण कार्थेज के सेनानायक मैगो को संधि के लिये झुकना पड़ा। संधि के अनुसार सिसिली के सभी यवन नगर सिराक्यूज के अंतर्गत रख दिये गये। कार्थेज की शक्ति द्वीप के पश्चिमी कोने तक सीमित कर दी गयी व सिसेल नगर भी डायोनीसियस के आधीन कर दिये गये। पर सोलस व एगीरियम के विषय में कोई बिवरण नहीं मिलता। टारोमेनियम पर डोयोनीसियस का अधिकार बना रहा।

केवल सिसिली के नगरों पर ही डायोनीसियस की दृष्टि न थी वरन् वह इटली के भी यवन नगरों को अधिकृत कर साम्राज्य विस्तार करना चाहता था।

डायोनीसियस व रेगियम का संघर्ष

इस दिशा में प्रसारार्थं उसने पहले मेसाना नगर का पुनर्निर्माण किया और माइली नगर के पश्चिम में टिण्डेरिस नगर की किलेबन्दी की; वहाँ नौपक्टस से निष्कासित मेसानावासियों को बसाया गया। स्पार्टा उन्हें मेसाना में नहीं बसने देना चाहता था, और डायोनीसियस भी स्पार्टा से बैर मोल नहीं लेना चाहता था अतः मेसाना में लोक्रि और मेड्मा—

(इटली) के प्रवासी बसाये गये (३९४ ई० पू०)। रेगियम ने इसका प्रतिरोध करने के निमित मेसाना व टिण्डेरिस के मध्य स्थित माइली पर अधिकार कर वहाँ कैटाने व नैक्सॉस के निष्कासितों को बसाया, परन्तु शीघ्र ही मेसाना ने माइली पर अधिकार कर उन्हें पुनः निष्कासित कर दिया। फलतः रेगियम सिराक्यूज का विरोधी हो चला। उसके विरोध का एक और कारण यह था कि रेगियम ने डायोनीसियस के इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया था कि वहाँ की कोई कुमारी विवाह में डायोनीसियस को दी जाय; वे केवल जल्लाद की पुत्री ही उसे देना चाहते थे। ऐसे समय पर लोक्रि आगे बढ़ा और उसने डायोनीसियस के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। अब डायोनीसियस ने लोक्रि को ही अपना केन्द्र बनाया। कार्थेज से शांति-संधि हो जाने के कारण वह इस ओर ध्यान देने को स्वतंत्र भी हो गया था। लोक्रि से प्रस्थान कर उसने रेगियम को जल व स्थल दोनों ओर से घेर लिया। रेगियम ने डायोनीसियस से संघर्ष की आशंका देख अपने सहायक राज्यों को सहायता के लिए तैयार रखा था जिससे वह घेरे के पश्चात् इटली के तटवर्ती संघीय नगरों की सहायता से उसे वापस लौटाने में सफल हो गया, (३९१ ई० पू०)।

डायोनीसियस का इटली से संघर्षः—अब डायोनीसियस ने इटली के संघीय राज्यों की ओर ध्यान दिया। उनके विरूद्ध प्रयाण करने से पूर्व उसने इटली के पर्वतीय जाति ल्यूकेनिअनों (Leucanians) से समझौता कर लिया कि वह समुद्र से, और ल्यूकेनिअन स्थल से इटली के संघीय राज्यों पर आक्रमण करेंगे। इसी समझौते के अनुसार ल्यूकेनिअनों ने थूरी पर चढ़ाई कर दी। बदले में थूरी ने ल्यूकेनिआ पर धावा बोल दिया परंतु बुरी तरह परास्त हुआ। जो सैनिक बच कर भाग निकले वे लेप्टीनीज के हाथ जा पड़े जिसने उन्हें बन्धक के रूप में रख लिया। लेप्टीनीज अपने अधिकारों की सीमा लांघ कर इटली के संघ व ल्यूकेनिआ के बीच विराम संधि भी सम्पन्न करा दी, फलतः उसे अपदस्थ होना पड़ा (३९० ई० पू०)। क्योकि डायोनीसियस इटली के संघ राज्यों को तहस नहस कर देना चाहता था किन्तु विराम संधि सम्पन्न होने से इसके इस कार्य में विलम्ब पड़ गया।

अब डायोनीसियस स्वयं कालोनिया (Caullonia) की ओर अग्रसर हुआ। इटालियन संघ की ओर से क्रोटॉन नगर ने लगभग १५००० पदाति व २००० अश्वारोहियों की एक सेना एकत्रित कर सिराक्यूज से निष्कासित हेलोरिस को अपना नायक नियुक्त किया। डायोनीसियस भी २०००० पदाति व ३००० अश्वारोहियों की विशाल सेना लेकर सामना करने के लिये बढ़ा। एक नदी के

पास दोनों की टक्कर हुयी। हेलोरिस वस्तुस्थिति से भिज्ञ न था अत: वह केवल ५०० सैनिकों को साथ लेकर आगे बढ़ आया जब कि डायोनीसियस उसके बढ़ाव से पूर्ण परिचित होने के कारण पूरी तरह संघर्ष के लिये तैयार था। परिणामतः हेलोरिस की स्थिति निर्बल पड़ गयी और वह मारा गया। उसके पीछे आने वाली सेना भी छिन्न-भिन्न कर दी गयी। १०००० के लगभग इटालियन सैनिक भाग कर पहाड़ी पर चढ़ गये परन्तु पानी के अभाव में उन्हें नीचे उतर कर डायोनीसियस की इच्छानुसार बिना शर्त आत्मसमर्पण करना पड़ा, यद्यपि कूटनीति का प्रयोग कर डायोनीसियस ने बिना किसी हर्जाने के उन्हें मुक्त कर दिया। प्रभावित होकर सभी संघीय राज्यों ने डायोनीसियस से पृथक्-पृथक् संधि कर ली। संघ टूट गया और रेगियम, कालोनिश्रा व हिप्पोनिश्रन (Hipponian) एकाकी रह गये। स्थिति देख कर रेगियम ने भी अपना बेड़ा समर्पित कर समझौता कर लिया। कालोनिश्रा व हिप्पोनिश्रन ध्वस्त कर दिये गये। कॉलोनिश्रा का प्रदेश लोक्री को सौंप दिया गया (३८९-८८ ई० पू०)। दोनों नगरों के निवासी सिराक्यूज ले जाकर वहाँ के नागरिक बना दिये गये।

इटली के प्रदेशों पर डायोनीसियस का अधिकार

शीघ्र ही (३८७ ई० पू०) उसने रेगियम पर पुनः घेरा डाला और १० माह पश्चात् उस पर अधिकार करने में सफल हो गया। रेगियम-वासियों से युद्ध का हर्जाना लिया गया और हर्जाना देने में असमर्थ लोगों को दास बना कर बेच दिया गया। उनके नायक फिटान को प्रताड़ित कर बाद में सब सगे-सम्बन्धियों सहित डुबा दिया गया (३७९ ई० पू०)। इसके ८ वर्ष पश्चात् क्रोटोन पर भी उसका अधिकार हो गया और यवन-इटली में उसकी शक्ति सर्वोच्च शिखर पर जा पहुँची।

अब उसने हैड्रियाटिक सागर के पूर्व व पश्चिम में सिसिलियिन व्यापार-वाणिज्य के प्रसार की ओर ध्यान दिया। इसके पूर्व एथेंस, कोरसिरा आदि ही इस क्षेत्र में प्रमुख व्यापारिक नगर थे। सिराक्यूज को भी उस क्षेत्र का प्रमुख सदस्य बनाने के निमित्त डायोनिसियस ने अपूलिश्रा (Apullia) इस्सा द्वीप (Issa) फैरास (Phaeros), व वेनेशिया हैड्रिया (Venetia Hadria—वेनिस) में औपनिवेशिक वस्तियों की स्थापना की। साथ ही मोलोंसिया (Mollosia—अथवा इपीरस) के शासक

व्यापार-वाणिज्य के विस्तार में

अल्सेटस (Alcestas) से संधि भी कर ली जिससे हैड्रियाटिक सागर के प्रवेश-द्वार पर भी उसका प्रभाव व्याप्त हो चला।

इस प्रकार हम देखते हैं कि डायोनिसियस का साम्राज्य पर्याप्त रूपेण प्रसारित व विस्तृत हो चला था। इसमें सिसिली का अधिकांश भाग और इटली प्रायद्वीप का दक्षिणी भाग सम्मलित था। साम्राज्य के विभिन्न प्रदेशों का सिराक्यूज से जो सम्बन्ध था उसके अनुसार ब्यूरी ने इस प्रकार इनका वर्गीकरण किया है :—

१: सिराक्यूज के जनतंत्र द्वारा शासित प्रदेश;

२: सैनिक उपनिवेश-क्रोटोन, हैन्ना, मेसाना व इस्सा;

३: संधिगत अधीनस्थ प्रदेश-गैला, कैमारिना, टिण्डेरिस, एगीरियम आदि

४: निर्भर या आश्रित राज्य-थूरी आदि इटली-संघ के राज्य, इटली के दक्षिण प्रदेश के राज्य, मोलोसिया का राज्य व हैड्रियाटिक तट पर स्थित कतिपय इलीरियन प्रदेश आदि।

इन सब विजय-यात्राओं के व्यय की पूर्ति हेतु डायोनीसिसय ने करभार में वृद्धि की। जहाज-निर्माण आदि कार्यों के लिए विशेष कर आरोपित किये, साथ ही मवेशियों पर भी कर लगाये। कहा जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति को वार्षिक रूप से अपनी पूँजी का २० प्रतिशत राजकीय कोष में जमा करना पड़ता था। दूसरे, उसने रजत के ४ ड्रेक्मा के सिक्कों की जगह टिन के सिक्के प्रसारित किए। एक बार ऋण के भुगतान के लिए उसने सिक्कों पर राजकीय मुहर लगा कर उनका मूल्य द्विगुणित कर दिया। तीसरे उसने मन्दिरों को भी लूटा। उसकी डेल्फी को लूटने की योजना सफल न हो सकी। इन सबने उसे सिराक्यूज में अलोकप्रिय भी बना दिया।

डायोनीसियस व कार्थेज का तीसरा युद्ध (३८३ ई० पू०) :— यद्यपि इन दोनों के बीच हुई दूसरे युद्ध में सेनापति मैगों के साथ शान्ति-संधि सम्पन्न हो गई थी, परन्तु इधर डायोनीसियस द्वारा कार्थेज के विरुद्ध उसके अधीनस्थ सेगेस्टाँ, इरिक्स आदि नगरों को सहायता करने के कारण कार्थेज ने युद्ध की तैयारी कर दी और मैगों के नेतृत्व में एक विशाल सेना भेजकर डायोनीसियस पर आक्रमण कर दिया। कबाला के निकट दोनों में संघर्ष हुआ जिसमें सेनानायक मैगो मारा गया। सेनानायक विहीन सेना अब घबडा कर संधिवार्ता के लिए तैयार थी कि, पैंनोमंस के पास सिराक्यूज

के सेना का परास्त होने की सूचना से उत्साहित होकर उसने फिर जोर शोर से आक्रमण किया जिससे सिराक्यूज की सेना पूर्ण रूप से परास्त कर दी गयी। फलतः डायोनीसियस को विवशतः एक अपमान जनक संधि पर हस्ताक्षर करने पड़े जिसके अनुसार उसका साम्राज्य सीमित हो गया। सेलिनस व थार्मि आदि नगरों पर फिनिशियनों का अधिकार हो गया। यवन नगर हिराक्ली-मिनोआ को रेसमेल्कार्ट नाम से अपने शक्तिशाली गढ़ के रूप में विकसित किया। इस बीच डायोनीसियस बराबर इस पराजय को विजय के रूप में बदलने के लिए प्रयत्नशील रहा और छोटे-मोटे आक्रमणों के द्वारा सेलिनस, इण्टेल्ला आदि को उसने पुनः प्राप्त कर लिया, परन्तु लिलिबेइयम को लेने के उसके प्रयत्न विफल रहे, साथ ही उसके जहाजी बेड़े को भी गम्भीर क्षति पहुँची। ई० पू० ३६७ में इस महान साम्राज्य विस्तारवादी स्वेच्छाचारी शासक का देहान्त हो गया। तत्पश्चात् सिराक्यूज व कार्थेज के बीच सम्पन्न समझौते के अनुसार हैलिकस नदी ही दोनों के बीच सीमा निर्धारित कर दी गयी।

डायोनीसियस का व्यक्तित्व

डायोनिसियस केवल एक सैनिक नेता ही नहीं वरन् एक कवि के रूप में भी प्रख्यात था। एथिनियन रंगमंच के दुखान्त नाटकों की प्रतियोगिता में उसने तृतीय, द्वितीय और अंत में एक नाटक ("रैन्सम आफ हैक्टर"—Ransom of Hector) पर प्रथम पुरस्कार भी प्राप्त किया।

उसकी महत्ता के विषय में ब्यूरी लिखते हैं कि सर्वप्रथम उसकी महत्ता सिसली पर आधिपत्य के लिए एशिया व यूरोप के बीच संघर्ष में नेता के रूप में है। उसने न केवल 'प्यूनिक-आक्रामक' को सिसिली से निकाल बाहर किया वरन् स्वयं उनके क्षेत्र में प्रवेश कर उन्हें पराजित भी किया। दूसरे, उसने सिराक्यूज को न केवल यवन-सिसिली में सर्वशक्तिमान बनाया, वरन् यूनान व यूरोप में भी सर्वशक्तिशाली बना दिया। उसी ने संकीर्ण सिसिलियन नीति का परित्याग कर महाद्वीपीय नीति अपनायी। तीसरे उसका साम्राज्य एक राजतंत्रीय शासन था जिसने मेसिडोनिया के साम्राज्य को प्रेरणा दी और यूरोप के इतिहास में नये युग का सूत्रपात्र किया। सैनिक शास्त्रास्त्रों आदि में भी उसने नवीन प्रयोग किये। इस महत्वाकांक्षी शासक ने स्वयं को डायोनीयस देवता के रूप में प्रतिष्ठित कर अपनी प्रतिमा भी स्थापित करवायीं और वीर-पूजा का प्रचलन किया। फिर भी यवन सभ्यता की अपेक्षा वह इटली की सभ्यता का ही प्रसारक माना जा सकता है।

डायोनीसियस के पश्चात् सिराक्यूज का राज्य

डायोनीसियस द्वितीय अथवा कनिष्ठ :—डायोनीसियस की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र डायोनीसियस द्वितीय अथवा कनिष्ठ के नाम से सिंहासनारूढ़ हुआ। एक योग्य व्यक्ति होने पर भी वह दूसरों के परामर्श पर निर्भर रहता था जिनमें सबसे अधिक प्रभावशाली डायोन (Dion) था जो उसका सम्बन्धी होने के साथ हीं उसके पिता के शासनकाल के अन्तिम दिनों में मन्त्री भी रह चुका था। डायोन ने अपने इस प्रभाव का दुरूपयोग न करके सिराक्यूज को निरंकुश शासन से मुक्ति दिला कर, दार्शनिक मित्र प्लेटो के सिद्धान्त पर आधारित, आदर्श-राज्य की स्थापना का प्रयास किया। वह स्पार्टन शासनतंत्र के कुछ तत्वों का भी नवीन शासन-विधान में समावेश करना चाहता था। अपने ध्येय की पूर्ति के निमित्त उसने अपने मित्र प्लेटो को डायोनीसियस द्वितीय के मार्गदर्शन के लिए सिराक्यूज बुला भेजा (३८८ ई० पू०)। यद्यपि कुछ लोग इसके पीछे डायोन की स्वयं सत्ता हस्तगत करने की दुर्नीति की आशंका करते हैं पर अधिकांश विद्वान इसे निर्मूल मानते हैं, कुछ भी हो, प्लेटो को सफलता न प्राप्त हो सकी क्योंकि डायोनीसियस द्वितीय समझदार व उत्साही होते हुए भी व्यवहार में खरा न उतर सका। इसी बीच प्लेटो के मित्र डायोन के प्रभाव के घटने व, एक मिथ्या आरोप लगा कर देश से निष्कासित कर दिए जाने, तथा डायोन के विरोधी व निरंकुश शासन के प्रबल समर्थक इतिहासकार फिलिस्टस (Philistus) के प्रभाव में वृद्धि के कारण प्लेटो को वापस चला जाना पड़ा। बाद में डायोन भी सिराक्यूज छोड़कर एथेंस चला गया। सिराक्यूज में उसकी सम्पत्ति अपहृत कर ली गयी और डायोनीसियस द्वितीय ने उसकी पत्नी एरिटि (Arete) पर दूसरे व्यक्ति से विवाह करने के लिए दबाव भी डाला।

डायोन का प्रभाव

इसपर अब डायोन की सहनशीलता समाप्त हो गयी और जब डायोनीसियस द्वितीय इटली की ओर गया हुआ था वह ५ जहाज लेकर सिराक्यूज की ओर चल पड़ा (३५७ ई० पू०)। मार्ग में उसने खानों पर अधिकार कर अपनी आर्थिक स्थिति दृढ़ की और उपलब्ध धन की सहायता से सिसेल जाति की एक सहायक सेना तैयार कर ली जिसकी सहायता से उसने अपने प्रतिद्वन्द्वी फिलिस्टस को परास्त करके सिराक्यूज पर अधिकार कर

सिराक्यूज पर डायोन की सत्ता

लिया। सिराक्यूज की विधानसभा (असेम्बली) ने शासनाधिकार डायोन व २० नायकों के हाथों में सौंप दिया। इपीपोले पर अधिकार कर उसने बड़े बन्दरगाह व लघु बन्दरगाह को एक दीवार द्वारा संयुक्त करा दिया। एक सप्ताह पश्चात् डायोनीसियस जब लौटा तो सिराक्यूज पर डायोन के अधिकार के कारण वह आर्टीजिया द्वीप में ही रुक गया।

घटनाचक्र तीव्रगति से चलने लगा। शीघ्र ही हिराक्लिडीज अथवा हिराक्लिड्स (Heraclides) के रूप में डायोन का प्रतिद्वन्द्वी उठ खड़ा हुआ।

हिराक्लीडीज का उदय

असेम्बली ने भी हिराक्लीडीज का साथ दिया। असेम्बली द्वारा उसके नायक चुने जाने के विषय पर डायोन ने उसका विरोध किया किन्तु बाद में स्वयं ही उसका नाम प्रस्तावित कर दिया। डायोन की इस नीति से जनमत उसके विरुद्ध उमड़ चला। इसी बीच अवसर पाकर हिराक्लिडीज ने निरंकुश शासन के प्रबल समर्थक इतिहासकार फिलिस्टस को भी अपने सहायकों द्वारा चुपके से समाप्त करा दिया। डायोनीसियस द्वितीय भी अब फिलहाल सिराक्यूज पर अधिकार की आशा छोड़कर अपने पुत्र अपोलोक्रेटीज (Appolocrates) के अधीन एक सेना छोड़कर द्वीप से विदा हो गया और इटली की ओर चला गया (३५६ ई० पू०)। हिराक्लिडीज के सभी प्रतिद्वन्द्वी एक-एक कर छँटते चले गये और शीघ्र ही डायोन भी सेनापति पद से च्युत कर दिया गया। हिराक्लिडीज सहित २५ नये सेनानायकों की एक अन्य समिति नियुक्त की गयी। असेम्बली ने डायोन के साथ आये हुए पिलोपोनीसियनों को भी भत्ता देने से इन्कार कर दिया अतः उन्हें साथ लेकर वह भी लिआण्टिनी की ओर चला गया (३५६ ई० पू०)।

तत्पश्चात् हिराक्लिडीज ने आर्टीजिया द्वीप पर, जहाँ इस समय डायोनीसियस द्वितीय का पुत्र जमा हुआ था, अधिकार करने के ध्येय से घेरा डाल दिया।

डायोन की पुनः सत्ता स्थापित

द्वीप में स्थित अपोलोक्रेटीज आत्मसमर्पण करने को ही था कि निप्सियस (Nypsius) के नेतृत्व में एक सैनिक टुकड़ी ने हिराक्लिडीज के घेरे पर आक्रमण कर दिया। इस आकस्मिक आक्रमण द्वारा दीवार को पार कर नीप्सियस ने निचले एक्रेडिना और अगोरा पर अधिकार कर लिया, तथा उसके सैनिक नगर में घुस कर लूट-पाट मचाने लगे। हिराक्लिडीज के आक्रमण का पहला ही प्रयत्न विफल गया और वह भाग खड़ा हुआ।

सिराक्यूज-वासियों ने डायोन को सहायतार्थ बुला भेजा। डायोन सब कुछ भुला कर अपने नगर की सहायता के लिए आ पहुँचा और शीघ्र ही उसने शत्रु को द्वीप में शरण लेने को बाध्य कर दिया। हिराक्लिडीज और डायोन में मेल हो गया। डायोन को स्थल पर व हिराक्लिडीज को जल में समस्त अधिकार सौंप दिये गये। परन्तु शीघ्र ही दोनों के सम्बन्ध पुन: तनावपूर्ण हो चले यद्यपि कुछ समय के लिये वे पुन: एक हो गये। डायोनीसियस द्वितीय के पुत्र ने द्वीप डायोन को सौंप दिया। द्वीप में कैद डायोन की पत्नी व बहन भी स्वतंत्र कर दी गयी। डायोन के प्रभाव में पुन: बृद्धि होने लगी। वह सिराक्यूज में सीमित लोकतंत्र सहित ऐसे अभिजातशासन अथवा कुलीन वर्गीय अल्पतंत्र की स्थापना करना चाहता था जिसमें राजा का भी स्थान हो, अर्थात् मुख्य रूप से वह स्पार्टा के संविधान को ही अपनाना चाहता था। इसमें निर्देश प्राप्त करने के लिए उसने मातृदेश कोरिन्थ को अपने दूत भेजे और कोरिन्थ के अनुकरण पर 'उड़ते हुए घोड़े' से अंकित सिक्के भी ढलवाये। इस बीच उसने हिराक्लिडीज को भी मरवा डाला और धीरे-धीरे सम्पूर्ण सत्ता हस्तगत कर ली और स्वयं ही निरंकुश शासक बन बैठा।

कैलीपस द्वारा डायोन की हत्या

डायोन के साथ यूनान से आए हुए प्लेटो के शिष्य कैलीपस (Callippus) ने डायोन का तख्ता उलटने का षडयंत्र रचा। डायोन को अपनी पत्नी व बहन से इसका ज्ञान हो गया था परन्तु उसने ध्यान न दिया। डिमीटर (Demeter) व पर्सिफोन के मन्दिर में कैलीपस ने शपथ लेकर डायोन को विश्वास दिलाया परन्तु पर्सिफोन के सम्मान में आयोजित एक उत्सव के अवसर पर ही जैकिन्थस के कुछ लोगों की सहायता से डायोन की हत्या करवा कर सत्ता स्वयं हस्तगत कर ली (जून ३५४ ई० पू०)। एक ही वर्ष पश्चात् जब कैलीपस कैटाने पर आक्रमण में व्यस्त था—डायोनीसियस प्रथम के पुत्रों हिप्पेरिनस व नीसेइअस (Hipparinus व Nysaeus[1]) ने द्वीप पर अधिकार कर लिया (३५३-३५१ ई० पू०)। हिप्पैरिनस की तों एक ही वर्ष पश्चात् हत्या हो गयी परन्तु नीसेइअस पाँच वर्षों तक (३५१-३४६ ई० पू०) द्वीप पर शासन करता रहा।

इस बीच डायोनीसियस द्वितीय लोक्रि में निरंकुश शासक बन बैठा था।

---

१. डायोन की बहन एण्ड्रोमास (Andromache) से उत्पन्न।

वहाँ भी उसके अत्याचारों व अन्यायों ने उसे अलोकप्रिय और घृणा का पात्र बना दिया था। अब वह पुनः सिराक्यूज की ओर उन्मुख हुआ (३४६ ई० पू०)। उसने नीसेइअस को हरा कर वहाँ की सत्ता हस्तगत कर ली। उसकी अनुपस्थिति में लॉक्रि में उसके विरुद्ध विद्रोह हो गया जिसमें उसकी पत्नी व पुत्रियों को अपमानित कर मार डाला गया और उनके अवशेष समुद्र में फेंक दिये गये। सिराक्यूज पर वह तीन वर्ष तक शासन करता रहा जब तक कि कोरिन्थ के टिमोलिअन ने आकर उसे पराजित नहीं कर दिया।

डायोनोसियस द्वितीय पुनः सिराक्यूज में

टिमोलिआन (Timoleon)—सिराक्यूज के अतिरिक्त मेसाना, कैटाने, लिआण्टिनी आदि नगरों में भी स्वेच्छचारी शासन पनप रहा था। लिआण्टिनी में डायोन का मित्र हिकेटस (Hiketas) शासक था, जिसने डायोन की मृत्यु के पश्चात् उसकी पत्नी व पुत्री को पिलोपोनेसस जाते समय समुद्र में डुबा कर मरवा डाला। यद्यपि प्रकटतः उसने अन्य सिसिलियन नगरों के साथ ही कार्थेज के विरूद्ध कोरिन्थ की सहायता मांगी थी परन्तु उसकी आकांक्षा स्वयं सिराक्यूज में सत्ता ग्रहण करने की थी, और सिराक्यूज में वह सेनापति निर्वाचित भी कर लिया गया था।

स्वेच्छाचारी हिकेटस

इसी बीच कार्थेज के विरुद्ध सहायता-याचना के उत्तर में कोरिन्थ ने टिमोडेमस (Timodemus) के पुत्र टिमॉलिऑन को सेनापति बना कर सिसिली के यवन नगरों के सहायतार्थ भेजा। टिमॉलिऑन एक सामंत परिवार का युवक था परन्तु भाई की हत्या करने के कारण (जो कि स्वयं निरंकुश शासक बनना चाहता था) वह एकाकी जीवन व्यतीत कर रहा था। उक्त कर्तव्य के कारण उसकी प्रशंसा भी की जाती थी।

रेगियम पहुँचने पर टिमॉलिऑन का प्रथम सामना कार्थेज के बेड़े से हुआ। वहीं हिकेटस के दूत भी उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे, जिन्होंने उससे मांग की कि वह स्वयं हिकेटस की सहायता करने के लिये सिराक्यूज चले। हिकेटस का परोक्ष मन्तव्य समझ, याचना को स्वीकार करने का बहाना कर टिमॉलिऑन चुप-चाप टॉरोमेनियम (Tauromenium) चला गया। डायोनीसियस की मृत्यु के पश्चात् टॉरोमेनियम में एण्ड्रोमाकस (Andromachus) का शासन स्थापित हो गया था जिसने डायोनीसियस द्वारा प्रताड़ित व निष्कासित

नैक्सॉस-वासियों को वापस बुला कर पुनः वहां बसाया था। यहाँ टिमॉलिग्रॉन का स्वागत हुआ। शीघ्र ही उसने डायोनीसियस द्वितीय के अधिकृत एड्रानस (Adranus) नदी के तटवर्ती नगर एड्रानम पर अधिकार कर उसे अपना मुख्य सैनिक केन्द्र बना लिया। यहाँ हिकेटस ने उसकी हत्या का विफल प्रयत्न किया। लोगों को उसकी अलौकिक शक्ति और देवताओं के वरदान पर पूर्ण विश्वास हो गया। यह धारणा भी व्याप्त थी कि आयोनिअन सागर में देवी डिमीटर व पर्सिफान ने मशाल द्वारा उसका मार्ग-प्रदर्शन किया था।

शीघ्र ही अनेक अन्य नगर भी टिमालिग्रान से आ मिले। अब डायोनीसियस द्वितीय ने भी इस शर्त पर सत्ता-समर्पण करना स्वीकार किया कि उसे सुरक्षित रूप से कोरिन्थ चला जाने दिया जाय। उसकी याचना स्वीकार कर ली गयी। उसका द्वीप-स्थित दुर्ग, सैनिक तथा युद्ध सामग्री टिमालिग्रान को प्राप्त हो गया। डायोनीसियस द्वितीय के अंतिम दिन कोरिन्थ में ही व्यतीत हुए।

आर्टीजिया के उक्त द्वीप को छोड़ कर शेष सिराक्यूज अभी भी हिकेटस के अधिकार में था। उसकी सहायता के लिए मैगो के अधीन १५० जहाज बन्दरगाह में उपस्थित थे और कार्थेंज की सेना भी सिराक्यूज में प्रवेश कर गयी थी परंतु मैगो व हिकेटस के कैटाने की ओर चले जाने के कारण शीघ्र ही क्रेडिना पर भी टिमॉलिग्रॉन का अधिकार हो गया। कोरिंथ की नयी सहायक सेना, जिसे कार्थेज के बेड़े के कारण इटली में रूके रहना पड़ा था, सिसिली आ पहुँची। इसी बीच हिकेटस व मैगो के बीच उत्पन्न मतभेद के कारण टिमॉलिग्रॉन को सिराक्यूज पर पूर्ण अधिकार करने में सफलता मिल गयी। मैगो वापस कार्थेज चला गया और आत्म-हत्या करली। उसकी सेना भी कत्ल कर डाली गयी। सिराक्यूज पर अधिकार करने के पश्चात् टिमॉलिग्रॉन ने डायोनिसियस द्वारा निर्मित किलेबंदी को ध्वस्त करवा डाला तथा नगर के पुनः बसाये जाने का भी प्रबंध किया। डायोक्लीज के विधान को पुनः प्रसारित किया गया। कतिपय संशोधनों के साथ लोकतंत्रात्मक विधान अपनाया गया। इसकी स्मृति में नये सिक्के भी प्रसारित किये गये।

सिराक्यूज पर टिमालिग्रान का अधिकार

सिराक्यूज विजय के पश्चात् टिमॉलिग्रॉन सिसिली के अन्य नगरों को भी निरंकुश शासकों से मुक्त करने निकल पड़ा। हिकेटस सहित (जो लिग्राण्टिनी चला गया था) सभी निरंकुश शासकों ने आत्मसमर्पण कर दिया।

३३९ ई० पू० में हैमिल्कार व हैसड्रूबल (Hasdrubal) के नेतृत्व में कार्थेंज

की एक विशाल सेना ने (लगभग २०० युद्धपोत, १००० भारवाही जहाज, १०००० घोड़े, ७०००० पदाति व २५०० 'पवित्र दल' (Sacred Band) के सैनिक) सिराक्यूज पर आक्रमण करने के ध्येय से प्रस्थान किया। जब सेना लिलिबेइअम में ही थी तभी टिमॉलिअॉन ने उसे रोक लेने का निश्चय किया। अतः वह लगभग १०००० सेना लेकर (जिसमें से लगभग १००० भाड़े के सैनिक भाग गये] इस सेना का सामना करने के लिये निकल पड़ा। क्रीमिसस नदी के तट पर एक घमासान लड़ाई में कार्थेज की सेना बुरी तरह परास्त की गयी। हजारों सैनिक मारे गये, बहुत से नदी में डूब गये और लगभग १५००० कैद कर लिये गये। युद्ध की लूट में से बहुत सा उपहार कोरिंथ के थलडमरूमध्य में स्थित पॉजीडान देवता के मंदिर में भेज दिया गया।

कार्थेज का टिमालिअान से विफल संघर्ष

इस विजय से टिमॉलिअॉन को सिसिली के फीनीशियन शासन को समाप्त करने में पूर्ण सफलता नहीं मिली, क्योंकि कैटाने का निरंकुश शासक मैमरकस (Mamercus) और लिआण्टिनी का हिकेटस फिर उसके विरूद्ध हो गये, और कार्थेज से सहायता प्राप्त कर विद्रोह कर दिये; परंतु वे हरा कर कैद कर लिये गये और उन्हें मार डाला गया। हिकेटस की पत्नी व पुत्री आदि भी कत्ल कर दी गयीं। मेसाना-वासियों ने भी निरंकुश शासक हिप्पॉन को मौत के घाट उतार दिया। अन्य नगर भी निरंकुश शासकों से शीघ्र ही मुक्त हो गये। एकागस व गेला नगरों को पुनः बसाया गया। कार्थेज ने भी हैलिकस [Halycus] नदी को सीमा मान कर सिसिली में निरंकुश शासकों को सहायता न देना स्वीकार कर समझौता कर लिया।

निरंकुश शासको की समाप्ति

अपना उद्देश्य पूर्ण हो जाने पर टिमॉलिअॉन ने भी अपने अधिकार त्याग दिये। सिराक्यूज-वासियों ने नगर के निकट ही उसे जागीर प्रदान की जहाँ वह मृत्युपर्यन्त (२ वर्ष) रहा। समय-समय पर उसे सिराक्यूज की एसेम्बली में परामर्श के लिये आमंत्रित किया जाता रहा। उसके नाम पर अनेक भवनों का निर्माण किया गया। उसकी मृत्यु के बाद २० वर्ष तक सिसिली में शांति बनी रही।

इटली की बर्बर जातियाँ :—जब तक सिसिली में डायोनीसियस प्रथम का शासन था। इटली के मैसापिअन; ल्यूकेनिअन व इआपीजिअन

(Messapian, Lucanian, Iapygian) आदि शांत रहे परन्तु उसकी मृत्यु के पश्चात् सिराक्यूज में चलने वाले घटना-चक्र का लाभ उठा कर इटली की उपरोक्त बर्बर जातियां तटवर्ती यवन नगरों पर धावा बोलने लगीं। उनमें से कुछ कबीलों ने स्वयं को संघ-बद्ध कर कान्सेशिया (Consentia) को अपनी संघीय राजधानी बनायी। संघ को ब्रे टियन संघ का (Brettian League) नाम दिया गया। इस संघ ने टेरिना (Terina), हिप्पानिअन (Hippon. ian), व नवीन सीबेरिस आदि नगरों को विजित कर लिया (३५६ ई० पू०)। यवनों के प्रसिद्ध नगर टैरास (Taras) ने मातृदेश स्पार्टा से सहायता याचना की। स्पार्टा से राजा आर्कीडमस को भेजा गया। वह चार-पांच वर्षों तक बर्बरों से लड़ता रहा परन्तु कोई महत्वपूर्ण सफलता न प्राप्त कर सका। इसी युद्ध अवधि के ३३८ ई० पू० में वह मारा गया। टैरास ने उसकी स्मृति में स्वर्ण मुद्रायें प्रसारित की।

मोलोसिया-नरेश अलेक्जाण्डर

अब टैरास ने अलेक्जाण्डर महान् के चाचा मोलोसिआ के शासक अले-क्जाण्डर से सहायता मांगा। अलेक्जाण्डर ने पश्चिम में साम्राज्य-स्थापना का स्वर्णअवसर देख सहायता स्वीकार कर इटली की ओर प्रयाण किया। पूर्वी इटली में उसने मेसोपिअनों को परास्त किया और उत्तर में सिपोण्टम (Sypontum) को अधिकृत कर लिया। कान्सेन्शिया पर अधिकार कर उसने ब्रे टिअन संघ को भी भंग कर दिया। टेरिना को भी उसने बर्बरों से मुक्त कर दिया। उसकी शक्ति से आतंकित होकर रोम ने उससे संधि कर ली। उसके स्वागत में टैरास ने भी सिक्के ढलवाये, परन्तु अपनी स्वतंत्रता पर आंच आते देख उसने अलेक्जाण्डर की मैत्री भी त्याग दी। फलतः युद्ध छिड़ गया जिसमें थूरी ने अलेक्जाण्डर की सहायता की। बर्बरों ने भी सुअवसर देख कर अलेक्जाण्डर के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। पण्डोसिया (Pandosia) की लड़ाई में वह मारा गया (३३१-३३० ई० पू०) जिससे उसके साम्राज्य की आकांक्षा धूल में मिल गयी। उसके पतन के उपरान्त टैरास ही पड़ोसी नगरों में प्रमुख बन बैठा।

इस प्रकार इटली व सिसिली पर यूनानी प्रभाव काफी समय तक बना ही रहा।

---

६ चतुर्थ शती, ई० पू० का एथेंस

★

पिलोपोनीसियन युद्ध के परिणामस्वरूप एथीनियन साम्राज्य की समाप्ति एथेन्स और समस्त यूनान के लिए लाभप्रद ही सिद्ध हुयी। एथेन्स के अन्दर वे परिवर्तन प्रारम्भ हुए जिन्होंने पेरीक्लीज के स्वप्न को चरितार्थ किया एवं एथेन्स को, कम से कम बौद्धिक और कला-जगत तथा यूनानी रियासतों में अग्रणी बना दिया। अब एक ऐसा युग प्रारम्भ हुआ जिससे एथेन्स और शेष यूनान परस्पर सांस्कृतिक आदान-प्रदान द्वारा निकट आने लगे और केवल अखिल-यवन-संसार का स्वप्न ही वास्तविकता की ओर अग्रसर नहीं होने लगा, वरन् विश्वबंधुत्व की भावना भी बलवती होने लगी। पिलो-पोनीसियन युद्धों के बाद से एथेन्स यूनान के साहित्यिक और कलात्मक जीवन का एकमात्र केन्द्र बन गया और सही अर्थों में "हेलास का शिक्षक" कहा जाने लगा। नाटकों की दोनों शाखाओं-दुःखांत व प्रहसन, में भी परिवर्तन आए। प्रहसन अब सामान्य जन-जीवन को लेकर लिखा जाने लगा तथा उसका क्षेत्र अब विस्तृत हो चला। केवल नाटकों में ही नहीं बल्कि पद्य में भी यह प्रभाव दृष्टि-गोचर होता है। सोफिस्ट विरोधी प्रहसनकार एरिस्टोफेनीज का प्रभाव क्षीण हो रहा था, और दुःखांत नाटककार यूरीपिडीज का प्रबल-प्रभाव परिलक्षित होने लगा। इसका अर्थ था पुरातनपन्थ की पराजय, सन्देहवाद की विजय, देवी-देवताओं का बहिष्कार और विचारों व विश्वासों के क्षेत्र में नवयुग का आगमन; परन्तु यह अकस्मात् नहीं हुआ, इसके लिए दीर्घकाल तक संघर्ष चलता रहा।

एथेंस में नवीन प्रवृत्तियाँ

यूरीपिडीज की ही भाँति चौथी शताब्दी के एथीनियन दुःखांत नाटक-कार प्रत्येक वस्तु की, जो तथ्यों पर आधृत न हो आलोचना करने लगे थे। नाटक और काव्य-रचना के अतिरिक्त एथेन्स ने गद्य-साहित्य को भी भली भाँति विकसित किया। विचारों के स्पष्ट प्रतिपादन के लिए यह अत्यन्त आवश्यक था। चौथी शती विशेषतया दार्शनिक प्रगति की युग थी। इस समय वार्त्तालाप (संवाद), इतिहास, और भाषणों के रूप में दार्शनिक ग्रन्थों की रचना हुई। सोफिस्टों के परवर्त्ती शिक्षकों (*T*eachers of Rhetoric), जैसे, आइसो-क्रेटीज (*I*socrates) ने एथेंस को यूनान का शिक्षा-केन्द्र बना दिया। उसने समकालीन राजनीनिक प्रश्नों को लिया परन्तु अच्छा वक्ता न बन पाने के कारण वह अपने विचारों को निबन्धों के रूप में प्रकाशित करवाने लगा। इस तरह गद्य-लेखन के क्षेत्र में उसने महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

'विश्व बन्धुत्व' और 'विश्वनागरिकता' की भावना के साथ ही 'व्यक्तिवाद' का भी प्रसार होने लगा जिसके प्रमुख प्रतिनिधियों में आइसोक्रेटीज व जेनोफोन-आदि आते हैं। प्राकृतिक-विज्ञान के उद्भव के बावजूद जिज्ञासा का केन्द्र प्रकृति के बजाय स्वयं मानव था। अपने तथा राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों में द्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न होने से अब देश-भक्ति का पहले जैसा स्थान नहीं रह गया। 'व्यक्तिवाद' ने ही इस शंका को भी जन्म दिया कि व्यक्ति राज्य के लिए है या राज्य व्यक्ति के लिए। इसका प्रस्फुटन (प्रकाशन) व्यक्ति द्वारा राजकीय सेवा में स्वेच्छा के प्रयोग से भी हुआ। अब प्रत्येक व्यक्ति जीविका के लिए स्वयं को राज्य पर निर्भर न समझ कर स्वयं अपनी इच्छा पर ही निर्भर मानने लगा। राज्य-शासन आदि की समस्याओं को लेकर शासन-विज्ञान (Science of govern-ment) का विकास हुआ। सैनिक सेवा में जेनोफोन, इफीक्रेटीज, और कॉनन आदि इसके प्रमुख उदाहरण हैं जिन्होंने अपने राष्ट्र के अलवा अन्य राष्ट्रों को स्वतंत्र रूप से सैनिक-सेवा अर्पित कीं। प्लैटो ने अपनी "रिपब्लिक" नामक पुस्तक में इस व्यक्तिवादी स्वातंत्र्य भावना का अत्युक्तिपूर्ण विवरण दिया है, जिससे उसके अंधकारमय स्वरूप पर प्रकाश पड़ता है। ब्यूरी का कथन है कि प्लैटो ने जिस स्वातंत्र्य भावना की यहाँ आलोचना की है, उसके वस्तुतः दो अर्थ होते हैं और इस प्रवृत्ति के विकास में उसका स्वयं महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नाटककार यूरीपिडीज के बाद व्यक्तिवाद के विकास में प्लैटो के शिक्षक सुकरात (Sucrates) का भी महत्तम श्रेय है।

एथेंस में व्यक्तिवाद का विकास

सुकरात

सुकरात का जन्म एथेंस में ई० पू० ४६९ के लगभग हुआ था। वह जाति (पेशे) का शिल्पी (तक्षक sculptor) था। उसकी माता एक धाय थी। अतः जन्म से सुकरात एक निम्न श्रेणी का व्यक्ति था, किन्तु उसमें ब्रह्म-ज्ञान की वह उच्चतम पिपासा थी जो हमारे भारतीय ऋषियों का लक्ष्य है। इसीलिए रुलिन ने लिखा है कि उच्च ज्ञान के लिए जन्म की निकृष्टता बाधक नहीं होती। अपनी जन्म की निकृष्टता का सुकरात को कभी संकोच नहीं हुआ। वह कहा करता था कि वह मस्तिष्क का दाईचारा किया करता है जिससे मस्तिष्क तमाम विचारों को जन्म देने में सफल हो सके।

सुकरात का चेहरा बड़ा कुरूप था। निर्धन होने के कारण उसका पहनावा भी ढीला-ढाला होता था। सुकरात की इस प्रातिभा से एथेंस के सभी व्यक्ति परिचित हो गये थे। पिलोपोनिसियन युद्धकाल के सभी एथीनियन उसके परिचित थे। सुकरात अधिकतर बाजार की सड़कों पर दिनभर खड़ा-खड़ा हर किसी से बात करने और प्रश्न करने में लगा रहता था। ४० वर्षों तक वह यही कार्य करता रहा। वह लोगों से ऐसे-ऐसे प्रश्न पूछा करता था जिससे बड़े-बड़े ज्ञानी अहंकारियों का दर्प चूर हो जाता था। वह किसी भी विद्यमान वस्तु को बिना विचारे मानने को तैयार न था। वह सत्य को जानने के लिये प्रत्येक विचार का विश्लेषण किया करता था। वह कहा करता था कि कोई व्यक्ति केवल आयु के कारण, या अभिभावक होने के नाते ही माननीय नहीं हो जाता वरन् उसकी बौद्धिकता ही इस बात का निर्धारण करती है। वह ज्ञान और सत्य पर बहुत जोर देता था— जो किसी का मुँह नहीं देखते। जो लोग देश-प्रेमी, न्यायी और वीर होने की बातें किया करते थे तो सुकरात उनसे देश प्रेम, न्याय, व वीरत्व का अर्थ पूछा करता था। ऐसे प्रश्नों से एथेंस के नागरिकों के बिचार उलझन में पड़ जाते थे क्योंकि सुकरात उन सब चीजों की असत्यता प्रकट कर देता था जिन्हें वें एक निश्चित सत्य मानते थे।

अपने कुरूप व्यक्तित्व और विचित्र आदतों के कारण सुकरात लोगों की ईर्षा और हँसी का शिकार हो गया। प्रहसनकार एरिस्टोफेनीज ने अपने नाटक 'क्लाउड्स' में सुकरात को देवताओं में अविश्वास पैदा करने वाले और असत्य को सत्य चित्रित करने वाले के रूप में वर्णित किया है। उसकी यह राय उस समय के जनसाधारण की राय के अनुरूप ही थी।

सुकरात और राष्ट्र :—शिल्पकार का यह कुरूप पुत्र सुकरात यूनान की प्रतिभा का सर्वोच्च और सुन्दरतम पुष्प था। किसी राजनीतिक पद का लोभी न होकर भी सुकरात राष्ट्र का सर्वोच्च सेवक था। सुकरात का विचार था कि राष्ट्र को उन्नत करने के लिये उसके नागरिकों को ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिये जिससे वे सत्य, सौन्दर्य, शुद्धता आदि गुणों को उपलब्ध कर सकें। उसका विश्वास था कि उपरोक्त गुणों को मनुष्य यदि चाहे तो प्राप्त कर सकता है। इस धारणा को लेकर सुकरात सर्वत्र एथेंस के युवकों में प्रचार करने लगा।

सुकरात के यश का परिमल चारों ओर फैल उठा। कहते हैं कि डेल्फिक आरेकल से जब यह पूछा गया कि वर्त्तमान लोगों में सबसे ज्ञानी कौन है, तो डेल्फिक आरेकल ने सुकरात का ही नाम लिया। किन्तु सुकरात स्वयं अपने को ऐसा आदमी बतलाता था जो कुछ नहीं जानता। सुकरात के प्रमुख शिष्यों में जेनोफोन, प्लैटो और अल्किवियेडिस व क्रिटियस थे।

वह मानता था कि जीवन के पथ-प्रदर्शक सिद्धांतों के मिल जाने पर मनुष्य का जीवन पवित्र व आदर्शमय हो जाएगा क्योंकि अच्छे को जानने के बाद मनुष्य बुरे को कभी नहीं अपना सकता। व्यक्ति के विकास को ही राज्य का विकास मानना चाहिए क्योंकि राज्य व्यक्तियों से ही बनता है। सुकरात ने हमें सिखाया कि बुरे कर्म का परिणाम भी बुरा ही होता है। क्योंकि कोई भी व्यक्ति स्वयं को हानि नहीं पहुँचाना चाहता अतः वह कोई बुरा कर्म नहीं करेगा; अर्थात् सद्गुण ही ज्ञान है। इसी कारण सुकरात को आचारशास्त्र का संस्थापक भी माना जाता है। आचार के लिए वह धर्ममुखापेक्षी न था यद्यपि स्वयं एक धार्मिक मान्यताओं वाला व्यक्ति था। वह समझता था कि कोई दैवी-आवाज उस की अन्तरात्मा में उठ कर उसे मानव का पथ-प्रदर्शन करने को प्रेरित कर रही है। फिर भी वह 'आत्मा' की निरन्तरता को वह नहीं मानता था।

वह यह भी मानता था कि 'जो अच्छा है वही' उपयोगी है, (the good is the useful) इस दृष्टि से वह उपयोगितावाद का प्रवर्त्तक भी माना जाता है। जेनोफोन ने उसके संस्मरण (Mem orabi Lia) नामक पुस्तक में संकलित किये हैं। राजदण्ड व मृत्यु ने उसकी विजय पर राजचिह्न अंकित कर दिया। सिसेरों के शब्दों में :—

This fascinating conversationist was the first to call philosophy down from the heavens and to set her in the cities of men, bringing her into their homes and compelling the m

to ask questions about life and morality and things good and evil[1] "

वह कहा करता था कि 'मेरा समस्त ज्ञान यही जान लेना है कि मैं कुछ नहीं जानता (All my Know ledge is to know that I know nothing) वह स्वयं को संत के वजाय दार्शनिक-विवेक का प्रेमी—'lover of wisdom (Philosopher')—कहता था। उसके अन्वेषण का विषय विश्व-प्रकृति नहीं वरन् 'मानव' स्वयं था। उसका सूत्र वाक्य था—'स्वयं को पहचानों'। वह गुणों का उपदेष्टा था। नीति व धर्म पर व्याख्यान देने के कारण लोग उसे सोफिस्ट समझते थे।

सुकरात को प्राणदण्ड :—सुकरात की नवीन विचारधारा ने एथेंस के प्रजातन्त्र को भ्रम में डाल दिया। इनमें Anytus प्रमुख था। उन्होंने समझा कि उसके विचारों ने एथेंस के युवकों को भ्रष्ट कर दिया है। उस पर यह दोष लगाये गये कि वह एथेंस के पुराने देवी देवताओं, धर्म और संस्थाओं के विरूद्ध लोगों में अविश्वास पैदा किया करता है। अतः इन आरोपों के लिए उस पर मुकदमा चलाया गया। लोकतन्त्र के क्षेत्र में मजिस्ट्रेटों के (भाग्य) द्वारा निर्वाचन का भी वह विरोधी था। अतः लोकतन्त्रवादी भी उस के विरोधी हो चले थे और उसे एथेंस के लिए हानिकारक मानते थे। जिस समय सुकरात पर ये अपराध मढ़े गये थे वह एथेंस छोड़ कर भाग सकता था किन्तु उसने मुकदमे की पैरवी करना ही उचित समझा। ५०१ न्यायधीशों की अदालत में खड़े होकर सुकरात ने बड़े शौर्य के साथ अपना पक्ष प्रस्तुत किया। किन्तु (६०) बहुमत ने आखिर उसे मृत्युदण्ड की सजा दे दी. इस सजा को सुनकर सुकरात के ऊपर कोई प्रभाव न पड़ा। उसके मित्रों ने भाग चलने की प्रार्थना की किन्तु ज्ञानी सुकरात ने इन्कार कर दिया। प्रसन्नता के साथ, रोते-कलपते मित्रों को धैर्य बंधाते हुये सुकरात ने ३९९ ई० पू० में शांति के साथ विषपान किया। उसके सामने मृत्यु का कोई अस्तित्व ही न था किन्तु इस महान् सन्त और नागरिक को मृत्युदण्ड देकर एथेंस के प्रजातन्त्र ने अपने ऊपर एक भारी कलंक लगा लिया।

---

१. Quoted by M. cary, & Harholl Life and thought in the Greek and Roman World. P. 200.

महान प्लैटो

(ई० पू० ४७२-३२७)

प्लैटो सुकरात का परम शिष्य और अनुयायी था, फिर भी व्यक्तिवादी नहीं था। सुकरात के विचारों के प्रसार का श्रेय प्लैटो को है जिसको उसने "Apology of socrates में व्यक्त किया है।

प्लैटो के दर्शन के उद्देश्य :— १: यथार्थवादी सिद्धांत के स्थान पर ब्रह्माण्ड की आध्यात्मिक व सोद्देश्य व्याख्या,

२: सौफिस्टों की विकृत विचार धारा का विरोध और

३: नीतिशास्त्र के लिए एक सुरक्षित आधार प्रदान करने के लिये उसने विचारों (Id as) का सिद्धांत प्रतिपादित किया और उसके प्रचार के लिए एकेडेमी नामक शाला की स्थापना की जो लगभग ९ शताब्दियों के बाद रोमन सम्राट जस्टीनिअन द्वारा (५२९ ई०) बन्द करा दी गयी।

"विचार मस्तिष्क की अमूर्त भावनायें मात्र नहीं हैं बरन् वास्तविक एव आध्यात्मिक मूल्य रखते हैं। प्रत्येक विचार पृथ्वी पर स्थित किसी वस्तु से अथवा विभिन्न वस्तुओं के पास्परिक सम्बन्ध से सम्बन्धित है इस प्रकार मनुष्य, वृक्ष, अकार-प्रकार, वर्ण, अनुपात, सौंदर्य और न्याय आदि से सम्बन्ध विचार होते हैं। इनमें सर्वश्रेष्ठ विचार भलाई या अच्छाई का है जो सृष्टि का नियंता और नियामक है। अतः इन्द्रियों द्वारा प्राप्त अनुभूतियाँ केवल उक्त उच्च जगत की अनुभूतियों की अपूर्ण प्रतिकृतियाँ मात्र हैं।"

भौतिक जगत के विपरीत, सत्य को उसने अनन्त और स्थिर माना है। अतः प्लैटो का धार्मिक व नैतिक (Ethical) दर्शन उसके विचार-सिद्धांत से युक्त था।

सुकरात की भांति वह भी ज्ञान को ही वास्तविक गुणों का जनक अथवा नियंता मानता है, परन्तु ऐन्द्रिक ज्ञान सीमित और अस्थिर है अतः वास्तविक गुण अच्छाई और न्याय के अनन्त विचारों (आदर्शों) के विवेकयुक्त-विवेचन में निहित है। उसने भावनाओं व वासनाओं को उपेक्षित करने बजाय उन्हें केवल विवेक के अंतर्गत रखा। ईश्वर सम्बन्धी अपने मतामत को उसने कभी पूर्णतः प्रकाशित नहीं किया। अच्छाई के आदर्श को ही वह सृष्टि का कर्ता व नियामक मानता था यद्यपि कभी-कभी वह इसे द्वितीय श्रेणी की दैवी शक्ति भी मानता था।

आत्मा को वह न केवल अनन्त और अमर मानता था वरन् अनादि (प्री-एक्जिस्टिंग-Pre-existing) भी मानता था।

प्लैटो का राजनीतिक दर्शन :-वह एक ऐसे राज्य की स्थापना करना चाहता था जहाँ व्यक्ति व वर्ग के मध्य द्वेष व स्वार्थ भावना न हो। उसके आदर्शराज्य (Polity) का आधार साम्यवाद था। उसका लक्ष्य था निर्धनता व महत्वाकांक्षा से व्यक्ति की रक्षा करना। उसका लक्ष्य लोकतंत्र और स्वातंत्र्य (लिवर्टी-Liberty) न था वरन् सहभावना व तादात्म्य (harmony) और कार्यकुशलता (Efficiency) था। अतः 'रिपब्लिक' में उसने आत्मा के कर्तव्यों के आधार पर समाज को तीन वर्गों में विभक्त किया:—

१: **निम्नतम वर्ग** :- कृषक, व्यापारी, कारीगर आदि जो जीवन की आवश्यकताओं का उत्पादन व वितरण करते है।

२: **इच्छाशक्ति का प्रतिनिधि** सैनिक, जिसपर रक्षा का दायित्व था।

३: **सर्वश्रेष्ठ वर्ग** :- विवेक का प्रतिपादक-प्रबुद्ध अभिजात वर्ग की दार्शनिक व राजनैतिक शक्ति इसी वर्ग के हाथों में रहती थी। यह वर्गीकरण शिक्षा द्वारा अर्जित योग्यता के आधार पर किया गया था न कि जन्म के आधार पर। न्याय के आदर्श पर आवृत यह राज्य सार्वजनिक हित की तुष्टि करता है।

वह स्पार्टा के संविधान को आदर्श के निकट मानता है जहाँ व्यक्ति पर राज्य का प्रबल नियंत्रण है, फिर भी यह नियंत्रण व्यक्ति स्वातन्त्र्य में बाधक नहीं होता क्योंकि वहाँ राज्य और व्यक्ति का उद्देश्य एकीकृत हो गया है।

प्लैटो का 'रिपब्लिक' राजनीति विज्ञान पर लिखा गया प्रथम व्यवस्थित प्रबन्ध है जो आदर्श मानव समाज (utopia-यूटोपिया) की व्याख्या प्रस्तुत करता है। प्लैटो का समाज एक "आध्यात्म-प्रभावित" स्पार्टा था जिसमें राज्य व्यक्ति के जीवन का, यथार्थ में कठोर रूप से, प्रत्येक क्षेत्र में नियमन करता ताकि विवाह को इस प्रकार नियमित किया जा सके कि सन्तानोत्पत्ति संतति-शास्त्र के अनुरूप (Eugenically) हो सके। वह स्त्री स्वातंत्र्य का प्रबल समर्थक था। स्वार्थपरक होने के कारण 'परिवार' और 'वैयक्तिक-सम्पत्ति' की संस्थाओं का भी वह विरोधी था। अपने जीवन के संध्याकाल में इसे असम्भवप्राय समझ कर उसे निजी सम्पत्ति (वैयक्तिक नहीं वरन् पारिवारिक) को मान्यता देनी पड़ी।

एक क्षेत्र में वह असफल माना जाता है क्योंकि वह यूनानी नगर-राज्यों के विविध एवं पारस्परिक राजनीतिक, वाणिज्यिक व सांस्कृतिक प्रभावों को न देख सका। उसकी भाषा व सम्वादात्मक शैली को देख कर चार्ल्स सिग्नोबस ने लिखा है कि एक लेखक के रूप में वह सब से परे है, गद्य के क्षेत्र में वह एक कवि है।

अरिस्टाटल

ई० पू० ३८४–३२२

अरिस्टाटल[१]—का जन्म मैसिडोनिया के स्टैगिरा नामक स्थान पर हुआ था लेकिन उसका अधिकांश समय एथेंस में ही व्यतीत हुआ। एथेंस में उसने लीसियम (Lycaeum) नामक शिक्षण-संस्था स्थापित की जहाँ वह सीढ़ियों पर ऊपर नीचे टहलते हुए शिक्षा दिया करता था। इसी कारण उसके अनुयायी पेरीपेटेटिक[२] (Peripatetic) कहलाये।

उसकी प्रतिमा बहुमुखी थी। उसने गणित, भौतिकशास्त्र, ज्योतिष (Astronomy) जीवविज्ञान, (Anatomy), पद्य (Rhetoric) कला, वनस्पतिशास्त्र, प्राकृतिक इतिहास, मनोविज्ञान, राजनीति, नीतिशास्त्र, ईश्वरीय ज्ञान (Theology) और आधिभौतिकी (Metaphysics) आदि विषयों पर पुस्तकों की रचना की है। मुख्यतः विज्ञान के विभिन्न अंगों के वर्गीकरण एवं जीवविज्ञान में उसकी देन के कारण मह उसके प्रति ऋणी हैं। इसी कारण वह पहला 'टेक्निकल' दार्शनिक माना जाता है।

विचारों (आइडिया) के क्षेत्र में वह प्लैटो से असहमत था। उसके मतानुसार वास्तविक जीवन सार्वभौम आदर्शों में नहीं वरन् किसी विशिष्ट, व्यक्तिविशेष और निश्चिंतत में निहित था। प्रत्येक ज्ञेय या निश्चित वस्तु विचार और पदार्थ (Form & Matter) से निर्मित है जो परस्पर अन्योन्याश्रयी हैं।

---

१. The master of these who know, Cicero)

२. प्लैटो के अनुयायी Academacians के नाम से और अरिस्टाटल के शिष्य Peripatetics नाम से कहे गये, प्लैटो Academus नामक व्यक्ति के उद्यान में विद्यादान करता था और अरिस्टाटल Lycaeum में सीढ़ियों पर ऊपर नीचे घूमते हुए। Peripaticsa—favourite. walk

वह मनुष्य को विवेक की शिक्षा देता था और इसी का अनुकरण करना जीवन की खुशी के लिए आवश्यक समझता था। वासनाओं के संतुलन के लिए अति के वह विरूद्ध था।

वह मनुष्य को राजनीतिक जीव मानता था जो अन्य लोगों से पृथक् अस्तित्व नहीं रखता। अतः प्लैटो के विपरीत वह पारिवारिक जीवन और सम्पत्ति को प्रेरक तत्व मानता था।

लोकतंत्रीय व्यवस्था के विचलित हो जाने से वह एकतंत्रीय शासन का पक्षधर था। वह आधुनिक राष्ट्रीय राज्यों के बजाय छोटे नगर-राज्य को महत्व देता था। दास प्रथा का भी वह अनुमोदन करता था। Lycophon आदि दासत्व को अप्राकृतिक मानते थे।

अरिस्टाटल की सृष्टि की अवधारणा :—विचार जगत (Ideas) के सिद्धांत को स्वीकारते हुए भी वह ऐन्द्रिक अनुभूतियों को उनकी प्रतिच्छाया मात्र मानने को तैयार न था। उसका दर्शन प्लैटो के आध्यात्मवाद (Transclndentalism) और mechanistic materialism अणुशास्त्रियों के यन्त्रवादी (mechanical Materialism) भौतिकवाद के बीच का दर्शन है। उसकी सृष्टि की अवधारणा प्रयोजन से युक्त (Teleological) है, लेकिन उसने आध्यात्म को भौतिक-रूप से पूर्णतः श्रेष्ठ नहीं माना है।

"Aristotle's Philosophy may—be regarded as a half-way Between the Spiritualism and transcen-dentalism of Plato, on the one hand, and the mechanistic materialism of the atomists on the other. This Conception of the universe was teleological—that is governed by purpose, but he refused to regard the spiritual as Completely ovreshadowing its material embodiment[१]"]

आरिस्टाटल के धार्मिक सिद्धांत:—उसके मतानुसार ईश्वर ही सृष्टि का कर्ता-धर्ता है परन्तु उसका ईश्वर किसी नैतिक प्रयोजन की पूर्ति न करता था। वह केवल प्रथम हेतु या प्रणेता (the prime mover) मात्र था। विचारों (Ideas of forms) में निहित (purposive motion)

---

१. western Civilizations E. M. Burns, p. 164

'सोद्देश्य गति' का मूलस्त्रोत्र भी ईश्वर ही था। उसका ईश्वर वैयक्तिक अथवा साकार न होकर शुद्ध-बुद्धि एवं अनुभूतियों, इच्छाओं व वासनाओं से मुक्त था। अरिस्टाटल वैयक्तिक अमरत्व को नहीं मानता। वह आत्मा के कार्यों को देह पर आश्रित मानता है अतः देह के साथ ही आत्मा का भी अंत होना सिद्ध करता है। केवल आत्मा का रचनात्मक गुण नष्ट नहीं होता क्योंकि वह व्यष्टिमूलक नहीं होता।

स्वर्णिम मध्यमान (The goldenmean) युक्त आचारशास्त्रीय दर्शन :—अरिस्टाटल द्वारा प्रतिपादित यह दर्शन प्लेटो की अपेक्षा कम 'आस्तिक' (Ascetic) था। वह देह को आत्मा की कैद नहीं मानता था न वासनाओं को नितांत कुवृतिमूलक ही मानता था। वह मनुष्य की सर्वोच्च शक्ति या अच्छाई (goodness)—उसके आत्मज्ञान या आत्मउपलब्धि को मानता था अर्थात् मानव-प्रकृति के उस अंश के प्रकाशन में जिस के द्वारा वह स्वयं को मानव के रूप में प्रतिष्ठित कर सके। यही आत्मोपलब्धि विवेकयुक्त जीवन की परिचायक है। विवेकयुक्त जीवन शारीरिक और मानसिक दशाओं के संतुलित समन्वय पर निर्भर होता है, अतः स्वस्थ शरीर और नियंत्रित मन (भावनायें) आवश्यक हैं। इसी को ध्यान में रख कर अरिस्टाटल ने 'स्वर्णिम मध्यमान' (अति की वर्जना-Sophrosyne) के हेलेनिक आदर्श का सिद्धांत प्रतिपादित किया अर्थात् न तो वासनाओं में ही अत्यधिक उलझा जाये और न यथार्थ से भागा जाये।

राजनीति में इसका उपयोग :—वह राज्य को ही श्रेष्ठ मानव जीवन का नियामक मानता था। मनुष्य उसकी दृष्टि में एक राजनीतिक जीव है अतः वह राज्य को केवल अल्पसंख्यकों की अभिलाषाओं या बहुमत की आकांक्षाओं का ही प्रतिफल नहीं मानता वरन् उसे मानव प्रकृति में निहित और सभ्य जीवन के लिए अनिवार्य मानता था।

राजतंत्र, कुलीन अल्पतंत्र और लोकतंत्र के स्थान पर वह पालिटी (polity), अल्पतंत्र व लोकतंत्र के मध्य की स्थिति, को ही आदर्श मानता था अतः वह बहुसंख्यक मध्यमवर्ग को ही शासक बनाना चाहता था साथ ही सम्पति के संचय को भी रोकना चाहता था। वैयक्तिक सम्पति को प्रश्रय देते हुए भी वह केवल उतने ही संचय के पक्ष में था जितना बौद्धिक जीवन-यापन के निमित्त अनिवार्य हो। उसने परामर्श दिया कि सरकार निर्धनों को भू-क्रय,

कला-कौशल, पशुपालन व व्यापार हेतु धन प्रदान कर उसकी समृद्धि और आत्म-सम्मान की वृद्धि, में सहायक बने[1]।

आरिस्टाटल व प्लेटो की तुलना :—यद्यपि अरिस्टाटल भी पूर्ण ज्ञान और अनंत मानदण्ड का समर्थक था परन्तु वह 'ठोस' और 'व्यावहारिक' ज्ञान का पक्षधर था। वह जीवविज्ञान, चिकित्सा और ज्योतिष में भी रूचि रखता था। वह अपने दो पूर्व-पुरूषों से न्यून आध्यात्मिक दृष्टिकोण रखता था। उनकी भांति वह अभिजात वर्ग से सहानुभूति नहीं रखता था।

जब कि प्लेटो ने कविता को निन्दक की दृष्टि से ही परखा वहीं अरिस्टाटल ने सौन्दर्यवादी समस्याओं के सिद्धान्तों में कवि कलाकर का मूल्य मानवी वासनाओं के परिष्कार में देखा।

उसका 'Unity of Action' का सिद्धांत आज भी नाटक-रचना व समीक्षा में प्रामाणिक (उच्च-स्तर का) माना जाता है।

श्रो स्वाइन ने लिखा है कि प्लेटो एक दार्शनिक था और अरिस्टाटल एक वैज्ञानिक। फिर भी अरिस्टाटल ने दर्शन की वृहत् समस्याओं से भी सम्पर्क रखा। वह प्लेटो के 'विचारों' की धारणा से सहानुभूति न रखता था। विश्व की व्याख्या के निमित्त वह अपने निरीक्षणों (Observatons) से ही सहायता लेता था।

कला

(art)

कला भी व्यक्तिवादी प्रवृत्ति से प्रभावित हो चली थी। कला के लिए राज्य की ओर से प्राप्त होने वाले पोषण में क्षीणता आने लगी। दीर्घकालीन युद्धों व लोकतांत्रिक मांगों के कारण एथेंस अब इस क्षेत्र के बजाय युद्ध की तैयारियों पर अधिक व्यय करने लगा था। कला पूर्णतः कलाकार पर ही निर्भर रह गयी जो अब ग्राहकों के लिए ही कला-वस्तुओं का निर्माण करने लगे।

व्यय कम करने की दृष्टि से अब नाट्य-गृहो में काष्ठ के आसनों की जगह शिलाओं का प्रयोग किया जाने लगा। दौड़ तथा खेलकूद के प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए स्थायी क्रीड़ाक्षेत्र भी निर्मित कर लिये गये।

देव-प्रतिमाओं का निर्माण यद्यपि जारी रहा परन्तु साथ ही अन्य प्रकार की प्रतिमाएँ भी बनायी जाने लगी। कलाकार पुरातन स्थापत्य शैलियों व धार्मिक

---

१. Politics maurice franecis Egan,. pp. 158-59]

आदर्शों से मुक्त होने लगे। देवताओं को मानव के अधिक से अधिक निकट लाया जाने लगा। प्रत्येक कलाकार अपनी विशिष्टता के प्रदर्शनार्थ उत्सुक रहने लगा। प्रतीकात्मक व्यक्ति के स्थान पर व्यक्ति विशेष का चित्रण आरम्भ हो गया और चरित्र की अपेक्षा भावावेश के किसी विशिष्ट क्षण का अंकन किया जाने लगा। (राज्य के क्षेत्र में भी व्यक्तिवाद का बोलबाला था। राज्य को अब व्यक्ति की आवश्यकताओं के अनुकूल बनाने पर और ध्यान दिया जाने लगा)।

कला पर विदेशी प्रभाव भी व्यापक रूप से मिलता है, विशेष कर मिस्त्र का, जिसके प्रभाव से एथेंस के कलाकारों ने स्तम्भशीर्षों को एकेन्थस (Acanthus) की पत्तियों की दोहरी पंक्तियों से अलंकृत करने की शैली अपनायी। यह शैली कोरिन्थियन शैली के नाम से प्रख्यात है।

इस युग के प्रमुख कलाकार इस प्रकार थे:—

प्राक्सिटिलीज (**Praxitiles**):—यह मानव रूप में देवताओं का चित्रण करने वाला प्रमुख शिल्पकार था। इसके द्वारा निर्मित देव प्रतिमाएँ स्वस्थ, कमनीय, और काँतिमान शरीर व शांत-सौम्य मुखमण्डल से युक्त थी। प्राक्सिटिलीज द्वारा निर्मित शिशु डायोनीसस को अंक में लिए हुये हर्मीज की प्रतिमा ही प्राचीन यवन कला की मूल और असंदिग्ध थाती है।

स्कोपस (**ScoPas**)—उसकी मुख्य कलाकृति केरिया के अजायबघर (मौसोलियम') के रूप में है। यह एक भावुक कलाकार था। इसकी मुख्य कृति थी धार्मिक उन्माद की अवस्था में डायोनिसस का पुजारी। स्कोपस उत्तेजक दृश्यों के अंकन में अपेक्षाकृत अधिक रूचि लेता था। युद्धरत योद्धाओं का चित्रण करना उसे अत्यधिक पसंद था।

प्राक्सिटिलिज व स्कोपस दोनों ही अपनी निजी भावनाओं को भी स्वनिर्मित प्रतिमाओं में व्यक्त करने लगे थे।

राज्य के संरक्षण से मुक्त होने पर भी चित्रकला की आशातीत प्रगति हुयी। भवनों की दीवारों के अतिरिक्त काष्ठ-फलकों पर भी चित्रों का अंकन होने लगा था। मिस्त्र के प्रभावस्वरूप पिघली हुयी मोम के साथ रंगों के मिश्रण का प्रयोग आरम्भ हो गया था।

प्रमुख चित्रकार **अपोलोडोरस** (**Appolodorus**) ने प्रकाश, बिम्ब, व पृष्ठभूमि के चित्रण का प्रचलन आरम्भ किया। अतः उसकी रचना में गहराई की अनुभूति भी होनेलगी। सघन पृष्ठभूमि में चटकीले रंगो के प्रयोग

से वह ऐसी अनुभूति उत्पन्न कर लेता था जिससे वह "बिम्ब-चित्रकार" (Shadow-Painter) कहलाता है। जब उसने एक कमरे का चित्र बनाया तो वह अत्यन्त सजीव प्रतीत होने लगा। प्लेटो ने उसकी इस शैली को 'धोखा' कहा फिर भी नवीन-विद्या प्रगति के मार्ग पर बढ़ती ही रही।

इस शैली का दूसरा चित्रकार **ज्यूक्सियस** (Zeuxias) था, जिसने अंगूर के गुच्छे का ऐसा चित्र बनाया कि चिड़िया उस पर चोंच मार बैठीं। उसके प्रति-स्पर्धी चित्रकार **पैरेसियस** (Parrhasius) ने भी एक चित्र की रचना की और ज्यूक्सियस को उसे देखने का निमन्त्रण दिया। जब ज्यूक्सियस चित्र पर से आवरण हटाने लगा तो उसे ज्ञात हुआ कि आवरण तो वस्तुतः चित्रकार का कौशल मात्र था।

व्यक्तिगत चरित्र के अध्ययन के रूप में यथार्थवादी चित्रण का प्रथम महान् एवं सिद्धहस्त कलाकार **लिसीप्पस** (Lysippus) भी इसी शताब्दी की एक देन था।

भाण्डों पर चित्रांकन करने वाले कलाकार भी प्रमुख चित्रकारों व शिल्पकारों की कृतियों की अनुकृति करने लगे थे। परन्तु पिलोपोनीसियन युद्धों के अन्तिम चरण में आशातीत प्रगति करने के उपरान्त पात्र-चित्रण की कला का सर्वदा के लिए पतन हो गया।

सर्वसाधारण की कलात्मक अभिरूचि की पूर्ति के निमित छोटे कलाकार प्रसिद्ध पुरातन कलाकृतियों की छोटी-छोटी अनुकृतियाँ बनाने लगे या कैरिकेचर तैयार करने लगे।

समाधिपट्टों में भी मृत्योपरान्त जीवन के प्रति यवनों की तत्कालीन अनिश्चय की भावना झलकती थी।

वित्त :—

पाँचवी शती ई० पू० में वित्त के क्षेत्र में कोई केन्द्रीकृत महत्वपूर्ण पद नहीं था, परन्तु चौथी शताब्दी में वित्त-विभाग का महत्त्व बढ़ गया। ५ वीं शती में वित्तीय कार्यों का सम्पादन मजिस्ट्रेटों व विभिन्न निगमों के अन्य दायित्वों के साथ ही शामिल था। अंशतः यह कार्य अपोडेक्टाइ के निगम के हाथ में था और अंशतः पृथक्-पृथक् कोषों के विभिन्न नियंत्रक निगमों के हाथों में, यथा हेलेनोटामिएइ, एथीना देवी के कोष का अध्यक्ष और अन्य देवताओं के कोषों के अध्यक्ष आदि। परन्तु ये पहल का अधिकार नहीं रखते थे केवल परिषद् व

जनसभा के निर्देश पर कार्य करते थे। प्रत्येक विभाग अपने व्यय की राशि पर स्वयं नियंत्रण रखता था। ४०३ ई० पू० में युक्लेडीज के आर्कन काल में किये गये सुधारों के पूर्व, पूरे राज्य की वित्त व्यवस्था को देखने वाला कोई वैयक्तिक केन्द्रीय अधिकारी नहीं था। चौथी शताब्दी में अवश्य युबुलस, डायोफैण्टस, डिमास्थनीज, व लिकरगस (वित्त मंत्री) आदि के नाम मिलते हैं। साम्राज्य के पतन व राजस्व के स्रोतों के अवरोध के कारण वित्त के क्षेत्र में अब विशेष व्यवस्था की आवश्यकता आ पड़ी। परन्तु जनसाधारण अभी भी पहले जितना ही नहीं वरन् उससे भी अधिक उत्सव धन की आकांक्षा रखता था। राज्य अभी भी प्रायः युद्ध रत रहता था। अधिकांश राजनीतिज्ञों का ध्येय इन्हीं दोनों व्यय-मदों की पूर्ति करना था।

कर व्यवस्थाः—धनिक वर्ग पर ही करों का भार आरोपित करने की स्थिति नहीं रह गयी थी। क्योंकि एक तो विनाशकारी युद्ध ने सम्पत्तिविषयक श्रेणियों का अन्तर लगभग मिटा दिया था, दूसरे करभार अत्यधिक बढ़ जाने से ई० पू० ४११ में धनिक वर्ग षडयंत्र व विद्रोह पर उतारू हो गया था। ई० पू० ३५८ के लगभग पेरिआण्डर ने नई कर-व्यवस्था प्रारम्भ की। राज्य में १२०० सर्वाधिक धनी व्यक्तियों को चुन कर २० सिम्मरीज (symmories) में बाँटा गया। विल डूराँ के मतानुसार[1] :—

"करदाताओं को १०० सिम्मरीज" (Symmories–सहभागियों) में बांट दिया गया। प्रत्येक समूह के सर्वाधिक धनी सदस्य को वर्ष के प्रारम्भ में पूरे समूह पर आरोपित सम्पूर्ण कर राशि जमा कर देनी होती थी, शेष वर्ष में वह अपने सहभागियों से अपना धन वसूल करता था। अतः लोगों में सम्पत्ति को छुपाने और करों की चोरी करने की प्रवृत्ति पनपने लगी। आइसोक्रेटीज ने शिकायत की है कि पहले लोग अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए अपने को वास्तविकता से अधिक धनी बतलाते थे लेकिन अब कम करके बतलाते हैं मानों धनी होना कोई अपराध हो। लगभग समस्त यूनान की यही दशा थी। लोकतंत्र के प्रति धनी निर्धन व मध्यम वर्ग सभी सशंकित व असंतुष्ट थे। पूरा यूनान वर्गसंघर्ष का शिकार हो चला था जिससे फिलिप को यूनान की विजय में बड़ी सहायता मिली"।

एक जाति में २ सिम्मरीज व प्रत्येक सिम्मरी में ६० जन रखे गये। सिम्मरी के आधार पर कर आरोपण की व्यवस्था पहले सम्पत्ति कर के क्षेत्र

---

१. The Life of Greece, W. Durant P. 466.

में व फिर नौसेना के क्षेत्र में अपनायी गयी। जहाजी-व्यय का भार विभिन्न सिम्मरीज में किस प्रकार वितरित किया गया यह अज्ञात है। व्यय का अधिकांश भार ३०० सर्वाधिक धनिक जनों पर पड़ा। इस विधान का मुख्य प्रयोजन कर-भार को एक विस्तृत क्षेत्र में फैलाना ही था। ई० पू० ३७८ में ऐसी ही व्यवस्था युद्धकर (इस्फोरा) के लिये लागू की गयी थी।

चौथी शताब्दी में सफल वित्तमंत्री की पहचान यह बन गयी थी कि वह विभिन्न वर्गों में सन्तुलन बनाये रखे, राजकोष को पूरित रखे, कर नीति नर्म हो और फिर भी मुक्त-हस्त से जनसामान्य को उत्सव धन प्रदान कर सके।

अधिकारियों में कोई निर्धारित वरिष्ठता-क्रम का विधान सम्भवतः न था। निम्न पद पर आसीन अधिकारी सर्वोच्च प्रभावशाली हो सकता था। यथा, डिमास्थनीज ने जब नौसेना के सुधार सम्बन्धी प्रस्ताव को प्रस्तुत किया उस समय वह केवल नौसेना का अधीक्षक था।

विभिन्न विभागों के व्यय की राशि का वितरण स्ट्रेटेगोइ द्वारा होता था। सभी विभागों में वितरण के पश्चात् शेष राशि को उत्सव कोष में जमा कर दिया जाता था। ई० पू० ३३९ में डिमास्थनीज के प्रस्ताव पर यह धन स्ट्रेटेजिआ (Strategia) के नियंत्रण में युद्ध अधिकरण में जमा होने लगा।

वित्तीय प्रस्ताव के सम्बन्ध में पहल का अधिकार पहले सभी स्वतंत्र नागरिकों को प्राप्त था। धीरे-धीरे यह अधिकार मंत्रित्व जैसे एक पद से संयुक्त हो गया। इस पदाधिकारी का प्रत्यक्ष निर्वाचन होता था, इसके कार्य में बाधा पहुँचाने वाला कोई न था और लगातार चार वर्षों तक पदासीन रहता था। लिकरगस १२ वर्षों तक इस पद पर रहा। इससे प्रतीत होता है कि एथेंस की इन संस्थाओं की क्रियाविधि आधुनिक राजकीय संस्थाओं से मिलती-जुलती थी।

महामारी, युद्ध आदि कारणों से भी ई० पू० ३१३ में नागरिकों की कुल संख्या २१००० रह गयी थी जबकि ४३१ में उनकी संख्या ४३००० थी। राज्य की सैनिक सेवा करने वालों की संख्या में भी कमी हो गयी। जेनोफोन ने लिखा है[1] कि "पेरीक्लिज के युग के परिश्रमी जीवन, सैनिक अनुशासन, और राजकीय सेवा की भावना का स्थान घरेलू, आरामयुक्त जीवन, व्यवसाय व विद्वता ने ले लिया। खेलकूद भी व्यावसायिक हो चले थे।

सैन्य-क्षेत्रः— युवकों को 'इफेबोइ' (ephebei) के रूप में कुछ न कुछ सैन्य-प्रशिक्षण दिया जाता रहा परन्तु प्रौढ़ जन सैन्य-सेवा से भागने का

१. Xenophone, हेलेनिका, ६, १,५,

कोई न कोई उपाय ढूँढ लेते थे। युद्ध की कला भी अत्यधिक प्राविधिक हो चली थी और उसमें दक्ष होने के लिये पूरा समय देने की आवश्यकता थी। अतः भाड़े के सैनिकों की संख्या में दिनों दिन वृद्धि होने लगी। यह इस बात का संकेत था कि अब यूनान पर राजनीतिज्ञों का नहीं यौद्धाओं का शासन होगा। एथेंस में टिमोथियस, चैब्रियस, और इफीक्रेटीज आदि के पेशेवर सैनिक होने से व राजनीति से पृथक केवल सेना में ही प्रभावपूर्ण होने से भाड़े के सैनिकों की प्रणाली, विशेषकर पिलोपोनिसियन युद्धों के बाद से, बढ़ती चली गयी। परन्तु सैनिक अभियानों के लिए आवश्यक धनराशि प्रदान करने का कार्य असेम्बली के ही हाथों में था, इस कारण कैलेस की संधि के पश्चात् निकट भविष्य में एथेंस को इस क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण सफलता नहीं मिली।

इस युग में सैन्य विज्ञान के अध्ययन पर भी ध्यान दिया जाने लगा। "दस हजार यवनों के अभियान" में प्रमुख भाग लेने वाले एथीनीअन जेनोफोन ने एक पुस्तक भी इसी का विवरण देते हुये लिखी जिसका उल्लेख 'अनाबेसिस' के रूप में दिया गया है।

शस्त्रास्त्रों में धनुष बाण के स्थान पर बर्छे व गदा पर अधिक जोर दिया जाने लगा। कार्थेज और सिसिली से होते हुए घेरे के यन्त्रों का एथेंस में भी प्रचलन हुआ। प्रहारात्मक घनों और गतिशील मचानों का भी प्रयोग होने लगा और साथ ही लोकतंत्र का पुनरूद्धार किया गया, उस समय चौथीशती के लोकतंत्र को सभी ने विकृत और भ्रष्ट बतलाया है। अरिस्टाटल ने लिखा है [१] कि "यह सिद्धांत चौथीशती ई. पू. में अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया था और अपनी खुशी के लिए जन-सामान्य को सब कुछ करने का अधिकार है। यहाँ तक कि वे कानून से भी ऊपर अपनी सत्ता मानते थे।"

आइसोक्रेटीज ने भी लोकतंत्र को अव्यवस्था में, स्वतंत्रता को विधान-विरोधी अवस्था में, और समानता को विवेकहीन ढिठाई में परिणित होते बतलाया है।" प्लैटो ने भी लोकतंत्र की कटु आलोचना की है। भाग्य की पद्धति का व्यापक प्रयोग किया जाने लगा। बहुमत और दलीय शासन का विचार जोर पकड़ने लगा। थेटीज वर्ग को भी परोक्ष रूप से पद प्राप्ति का अवसर प्राप्त हो गया। इतना होते हुए भी लोकतंत्रीय दल ने नर्म नीति अपना

---

१ Aristo; Pol., VIII (V), 4, 6.

कर कुलीन वर्ग से कोईप्रतिशोध नहीं लिया। यद्यपि डा० ब्रेस्टीड का मत इसके विपरीत है[1]।

इस युग के प्रमुख एथीनिअन राजनीतिज्ञ एगीरिअस, कैलिस्ट्राटस और युबुलस आदि थे। एगीरिअस को थ्योरिक कोष का प्रवर्तक बतलाया जाता है जिससे लोगों को उत्सव आदि में भाग लेने के लिए धन प्रदान किया जाता था। एगीरिअस कट्टर स्पार्टा विरोधी नीति का आलोचक था। कैलीस्ट्राटस एगीरियस का भतीजा था। द्वितीय एथीनिअन संघ के संस्थापक, कैलेस की संधि के प्रणेता, और इपैमिनाण्डस के विरोधी के रूप में उसे स्मरण किया जाता है। स्थल और जल शक्ति के क्षेत्र में स्पार्टा व एथेन्स के द्वैध नेतृत्व का समर्थक होते हुए भी वह एथेंस को स्पार्टा से डट कर प्रतिरोध करने के योग्य बनाना चाहता था, साथ ही थीबिस को भी बहुत आगे बढ़ने नहीं देना चाहता था।

युबुलस थ्योरिक कोष का प्रथम अध्यक्ष था जो ३५४ ई०पू० में आरम्भ हुआ था। यह राज्य का एक विभाग मात्र था। पदासीन व्यक्ति के प्रभाव से यह पद कभी कभी राज्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पद बन जाता था। इसका कारण थ्योरिक-कोष के प्रति जन सामान्य की उत्सुकता ही थी। धीरे धीरे इसने लेखा-परीक्षकों, कर संग्रह कर्ता अपोडेक्टाई, तथा बन्दरगाहों आदि के अध्यक्ष पदों, अर्थात् लगभग समस्त प्रशासन को अपने अन्तर्गत ले लिया।

राजनीतिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार व अव्यवस्था कायम रही। वैधानिक रूप से तो रिश्वत दण्डनीय थी परन्तु आइसोक्रेटीज के कथनानुसार ऐसे लोग पुरस्कृत व सम्मानित किये जाते थे। इसीसे परशिया के यवनों को परस्पर लड़ाने में सफलता प्राप्त हो गयी।

वैतनिक वक्ताओंका समूह भी विकसित हो चला था जो व्यावसायिक वकील व राजनीतिज्ञ बन गये। लिकरगस आदि कुछ ऐसे लोग विश्वसनीय अवश्य थे परन्तु अधिकांश जन भ्रष्ट थे। अवसरवादिता, एवं विवेकहीन भीड़तंत्र बढ़ रहा था। वक्ताओं ने पृथक्-पृथक् दल कायम कर लिये जिनके अपने निजी संगठन, समर्थक व कोष थे। राजनीति का प्रसार होने के साथ-साथ देशभक्ति क्षीण होती चली गयी। दलबन्दी ने नगर को स्वाहा कर दिया। लोगों की शक्ति दलबन्दी में ही नष्ट होने लगी। विल डूरां का कथन है कि "क्लिस्थनीज के संविधान और वाणिज्य व दर्शन के कारण विकसित व्यक्तिवाद

1. Ancient Times, Dr. Breasted, P. 396

ने परिवार को क्षीण बना कर व्यक्ति को मुक्त कर दिया था; अब मुक्त-व्यक्ति' ने उलट कर राज्य को ही नष्ट कर दिया[1]।

ई० पू० ४०० के लगभग एक्लीसिया पर से धनी वर्ग का प्रभाव समाप्त करने के लिए और उसमें निर्धन जनों की उपस्थिति को बढ़ाने के ध्येय से जनसभा में उपस्थिति के लिए भी शुल्क दिया जाने लगा। एक ओबोल (१७ सेण्ट) से प्रारम्भ हो कर अरिस्टाटल के समय तक यह प्रति दिन एक ड्रेक्मी (१ डालर) हो गया। फलत: जनसभा में निर्धनों का बहुमत हो गया। यद्यपि ४०३ ई० पू० में संविधान में एक संशोधन कर जूरी के कार्य के लिए लॉट द्वारा जनसामान्य में से चुने गये कुछ विधान-निर्माताओं (नोमोथेटी Nomethetae) तक ही विधान-निर्माण का कार्य सीमित कर दिया गया परन्तु यह उपाय सफल नहीं हो सका। इन्होंने भी जनसामान्य का ही पक्ष ग्रहण किया जिससे काउँसिल की प्रतिष्ठा व शक्ति में क्षीणता आ गयी जो कि एक रूढ़िवादी संस्था रही थी।

जनसभा में जिस प्रकार के क्षीण बुद्धि के लोग भाग लेते थे उसे ध्यान में रख कर आइसोक्रेटीज ने लिखा है कि, "एथेंस के शत्रुओं को चाहिये कि वे जनसभा की बैठकों का आयोजन कर उसका वेतन स्वयं 'चुकायें ताकि उसकी गलतियों से लाभ उठा सकें'।

इन कारणों से एथेंस का साम्राज्य छिन्न-भिन्न होकर उसकी स्वतंत्रता का भी अन्त हो गया। जिस प्रकार धन और सत्ता के मद ने प्रथम एथीनिअन संघ को भंग किया था उसी प्रकार द्वितीय संघ भी भंग हो गया। ल्यूक्ट्रा के रण में स्पार्टा की पराजय को एथेंस ने अपने प्रसार का सुअवसर समझ लिया। इस बार एथेंस ने एटिका के बाहर भूमि के वितरण से अपने को रोकने का बचन दिया था तथापि उसने सैमास थ्रेसियन प्रायद्वीप, एवं पिड्ना, पोटिडे और मिथोन नगरों को जीत लिया जो मैसिडोनिया व थ्रेस के तट पर थे, और वहाँ एथीनियन नागरिकों को बसा दिया। इसके विरोध में अनेक संधीय-राज्य संघ से अलग हो गये। दमन विफल सिद्ध हुआ। ३५७ ई०पू० में चिओस् कास् रोड्स व बाइजैंतियम ने विद्रोह कर दिया-यही 'सामाजिक युद्ध' कहलाता है। जिसका विवरण पहले दिया जा चुका है। ई० पू० ३५५ में संधि पर हस्ताक्षर कर एथेंस ने उन्हें स्वतंत्र मान लिया। इस प्रकार, डूरां के शब्दों में, एथेंस का

---

1. The Life of Greece, W. Durant. P. 469.

महान् नगर पुनः मित्र-विहीन्, नेता-विहीन्, कोष-विहीन् और सहायकों से वंचित हो गया।[1]

विल डूरां ने लिखा है[2] कि 'शिक्षित वर्ग पर से राजधर्म का नियंत्रण ढीला हो रहा था, और व्यक्ति स्वयं को नैतिक अंकुश से मुक्त करता जा रहा था, पुत्र अभिमावकों की सत्ता मानने को तैयार न थे, पुरुष विवाह से भाग रहे थे, स्त्रियां मातृत्व से पीछा छुड़ा रहीं थीं और नागरिक राजनीतिक दायित्व निभाने को प्रस्तुत नहीं थे।
आगे डूराँ का कथन है किः—

युद्ध-विषयक नैतिकता विद्यमान थी। एवं प्रबुद्ध मानवतावाद का भी प्रबल प्रभाव था। परन्तु राजनीतिक व यौन-विषयक नैतिकता का पतन हो रहा था[3]।

परिवार नियोजन का भी प्रचलन हो चला था। अरिस्टाटल ने लिखा है कि स्त्रियां विभिन्न तरीकों से गर्भाधान को रोकती हैं,[4]

"by anointing that part of the womb upon which the reed falls with oil of cedar, or ointwent of lead or frankincense commingled with olive oil."

धर्मः—पेरीक्लीज के पश्चात् संघर्ष एवं सम्भ्रम से पूर्ण युग का आरम्भ हुआ। आर्फिक व इल्युसीनिअन पंथों का प्रभाव अभी विद्यमान था। यह धारणा सर्व सामान्य में प्रचलित थी कि इसके अनुकूल आचरण करने से मनुष्य को मृत्योपरान्त दिव्य इलीशिअन(Elysiaen) प्रवेश मिलता है। एथीनिअन जनों को यह ज्ञात था कि जब तक वे देवताओं द्वारा वांछित संस्कारों को पूरा करते रहेंगे, उन्हें भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं यद्यपि यह भी उन्हें ज्ञात था कि अन्यायपूर्ण जीवन व्यतीत करने पर मृत्योपरांत उन्हें पृथ्वी के नीचे अन्धकारमय कष्टपूर्ण लोक में निवास करना होगा। तथापि मन्दिर, पुरोहितवर्ग, व धर्म शिक्षकों के विशेष वर्ग के अभाव के कारण धर्मनिर्देश की कोई व्यवस्था न थी। कोई सर्वमान्य धर्मग्रन्थ न था। लोगों को यह भी नहीं सिखाया जाता था कि देवतागण उनमें या उनके आचरण में

---

1. The life of greece, W. Durant P. 470
2. The Life of Greece. W. Durant 467
3. Ibid, p. 467,
4. Historia, Animalium, Aristo., 583. a

कोई रूचि रखते हैं। सोफिस्ट विचारकों की संशयवादी धारणा इसमें उलझन उत्पन्न कर देती थी। देवी-देवताओं व धर्म से सम्बंद्धित पुरातन मान्यताओं को खण्डित करने वाले नाटककार यूरीपिडीज का प्रभाव दिन पर दिन बढ़ता जा रहा था।

विदेशी व्यापार का क्षेत्र जिस गति से बढ़ रहा था उसी गति से वैदेशिक धार्मिक प्रभाव भी एथेंस में प्रविष्ट होते जा रहे थे। मिस्र, फीनिशिया और एशिया माइनर से आने वाले व्यापारी अपने साथ अपने-अपने देवी-देवताओं, प्रतीकों, धार्मिक विचारों आदि का भी यूनान में प्रवेश करा देते थे, इससे यूनानी धर्म में अनेक परिवर्तन आ गये।

ज्ञान-विज्ञानके प्रत्येक क्षेत्र---भूगोल, ज्योतिष, नक्षत्रविद्या, गणित, प्राणिशास्त्र, चिकित्सा, खनिज विद्या, चित्रकला, युद्धकला, कृषि, पशुपालन, पाक-कला, आदि--में चौथी शती में उल्लेखनीय प्रगति हुयी।

इसी युग में शिक्षकों, विचारकों, वक्ताओं आदि ने यवन राज्यों के ऐक्य एवं संगठन की ओर भी इंगित करना आरम्भ कर दिया। आइसोक्रेटीज इनमें प्रमुख था। वह यवनों को एक राष्ट्र में संगठित करने का आकांक्षी था। एक होकर वे परशियन साम्राज्य को ध्वस्त कर विश्व के स्वामी भी बन सकते थे। एक ओलिम्पिक उत्सव के अवसर पर उसने इन शब्दों में अपने देशवासियों का आह्वान किया, "कोई भी बाहर से आने वाला एवं वर्त्तमान स्थिति का अवलोकन करने वाला व्यक्ति, तुच्छ बातों के लिये संघर्षरत देख कर हमें महान् मूर्ख समझेगा, क्योंकि जब कि हम बिना किसी संकट के एशिया को विजित कर सकते हैं, हम अपनी ही धरती का सर्वनाश करने में रत हैं।" परन्तु स्थानीय संकीर्ण भावना से प्रभावित यवन स्वातन्त्र्य प्रेमियों के समक्ष उसकी एक न चली। कोई भी यवन पौर रियासत दूसरे राज्य के समक्ष नेतृत्व त्यागने को प्रस्तुत न थी अतः अनैक्य की भावना राजनीतिक व्यवस्था की विनाशक सिद्ध हुयी। यवनों को एक ऐसी शक्ति के समक्ष नमित होना पड़ा जिसका यवन संस्कृति के विकास में कोई योगदान न था। गणतन्त्र-प्रेमियों के ऊपर राजतंत्र की स्थापना हो गयी।

---

७ मैसिडोनिआ का उदय : फिलिप द्वितीय

★

भौगोलिक स्थिति :– मैसिडोनिआ का प्राचीन प्रदेश थेरामिक खाड़ी के उत्तरी व उत्तर-पूर्वी तट पर पूर्व में थ्रेस से लेकर दक्षिण में इपीरस और थेसाली तक विस्तृत था। इसका समुद्रतट पूर्व में थर्मी से लेकर पश्चिम में ओलिम्पस पर्वत की तराई तक विस्तृत था परन्तु यहां स्थित नगर मैसिडोनिअन न कहला कर यवन उपनिवेशों के रूप में प्रख्यात थे। मैसिडोनिआ में तीन प्रमुख नदिया थीं – हैलिक्मान, एक्सियस व लूडियस। एक्सियस नदी के मार्ग के पूर्व से प्रारम्भ होकर पर्वतों की एक शृंखला चाल्सिडिस अन्तरीप तक विस्तृत है। उसके और पूर्व में स्ट्राइमान नदी और अन्त में पैंगेइयस पर्वत श्रेणियां हैं जिनके सामने थैसास द्वीप स्थित है। चाल्सिडिस के आगे थ्रेस का प्रदेश आ जाता है। चाल्सिडिस के पश्चिमी तट एवं थेसाली के पूर्वी तट के मध्य ही थेरामिक खाड़ी का तटवर्ती प्रदेश स्थित है जिसके पीछे प्राचीन मैसिडोनिआ स्थित था। थेरामिक खाड़ी के सामने ही सिएथस (Sciathus), पेपरेथस (Peperathus), आइकास (Icos) तथा अन्य द्वीप स्थित हैं जो थेरामिक खाड़ी के प्रवेशद्वार पर रक्षक का कार्य करते हैं। इस स्थिति के कारण मैसिडोनिआ थेसाली की अपेक्षा समुद्र के अधिक निकट है। इसी कारण वह विश्व की राजनीति में अधिक प्रभावशाली रहा। परन्तु उसके पास अच्छे बन्दरगाह का अभाव था जो कि प्रथम श्रेणी की शक्ति बनने के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा थी। उसके व समुद्र के मध्य चाल्सिडिक प्रायद्वीप में अनेक यवन नगर, मुख्यतः एथेंस के अधीनस्थ-मित्र, स्थित थे यथा, पिड्ना, पोटिडे

एम्फीपोलिस, ओलिन्थस आदि। आगे चल कर एथेंस आदि से होने वाले संघर्षों का यह एक प्रमुख कारण बना। इन नगरों को अधिकृत करना मैसिडोनिआ के लिए नितांत आवश्यक था क्योंकि, एक तो ये नगर एशिया में प्रवेश करने के मार्ग में अवरोध-स्वरूप थे, दूसरे, एम्फीपोलिस में सोने की खानें थीं तथा प्रमुख व्यापार-मार्ग भी यहीं से गुजरते थे। इन नगरों के अधिकृत करने से उनमें का पिड्ना नगर एक अच्छा बन्दरगाह बन सकता था।

निवासी:— मैसिडोनिआ-वासियों के रक्त और वंश के विषय में मतभेद है। कुछ लोग मानते हैं कि वे भाषा और रक्त से यूनानी ही थे परन्तु एथीनिअनों से नितांत भिन्न। कुछ विद्वानों का मत है कि वे थेसालिअनों से ही सम्बन्धित थे, अथवा आर्य रक्त वाले थे और थेसालीवासियों के साथ घुल-मिल गये थे। जो भी हो, मैसिडोनिया की इस यवन जाति ने अन्य यूनानियों की भाँति सांस्कृतिक क्षेत्र में कोई उन्नति नहीं कीं, वे अभी भी मानों होमर के ही युग में रह रहे थे। अतः एथेंस आदि यवन नगरों की तुलना में ये लोग असभ्य गिने जाते थे। उनका मुख्य उद्यम कृषि व आखेट था। किसी पुरुष को तब तक वयस्क नहीं माना जाता और न सहभोज आदि में ही स्थान दिया जाता था जब तक नरमेध न कर लेता अथवा किसी जंगली सुअर का शिकार न कर लेता। उनका आवास, रहन-सहन, ओढ़ावा-पहनावा, आचार-विचार सभी आदिम अवस्था ही में था। व्यक्तिगत अधिकार का प्रबल प्रभाव था और लिखित विधान जैसी कोई वस्तु न थी।

पिलोपोनीसिअन युद्धों के समय से एथेंस की सभ्यता व संस्कृति मैसि-डोनिआ पहुँचने लगी। मैसिडोनिआ के सम्राटों में अब स्वयं को आर्गास के डोरियन राजवंश व एथेंस के पेरीक्लीज के वंश से संयुक्त करने की इच्छा जागृत हुई। वे अपने को आर्गिव हिराक्लिडी या कोरिन्थियन हिराक्लीडी कहने लगे। उन्होंने एट्टिक भाषा को अपनी राजभाषा के रूप में अपना लिया, साथ ही यवन लेखों से अंकित मुद्रा का भी प्रयोग करने लगे। धीरे-धीरे यूनान ने मैसिडोनिआ के सम्राट के दावे को स्वीकार भी कर लिया और उन्हें ओलिम्पक खेलों में भाग लेने का अधिकार भी दे दिया। ५ वीं शताब्दी ई० पू० के अन्तिम चरणों में राज्य करने वाले सम्राट आर्किलास (Archelaus) के समय में यूनान के कवियों, नाट्यकारों तथा कलाशिल्पियों को मैसिडोनिआ में निमंत्रित किया गया और यवन नगर-राज्यों के साथ मैत्री-सम्बन्ध भी स्थापित किये गये। एथीनिअन नाटककार यूरीपिडीज भी

इसी समय मैसिडोनिश्रा बुलाया गया था जिसने यूनानी सभ्यता व संस्कृति के प्रचार व प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सम्राट श्रार्किलास ने अपने रचनात्मक कार्यों द्वारा मैसिडोनिश्रा को श्रागे बढ़ाया। उसी ने सर्वप्रथम नगरों की स्थापना की, तथा राजमार्गों के निर्माण-सैनिक व्यवस्था श्रौर संगठन की श्रोर भी ध्यान दिया। श्रश्वारोहियों के श्रतिरिक्त भारी शस्त्रास्त्रों से सज्जित सेना के संगठन की श्रोर उसीने सक्रिय कदम उठाया। वह अपनी राजधानी पेल्ला ले गया। अखिल यवन उत्सवों के अनुसरण पर उसने डिग्रान में खेल कूद के समारोह का श्रायोजन भी प्रारम्भ किया। ई० पू० ३९९ में उसकी हत्या हो गयी। उसके उत्तराधिकारी श्रमिण्टास द्वितीय का शासन काल अराजकता, अशांति श्रौर अव्यवस्था से पूर्ण रहा। इलीरियनों के श्राक्रमण के कारण उसे भागना पड़ा। २ वर्ष उपरान्त वापस श्राकर वह पुनः शासक बना। एलिमिश्रा की राजकुमारी यूरीडिस से विवाह कर, तथा स्पार्टा व फीरी श्रादि के साथ मैत्री सम्बन्ध स्थापित कर उसने अपनी स्थिति दृढ़ की। ई० पू० ३७०-६९ के लगभग उसकी मृत्यु होने पर उसका पुत्र अलेक्जाण्डर द्वितीय गद्दी पर बैठा लेकिन उसके सम्बन्धी टालेमेइश्रस (टालेमी) ने यूरीडिस से मिल कर उसका विरोध करना शुरू किया। इस पर थीबिस ने हस्तक्षेप किया। पिलोपिडस की मध्यस्थता में सम्पन्न संधि के अनुसार टालेमेइश्रस को अलोरस नगर दिया गया श्रौर उसे अलेक्जाण्डर को मैसिडोनिश्रा का सम्राट स्वीकार करना पड़ा। शीघ्र ही अलेक्जाण्डर द्वितीय की हत्या हो गयी। इस बीच टालेमेइश्रस ने यूरीडिस से विवाह कर लिया था। वह अलेक्जाण्डर द्वितीय के भाई पर्डिक्कस तृतीय के संरक्षक के रूप में शासन करने लगा (३६८ ई० पू०)। पाजेनिश्रस नामक एक नया दावेदार भी उठ खड़ा हुश्रा। यूरीडिस उसके विरुद्ध सहायता लेने के लिए निकट-प्रदेश में स्थित एथीनिश्रन सेनापति इफीक्रेटीज के पास चली गयी। पिलोपिडास ने एथेंस के प्रभाव में पुनः वृद्धि होते देख हस्तक्षेप किया श्रौर संधि करा दी जो क्षणिक ही सिद्ध हुई। इसी समय टालेमेइश्रस ने पार्डिक्कस तृतीय के छोटे भाई फिलिप द्वितीय को बन्धक के रूप में थीबिस भेजा जहाँ वह तीन वर्ष तक (३६८-३६५ ई० पू०) रहा। ई० पू० ३६५ में टालेमेइश्रस को मार कर पर्डिक्कस तृतीय स्वतंत्र शासक बन बैठा। एथीनिश्रन नायक टिमोथिश्रस के सहयोग से उसने श्रोलिन्थस को भी ले लिया। ई० पू० ३६०-५९ के लगभग इलीरियनों ने पुनः श्राक्रमण किया जिसमें पर्डिक्कस मारा गया। अब मैसिडोनिश्रा के साम्राज्य का अन्त निकट दिखने लगा क्योंकि पर्डिक्कस का पुत्र अभी अवयस्क था।

अब पडिक्कस तृतीय के छोटे भाई फिलिप ने अपने भतीजे अमिण्टास तृतीय का संरक्षण ग्रहण किया और आगे चलकर स्वयं ही स्वतंत्र रूप में शासन करने लगा। उसके द्वारा स्वयं शासन की बागडोर सम्हाल लेने से मैसिडोनिआ की स्थिति सम्हल गयी। इसी के समय में मैसिडोनिआ को वस्तुतः महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ। उसके पूर्ववर्ती शासकों ने प्रमुखता प्राप्त करने के लिये जो नीति अपनायी थी उसके तीन मुख्य अंग थे—पहला, समुद्र की ओर निकासी का मार्ग प्राप्त करना; दूसरा, यवन जातियों में अपनी गिनती कराना, और तीसरा अब तक की तटस्थता व उदासीनता की नीति को त्याग कर यवन राजनीतिक जगत में अग्रणी शक्ति के रूप में स्थान बनाना। फिलिप द्वितीय ने इन्हीं लक्ष्यों को सामने रख कर आगे बढ़ना आरम्भ किया।

फिलिप द्वितीयः—उसका जन्म ई०पू० ३८३-८२ में हुआ और २४ वर्ष की युवावस्था में वह मैसिडोनिआ के सिंहासन पर आरूढ़ हुआ। राबिन्सन के मतानुसार प्राचीन काल का वह एक भव्य व्यक्ति हो चुका है पौरुष, शौर्य और वीरत्व में वह अद्वितीय था। एक योग्य सैनिक होने के साथ ही उसमें योग्य राजनेता के गुण भी कूट-कूट कर भरे हुए थे। सैनिक क्षेत्र में तो वह संगठन, नेतृत्व और रणकौशल में अपने पुत्र को छोड़कर अद्वितीय था। शारीरिक गुणों के साथ ही उसके बौद्धिक गुण भी उसी प्रकार समुन्नत थे। यवन साहित्य और दर्शन का वह अच्छा ज्ञाता था। वह अलेक्जाण्डर को दर्शन की शिक्षा अनिवार्य रूप से देना चाहता था ताकि वह उन कार्यों को न करे जिनके कारण फिलिप को पछताना पड़ा था। अरिस्टाटल को अलेक्जाण्डर की शिक्षा का भार उसने इसीं ध्येय से सौंपा था। वह अपने समय के प्रख्यात वक्ताओं में गिना जाता था। दृढ़निश्चय से युक्त होने के साथ ही अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये अथक लगन से परिश्रम करने वाला व्यक्ति था। उसके समकालीन प्रख्यात वक्ता और उसके कट्टर शत्रु डिमास्थनीज के शब्दों में, 'अपने ध्येय के लिए एक आँख गंवा देना, एक भुजा से हाथ धो बैठना या पाँव गंवा देना उसके लिये कुछ भी नहीं था।' वह स्वस्थ एवं पुष्ट देह, आकर्षक स्वरूप और दृढ़ इच्छाशक्ति युक्त था। स्वास्थ्यवर्द्धन के लिये खेलकूद में भी रुचि रखता था। विल डूराँ के मतानुसार "वह एथोनिअन भद्रपुरुष बनने की चाह रखने वाला एक भव्य पशु अथवा प्राणी था[1]।" अपने पुत्र की ही भाँति वह उग्र प्रवृत्ति वाला और साथ ही असीम उदारतायुक्त व्यक्ति था। वह आखेट, युद्ध,

१- The Life of Greece, W,Durant, P,473,

मद्यपान, स्त्रियों और दृढ़ व कठोर पुरुषों का महान् प्रशंसक था। एडाल्फ होल्म ने लिखा है कि "वह एक असाधारण, एवं अत्यन्त व्यावहारिक व्यक्ति, प्रथम श्रेणी का सेनापति, राजनेता तथा अपने वचन पर दृढ़ रहने वाला व्यक्ति था"।[१] स्ट्रिंगफैलो बार ने लिखा है कि "वह सैनिकों पर कड़ा अनुशासन रखता था; यद्यपि वह गुणों को पुरस्कृत करना और सही कार्य के लिये सही व्यक्ति का चुनाव करना भी जानता था। उसकी नीति भी स्पष्ट थी जब कि उसके विरोधी अस्पष्ट थे"।

उसके चरित्र का दूसरा पक्ष भी उतना ही उजागर था। अपनी प्रजा की तरह उसमें भी विविध तत्वों का समावेश था। राबिन्सन के मतानुसार धोखा देना उसके चरित्र का प्रमुख अंग था। सत्ता-प्राप्ति के लिये उसने अत्यन्त नीचतापूर्ण मार्ग अपनाया था और तोड़े हुए वचनों, काल्पनिक भविष्यवाणियों और नीचतम कलुष का सहारा लिया था। विल डूरां का भी कथन है कि "वह धीर बुद्धि वाला, अपने अवसर को धैर्य के साथ प्रतीक्षा करने वाला और दूरस्थ लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए कठिन मार्गों का दृढ़ता के साथ अनुसरण करने वाला था। साथ ही कूटनीति में वह अत्यंत कपट-पूर्ण, और भयानक था। वह वादे को बड़ी ही शांतिपूर्वक तोड़ देता था और दूसरा वादा करने को भी प्रस्तुत रहता था। शासन के क्षेत्र में वह नैतिकता का समर्थक नहीं था। तथापि विजयी के रूप में वह अत्यंत उदार था और विजितो के समक्ष अपेक्षाकृत उदार शर्त्तें रखता था। डिमास्थनीज को छोड़ कर शेष सभी लोग उसे अपने समय का दृढ़तम, अत्यधिक रोचक, पुरुष मानते थे।[२] इस बात का समर्थन स्ट्रिंगफेलो बार ने भी किया है।

राबिन्सन का कथन है कि ऐतिहासिक व्यक्तियों की परस्पर तुलना यद्यपि खतरनाक होती है, लेकिन फिलिप की समता हिटलर से की जा सकती है। डूरां की ही भांति वे भी फिलिप को अवसरवादी कूटनीतिज्ञ मानते हैं। उसकी रिश्वत देने की प्रवृति का उल्लेख करते हुए राबिन्सन ने लिखा है कि जिस राज्य पर उसे आक्रमण करना होता था वहाँ उसके वेतनिक दलाल रहते थे। वह कहा करता था कि 'चाँदी से लदा हुआ एक खच्चर मुझे नगर में प्रविष्ट करा लेने दो और नगर मेरी मुट्ठी में होगा।' उसकी रणनीति की तुलना हिटलर की नीति से करते हुए वे आगे कहते हैं कि वह बिजली की

१- The History of Greece, A. Holme, P, 285,
२- The Life of Greece, W. Daurant. P. 476,

सी तेजी से सही समय पर अपने लक्ष्य पर टूट पड़ता था। एक दिशा में वह तब तक अबाध गति से बढ़ता जाता था जब तक उसे कठिन प्रतिरोध का सामना न करना पड़े। उसके बाद वह एकाएक दूसरी ही दिशा में मुड़ जाता था और तब तक पुनर्आक्रमण के लिये प्रतीक्षा करता रहता था जब तक कि उसके आक्रमण की शंका समाहित न हो जाये[१]। अपनी इसी धूर्तता के कारण एथेंस का प्रशंसक होते भी वह स्वयं एथेंस की सहानुभूति प्राप्त न कर सका और एथेंस उसका कट्टरतम शत्रु बन बैठा (एम्फीपोलिस पर आधिपत्य के प्रश्न के सम्बन्ध में)।

फिलिप की शासन व्यवस्था अभिजात्य एकतंत्रात्मक व्यवस्था थी। उसकी सत्ता अपनी शारीरिक एवं मानसिक क्षमता और सामंत-सरदारों के सहयोग पर आधारित थी। ८०० सामन्त 'राजा के साथी' के नाम से प्रशिक्षित थे जो अश्वारोही सैनिकों के रूप में उसे युद्ध में सहायता पहुँचाते थे।

सैन्य संगठन :— फिलिप के बचपन के कुछ वर्ष राजनीतिक बंधक के रूप में थीबिस में व्यतीत हुए थे। उस समय उसे यवन राजनीति व चरित्र को समझने का सुअवसर मिला था। तभी उसने इपैमिनाण्डास की कुशल युद्धकला को भी सीख लिया।

उसने अनुभव किया कि जब समस्त यूनान पारस्परिक प्रतिस्पर्धा के कारण बिखर रहा है, तो मैसिडोनिआ के उत्कर्ष के लिए उपयुक्त अवसर आ गया है। उसका ध्येय मैसिडोनिआ के प्रभुत्व को उस आसन पर आसीन करना था जिस पर एथेंस, स्पार्टा और थीबिस भी नहीं बैठ सके थे। अतः मैसिडोनिआ को यूनान का सिरमौर बनाना ही उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था जिसकी सिद्धि के लिये फिलिप ने पहले मैसिडोनिआ की बिखरी हुयी जातियों को राष्ट्रीयता के एक सूत्र में ग्रथित किया। तत्पश्चात् उसने मैसिडोनिअन योद्धाओं, कृषकों, आखेटकों आदि की एक स्थायी राष्ट्रीय सेना फैलेन्क्स (Phalanx) के रूप में संगठित की। इसमें सैनिकों की १६ पंक्तियाँ होती थीं जो एक दूसरे से ३-३ फीट की दूरी पर खड़े होते थे। इनके अस्त्र शस्त्र थे २१ फीट लम्बे बर्छे व छोटी तलवारें थीं जो पुराने यवन शस्त्रास्त्रों से अधिक मारक थे। सैनिक पीतल का शिरस्त्राण, सैनिक गणवेष, ग्रीव्ज और हल्की ढाल भी धारण करते थे। घेरा यंत्रों और प्रहारक घनों का भी प्रयोग किया जाता था। इस सेना में लगभग १०००० मैसिडोनिअन थे जिन्हें उत्तम प्रशिक्षण दे कर फिलिप ने

१- Hellas, C. E. Robinson, p. 167,

यूरोप के सर्वोत्तम ज्ञात सैनिकों में परिणत कर दिया। उसकी सेना केवल विशाल ही नहीं थी वरन् इपैमिनाण्डस के थीबन सैनिकों की स्वामीभक्ति, स्पार्टनों के प्रशिक्षण एवं अनुशासन और एथीनिअन सैनिकों के नवीन रण-कौशल से भी पूरित थी। उसने इफीक्रेटीज, डायोनीसियस, इपैमिनाण्डस, पिलोपिडस, तथा जैसान की रणनीतियों और सैन्य-प्रणालियों के लाभप्रद तत्वों को ग्रहण कर नयी नीति का प्रतिपादन किया। इस प्रकार उसने मैसिडोनिअनों को एक योद्धा जाति में परिणित कर दिया। यूनानियों की बढ़ती हुयी धन-लालसा का लाभ उठा कर उसने उन को भी अपनी सेवा में लेना आरम्भ किया। स्वयं भी वह एक कुशल योद्धा अथवा सैनिक था और सैनिकों के साथ धनिष्ट सम्बन्ध रखता था। वह उन्हीं के साथ रहता और यौद्धिक क्रीड़ाओं का आयोजन किया करता था तथा उनकी कठिनाइयों को भी स्वयं झेलता था। अपनी इस प्रिय सेना को साथ लेकर व अपनी शक्ति में समुचित वृद्धि कर वह यूनान को अपने नेतृत्व में एकीकृत करना चाहता था। वह यूनान को विजित कर एकीकृत करना और तदुपरांत समस्त यूनान के सहयोग से हेलेस्पाण्ट को पार कर यवन-एशिया से परशियनों को निकाल बाहर करना चाहता था। इस लक्ष्य की ओर अग्रसर होने में कदम-कदम पर यवनों की स्वातंत्र्य भावना का विरोध सहन करना पड़ा जिसे जीतने के प्रयत्न में वह कभी-कभी अपना लक्ष्य भी भूल जाता था[१]।

अपने पड़ोसी राज्यों इलीरिया व पैइओनिआ की प्रारम्भिक विजयों के उपरांत उसके पास अपने लक्ष्य की पूर्ति के इतने साधन एकत्रित हो गये जो पेरीक्लीज, लिसाण्डर, ऐजेंसिलास, इपैमिनाण्डस और पिलोपिडस भी नहीं कर पाये थे। एथेंस, स्पार्टा व थीबिस यूनानियों को एक राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करने की सोच भी नहीं पाये थे। हेलास को राजनीतिक दृष्टि से एक राष्ट्र में परिवर्तित करने के लिये आवश्यक संस्थाओं का भी वे राज्य या नेतागण प्रबन्ध न कर सके लेकिन फिलिप ने अपने नेतृत्व में एक यवन राष्ट्र का गठन कर ही लिया[२]।

सैनिक संगठन को पूरा कर लेने पर सर्वप्रथम उसने उत्तर में स्थित पैइओनिआ व पर्वतीय इलीरिया प्रदेश को जीता और थ्रेस को भी रिश्वत देकर शमित कर दिया (ई०पू०-३५८)। इन प्रारम्भिक विजयों के पश्चात्

१- The Life of Greece, W. Durant, P.477,

२- The Will of Zeus, S,Barr P,331—32

उसने अपने भतीजे के स्थान पर स्वयं शासनाधिकार हस्तगत कर लिया। उसने अब बन्दरगाह युक्त नगर पिद्न को, जोकि एथीनिअन संघ का सदस्य था, व थ्रेस स्थित पैंगेइअस पर्वत की सोने की खानों के मार्ग के संरक्षक नगर एम्फीपोलिस को, जिस पर एथेंस की भी दृष्टि थी, अधिकृत करने की योजना बनायी। एथेंस को धोखा देने के लिये उसने अपने विरोधी दावेदार के एथीनिअन सहायकों को कैद से मुक्त कर दिया और एथेंस के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि पिद्ना मैसिडोनिआ को सौंप कर एथेंस उसकी सहायता से एम्फीपोलिस को स्वयं अधिकृत कर ले। परन्तु पिद्ना पर अधिकार कर लेने के बाद वह इससे मुकर गया और एम्फीपोलिस पर भी स्वयं ही अधिकार कर लिया (३५७-५६ ई०पू०)। एथेंस ने अब पिद्ना व एम्फीपोलिस के मध्य स्थित चाल्सिडिक प्रदेश के मुख्य नगर ओलिन्थस को मैसिडोनिआ के विरूद्ध भड़का कर उसे अपनी ओर मिलाना चाहा परन्तु यहाँ भी फिलिप बाजी मार ले गया और एथेंस से पूर्व ही उसने पोटिडे व एन्थेमस नगर एथेंस से छीन कर उन्हें ओलिन्थस को सोप कर उसकी सहानुभूति अर्जित कर ली। सामाजिक युद्धों में फँसे रहने के कारण एथेंस फिलिप के इस प्रसार को अवरूद्ध करने की स्थिति में न था। फलतः थ्रेस में प्रवेश कर के क्रेनिडीज (Crenides) को, जो पहले थैसास के प्रवासियों के अधिकार में था, अधिकृत कर फिलिप्पी (Philippi) नाम से बसाने और पैंगेइअस पर्वत की सोने की खानों पर अधिकार करने में फिलीप को सफलता मिल गयी। इन खानों की १००० टैलेण्ट वार्षिक आय से उसने एक विशाल स्थल व जलसेना तैयार कर ली। दासों की बिक्री से उसने अत्यधिक समृद्धि और घृणा भी अर्जित की। अनेक यवन नगर-राज्यों को सोने से लदे हुये खच्चरों की योजना द्वारा विजित कर लिया। लगभग समस्त उत्तरी एजिअन क्षेत्र पर उसका नियंत्रण स्थापित हो गया। ई०पू० ३५६ का वर्ष उसके लिए अनेक सौभाग्यों को लाने वाला सिद्ध हुआ। उसी वर्ष उसने लगभग समस्त चाल्सिडिक प्रायद्वीप से एथेंस को निकाल बाहर किया, इलीरिअनों व पैइओनिअनों को खदेड़ा, अपने राज्य की सीमा स्ट्राइमान नदी से भी आगे नेस्टस नदी तक विस्तुत की, ओलम्पिक खेलों में रथ की दौड़ में विजयी हुआ और उसके पुत्र अलेक्जाण्डर का जन्म भी उसी वर्ष हुआ। उसकी इन सफलताओं के पश्चात् थेरामिक खाड़ी के तट पर एथेंस के अधिकार में केवल मिथोन नगर रह गया था; ई० पू० ३५५ में उस पर भी फिलिप का अधिकार हो गया। पूर्व में अब्डेरा व मैरोनिआ पर भी उसने अधिकार कर लिया।

तृतीय धार्मिक युद्ध (३५५-४६ ई०पू०)—यवन नगर-राज्यों के पारस्परिक संघर्षों से फिलिप को हस्तक्षेप करने का अवसर प्राप्त हो गया। इस समय थीबिस व फोकिस में संघर्ष चल रहा था। फोकिस ने इपेमिनाण्डस के पिलोपोनीसिअन अभियान में साथ देने से इन्कार कर दिया था अतः थीबिस उससे रूष्ट था। इपैमिनाण्डस की मृत्यु के पश्चात् फोकिस थीबिस के साथ हुयी संधि को भंग कर उस से पृथक हो गया। इस अपमान का बदला लेने के निमित्त थीबिस ने फोकिस पर डेल्फी को समर्पित देवभूमि पर अधिकार कर लेने का आरोप लगाया। थीबिस के उकसाने पर धर्म संघ (एम्फीक्टिया-निक काउंसिल) ने फोकिस पर अर्थदण्ड आरोपित किया क्योंकि इस संघ पर थीबिस व थेसाली का प्रबल प्रभाव था। फिलोमेलस (Philomelus). के नेतृत्व में, फोकिस ने अर्थदण्ड चुकाने से इन्कार कर दिया और असत्य दोषा-रोपण से चिढ़ कर वास्तविक रूप में डेल्फी के मंदिर को अधिकृत कर उसके कोष को अधिकृत कर लिया। एथेंस और स्पार्टा उसकी पीठ पर हाथ धरे हुये थे। स्पार्टा नरेश आर्किडेमस की शह पाकर फिलोमेलस ने होमर के आधार पर अपने नगर को डेल्फी अथवा पिथो का वास्तविक अधिकारी भी घोषित किया (३५६ ई०पू०)। उनका प्रतिरोध करने के लिये जो लोक्रियन भेजे गये थे वे पीछे ढकेल दिये गये। फोकिस ने अपने कार्य के औचित्य का दावा कर थीबिस के अन्य शत्रु राज्यों को भी अपनी ओर मिला लिया। स्पार्टा पर शांति काल में केडमिआ को अधिकृत करने का आरोप लगा कर ल्यूक्ट्रा के युद्ध के पश्चात् ही थीबिस ने एम्फीक्टिआनिक परिषद् के द्वारा ४०० टेलेण्ट का अर्थदण्ड आरोपित करवाया था अतः स्पार्टा थीबिस के विरुद्ध अवसर की ताक में था। प्रारम्भ में वह प्रकट रूप से सामने नहीं आया केवल फिलोमेलस को १५ टेलेण्ट की सहायता देकर उसकी सैनिक तैयारियों में सहायक बना। डेल्फी के कोष की सहायता से भी विशाल सैन्य संगठित कर लिया गया। एम्फीक्टियानिक परिषद् द्वारा युद्ध घोषित कर दिये जाने पर थीबिस के मित्र राज्य, लोक्रिस, डोरिस, थेसाली आदि थीबिस की सहायता के लिए आ पहुँचे। फिलिप से भी सहायता मांगी गयी।

ई०पू० ३५४ में थीबिस व मित्र राज्यों ने फोकिस को निआन नामक स्थान पर पराजित कर दिया परन्तु अगले ही वर्ष उसने एम्फीस्सा को दबाया, और लोक्रियनों को हरा कर थर्मोपली के दर्रे पर और आर्कोमीनस पर अधिकार कर लिया। यह थीबिस के लिये नितांत अपमानजनक था। परन्तु इसी बीच फिलोमेलस मारा गया और इलेटिआ (Elatea) के ओनोमार्कस (Onom-

archus) ने नेतृत्व ग्रहण किया। उसने थेसाली पर आधिपत्य करने के अभि-लाषी जैसान के पुत्रों व फीरी के निरंकुश शासकों को घूस देकर अपनी ओर मिला लिया, जिससे थेसाली की स्थिति निर्बल हो गयी।

ई०पू० ३५३ में थीबिस ने एक सेना परशिया के विद्रोही क्षत्रप आर्टाबा-जस की सहायता के लिए पैम्मनीज (Pammens) के नेतृत्व में भेजी। इसी समय फिलिप भी उसके साथ हो गया और अब्डेरा व मैरोनिआ पर अधिकार कर लिया। यहां से थीबिस व मैसिडोनिआ का सहयोग आरम्भ हुआ। तभी थेसाली के लैरिस्सा नगर के शासकों ने फिलिप से सहायता-याचना की और उनके निमंत्रण पर फिलिप सहर्ष युद्ध में शामिल हो गया क्योंकि उसे यूनान की राजनीति में हस्तक्षेप करने का अवसर मिल रहा था। ओनोमार्कस के भाई फेल्लस (Phayllus) को पराजित कर उसने शीघ्र ही पैगासेइ (Pagasae) पर अधिकार कर लिया परन्तु ओनोमार्कस के नेतृत्व में आने वाली २०००० नवीन सेना के समक्ष उसे दो बार मुंह की खानी पड़ी। हार कर वह वापस चला गया। थेसाली पर निरंकुश शासक लाइकोफ्रान का अधिकार हो गया। कोरोनिआ पर फोकिस ने अधिकार कर लिया (ई०पू० ३५२)। परन्तु शीघ्र ही (ई०पू० ३५२) फीरी के बन्दरगाह पैगासेइ और हेलस के मध्य एक निर्णायक जलयुद्ध में फिलिप को ओनोमार्कस व उसके ६००० सैनिकों को मार गिराने में सफलता प्राप्त हो गयी। ओनोमार्कस के ३००० सैनिक कैद कर लिये गये। स्वयं ओनोमार्कस अपने ही सैनिकों द्वारा मार डाला गया। उसके शेष सैनिक एथीनिअन सेनापति चैरस द्वारा बचा लिये गये। कैदियों को फिलिप ने डुबवा कर मरवा डाला और ओनोमार्कस के शव को सूली पर चढ़वा कर अपने यश में कालिमा भी शामिल कर ली। शीघ्र ही फीरी पर भी उसका आधिपत्य हो गया और थेसाली उसके पांव तले आ गया यद्यपि पैगासेइ को छोड़ शेष समस्त नगरों को उसने स्वतंत्र कर दिया। उस समय से थेसाली उसके प्रति विश्वासपात्र बना रहा। फिलिप ने अब फोकिस को अधिकृत करने की चेष्टा की जिसे एथेंस ने विफल कर दिया। फिलिप थर्मोपली पर ही रोक दिया गया और तब आगे बढ़ना असम्भवप्राय देख कर वह वापस चला गया।

इसी बीच अनुकूल परिस्थिति देख कर स्पार्टा ने मेसानिया व मेगालोपो-लिस को विजित करने की योजना बनायी। मेगालोपोलिस ने एथेंस से सहायता-याचना की, परन्तु स्पार्टा से मैत्री सम्बन्ध होने के कारण यह याचना ठुकरा

दी गयी (स्पार्टा ने फिलिप के विरूद्ध होते हुये भी एथेंस को कभी भी फिलिप के विरूद्ध सहायता नहीं दी) यद्यपि डिमास्थनीज स्पार्टा व थीबिस को निर्बल बनाये रखने के लिए मेगालोपोलिस से संधि करने का पक्षपाती था। (ई०पू० ३५१ में स्वयं थीबिस ने मेगालोपोलिस को संरक्षण प्रदान कर दिया)। एथेंस इस समय फिलिप का सफल प्रतिरोध करने के लिए मैसिडोनिया के पड़ोसी प्रदेश थ्रेस के शासक सर्सोब्लेप्टीज (Cersobleptes) की मैत्री प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील था। डिमास्थनीज इसके विरूद्ध था। शीघ्र ही फिलिप ने सर्सोब्लेप्टीज को भी पराजित कर दिया। अब एथेंस ने उसे थ्रेसिअन प्रायद्वीप की ओर बढ़ने से रोकने के निमित्त सैनिक अभियान भेजने की तैयारी की परन्तु फिलिप की रूग्णता का समाचार मिलने पर यह योजना त्याग दी गयी।

एथेंस में इस समय शांतिवादी दल का प्रबल प्रभाव था। सामाजिक युद्धों की समाप्ति (ई० पू० ३५५) के पश्चात् एथेंस के आर्थिक पतन के कारण चेरस व एरिस्टोफेनिज के साम्राज्यवादी दल का पतन हो गया और युबुलस जैसे राजनीतिज्ञ और अर्थशास्त्री के नेतृत्व में एथेंस का शांतिप्रिय दल नवनिर्माण की ओर अग्रसर हुआ। उसके प्रयत्नों से शीघ्र ही एथेंस की वितीय स्थित सम्हल गयी और वचत की राशि नागरिकों के मनोरंजनार्थ एक कोष— ("थ्योरिक कोष")—में जमा की जाने लगी। युबुलस को आइसोक्रेटीज, फोसिअान, व एस्चीनस आदि का समर्थन प्राप्त था। आइसोक्रेटीज इस पक्ष में था कि एथेंस को साम्राज्य-स्थापना का स्वप्न त्याग कर अपने मित्र राज्यों से मिल कर फिलिप जैसे किसी उत्साही यवन के नेतृत्व में प्राची की विजय का प्रयास करना चाहिये। परन्तु युद्धवादी दल के नेता डिमास्थनीज ने, जो अपने समय का प्रख्यात वक्ता एवं मैसिडोनिआ-विरोधी दल का नेता था, मैसिडोनिआ की ओर से यूनानी स्वतंत्रता पर आनेवाली विपत्ति को भांप लिया था। वह जानता था कि फिलिप कभी रूकने वाला नहीं है; उसकी आकांक्षाओं का दायरा निरन्तर विस्तृत ही होता रहेगा।

डिमास्थनीज

(Demosthenese)

यह एथेंस का प्रख्यात वक्ता था। इसका जन्म ई० पू० ३८४ में एक धनी व्यक्ति के परिवार में हुआ जो ढाल, तलवार और अन्य शस्त्रास्त्रों के कारखाने

का स्वामी था। मरते समय वह डिमास्थनीज के लिए १४ टेलेण्ट (लगभग ८४००० डालर) की विशाल सम्पत्ति छोड़ गया था। उसकी अवयस्कता में जो संरक्षक नियुक्त किए गये उन्होंने अधिकांश धन हड़प लिया। फलतः डिमास्थनीज को न्यायलय की शरण लेनी पड़ी, साथ ही वक्तृत्वकला का प्रशिक्षण भी लेना पड़ा। प्रारम्भ में वह वक्ता की अपेक्षा एक अच्छा लेखक बन गया जो वादी और प्रतिवादी दोनों ही पक्षों के लिये वक्तव्य तैयार किया करता था। धीरे-धीरे अभ्यास द्वारा वह एक अच्छा वक्ता और वकील बन गया। उसने वाक्पटुता आइसेइअस (Isaeus) से प्राप्त की। ई० पू० ३५४ में वह पहली बार असेम्बली में आया। प्रारम्भ में असेम्बली में तथा सार्वजनिक सभाओं में निराशा ही उसके हाथ लगी। जब वह मंच पर आया तो लोगों ने उसकी हंसी उड़ायी क्योंकि वह बोलने में हकलाता था और जल्दी-जल्दी बोलने का प्रयत्न करता था। उसके मित्रों ने उसे बारम्वार उत्साहित किया और उसे विश्वास दिलाया कि यद्यपि उसके बोलने का तौर-तरीका अभी अच्छा नहीं है तथापि उसके भाषण की वस्तु पेरीक्लीज से घट कर नहीं है। अपनी प्राकृतिक त्रुटियों को सुधारने के लिये उसने अनेक यत्न किये और निरन्तर अभ्यास ने उसे सफलता तक पहुँचा दिया। कहा जाता है कि अपने हाव-भावों को उसने दर्पण के समक्ष अभ्यास द्वारा सुधारा और मुँह में गारे रख कर हकलाहट को वश में किया। कभी-कभी तूफान के समय समुद्र तट पर खड़े होकर वक्तव्य दिया करता था और लहरों व हवा के गर्जन से ऊपर अपनी आवाज को उठाने का अभ्यास किया करता था जिससे कि हो हुल्लड़ वाली सभाओं में भी उसकी आवाज को कोई दबा नहीं सके। कहा जाता है कि उसने अपना सिर आधा घुटा दिया था ताकि उसे बाहर न निकलना पड़े और न अभ्यास में ही बाधा पड़े। इस प्रकार कुछ ही समय में वह वक्ताओं का सम्राट गिना जाने लगा। कहा जाता कि उसके वक्तव्य श्रोताओं की आत्मा को आन्दोलित कर देते थे और उसके शब्दों में आग लगाने वाली प्रतिभा थी।

अपनी मातृभूमि एथेंस का वह अनन्य भक्त था। उसकी यह कल्पना यद्यपि भ्रामक थी कि एथेंस मेसिडोनिआ की बढ़ती हुयी शक्ति को रोकने में समर्थ था परन्तु आइसोक्रेटीज आदि की तुलना में वह एक रचनात्मक प्रतिभा वाला व्यक्ति था जो न केवल अपने ध्येय के प्रति विश्वस्त था वरन् उसकी पूर्ति के लिये सब कुछ करने को प्रस्तुत था। एथेंस को शक्तिशाली और महान् बनाये रखने के ध्येय से उसने नौसेना के विकास का प्रस्ताव रखा। साथ ही सैन्य-सेवा के लिए विदेशी भाड़े के सैनिकों पर निर्भर रहने के स्थान पर वह अपने ही नगर-

वासियों को इस दिशा में कार्य करने के लिये प्रेरित करना चाहता था। थ्योरिक कोष का उपयोग भी वह सैन्य संगठन में ही करना चाहता था। यूनान की एकता के नारे को वह यूनान को अधीनस्थ बनाने की आकांक्षा की आड़ मात्र मानता था और इसीलिए फिलिप का विरोधी था। हाइपेरीडीज ने उस पर आरोप लगाया कि उसने परशिया के सम्राट से फिलिप का विरोध करने के लिये धन प्राप्त किया है। फिर भी वह निरन्तर एथेंसवासियों को फिलिप का विरोध करने और अपने उत्तरी उपनिवेशों और मित्र राज्यों को बचाने के लिये प्रेरित करता रहा। शान्तिवादी दल एस्चीनस और फोसिग्रान के नेतृत्व में निरन्तर उसका विरोध करने को सन्नद्ध रहा, सम्भवत: उन्हें फिलिप का सहयोग प्राप्त रहा हो। [फोसिग्रान प्लैटो का शिष्य था और अपने समय का विश्वसनीय राजनेता था। वह एक अच्छा वक्ता भी था। अपनी सैनिक योग्यता के आधार पर वह बराबर ४५ बार स्ट्रेटेगास चुना गया। उसने अनेक युद्धों में भी भाग लिया तथापि वह शन्तिवादी था। एस्चीनस नाटकों में अभिनय के अभ्यास से अच्छा आशु-वक्ता बन गया था। डिमास्थनीज उस पर मेसिडोनिआ से रिश्वत लेने का आरोप सिद्ध न कर सका। फिर भी] विजय अंनत: डिमास्थनीज की ही हुयी। दक्षिण की ओर फिलिप के प्रसार को अवरूद्ध करने के निमित्त सेना तैयार की गयी (३३८ ई० पू०) जो चेरोनिआ में फिलिप का सामना करने को अग्रसर हुयी। फिलिप के बढ़ते हुये प्रभाव को देखकर उसने एक भाषण-माला भी आरम्भ की जो फिलिप्पिक्स (Philippics) के नाम से प्रसिद्ध है। इन वक्तव्यों के द्वारा उसने फिलिप के वृद्धिमान प्रभाव से एथेंस को सचेत किया और उसे अपनी स्वतन्त्रता के लिये मैसिडोनिआ के सम्राट का प्रतिरोध करने के लिये प्रोत्साहित किया। उसने एथेंस को सजग किया कि 'फिलिप वह व्यक्ति नहीं है जो अपनी अब तक की विजयों से सन्तुष्ट रहे। वह तो निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है, जबकि, अफसोस, एथेंस उसे रोकने का कोई प्रयत्न नहीं कर रहा है।' परन्तु उसकी उत्तेजनापूर्ण याचनाओं को एथीनिअनों ने बहरे कानों से सुना, तालियाँ बजायीं, परन्तु कुछ किया नहीं क्योंकि उस समय एथेंस में डिमास्थनीज के विरूद्ध युबुलस और फोसिग्रान का एक शक्तिशाली दल था। ब्यूरी कहते हैं कि डिमास्थनीज का आदर्श पेरीक्लीज का एथेंस था परन्तु वह यूबुलस के एथेंस में रह रहा था।[1] एथेंस के इस मतभेद से फ़िलिप की आकांक्षाओं की पूर्ति में सुविधा हो गयी।[2]

---

1. A History of Greece, J. B. Bury. p. 691.

(२) डिमास्थनीज के सम्बन्ध में एडाल्फ होल्म ने कुछ मन्तव्य प्रकट

ओलिन्थस पर फिलिप का अधिकार :—ओलिन्थस एथेंस का मित्र राज्य था जिस पर फिलिप ने ई० पू० ३४८ में (तथा साथ ही अन्य चाल्सिडिक नगरों पर भी) आक्रमण कर दिया। ओलिन्थस ई० पू० ३५१ में ही फिलिप के आक्रमण की आशंका से एथेंस से सहायता याचना कर चुका था, तथा मैसिडोनिआ के फिलिप-विरोधी दावेदार को शरण भी दे चुका था यद्यपि वह एक संधि द्वारा फिलिप से सम्बन्धित था। एथेंस ने ओलिन्थस की सहायता के लिये एक सेना भेजी भी थी परन्तु तूफान के कारण उसे वापस लौट जाना पड़ा। अपने औलिन्थिक वक्तव्यों में डिमास्थनीज ने एथेंस को ओलिन्थस की सहायता के लिए प्रेरित किया और प्रभुसत्ताधारी दल की निष्क्रियता को भी खूब लथाड़ा। औलिन्थस की सहायता-याचना स्वीकार कर ली गयी परन्तु फोसिआन व उसके दल के विरोध के कारण एथेंस पूरी तरह ओलिन्थस की सहायता न कर सका। फिर भी ई० पू० ३४९ में एथेंस ने औलिन्थस से संधि कर ली। चेरस के अधीनस्थ एक सेना ओलिन्थस के सहायतार्थ भेजी गयी और एक सेना फोसिआन के साथ यूबोइआ की ओर भी भेजी गयी जहां फिलिप ने एथेंस के विरूद्ध विद्रोह करा दिया था। विद्रोही नगर इरिट्रिआ ने एथेंस द्वारा नियुक्त शासक प्लूटार्क (Plutarch) को निष्कासित कर दिया। चाल्किडिस व ओरिआस ने भी विद्रोह कर दिया था। फौसिआन को तो यूबोइआ में सफलता अवश्य प्राप्त हुयी परन्तु उसका उत्तराधिकारी मौलोसस (Molossus) यूबोइआ

किए हैं— उनके मतानुसार वह राजनीति के क्षेत्र में एक पूर्ण अवसरवादी व्यक्ति था साथ ही व्यावहारिक भी। ई० पू० ३५३ में वह स्पार्टा के विरूद्ध मेगालोपोलिस भी सहायता को प्रस्तुत था। ई० पू० ३४४ में मेसीनी (Messeues) के सम्बन्ध में उसने स्पार्टा के दावे का समर्थन किया क्योंकि उसे स्पार्टा-सहित समस्त पिलोपोनेसस की सहायता फिलिप के विरुद्ध चाहिए थी। ३४४ में वह आर्कोमीनस पर थीबिस के अधिकार के विरुद्ध था परन्तु ३३८ में पूरा बोयोशिआ थीबिस को सौंपने को भी तैयार था।

उन का यह भी कहना है कि परिस्थिति आने पर वह आदर्शवादी भी बन जाता था!

वे यह भी कहते हैं कि डिमास्थनीज के राजनीतिक बक्तव्यो की यह विचित्रता है कि जिस विषय पर वह बोल रहा हो उसके सम्बन्ध में कोई निष्कर्ष नहीं निकाल पाता।

A Aistory of Greece, A Holme, P. 241, fn. 3

से हाथ धो बैठा। यूबोइया स्वतंत्र हो गया। एथेंस के पास अब केवल कैरिस्टस रह गया। फलतः एथेंस की स्थिति अत्यत निर्बल हो चली। ओलिन्थस भी विश्वास-घातियों के कारण फिलिप के हाथों में चला गया। नगर को लूट कर जला डाला गया और नगरवासी दासों के रूप में बेच दिये गये। चाल्सिडिस के अन्य नगर पहले ही पराजित हो चुके थे। वहाँ के निवासी स्ट्राइ-मान के प्रदेश में बसा दिये गये और चाल्सिडिस पर मेसिडोनिया के सामंतों का शासन स्थापित हो गया। इस विजय के उपलक्ष में ३४८-४७ ई० पू० के आसपास फिलिप ने नये स्वर्ण सिक्के भी प्रसारित कर दिये।

फिलोक्रेटीज की संधि (ई० पू० ३४६) :—एथेंस को मेसिडोनिया के इस प्रसार के विरूद्ध अन्य यवन राज्यों का सहयोग प्राप्त न हो सका। डिमास्थनीज भी शांतिवादी दलके पक्ष में आ गया। यूबुलस के दल के एक प्रमुख सदस्य फिलोक्रेटीज के प्रस्ताव पर डिमास्थनीज और एस्चीनस सहित दस दूत शांतिसंधि करने के लिये फिलिप से वार्तार्थ भेजे गये। परन्तु शर्तों पर मतैक्य न हो पाने से मैसिडोनिया का एक दूतमण्डल एस्चीनस को प्रवक्ता बना कर एथेंस भेजा गया। एडमाण्ड्स एस्चीनस के द्वारा फिलिप से रिश्वत लेने का उल्लेख करते है परन्तु कतिपय विद्वान इसे सही नहीं मानते। मैसिडोनिया के दूतमण्डल के समक्ष फिलोक्रेटीज ने जो प्रारूप रखा उसमें पहली धारा यहा थीं कि दोनों पक्ष यथास्थिति के आधार पर बटवारा कर लें। इस शर्त के अनुसार एम्फीपोलिस एथेंस के हाथों से निकल गया। फोकिस को इस संधि में शामिल नहीं किया गया। डिमास्थनीज के विरोध के बावजूद यह व्यवस्था स्वीकार कर ली गयी (१६ अप्रैल ३४६ ई०पू०)। फिलिप से संधि पर हस्ताक्षर व शपथ प्राप्त करने के लिए भेजे गये दूतों द्वारा मार्ग में विलम्ब किये जाने से फिलिप को इस बीच थ्रेस के अनेक अन्य नगरों को अधिकृत करने का अवसर भी मिल गया। अंततः फीरी में फिलिप व उसके सहायक थेसालिअनों से शपथ ग्रहण करवायी गयी व हैलीनेसस से भी संधि कर ली गयी।

धार्मिक युद्ध का अन्तः—फोकिस व थीबिस के बीच अभी भी धर्म-युद्ध खिचा चला आ रहा था। थीबिस ने फिलिप की सहायता माँगी। अतः फिलोक्रेटीज की संधि सम्पन्न होते ही फिलिप ने फोकिस के विरूद्ध आक्रमण कर दिया। थर्मोपली इस समय एथीनिअनों की सहायता न मिल सकने से असुरक्षित था। इस की सूचना प्राप्त होने पर एथेंस की जनसभा ने फिलोक्रेटीज

की संधि को फिलिप के उत्तराधिकारियों तक विस्तृत करने और फोकिस के विरूद्ध सैन्य-अभियान भेजने का निश्चय किया, अगर वह मन्दिर और कोष एम्फीक्टआनिक काउंसिल को नहीं सौंपता (जुलाई ३४६ ई०पू०)। अब फोकिस के समक्ष आत्मसमर्पण के सिवाय और कोई चारा शेष न रहा और तत्कालीन फोकिआन सेनानायक फैलेइकस (Phalaecus : ओनौमार्कस का पुत्र) ने आत्मसमर्पण कर थर्मोपली का मोर्चा छोड़ दिया अथवा फिलिप के हाथों बेच दिया (जुलाई ३४६ ई०पू०)। उपरोक्त घोषणा से एक एथीनिअन दूत-मण्डल द्वारा फिलिप को भी अवगत करा दिया गया। फिलिप ने फोकिस व बोयोशिया की समस्या को सुलझाने के लिये एथेंस को आमन्त्रित किया परन्तु एथेंस ने स्वीकार नहीं किया।

एथेंस को अपना विरोधी पा कर फिलिप ने थीबिस की ओर मैत्री का हाथ बढ़ाया और उसे प्रसन्न करने के लिए फोकिस द्वारा अधिकृत पश्चिमी बोयोशिया के नगर थीबिस को सौंप दिये। इसी समय एम्फीक्टीआनिक काउंसिल की सभा भी आयोजित की गयी जिसने फोकिस के दो मत मैसिडोनिया को प्रदान कर दिये। फोकिस के नगरों को गांवो के रूप में विघटित कर दिया गया, साथ ही डेल्फी के मंदिर से लूटी गयी सम्पत्ति को आंशिक रूप से (६० टैलेण्ट प्रति वर्ष की दर से) लौटाने का आदेश भी फोकिस को दिया गया। फोकिस के सहायक लैसिडेमान के मत भी छीन लिये गये। एथेंस फोकिस के विरूद्ध की गयी अपनी घोषणा के कारण दण्ड का भागी बनने से बच गया। आगे चल कर डिमास्थनीज के वक्तव्यों से वस्तुस्थिति का ज्ञान होने पर एथीनियन जनता फिलिप के विरूद्ध हो चली। मध्य-यूनान में फिलिप के पैर जमा लेने से व एथेंस के निकटस्थ फोकिस का विघटन हो जाने से एथेंस को अपने लिए आशंका उत्पन्न हो गयी थी। फीरी के निरंकुश शासक के मार दिये जाने पर पीथियन उत्सवों की अध्यक्षता भी फिलिप ने ग्रहण कर ली (३४६ ई०पू०)। अपना विरोध प्रकट करने के लिए एथेंस ने अपना प्रतिनिध-मण्डल इस उत्सव में नहीं भेजा। एथेंस की सहानुभूति प्राप्त करने के ध्येय से फिलिप ने उस पर आक्रमण करने के बजाय अपने दूत भेज कर अध्यक्ष पद पर अपने निर्वाचन के लिए एथेंस की सहमति मांगी। डिमास्थनीज भी इस समय शांति के पक्ष में था अतः एथेंस ने फिलिप का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। एथेंस का दूसरा प्रमुख राजनीतिज्ञ आइसोक्रेटीज फिलिप के नेतृत्व में एक संगठित यवन-राष्ट्र के निर्माण के पक्ष में था जो परशिया से प्रतिशोध ले

और कम से कम एशिया माइनर का सिलीसिया से सिनोपे (Cilicia to Sinope) तक का प्रदेश परशिया से छीन कर स्वयं अधिकृत कर ले। इस प्रस्ताव के अनुकूल एक पत्र भी उसने फिलिप को भेजा। उसने विगत इतिहास से सबक ले कर ही यह कदम उठाया था। ट्राय के युद्ध के समय से चला आ रहा यूरोप व एशिया का संघर्ष उसे विस्मृत न हुआ था। अब इस संघर्ष को यूरोप के प्रतिनिधि यूनान के हित की दिशा में मोड़ने का समय और नेतृत्व भी उपलब्ध हो गया था।

आगामी वर्षों में फिलिप का प्रभाव थेसाली व पिलोपोनेस में भी बढ़ता गया। थेसाली में वह आरकन चुन लिया गया था। थेसाली के शासन की सुविधा के विचार से उसने वहाँ चार प्रान्तों में चार गवर्नर नियुक्त कर दिये। पिलोपोनेस में उसने स्पार्टा-विरोधी राज्यों की सहायता देने की नीति अपनायी। मेसानिया, मेगालोपोलिस, एलिस व आर्गास ने उसकी मैत्री स्वीकार कर ली। आर्केडिया ने उसकी प्रतिमा स्थापित की। आर्गास ने उसे एक स्वर्ण-किरीट प्रस्तावित किया क्योंकि आर्गास मेसिडोनिया के राजवंश का मूलनिवास होने का दावा रखता था; फिलिप का वंश Argedae कहलाता था।

फिलिप अभी भी एथेंस की मैत्री प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील था। यद्यपि डिमास्थनीज का प्रभाव निरन्तर बढ़ता जा रहा था तथापि यूबुलस के शांतिवादी दल का प्रभाव भी कुछ भी कम न था जिसमें एस्चीनस, फिलोक्रेट्स और फोसियान प्रभृति राजनीतिज्ञ व सैनिक नेता थे। फिर भी डिमास्थनीज की वक्तृत्व-शक्ति के समक्ष इस दल की एक न चली। फिलिप के इपीरस और एड्रियाटिक तट तक, एवं ऊपरी थ्रेस तक बढ़ आने के कारण एथेंस को अपने सर्वप्रमुख समुद्रपार व्यापार-केन्द्र थ्रेसियन चर्सोनीज के लिये भय उत्पन्न हो गया था जो हेलेस्पाण्ट के व्यापारिक-मार्ग का नियंत्रण-स्थल था। डिमास्थनीज इस आशंकित विपत्ति से अनभिज्ञ न था। अतः उसने फिलिप के पक्षपाती एस्चीनस पर महाभियोग चलागा (३४६-५०) परन्तु टिमार्कस (Timarchus) नामक पतित एथीनियन की सहायता लेने के कारण डिमास्थनीज का पक्ष निर्बल हो गया और एस्चीनस मुक्त कर दिया गया। फिर भी यूनान को सामान्य शत्रु मैसिडान के विरुद्ध एक करने के प्रयत्न में वह निरन्तर लगा रहा। डिमास्थनीज के प्रभावस्वरूप एथेंस फिलिप को मुक्ति-दूत के बजाय प्रसारवादी समझता था; अतः एथेंस अपनी स्वतंत्रता, प्रभुसत्ता व लोकतंत्र की रक्षा के लिये संगठित होने लगा। मैसिडान का विरोध करने के लिये डिमास्थनीज ने अपनी दूसरी वक्तृत्व माला प्रारम्भ की। ३४४-४२

ई० पू० में उसने पिलोपोनेसस का भी दौरा किया ताकि एक अखिल यवन संघ की स्थापना की जाय परन्तु उसे सफलता न मिल सकी। उसने फिलिप द्वारा भेजे गये प्रतिनिधि-मण्डल से शांति-संधि की शर्तों में परिवर्तन करने के लिए कहा जिससे थेसाली के तट के समीप स्थित हेलस द्वीप, जो एथीनियन संघ का सदस्य था, एथेंस को वापस मिल जाय। फिलिप ने उसके बदले में हेलोनेसस एथेंस को देने का प्रस्ताव रखा जो अस्वीकृत कर दिया गया। एथेंस ने यह मांग भी की कि प्रत्येक पक्ष को वे क्षेत्र लौटा दिये जायँ जिन पर उनका वास्तविक अधिकार था न कि वे क्षेत्र जो शांति-वार्ता के समय उन्होंने अधिकृत कर लिये थे। मुख्यतः एथेंस का फिलिप द्वारा विजित थीबिस के उन नगरों के प्रति आग्रह था जिन्हें वार्ता के समय विजित कर फिलिप ने अधिकृत कर लिया था। फिलिप ने अब इस प्रश्न को पंचनिर्णय के लिये प्रस्तुत करने का प्रस्ताव रखा परन्तु एथेंस इस आधार पर तैयार न हुआ कि कोई निष्पक्ष पंच या मध्यस्थ उपलब्ध करना सरल न था। इतना ही नहीं वरन् एथेंस में स्थित फिलिप के पक्षपाती दल की शक्ति कम करने के ध्येय से डिमास्थनीज ने फिलोक्रेट्स पर महाभियोग चलाने का प्रस्ताव रखा और फिलोक्रेट्स के भाग जाने पर उसे न्यायालय के अपमान के अपराध में प्राणदण्ड की सजा सुनाई। उसी वर्ष (३४३ ई०पू०) एस्चीनस पर पुनः महाभियोग चलाया गया परन्तु पुनः एस्चीनस की विजय हुयी। इसी बीच अपने पुराने शत्रु मेगारा को मैत्री सूत्र में बांधना में एथेंस को सफलता मिल गयी, साथ ही चाल्किस के लोकतंत्र ने भी फिलिप के बजाय एथेंस का साथ देना ही पसंद किया (३४३–४२ई०पू०)। केवल ओरियस और इरिट्रिया नामक यूबोइअन नगरों में ही मैसिडोनिया की पक्षपाती कुलीनतंत्रीय सरकारें बनी रह सकी। इपीरस के सिंहासनाधिकार के मामले में फिलिप ने अपने साले अलेक्जाण्डर के पक्ष में हस्तक्षेप किया और उसे सिंहासन पर बिठाने में सफल हो कर उसने इपीरस को मैसिडोनिआ पर निर्भर बना लिया। कैसोपिया के प्रदेश को उसने इपीरस में मिला दिया और तदंतर दक्षिण में स्थित एमब्रे-सिया (Ambracia) की ओर बढ़ा। एकेइअनों के द्वारा अधिकृत नौपेक्टस को भी वह हड़पना चाहता था जो कोरिन्थ की खाड़ी की कुंजी था। इन कार्यों में उसने एइटोलिया को अपना सहायक बनाया। अतः एम्ब्रेसिया, एकार्ने-नीया, एकेइआ व कोरसिरा ने फिलिप के विरूद्ध एथेंस से संधि कर ली। डिमा-स्थनीज का फिलिप के विरूद्ध यवनराज्यों का संघ निर्मित करने का स्वप्न सत्य होता प्रतीत होने लगा।

इस बीच (३४२-४१ई० पू०) फिलिप ने थ्रेस के तत्कालीन शासक को हटा कर थ्रेस को भी मैसिडोनिया का निर्भर राज्य बना दिया। थ्रेस में उसने फिलिप्पोपोलिस (Philippopolis) नामक नगर भी स्थापित किया। फलत: मैसिडोनिया की सीमा एथेंस के प्रदेश थ्रेसियन चर्सोनीज तक जा पहुँची और एथेंस की स्थिति असुरक्षित हो चली। एथेंस के खाद्यान्नपूर्ति के मार्ग (Byzantium) पर भी फिलिप ने विफल आक्रमण किया। अत: डिमास्थनीज ने उक्त क्षेत्र में एथेंस के हितों के रक्षणार्थ डिआपिथ्स (Diapithes) को एक छोटी सेना व बेड़ा दे कर भेजा। कार्डिया से, जो कि फिलिप के साथ संधि कर चुका था, एथेस का कुछ भू-क्षेत्रों के प्रश्न पर संघर्ष चल रहा था। अत: डिआपिथ्स ने पहले उसी पर आक्रमण किया। फिलिप ने अपना दूत एथेंस भेज कर इस कार्य का विरोध किया परन्तु डिमास्थनीज के कारण एथेंस में उसकी सुनवायी न हो सकी। डिमास्थनीज ने अब थ्रेसियन चर्सोनीज के प्रश्न पर नयी वक्तृत्व माला आरम्भ की और फिलिप पर "शांतिपूर्ण वचन व आक्रामक कार्यवाही" की दुहरी चाल का आरोप लगा कर उसने पुन: यवन-संघ के निर्माण, व चर्सोनीज में फिलिप के प्रसार का सैनिक विरोध करने का प्रस्ताव रखा। पुनः विभिन्न नगर राज्यों में दूत भेजे गये। वह स्वयं भी कई जहाज लेकर बास्फौरस गया और बाइजेंतियम व उसके पड़ोसी पेरिन्थस को अपनी ओर मिला लिया (३४१ई०पू०)। फोसियान को यूबोइआ भेजा गया। उसने वहां जा कर इरिट्रिया व ओरियस से फिलिप के द्वारा नियुक्त शासकों को निष्कासित कर उक्त नगरों को यूबोइआ के स्वतंत्र-संघ में शामिल कर दिया। अब फिलिप ने भी अंतत: युद्ध को स्वीकार कर लिया और पेरिन्थस पर घेरा डाल दिया परन्तु सफल न हो सका। एथेंस ने अपने नगर में स्थापित फिलोक्रेटीज की संधि का स्तम्भ उखाड़ कर युद्ध की स्पष्ट घोषणा कर दी। पेरिन्थस में असफल होने पर फिलिप ने बाइजेंतियम पर घेरा डाला परन्तु चैरस (Chares) व फोसियान के नेतृत्व में भेजे गये एथीनियन बेड़ों के सामने वह टिक न सका और घेरा उठा कर थ्रेस की ओर पीछे हट गया। इस युद्ध में रोड्स व किआस ने भी एथेंस की सहायता की।

एथेंस में जहाज-निर्माण के लिए डिमास्थनीज ने एक नया नियम प्रस्तावित कर उक्त कार्य का व्ययभार सम्पत्ति के अनुपात के आधार पर समस्त एथीनियन जनसमुदाय में वितरित कर दिया। उसने नियम बनवाया कि प्रत्येक एथीनियन नागरिक, जिस की आय प्रति वर्ष ३० टेलेण्ट से अधिक हो, तीन तिमंजिले

जहाजों और एक नौका के निर्माण के लिए उत्तरदायी होगा। इस प्रकार व्ययभार के आनुपातिक रूप में वितरित हो जाने पर जहाजनिर्माण की क्षमता में भी वृद्धि हुयी और एथेंस युद्ध के समय बेड़े की त्वरित सहायता उपलब्ध करने में भी समर्थ हो चला। उत्सव के लिए पृथक् रखे गये कोष को भी उसने सैनिक कार्यों के लिए स्वीकृत करवा लिया।

उधर ३४०–३९ ई०पू० के वर्षों में फिलिप ने बाल्कान पर्वतों को पार कर विद्रोही सीथियनों को हराया। यहीं पर वह आहत भी हुआ प्रन्तु थ्रेस की ओर से अब वह निश्चित हो गया।

फिलिप को ज्ञात हो गया था कि एथेंस से युद्ध अवश्यम्भावी है। साथ ही बाइजेंतियम, और पेरिन्थस की पराजय से उसे यह भी ज्ञात हो गया कि प्रोपोण्टिस में रोड्स, कास आदि एथेंस के सहायक राज्यों की शक्ति के कारण एथेंस से टक्कर लेना कठिन होगा। अतः उसने एट्टिका पर ही सीधे आक्रमण करने का निश्चय किया।

एथेंस इस समय इस स्थिति में न था कि सफलतापूर्वक फिलिप के आक्रमण का प्रतिरोध कर सके। उसके पास कोई योग्य सेनापति न था। केवल नौ-सेना के भरोसे एटि्टका पर होने वाले आक्रमण को रोकना आसान न था। यूबोइआ, चाल्किस, मेगारा, कोरिन्थ आदि की सहायता से भी कुछ होने वाला न था। अब डिमास्थनीज एथेंस के प्राचीन शत्रु और फिलिप के सहायक थीबिस की ओर उन्मुख हुआ ताकि फिलिप को एटि्टका में प्रवेश का मार्ग न मिल सके। परन्तु यह नीति अत्यंत संशयपूर्ण थी। इस मैत्री के मार्ग में ई० पू० ३४० में एम्फिक्टिआनिक काउंसिल की बैठक में बाधा उपस्थित हुयी जब एथेंस ने प्लैटेइआ की विजय के पश्चात् लूट में प्राप्त स्वर्ण-ढालों को पुनः डेल्फी के मंदिर में भेंट स्वरूप समर्पित किया। इन ढालों पर यह लेख अंकित था कि, 'परशियनों व थीबनों की लूट से प्राप्त, जब वे एक होकर यवनों के विरुद्ध लड़े'। लौक्रिस का नगर एम्फिस्सा अपने मित्र थीबिस का पक्ष लेकर अपमान का बदला लेने को आगे आया। उसने एथेंस पर धर्म के उल्लंघन का आरोप लगाकर ५० टैलैण्ट अर्थदंड आरोपित करने का प्रस्ताव रखा। इस सभा में एथेंस का प्रवक्ता एस्चीनस उपस्थित था। उसने उक्त प्रस्ताव के विरुद्ध एम्फिस्सा (Amphissa) पर क्रिसा (Crisa) की पवित्र भूमि पर भवन-निर्माण या कृषि-कर्म का आरोप लगाकर दण्ड देने का प्रस्ताव रखा।

धर्मसंघ के सदस्यों ने स्वयं देवभूमि पर निर्मित भवनों को ढहा दिया। एम्फीस्सा ने इसका विरोध किया। अतः थर्मोपली में पुनः सभा बुलायीं गयी। इस समय एथेंस चाहता तो, उत्पन्न स्थिति का लाभ उठा कर, फिलिप को थीबिस के विरुद्ध अपनी ओर मिला सकता था, परन्तु डिमास्थनीज थीबिस की मित्रता प्राप्त करने को अधिक उत्सुक था। अतः थीबिस, और एथेंस ने भी अपने प्रतिनिधि सभा में नहीं भेजे। फलतः धर्मसंघ एम्फिस्सा से अर्थदण्ड वसूल करने में समर्थ न हो सका। दूसरे वर्ष (ई०पू० ३३९) धर्मसंघ ने एम्फिस्सा के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया और फिलिप कों भी सहायतार्थ निमंत्रित किया। एथेंस और थीबिस तटस्थ रहे। फिलिप शीघ्र ही आ पहुँचा। थर्मोपली पहुँच कर एक सेना उसने डोरिस व एम्फिस्सा के मार्ग पर स्थित नगर सिटीग्रान की विजय के लिए भेज दी और स्वयं फौकिस में प्रवेश कर इलैटिया नगर को किलेबन्द बनाने में लग गया ताकि बौग्रोशिआ की ओर से सम्भावित आक्रमण का सामना किया जा सके, साथ ही थर्मोपली से भी सम्पर्क बना रहे।

उसने थीबिस से भी एथेंस के विरूद्ध सहायता मांगी। अब एथेंस में भी चिन्ता व्याप्त हो चली और डिमास्थनीज के प्रस्ताव पर उसके सहित दस दूत थीबिस भेजे गये। यद्यपि थीबिस फिलिप के विरूद्ध न था फिर भी आशा की एक किरण थी। थीबिस की असेम्बली में एथेंस और मैसिडोनिआ के प्रतिनिधियों ने अपने पक्ष प्रस्तुत किये। थीबिस ने एथेंस का पक्ष ग्रहण किया क्योंकि उसे भी अपने लिए संकट की आशंका हो चली थी। इसके बदले में एथेंस ने युद्ध-व्यय का दो तिहाई भार वहन करना स्वीकार किया, ओरोपस पर अपना अधिकार त्याग दिया, और थीबिस को बोओशिअन संघ का नेता स्वीकार कर लिया (ई० पू० ३३८)। यह डिमास्थनीज की एक बड़ी कूटनीतिक विजय थी। थीबिस ने अपना 'पवित्र-दल' सहायतार्थ देना स्वीकार किया। स्पार्टा ने सहायता देने से इन्कार कर दिया।

दूसरी ओर फिलिप लोक्रिस के नगर एम्फिस्सा और नौपेक्टस को जीतकर दक्षिण यूनान के मुहाने तक जा पहुँचा था (फोकिअन नगर इलेटिआतक)। वहाँ से पुनः बोयोशिया में प्रवेश करने के लिए जब वह चिरोनिआ पहुंचा तो उसने थीबिस व एथेंस आदि को सामना करने को सन्नद्ध देखा जो चिरो-निआ से सेफिसस तक फैले हुए थे। थीबिस के व एथेंस साथ ही एकेइआ व कोरिन्थ के सैनिक भी सहायतार्थ उपस्थित थे। कुल सैन्यसंख्या ग्लोट्ज के अनुसार ३०००० पदति व २००० अश्वारोही आंकी गयी है। इतने ही सैनिक

फिलिप की सेना में भी बतलाये जाते हैं। फिलिप की सेना में अश्वारोहियों का नेतृत्व उसका १८ वर्षीय पुत्र अलेक्जाण्डर स्वयं कर रहा था। उसने बड़ी वीरतापूर्वक थीबन सेना के व्यूह को भंग कर उनके नायक को मार गिराया और विजय प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भाग लिया। एथीनिअनों को परास्त करने का श्रेय पदाति सैनिकों को मिला। दूसरे पक्ष से थीबिस के "पवित्र दल"

ने प्राण हथेली पर रख कर सामना किया फिर भी उसे पराजय का ही मुख देखना पड़ा। एक हजार सैनिक मारे गये, २००० कैद कर लिये गये और शेष भाग गये जिनमें डिमास्थनीज भी शामिल था।

वीरगति-प्राप्त सैनिकों की स्मृति में एक स्मारक स्थापित किया गया।

एथेंस और उसके सहायकों की पराजय का कारण उनकी सैनिक निर्बलता और योग्य-नेतृत्व का अभाव था। चिरोनिआ के युद्ध से ही यूनान के प्राचीन नगर-राज्यों के दिन समाप्त हो गये और नवीन युग का आरम्भ हुआ। यूनान के इतिहास में यह युद्ध एक निर्णायक युद्ध था। मैसिडोनिया अब यूनान की प्रमुख शक्ति बन गया। इसलिये कहा जाता है कि यहाँ से वस्तुत: यूनान का इतिहास समाप्त हो जाता है और मैसिडोनिया का इतिहास प्रारम्भ होता है।

विल डूरां के मतानुसार चिरोनिआ की लड़ाई के असीम परिणाम हुए। जिस एकता की प्राप्ति में यूनान विफल हो चुका था वह अन्ततः एक अर्द्ध-विदेशी तलवार के सहारे स्थापित हो गयी। एथेंस, स्पार्टा और थीबिस आदि इस उद्देश्य की प्राप्ति की स्थिति में नहीं रह गये थे। यह यूनान का सौभाग्य था कि उन्हें फिलिप जैसा नेता और विजेता मिल गया जिसने उनकी स्वतंत्र सत्ता में विशेष हस्तक्षेप नहीं किया। विद्रोह की स्थिति में उसने उन्हें अवश्य ही नहीं रहने दिया [1]।

थीबिस की ओर बढ़ कर फिलिप ने विरोधी नेताओं को मौत के घाट उतार कर मैसिडोनिया-समर्थक कुलीनतंत्रीय शासन स्थापित किया। बोयोशियन संघ को भंग कर सभी सदस्य राज्यों को स्वतंत्र कर दिया और थीबिस के किले कैडमिया में एक छावनी भी स्थापित कर दी। साथ ही आर्कोमीनस व प्लैटेइआ के नष्ट-भ्रष्ट नगरों को पुनः निर्मित किया। थीबिस से निकाले गए फिलिप-समर्थक ३०० व्यक्ति वापस बुला लिए गए। एथेंस के साथ उसका व्यवहार सम्मानपूर्ण व सौहार्दपूर्ण सिद्ध हुआ। इसके दो प्रमुख कारण थे एथेंस की नौ-शक्ति, और फिलिप के हृदय में एथेंस के प्रति सम्मान की भावना।

---

1. The Life of Greece, W. Durant. P. 480.

एथेंस में अब डिमास्थनीज के विरोधी शांति-दल का प्रबल प्रभाव था जो फिलिप के प्रस्तावों को तत्वर स्वीकार करने को प्रस्तुत था। फिलिप द्वारा चिरोनिआ के युद्ध में कैद किये गये एथीनियनों में डिमेड्स नामक एक शांतिवादी भी था। उसी को अपना शांतिदूत बना कर फिलिप ने एथेंस से संधि-वार्ता चलाने के निमित्त भेजा। इस संधि के अनुसार फिलिप ने बिना किसी प्रकार की क्षतिपूर्ति के युद्धबन्दियों को मुक्त करने व एट्टिका पर आक्रमण न करने का वचन भी दिया। एथेंस को नये अखिल-यवन संघ में शामिल होने का निमन्त्रण भी दिया गया। एथेंस ने अपना पुराना नौसैनिक संघ समाप्त कर दिया। चर्सोनियस मैसिडोनिया को देकर एथेंस ने फिलिप से ओरोपस प्राप्त कर लिया। तत्पश्चात् फिलिप ने अलेक्जाण्डर व दो अन्य अधिकारियों के संरक्षण में वीरगतिप्राप्त एथीनियन सैनिकों के शव भी सम्मान के साथ एथेंस भिजवा दिये। इस कार्य के लिए अपना आभार प्रकट करने के लिए एथेंस ने बाजार में ("नए अगामेमनान") फिलिप की प्रतिमा स्थापित की व उसे यूनान का नेता भी स्वीकार कर लिया।

यूबोइआ व फोकिस के संघर्ष को हल करके फिलिप पिलोपोनेसस की ओर बढ़ गया। मेगारा व कोरिन्थ में मैसिडोनियन छावनियां स्थापित की गयीं। इपीडाँरस्, ट्राजन्, आर्गास व आर्केडियां ने स्वतः आत्मसमर्पण कर दिया। केवल स्पार्टा ने प्रतिरोध किया, और हारा। फिलिप ने स्पार्टा के प्राचीन संविधान को भी समाप्त करना चाहा परन्तु किसी कारणवश ऐसा न कर केवल उस के कुछ प्रदेश उसके सीमावर्ती पड़ोसियों आर्गास, टीगिया, मैगैलोपोलिस व मैसेनिया को सौंप दिये। स्पार्टा के पास केवल लैकोनिया शेष रह गया।

३३८ई०पू० में कोरिन्थ में एक अखिल यवन कांग्रेस (Synedrion) का अधिवेशन बुलाया गया जिसमें स्पार्टा ने भाग नहीं लिया। कोरिन्थ को उक्त यवन-संघ का केन्द्र और मैसिडोनिया को उसका अध्यक्ष स्वीकार किया गया। इस संघ के ३३७ ई०पू० के अधिवेशन में फिलिप ने परशिया के बर्बर शासकों द्वारा यूनान की पवित्र भूमि पर किये गये आक्रमण का प्रतिशोध लेने तथा एशिया माइनर के यवन नगरों को परशिया की दासता से मुक्त करने के लिए परशिया पर आक्रमण करने की योजना प्रस्तुत की। इसी अधिवेशन में फिलिप को यवनों का नेता स्वीकार कर लिया गया। प्रत्येक सदस्य राज्य की-सैनिक-सहायता का भाग निश्चित कर दिया गया। एथेंस ने एक विशाल नौसैनिक बेड़ा भेजना स्वीकार किया। अपने अथक प्रयत्नों द्वारा यूनान के

जिस संघ के निर्माण में फिलिप सफल हो गया था उसे सुचारु रूप से चलाने के ध्येय से उसने पश्चिमी यूनान, पिलोपोनेसस व उत्तर-पूर्व यूनान के नियन्त्रणार्थ क्रमशः अम्ब्रेसिया, कोरिन्थ व चाल्किस में तीन मैसिडोनियन छावनियाँ स्थित कर दीं। युद्ध की तैयारियाँ पूरी कर लेने के बाद उसने ३३६ ई०पू० के बसंत में कुछ अग्रिम सेना पार्मिनिओ (Parmenio) अमिण्टास व अट्टालस के नेतृत्व में हेलेस्पाण्ट के मार्ग को अधिकृत करने व ट्राड तथा बिथीनिया में स्थिति सुदृढ़ करने के लिए भेज दी। शीघ्र ही स्वयं भी शेष सैन्य ले कर वह प्रयाण करने वाला था परन्तु दैव को यह स्वीकार न हुआ।

फिलिप अपनी पत्नी, इपीरस की राजकुमारी ओलिम्पियास से, जो कि अलेक्जाण्डर की माता थी, प्रसन्न न था। इसी बीच वह अपने एक मित्र और सेनानायक अट्टालस (Attalus) की पुत्री या भतीजी क्लिओपेट्रा (Cleopatra) से विवाह करने को इच्छुक हो चला, अतः उसने ओलिम्पियास से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया। क्लिओपेट्रा से विवाह के समय क्लिओपेट्रा के चाचा अट्टालस के यह कहने पर कि उक्त सम्बन्ध से "फिलिप को योग्य उत्तराधिकारी की प्राप्ति हो," अलेक्जाण्डर को अपना अपमान अनुभव हुआ और उसने अपना सुरापात्र अट्टालस के मुख पर दे मारा। अलेक्जाण्डर ने कहा 'तो क्या मैं दोगला हूँ।' इस पर नशे में चूर फिलिप अपने पुत्र को मारने के लिए तलवार खींच कर बढ़ा परन्तु लड़खड़ा कर गिर पड़ा। इस पर, कहते हैं अलेक्जाण्डर ने कहा, "देखिये, यही व्यक्ति यूरोप का एशिया-विजय में नेतृत्व करेगा जो एक कोच से दूसरे तक जाने में ही ढुलक पड़ा है।" इसके बाद अलेक्जाण्डर अपनी माँ को साथ लेकर इपीरस चला गया यद्यपि कुछ ही दिनों पश्चात् पिता के निमन्त्रण पर वापस पैल्ला चला आया। परन्तु शीघ्र ही क्लिओपेट्रा के पुत्र उत्पन्न होने से अलेक्जाण्डर व उसकी माता को उत्तराधिकार के सम्बन्ध में शंका होने लगी। फिलिप भी इससे अनभिज्ञ न था अतः उसने उनकी आशंका को निर्मूल करने के लिए इपीरस के सम्राट की ओर मैत्री का हाथ बढ़ाया और सम्बन्ध को दृढ़ करने के लिये अपनी पुत्री क्लिओपेट्रा का विवाह इपीरस के सम्राट अलेक्जाण्डर के साथ सपम्न्न करा दिया। विवाह-संस्कार के पश्चात् ही फिलिप एशिया की विजय के लिए प्रस्थान करने वाला था, परन्तु कहा जाता है कि उसकी पहली रानी ओलिम्पियास ने अपमान का बदला लेने के लिए फिलिप से रूष्ट पाँजेनियस नामक हत्यारे के द्वारा उसे स्वर्ग की

ओर रवाना कर दिया; पांजेनियस भी शीघ्र मार डाला गया। (जुलाई-३३६ई०पू०)। इस हत्या में ओलिम्पयास का हाथ होना लगभग निश्चित सा ही है परन्तु इस हत्या से लाभान्वित अलेक्जाण्डर का इसमें कोई हाथ नहीं माना जाता।

ब्यूरी के मतानुसार प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्वों में फिलिप प्रमुख व्यक्ति है जिसका सही मूल्यांकन नहीं किया गया। इसका कारण उसके पुत्र अलेक्जाण्डर की महानता, फिलिप के विषय में जानकारी के समुचित स्त्रोतों का अभाव, डिमास्थनीज आदि वक्ताओं द्वारा उसके व्यक्तित्व का गलत एवं भ्रामक चित्रण आदि को ही बतलाया है।[1] उसकी महानता के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त है कि उसके महान् पुत्र द्वारा किये गये कार्य ही उसके प्रति सबसे बड़ी श्रद्धांजलि या प्रमाणपत्र हैं। चियास के इतिहासकार थियापाम्पस (Theopampus) ने फिलिप को केन्द्र-बिन्दु बना कर समकालीन इतिहास का विवरण तैयार किया था जो आज उपलब्ध नहीं है। इस विवरण में उसने फिलिप की सभी बुराइयों के होते हुए भी उसे यूरोप का सबसे महान् पुत्र घोषित किया था।

राबिन्सन उसकी महत्ता का प्रतिपादन करते हुये उसकी आदर्शवादिता, महत्वाकांक्षा आदि पर प्रकाश डालते हैं। उनका कहना है कि महत्वाकांक्षा ने ही उसे यूनानियों पर विजय दिला कर उसे न केवल उनका नेता बनाया वरन् यवन-संस्कृति को विश्व का सर्वश्रेष्ठ मानदण्ड मान कर उसकी प्राप्ति और प्रसार की साधना की क्षमता भी प्रदान की। यह कहना कदाचित् अत्युक्तिपूर्ण न होगा कि यदि पाश्चात्य-जगत अलेजाण्डर के प्रति ऋणी है तो फिलिप के प्रति भी उसे कृतज्ञ होना चाहिये जिसने अलेक्जाण्डर को इतना ऊँचा आदर्श प्रदान किया, एक महान् लक्ष्य का कर्त्ता बनाया और प्रशिक्षण प्रदान किया।

---

1. "Thus through chance, through the malignant eloquence of his opponent, who has held the ears of posterity, and through the very results of his own deeds, the maker and expander of Macedonia, the conqueror of Thrace and Greece, has hardly held his due place in history of the World"
A History of Greece' J. B- Bury, p. 761.

८ "अलेक्जाण्डर का अभ्युदय"

★

अपनी महत्वाकांक्षापूर्ण योजनाओं की पूर्ति कर सकने के पूर्व ही फिलिप का जीवनप्रदीप बुझा दिया गया था। अब उसका कार्य सुचारू रूप से सम्पादित कर पूर्णता प्रदान करने का भार २० वर्षीय युवक अलेक्जाण्डर के कन्धों पर आ पड़ा जिसमें सम्राट के सभी गुण विद्यमान थे। प्रकृति उसके प्रति अत्यन्त उदार प्रतीत होती थी जिसने उसे सर्वगुणसम्पन्न बनाया था। उसमें आत्मविश्वास और महत्वाकांक्षा कूट-कूट कर भरी थी। उसकी महत्वाकांक्षा के विषय में प्लुटार्क लिखता है कि अपने पिता फिलिप की विजय-वार्ताओं को सुन कर अलेक्जाण्डर कहा करता था कि उसके 'पिता शायद उसके लिये कोई महान् कार्य करने को न छोड़ जायेंगे।' काव्यों में रूचि रखने व पुराणों तथा होमर के काव्यों के अध्ययन से वह स्वयं को मानवेतर अथवा वीर नायक के रूप में देखने लगा था। वह होमर के महाकाव्य इलियड की प्रति हमेशा प्रेरणास्त्रोत की तरह अपने साथ रखता था। वह समझता था कि उसे जीवन में कोई महान् कार्य करना है। उसकी इस धारणा को बलवती बनाने में उसकी माँ ओलिम्पयास निरंतर प्रयत्नशील रही। उसके शिक्षक अरस्तू (Aristotle) ने उसे यवन कला और विधाओं में रूचि लेना सिखाया और उसे प्रत्येक यवन वस्तु का पुजारी बना दिया। वह कहा करता था कि पिता ने उसे जीवन दिया किन्तु अरस्तू ने उसे जीवन का उपयोग बतलाया। इस प्रकार अलेक्जाण्डर के जीवन पर अन्त तक महान् दार्शनिक अरस्तू का प्रभाव बना रहा। अरस्तू के प्रभाव से उसमें उच्च विद्याओं के प्रति सर्वदा श्रद्धा एवं

प्रेम बना रहा। यवनों द्वारा प्रशंसित हर बात उसमें विद्यमान थी—शारीरिक पूर्णता, बौद्धिक प्रतिभा और साहसी वृत्ति।

इन गुणों के होते हुए उसमें क्रोधित होने का एक बड़ा दोष था। क्रोध में आ कर वह कैसा भी भयंकर कार्य कर बैठता किन्तु बाद में अपनी इन क्रूरताओं के लिये पश्चाताप भी कम न करता था।

सिंहासन पर आते ही अलेक्जाण्डर को आंतरिक शत्रुओं तथा वाह्य विद्रोहियों का सामना करना पड़ा। सबसे पहले उसे अपनी सौतेली माता तथा उसके चाचा अट्टालस द्वारा फिलिप के नवोत्पन्न पुत्र के पक्ष में एशिया माइनर में उठाये गये विद्रोह का दमन करना पड़ा। फिलिप की मृत्यु का समाचार पाकर तथा नवयुवक अलेक्जाण्डर को निर्बल समझ कर अधीनस्थ यूनानी राज्यों ने सुअवसर आया देखकर मैसिडोनिया की सत्ता के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह का प्रणेता एथेंस, व उसका प्रमुख वक्ता डिमास्थनीज, था जिसके उकसाने पर समस्त यूनान ने मैसिडोनिया के विरूद्ध तलवारें खींच ली थीं। यद्यपि एथेंस का दूसरा प्रमुख राजनीतिज्ञ जानता था कि फिलिप की मृत्यु से मैसिडोनिया की शक्ति में केवल एक सिपाही का ही अंतर पड़ा था। कोरिन्थ, थ्रेस व इलीरिया ने इस स्वर्णअवसर से लाभ उठाना चाहा। उनके नेता एथेंस ने अट्टालस व परशिया को भी अपनी ओर मिलाने के प्रयास किये। अम्ब्रेसिया ने तथा थीबिस ने भी देखादेखी विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया। किन्तु अलेक्जाण्डर के बढ़ाव की तेजी के सामने सर्वप्रथम थेसाली और फिर उसके पड़ोसी नगर नतशिर होते चले गये। थेसाली ने फिलिप की ही भांति उसे भी अपना आर्कन चुनकर उसके क्रोध से स्वयं को रक्षित बना लिया। डेल्फी की धर्म सभा (एम्फीक्टीआनिक काउंसिल) ने भी उसे अध्यक्ष स्वीकार कर लिया। एथेंस ने भी क्षमाप्रार्थना के साथ अपने दूत उसके पास भेज दिये। तत्पश्चात् कोरिन्थ में पुनः अखिल यवन कांग्रेस का अधिवेशन हुआ और परशिया के विरूद्ध फिलिप के रिक्त स्थान की पूर्ति के निमित्त अलेक्जाण्डर का चुनाव कर लिया गया (ई० पू० ३३६)। इसके बाद वह थ्रेस तथा इलीरिया के विद्रोह के दमनार्थ बढ़ा। थ्रेस में उसे विशेषतः ट्रिबाली जाति को दण्डित करना था जो हेमस पर्वत के पार रहती थी. जब वह उक्त पर्वत के पश्चिमी दर्रे पर पहुँचा तो उसने उन्हें दर्रे के शिखर पर रथों के साथ प्रतिरोध के लिये सन्नद्ध पाया जिन्हें वे अलेक्जाण्डर की सेना पर लुढ़का कर उसे तितर-बितर करना चाहते थे। परन्तु अलेक्जाण्डर जैसे कुशल एवं साहसी नेता के समक्ष उनकी यह योजना निष्फल सिद्ध हुयी। मैसिडोनियन सेना ने ढालों की

भाड़ बनाकर रथों को अपने ऊपर से गुजर जाने दिया। उनमें से एक भी आहत न हुआ। तदनंतर ट्रिबाली में उतरना अलेक्जाण्डर के लिये कोई कठिन कार्य न था। उन्हें परास्त कर वह डैन्यूब के दूसरी ओर ट्रिबाली के सहायक सीथियनों को दलित करने के लिये अग्रसर हुआ। अपने सहायक बाइजैंतियम के सैनिकों के साथ एक रात उसने चुपचाप डैन्यूब नदी पार कर ली और सीथियनों को बुरी तरह पराजित किया। अलेक्जाण्डर की सुशिक्षित अश्वारोही सेना के समक्ष अव्यवस्थित सीथियनों की एक न चली और वे भाग गये। अलेक्जाण्डर भी यहीं से वापस मुड़ गया। ट्रिबाली की पराजय का समाचार पाकर अनेक जातियों ने अलेक्जाण्डर के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। डाल्मेशिया की पर्वतीय सेल्ट (Celt) जाति के लोगों ने भी अपने दूत भेज कर मैत्री-निवेदन किया।

इसी बीच अलेक्जाण्डर को स्वयं मैसिडोनिया पर इलीरियनों के आक्रमण का ज्ञान हुआ जिन्होंने मैसिडोनिया के सर्वप्रमुख पर्वतीय दुर्ग पेलियन पर अधिकार कर लिया था, परन्तु अलेक्जाण्डर के आने का समाचार पाते ही वे मोर्चा छोड़ कर भाग खड़े हुये। जो कुछ सामना करने के लिए फिर सामने आये भी उन्हें अलेक्जाण्डर ने रात्रि-आक्रमण में समाप्त कर दिया। अभी वह इलीरिया के विद्रोह को पूर्णतः दमित भी न कर पाया था कि उसे थीबिस के विद्रोह के समाचार प्राप्त हुये।

जिस समय अलेक्जाण्डर थ्रेस व इलीरिया आदि विद्रोह प्रांतों की विजय के लिये गया हुआ था, उसकी अनुपस्थिति का लाभ उठा कर, थीबिस, तथा अन्य यवन-राज्यों ने भी मैसिडोनिया के अधिराजत्व का जुआ अपने कन्धों से उतार फेंका। कहा जाता है कि इस विद्रोह को उकसाने में परशिया का भी प्रमुख हाथ था जो अपने ऊपर आशंकित आक्रमण को रोकने के लिये अलेक्जाण्डर का रूख दूसरी ओर मोड़ देना चाहता था। थ्रेस में अलेक्जाण्डर की हत्या कर दिये जाने की सूचना पा कर थीबिस ने विद्रोह कर दिया और अपने दुर्ग केडमिया में स्थित मैसिडोनियन छावनी को घेर लिया। एथेंस के देशभक्तों, डिमास्थनीज आदि, के उकसाने पर एलिस, एइटोलिया, तथा आर्केडिया आदि ने भी विद्रोह का झण्डा फहरा दिया, परन्तु इसी समय समाचार की असत्यता प्रकट हो गयी जब अलेक्जाण्डर सेना लेकर बहुत ही तीव्र गति से थीबिस के द्वार पर आ धमका। शीघ्र ही कैडमिया के दुर्ग में प्रवेश कर उसने थीबिस को विजय कर लिया। उसकी सेना ने नगर में कत्लेआम मचा कर लगभग ६ हजार थीबनों को मौत के घाट उतार दिया। दूसरे दिन कोरिन्थ

की कांग्रेस के संघीय सदस्यों की बैठक में थीबिस के लिये दण्ड की व्यवस्था की गयी जिसके अनुसार थीबिस के स्त्री व बच्चों को दास के रूप में बेच दिया गया; थीबिस के दुर्ग पर मैसिडोनियन सेना का आधिपत्य हो गया, और कवि पिण्डार के घर को छोड़ शेष समस्त थीबिस नगर धराशायी कर दिया गया। थीबनों के साथ किये गये इस कठोर व्यवहार को देख कर अन्य यूनानी राज्य सहम उठे। उन्होंने विद्रोह का झण्डा झुका कर पुनः समझौते की याचना की जिसे अलेक्जाण्डर ने स्वीकार कर लिया। थीबिस के इस ध्वंस के फलस्वरूप प्लैटेइग्रा व आर्कोमीनस को पुनः स्वतन्त्रता मिल गयी। एथेंस ने भी क्षमायाचना के साथ-साथ अलेक्जाण्डर के स्वागतार्थ एक दूतमण्डल भेजा। अलेक्जाण्डर ने उनकी याचना इस शर्त पर स्वीकार की कि डिमास्थनीज तथा अन्य विद्रोहमूलक एथोनियन नेताओं को समर्पित कर दिया जाय। बाद में वह केवल थ्रेसियन चेरीडेमस के निष्कासन से ही सन्तुष्ट हो गया। अपने पिता फिलिप की भाँति वह भी एथेंस की मैत्री किसी भी मूल्य पर प्राप्त करने के लिये उत्सुक था।

थीबिस के दमन के साथ ही अलेक्जाण्डर की यूरोपीय विजय का अभियान समाप्त हो गया। उसकी इन त्वरित विजयों को ध्यान में रख कर हम भी ब्यूरी के साथ यह कह सकते हैं कि अपनी इन विजयों में उसने विशिष्ट रणनीति सम्बन्धी क्षमता, विचारों की मौलिकता, दृढ़निश्चय एवं उसके त्वरित कार्यान्वयन आदि गुणों का परिचय दिया जिन्होंने आगामी कार्यक्रमों में उसे विजयी बनाया।

अब पूर्व की विजय का अभियान प्रारम्भ हुआ जिसमें सब से पहला लक्ष्य परशिया था।

परशिया के विरूद्ध अभियान का कारण स्ट्रिंगफेलो बार के मतानुसार केवल जर्कसेज द्वारा यूनान पर किये गये आक्रमण का प्रतिशोध लेना मात्र न था वरन् डेरियस तृतीय द्वारा यवन वेतनिक-सैनिकों की भर्ती, परशियन स्वर्ण के द्वारा यवन-राज्यों की मैत्री प्राप्त करने की चेष्टा, मेम्नन की आयोनिअन नौसेना, और एजियन में उसकी नौशक्ति की धाक ने समस्याओं में जो उलझन उत्पन्न कर दिया था उसे समाप्त कर व्यवस्था लाना भी अलेक्जाण्डर के इस पूर्वी अभियान का एक कारण था।[1]

अरस्तू द्वारा निर्देशित उचित युद्धाभियान के तीन कारणों से भी अपने

1. The Will of Zeus, S. Barr, P, 397,

को अनुप्राणित मान कर वह अपने उपक्रम का औचित्य सिद्ध करने के लिये प्रयत्नशील था। अलेक्जाण्डर का मत था कि पहले तो वह परशिया की हेलास को दासता में जकड़ने की चेष्टाओं को विफल कर रहा था क्योंकि अरस्तू ने बतलाया था कि यदि दूसरे को दास बनाने के बजाय स्वयं को दूसरे की दासता से मुक्त रखने के लिये युद्ध किया जाय तो वह युद्ध अनुचित नहीं; दूसरे, वह पतनशील और शोषक परशियन सत्ता से अधीनस्थ लोगों को मुक्ति प्रदान कर रहा था क्योंकि अरस्तू उस युद्ध के भी पक्ष में था जो विश्व की सार्वभौम सत्ता प्राप्त करने के बजाय किसी शोषक सत्ता से लोगों को मुक्ति प्रदान करने हेतु प्रारम्भ किया गया हो; और तीसरे, संकटप्रद, असभ्य, जंगली व पर्वतीय जातियों को दमित व शमित कर रहा था क्योंकि अरस्तू का मत था कि जो दास बनाये जाने योग्य हैं उन्हें दासता में जकड़ लना चाहिये।[1]

"Aristote envisaged three types of just war. Men might justly prepare for war not to "enslave those who do not deserve slavery but in order that first they may themselves avoid becoming enslaved to others; then so that they may seek suzerainty for the benefit of the subject pople, but not for the sake of Worldwide despotism; and thirdly, to hold despotic power over those who deserve to be slaves."

टार्न ने अलेक्जाण्डर द्वारा परशिया पर आक्रमण के निम्नलिखित कारण गिनाये हैं :—१: फिलिप द्वितीय का उत्तराधिकारी होने के नाते उसके अभियान की पूर्त्ति करना अलेक्जाण्डर का ही उत्तरदायित्व था।

२: दूसरा प्रमुख कारण अलेक्जाण्डर की साहसिक वृत्ति थी जो उसे सुदूर प्रदेशों में ले गयी जिनमें से अधिकांश की भौगोलिक स्थितियों का या तो उसे ज्ञान न था अथवा जिनकी भौगोलिक परिस्थितियों के सम्बन्ध में उसकी धारणायें भ्रांतिपूर्ण थीं।

३: परशिया द्वारा विगत में कियेगये आक्रमण का प्रतिशोध लेना भी एक प्रमुख कारण था जो कि उसके उस पत्र से स्पष्ट हो जाता है जो उसने डेरियस के प्रस्ताव के प्रत्युत्तार में मराथस से प्रेषित किया था। अलेक्जाण्डर हेलास का नेता बन कर अखिल यवन विचारधारा लेकर चला था, यह भी

1. Politics, Aristotle, VII, xiii. I4,

उसके आगामी कार्यक्रमों से स्पष्ट हो जाता है। उसे इस अभियान के लिये आइसौक्रेटस, प्लैटो, तथा अरस्तू से प्रेरणा प्राप्त हुयी थी जो परशिया को बर्बर, व शत्रु कह कर उसके विरूद्ध युद्ध करना व उन्हें दास बनाना उचित बतलाते हैं।

३३४ ई० पू० में अलेक्जाण्डर परशिया से हेलास के ऊपर किये गये अन्यायपूर्ण आक्रमण का बदला लेने के लिये प्रस्तुत था; परन्तु उसका लक्ष्य केवल प्रतिशोध लेना मात्र न था बल्कि वह एशिया में यूरोप की यवन-संस्कृति का अग्रदूत बन कर जाना चाहता था और विश्व के अन्तिम छोर पर पहुँच कर समस्त विश्व को यवन-संस्कृति से आप्लावित कर देना चाहता था।[1] समस्त तैयारियों के पश्चात् ३३४ ई० पू० की बसन्त ऋतु में अलेक्जाण्डर अपने विश्व-विजय के महान् अभियान पर रवाना हुआ। उसने एक के बाद एक एशिया-माइनर, मिस्त्र, सीरिया, तथा बैबिलोनिया व सूसा को विजित कर परशियन सम्राट डेरियस पर आक्रमण कर उसे अपने पूर्वजों के पापों अथवा अन्यायों का दण्ड देने की योजना निर्धारित की। अपनी अनुपस्थिति में मैसिडोनिया के सुचारू शासन संचालन के निमित्त वह कुल सेना का लगभग अर्द्धांश अपने पिता के समय के विश्वस्त मंत्री एण्टीपेटर के अधीनस्थ छोड़ गया और अपने साथ केवल एक वस्तु लेकर चला, वह थी उसकी "आशा"।

पूर्व को ओर प्रयाण

परशिया की दशा इस समय अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण थी। वहाँ का शासनसूत्र उस समय एक अयोग्य और निर्बल शासक डेरियस तृतीय के हाथों में था। दो पीढ़ी पहले ही जेनोफोन के नेतृत्व में दस हजार यवनों के साहसपूर्ण अभियान के समय ही यूनान परशिया की निर्बलता से भली भाँति भिज्ञ हो गया था। ३५८ ई० पू० में आर्टाजर्क्सेज ओकस के सिंहासनारूढ़ होने पर परशिया की दशा कुछ-कुछ सम्हलने लगी थी। उसने एशिया माइनर मिस्त्र व साइप्रस तथा फीनिशिया में पुनः अपनी सत्ता स्थापित की; यद्यपि उसके कूर दमन से मिस्त्र तथा अन्य राज्यों में उसके प्रति घृणायुक्त विद्रोह की भावना भी घर कर गयी। बीस वर्षों के अल्प शासनकाल के उपरान्त ही एक हत्यारे ने उसे इस जीवन से मुक्ति दिला दी। तीन वर्ष परशिया में अराजकता व्याप्त रही। तत्पश्चात् ओकस का एक दूर का सम्बन्धी डेरियस तृतीय के नाम से परशिया के सिंहासन

परशिया की दशा

1. Greek History for Beginners, C. D. Edmonds. P. 274.

पर आरूढ़ हुआ। एक विनम्र, गुणवान और लोकप्रिय व्यक्ति होने के साथ ही वह निर्बल इच्छाशक्ति और निर्बल मस्तिष्क से भी युक्त था। यद्यपि उसकी सैनिक-संख्या, राजकीय कोष, नौ-सेना, अलेक्जाण्डर के मुकाबले वहुत अधिक थी फिर भी केवल उसकी अयोग्यता ने अलेक्जाण्डर की विजय का मार्ग प्रशस्त कर दिया। परशियनों की स्थल-सेना यद्यपि अपने क्षेत्र में अजेय थी, एवं उसकी नौसेना अभी भी एशिया माइनर, मिस्त्र आदि के समुद्रों में प्रबल थी परन्तु उसमें नेतृत्व का अभाव था। मराथां व प्लेटेइआ के युद्धों से सबक ले कर डेरियस ने यवन वैतनिक सैनिकों की एक विशाल सेना (५००००) खड़ी कर ली थी तथापि डेरियस की अयोग्यता के कारण इसका भी सदुपयोग न हो सका। सभी क्षत्रप उसकी दुर्बलता के कारण उसके हाथों से निकले जा रहे थे। प्रत्येक प्रान्त अलेक्जाण्डर का मुक्तिदाता के रूप में स्वागत करने को तैयार था। प्रशासन की भांति सेना की अवस्था भी जर्जर थी। परशियन सेनानायक भी मानो अलेक्जाण्डर के प्रहारकी ही प्रतीक्षा कर रहे थे। डेरियस की अयोग्यता ने ही उन्हें पिछले पचास वर्षों में हुयी नवीन सैनिक प्रगतियों से अनवगत रखा था। उन्हें नवीन व्यूहचक्रों व युद्धपद्धतियों, रणनीतियों व शस्त्रास्त्रों का कोई ज्ञान न था। अपनी तरफ से भी वे रणकौशल की कूटनीतियों से शून्य थे। उन्हें केवल अपनी विशाल सैन्य-संख्या पर ही एकमात्र भरोसा था जिसकी असफलता से वे अनेक बार अवगत हो चुके थे या कराये जा चुके थे।

अलेक्जाण्डर की सेना मे ३०००० पदाति व ५ हजार अश्वारोही थे।[1]

श्री स्ट्रिंगफेलो बार के अनुसार—

1. In the expeditionary force were 12000 Macedonians, 12000 Greeks including Allied contingents and mercenarries, mixed groups of Thracians, paeonians, Agianins *Triballians*, and *Illyrians*; and a contingent of *archers* form *Crete.*

उसकी सेना में (तोपखाना) अग्न्यास्त्र-दल भी था जिसमें पहियेदार घेरा डालने वाले यंत्र (Siege towers), दीवार तोड़ने के घन व पत्थर फेंकने के यंत्र आदि शामिल थे।

उसके दल में शिल्पकार, इञ्जीनियर, वैज्ञानिक, इतिहासकार (Callisthenes of Olynthus, nephew of Aristotle) भी थे।

अश्वारोही सेना, जिसमें थेसाली तथा अन्य यूनानी राज्यों के अश्वारोही शामिल थे, उसके सेनापति पार्मिनो (Parmenion), जो पहले ही एशिया माइनर की विजय के लिए भेज दिया गया था, के पुत्र फिलोटस (Philotas) के नेतृत्व में रखी गयी। पदाति सेना में फैलेन्क्स (Phalanx) की ६ रेजिमेण्ट, थीं। साथ में भृत्यों वाली, संघीय तथा वैतनिक यवन सेनायें थीं, जिनका नेतृत्व क्रमशः एण्टीगोनस (Antigonus) तथा मिनाण्डर (Menander) कर रहे थे। हल्के शस्त्रास्त्रों वाली शाही सेना, हिपैस्टिस्ट्रस (Hypastistrus), का नायक पार्मिनो का पुत्र निकेनार था।[२] अपनी नौसेना को उसने यूरोप से प्रयाण करने के पूर्व ही भंग कर दिया था।

इस बीच पार्मिनो एशिया माइनर के अभियान के लिए पूर्व-तैयारियां करने में संलग्न था। उसका प्रयत्न था कि वह एओलिस, मीसिया व प्रोपोण्टिस आदि क्षेत्रों में पांव जमा ले ताकि अपने एशियायी अभियान में अलेक्जाण्डर को सुविधा हो। उसके प्रयत्नों को निष्फल करने के लिए डेरियस ने रोड्स के नायक मेम्नन (Memnon) को नियुक्त किया था परन्तु वह पार्मिनो के हाथों से सिजिकस छीनने में असमर्थ रहा, यद्यपि उससे लैम्पास्कस, पिटाने आदि को छीन कर उसे हैलेस्पाण्ट तक खदेड़ने में वह अवश्य सफल रहा। हैलेस्पाण्ट में आ कर पार्मिनो डट गया और इसी कारण अलेक्जाण्डर को समुद्र पार करने में असुविधा का सामना न करना पड़ा। अप्रैल ३३४ ई०पू० में उसकी सेना जहाजी बेड़े द्वारा सिस्टास से एबाइडस पहुँचा दी गयी और वह स्वयं अन्य मार्ग से आगे बढ़ा। ट्राय पहुँच कर उसने एथेना के मंदिर में बलि चढ़ाई। वह स्वयं को एकीलस का वंशज समझता था अतएव ट्राय स्थित एकीलस की समाधि पर भी उसने भेंट चढ़ाई। कहा जाता है कि उसने ट्राय के पुनरुद्धार का भी आदेश दिया था। इस प्रकार उसने केवल ध्वंस ही नहीं किया वरन् निर्माण के आदर्श का प्रदर्शन कर स्वयं को यवनों का वास्तविक नेता सिद्ध कर दिया।

---

२. पंक्ति-बद्ध सैन्य (Phalanx) के ५ प्रमुख नायक थे—क्रेटेरस, (Craterus), पार्डिक्कस (Perdiccas), सीनस (Coenus), अमिण्टास (Amyntas) और मिलीगर (Meleager); थेसाली के अश्वारोही दल का नायक केलस (Celas) था। भावी नायक (Royal Pages), जो प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे, भी साथ में चल रहे थे।

इस भीषण आंधी के वेग को रोकने के लिए डेरियस ने कोई प्रबन्ध नहीं किया था और ना ही हैलेस्पाण्ट में अलेक्जाण्डर का बढ़ाव रोकने के लिए कोई फीनीशियन बेड़ा नियुक्ति किया था। विवशत: पश्चिमी क्षत्रपों को स्वयं ही अपनी रक्षा का भार वहन करना पड़ा। विभिन्न सेनानायकों के नेतृत्व में ३०-४० हजार सेना तैयार की गयी जिसमें २० हजार के लगभग अश्वारोही और शेष वैतनिक यवन सैनिक थे। इस सेना का सबसे योग्य नेता रोड्स का नायक मैम्नन ही हो सकता था परन्तु डेरियस ने उसे अकेले नेतृत्व-भार न सौंप कर संयुक्त नायकत्व की घातक पद्धति अपना कर अपनी पराजय पर मुहर लगा दी। अन्य सेनाधिकारियों ने भी मेम्नन के इस परामर्श पर कोई ध्यान नहीं दिया कि आगे बढ़ कर अलेक्जाण्डर का प्रतिरोध करने के बजाय पीछे हट कर उसे अंतर्प्रदेश में खींच लाया जाय ताकि उस अपने लिये नयी सैनिक सहायता या खाद्यपूर्ति के कार्य में सुगमता न हो। फलत: वे आगे बढ़ कर ग्रीनिकस नदी के तट पर स्थित प्रदेश एड्रेस्टिया में आ डटे। अलेक्जाण्डर भी एबाइडस से बढ़ता हुआ लैम्पास्कस व ग्रीनिकस नदी के मुहाने पर स्थित प्रियापस नगर को जीतता हुआ नदी के दाहिने तट पर आ डटा जिसके दूसरी ओर परशियन सेना मोर्चा जमाये बैठी थी। परशियन सेना की अश्वारोही टुकड़ी नदी के किनारे, और वैतनिक यवन-सैनिक पीछे पर्वत की ढाल पर स्थित किये गये थे। उनके विरुद्ध अलेक्जाण्डर ने अपना सैनिक व्यूह इस प्रकार रखा कि फैलेन्क्स को तो मध्य में स्थापित किया और पार्मिनो को वाम पार्श्व में रख कर स्वयं दक्षिण पार्श्व का नेतत्व ग्रहण किया। पहले उसने परशियनों की अश्वारोही टुकड़ी का सामना करने के लिये हल्के शस्त्रास्त्रों वाली अश्वारोही सेना नदी के पार भेजदी और फिर शेष सैन्य को लेकर स्वयं भी नदी के पार पहुंचा। घमासान युद्ध हुआ जिसमें एक बार स्वयं अलेक्जाण्डर के मारे जाने की नौबत आ गयी परन्तु उसके सेनापति क्लिटस ने प्रहार विफल कर अलेक्जाण्डर के प्राणों की रक्षा की। जल्दी ही परशियन सेना में भगदड़ मच गयी। बहुत से भाग गये और शेष मार डाले गये। अलेक्जाण्डर की ओर से बहुत कम सैनिक हत रहे। विजयी अलेक्जाण्डर ने परशियन सेना के वैतनिक सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया तथा लगभग २००० सैनिकों को दास रूप में विक्रय के लिए मैसिडोनिया भेज दिया क्यों कि उन्होंने, एरिअन के विवरण के अनुसार, पूर्वी जातियों के साथ यवनों के विरुद्ध लड़कर सामान्य यवन जनमत का विरोध किया था।[1] अलेक्जाण्डर ने युद्ध की लूट में प्राप्त अनेक शस्त्रास्त्र एथेना देवी

---

१ Arrian, I, 16, 6& 7 Loeb.

को उपहार स्वरूप एथेंस भी भेजे। अब एशिया-माइनर में प्रसार का मार्ग प्रशस्त हो गया; परन्तु अभी एशिया माइनर के तटवर्ती परशियन नगर, फीनीशियन बेड़े के भरोसे, अलेक्जाण्डर का प्रतिरोध करने को प्रस्तुत थे।

विजय के पश्चात् अलेक्जाण्डर ने फ्रीजिया का प्रांत केलास (Celas) को सौंप दिया। वहां के पुराने परशियन शासन-तंत्र में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया गया। तदुपरांत वह दक्षिण की ओर लीडिया की राजधानी सार्डिस पर अधिकार करने लिए आगे बढ़ा। लीडिया ने बिना किसी प्रतिरोध के आत्मसमर्पण कर दिया। उसे स्वतंत्र करके, वहां पुराने शासनविधान की स्थापना की गयी। अलेक्जाण्डर ने वहां पुराने राजप्रासाद के स्थान पर ओलिम्पियन जीयस के मंदिर के निर्माण का निश्चय किया। पार्मिनो का भाई एसाण्डर लीडिया का क्षत्रप नियुक्त किया गया।

एशिया माइनर के यवन नगर भी अलेक्जाण्डर के समक्ष आत्मसमर्पण के लिए तैयार थे। केवल जहां कुलीनतंत्र प्रबल था वहां परशिया का साथ दिया गया। इफीसस में भी कुलीनतंत्र की प्रबलता थी परंतु अलेक्जाण्डर के आगमन पर जनता ने उनको मारना आरम्भ कर दिया और इफीसस भी शीघ्र ही अलेक्जाण्डर के हाथों में आ गया।

माइलेटस पर अधिकार : ३३४ ई० पू० :—माइलेटस पहला परशियन नगर था जिसने परशियन बेड़े के आगमन का समाचार पा कर अलेक्जाण्डर की विशाल-वाहिनी का प्रतिरोध करने का निश्चय किया। मेम्नन ही माइलेटस की सेना का नेतृत्व कर रहा था। एक वर्ष तक वह किसी प्रकार माइलेटस को बचाए रहा परन्तु अन्त में उसे वहाँ से हटकर हैलिकार्नेसस (केरिया का तटीय, बन्दरगाह युक्त नगर) चले जाना पड़ा। हैलिकार्नेसस की रक्षा में भी हताश हो, नगर को अग्नि के हवाले कर वह एजिअन सागर की ओर बढ़ गया इसी बीच ३३३ ई० पू० में उसकी मृत्यु हो गई। परशिया की नौसैनिक शक्ति क्षीण हो चली।

इफीसस में पार्मिनो के आधीन सेना का कुछ भाग छोड़ कर अलेक्जाण्डर स्वयं शेष सेना के साथ दक्षिणी तट से होता हुआ लीसिया (Lycia) की ओर बढ़ा। यहाँ उसे संघीया नगरों की ओर से विशेष प्रतिरोध का सामना नहीं करना पड़ा; अलेक्जाण्डर ने भी संघ के संगठन में हस्तक्षेप नहीं किया। अनेकानेक कठिनाइयों का सामना कर क्लाइमैक्स पर्वत को पार कर वह पैम्फीलिया पहुँचा; और फिर वहां से फ्रीजिया के अन्तर्प्रदेश की ओर बढ़ चला।

(सम्भवत: अन्तर्प्रदेश में अग्रसर होने के पूर्व वह भूमध्य सागर के पूर्वी तटीय प्रदेशों को विजित कर अपनी स्थिति को सुरक्षित बना लेना चाहता था, जैसा कि प्रकट है।[1] इस प्रकार अनेक तटवर्ती नगरों का आत्मसमर्पण स्वीकार करता हुआ, अनेक प्रदेशों की विजय कर, वहाँ अपनी सैनिक छावनियां स्थापित करता हुआ, वह फ्रीजिया के प्राचीन साम्राज्य की राजधानी गार्डियान (Gordium) जा पहुँचा।

इस बीच मेम्नन ने एशिया के अनेक प्रदेशों, कियास, लेस्बास आदि को जीत कर मीटीलिनी पर घेरा डाल दिया था परन्तु उसकी मृत्यु से उसका यह विजय अभियान अधूरा ही रह गया और यूनान में मैसिडोनिया के विरूद्ध विद्रोह भड़काने के लिए भेजा गया उसका बेड़ा भी, चाल्किस से आने वाले मैसिडोनियन बेड़े के द्वारा अधिकृत कर लिए जाने के कारण, असफल रहा।

मेम्नन के पश्चात् उसका भतीजा, आर्टाबाजस का पुत्र फर्नाबाजस परशियन सेनापति नियुक्त हुआ।

अलेक्जाण्डर के गार्डियन (Gordium) पहुँचने पर सभी यवन सेनायें, नयी सेनाओं सहित, उससे आ मिलीं (३३३ ई० पू०)। यहां के दुर्ग में फ्रीजिया के प्राचीन शासक गार्डियस (Gordius) का एक रथ स्थित था जो एक वृक्ष की छाल द्वारा एक स्तम्भ से इस प्रकार बांध दिया गया था कि गांठ की ओर-छोर का पता नहीं चलता था। इसके विषय में यह भविष्य वाणी की गयी थी कि जो व्यक्ति इस गांठ को खोल देगा वही एशिया का सम्राट होगा। अलेक्जाण्डर ने, गांठ को खोलने में असमर्थ हो कर, अपनी तलवार निकाली और गांठ को काट कर स्वयं को एशिया के साम्राज्य का उत्तराधिकारी सिद्ध कर दिया। इसी समय 'बादलों की कड़क ने उसे जीयस देवता की स्वीकृति भी प्रदान कर दी'। टार्न इस घटना को भ्रांति पूर्ण बतलाते हैं। इसके बाद वह कैप्पाडोसिया पहुँचा और पैफलागोनिया को अधिकृत कर उसने कैप्पाडोसिया पर भी अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया, यद्यपि सम्पूर्ण कैप्पोडोसिया को वह कभी विजित न कर पाया; उसके केवल कुछ भाग पर ही अलेक्जाण्डर का अधिकार हो सका। फिर वह सिलीसिया की ओर बढ़ा। एक रात्रिकालीन आक्रमण ने ही परशियन क्षत्रप अर्सामीज (Arsames) को भगा दिया, और अलेक्जाण्डर टार्सस (Tarsus) पहुँचने में सफल हो गया।

---

१. A History of Greece, C. E. Robinson, p. 390.

ईस्सस (Issus) का युद्ध :—अब डेरियस अपनी निद्रा से जाग उठा था और अलेक्जाण्डर का बढ़ाव रोकने के लिये फरात (Euphrates) नदी के तट पर एक विशाल सैन्य के साथ आ जमा। अलेक्जाण्डर ने इस ओर विशेष ध्यान न दिया, और कुछ सेना पार्मिनो के अधीन सिलीसिया से सीरिया की ओर जाने वाले दर्रों पर अधिकार करने के लिये भेज कर स्वयं सिलीसिया की विजय के लिये निकल पड़ा। शीघ्र वह सीलीसिया के प्रमुख नगरों टार्सस आदि को, तथा अनेक पर्वतीय जातियों को अधीन करने में सफल हो गया।

सिलीसिया की विजयों के पश्चात् अलेक्जाण्डर ईस्सस के मैदान में आ पहुंचा जिसके दूसरी ओर एमनस पर्वत के पार सीरिया के मैदान में डेरियस अपनी विशाल परशियन सेना के साथ डेरा जमाये अलेक्जाण्डर की प्रतीक्षा में बैंठा था। ईस्सस से सीरिया में प्रवेश के दो मार्ग थे; एक तो सीधा पर्वतीय दर्रों से हो कर था और दूसरा समुद्रतट से मीरियाण्ड्रस तक जा कर एमनस पर्वत के पार सीरिया के प्रदेश में पहुँचता था। पहला उत्तरी मार्ग, जो अमेनिक द्वार कहलाता था, कठिन था, लेकिन दूसरा सीरियन द्वार अपेक्षाकृत सुलभ था। अलेक्जाण्डर ने दूसरा मार्ग अपनाया और समुद्रतटीय मार्ग से मीरियाण्ड्रस पहुँच गया। वहाँ उसे तूफान व वर्षा के कारण रूक जाना पड़ा। फलतः विलम्ब होता देख कर डेरियस ने समझा कि उसकी शक्ति का आभास पाकर अलेक्जाण्डर भाग गया होगा; वह अपनी विशाल सेना के लिये उपयुक्त विस्तृत रणक्षेत्र को छोड़ कर अमेनिक द्वार से ईस्सस के मैदान में जा उतरा और अलेक्जाण्डर द्वारा पीछे छोड़े हुए रूग्ण मैसिडोनियन सैनिकों को मौत के घाट उतार कर स्वयं को विजयी समझने लगा। यह सूचना अलेक्जाण्डर के लिये अत्यन्त सुखकर थी क्योंकि शत्रु उसके जाल में आ फँसा था। अब अलेक्जाण्डर शीघ्रता से वापस ईस्सस के मैदान में आ पहुंचा। (उसकी और डेरियस की सेनाओं के बीच एक छोटी सी नदी पिनारस (R. Pinarus) थी)।

अलेक्जाण्डर ने पहले की तरह अश्वारोहियों का दक्षिण पार्श्व स्वयं सम्हाला और बाम पार्श्व में थेसालियन अश्वारोहियों को पार्मिनो के अधीन रख कर फैलेन्क्स को मध्य में स्थित किया। टार्न के मतानुसार अलेक्जाण्डरकी सैन्य शक्ति इस समय २५०००-२६००० के लगभग थी।[1] कर्टियस के मतानुसार

---

(1) W.W.Tarn-Alexander the Great vol. I, p.26 ed,1948

डेरियस की सैन्य संख्या अलेक्जाण्डर की सेना के बराबर अथवा उससे न्यून ही थी। डेरियस ने यवन वेतनिक सैनिकों व प्राच्य सैनिकों को सामने रखा जिनका बाम-पार्श्व पर्वत की निचली ढलान को छूता हुआ उसके किनारे-किनारे वृताकार व्यूह में स्थित था। अश्वारोहियों को उसने दक्षिण पार्श्व में समुद्र के निकट स्थापित किया; उसी पर आक्रमण का मुख्य भार था।

अलेक्जाण्डर ने दक्षिणी अश्वारोही पार्श्व को साथ लेकर स्वयं आक्रमण का नेतृत्व किया। फेलेन्क्स और पार्मिनो की अश्वारोही टुकड़ी व दक्षिणी पार्श्व में स्थित हल्के शस्त्रास्त्रों वाली दूसरी रक्षापंक्ति ने विजय में उसकी सहायता की। अलेक्जाण्डर लड़ते हुए डेरियस के निकट जा पहुँचा, जो परशियन सरदारों से घिरा हुआ एक रथ पर आरूढ़ था। अलेक्जाण्डर के पहुँचते ही वह रथ को मोड़ कर पलायित हो चला। शेष सैन्य ने भी उसका अनुसरण करने में ही अपनी भलाई समझी। परशियन अश्वारोही सेना नदी को पार कर सफलता प्राप्त करने ही वाली थी कि अपने नेता के पलायन का समाचार पा कर वह भी सफलता की कामना त्याग कर भाग चली। पलायन की शीघ्रता और प्राणरक्षा की कामना में डूबा हुआ डेरियस अपनी माता, पत्नी व बच्चों को ईस्सस के शिविर में, और अपनी तलवार, किरीट व अन्य राजकीय वस्त्राभूषणों को रास्ते में गिराता हुआ एमनस पर्वत को पार कर गया। अलेक्जाण्डर ने डेरियस के परिवार के साथ उनके और अपने सम्मान के अनुकूल व्यवहार किया। बाद में अपने साम्राज्य पहुँच कर डेरियस ने अपने परिवार की मुक्ति के बदले में १०००० टैलेण्ट, व फरात के पश्चिम का अपना साम्राज्य, व अपनी पुत्री का हाथ देना चाहा परन्तु पार्मिनो व अलेक्जाण्डर दोनों ही इस प्रलोभन में न आये। पार्मिनो ने उत्तर दिया कि 'यदि मैं अलेक्जाण्डर होता तो इसे स्वकार कर लेता' और अलेक्जाण्डर ने भी यही कहा कि, 'यदि मैं पार्मिनो होता तो इसे स्वीकार कर लेता।' वह किसी शर्त पर डेरियस से शान्ति संधि के लिये प्रस्तुत न था।

ईस्सस की इस विजय के उपलक्ष में अलेक्जाण्डर ने ईस्सस के निकट ही समुद्रतट पर अलेक्जेण्ड्रेटा (Alexendretta) नगर की स्थापना की। अब सीरिया की ओर बढ़ाव के लिए अलेक्जाण्डर का मार्ग प्रशस्त हो गया और मिस्त्र की विजय भी कोई कठिन कार्य न रह गयी।

कहा जाता है कि इस विजय के पूर्व एथेंस, स्पार्टा व थीबिस ने परशिया के दरबार में मैसिडोनिया के विरूद्ध सहायता के लिये अपने दूत भेजे थे जिन्हें

ईस्सस की विजय के बाद अलेक्जाण्डर ने अपने पास बुला लिया। स्पार्टन दूत कैद कर लिया गया, एथीनियन दूत (प्रसिद्ध नायक इफीक्रेटस का हमनाम पुत्र) मित्र बना लिया गया और थीबन दूत लौटा दिये गये। पार्मिनो को दमिश्क भेज कर अलेक्जाण्डर ने डेरियस का कोष भी अधिकृत कर लिया। उसकी इस विजय के समाचार ने विद्रोही यवन राज्यों, जिनमें स्पार्टा प्रमुख था, के शमन में बहुत सहायता पहुँचायी।

टायर (Tyre) का घेरा और विजय—यद्यपि अब परशिया के केन्द्रस्थल पर प्रहार करना अधिक कठिन कार्य न था तथापि बिना मिस्त्र व सीरिया की विजय किये हुये, समुद्र पर नियन्त्रण स्थापित किये व फीनीशियन बेड़े को परास्त किये उक्त कदम उठाना अलेक्जाण्डर ने उचित न समझा। अतः पहले परशिया की सामुद्रिक शक्ति समाप्त करने की दृष्टि से उसने फीनीशियनों के तटवर्ती नौसैनिक नगरों को दमित करना आवश्यक समझा, और उनकी विजय के लिये निकल पड़ा। इन नगरों को, जिनमें टायर, सिडान व अराडस प्रमुख थे, डेरियस ने इस शर्त्त पर स्वतन्त्र छोड़ दिया था कि वे परशियन नौशक्ति का कार्य करते रहें। इनमें से एक नगर सिडान आर्टाजर्कसेज ओकस के शासनकाल में, अपने सहवर्ती नगरों टायर व अराडस के द्वेष के कारण परशिया के चंगुल में आकर अपनी स्वतन्त्रता गँवा चुका था। उनका यह अनैक्य अलेक्जाण्डर के लिये भी बड़ा लाभदायक रहा। अराडस व बेबिलास ने अलेक्जाण्डर के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया, और सिडान ने भी, जिसे अलेक्जाण्डर ने परशिया के आधिपत्य से मुक्त कर दिया।

इन नगरों का आत्मसमर्पण स्वीकार करने के पश्चात् अलेक्जाण्डर दक्षिण में टायर नगर की ओर अग्रसर हुआ। टायर ने भी आत्मनिवेदन किया परन्तु जब अलेक्जाण्डर ने नगर में प्रवेश करके हिराक्लस के मन्दिर में बलि चढ़ने की इच्छा प्रकट की तो टायर वालों ने विरोध प्रकट किया। फ़ीनीशिया की नौशक्ति के केन्द्र इस नगर को दबाना आगामी विजयों के लिये अत्यावश्यक था, परन्तु टायर को जीतना अत्यन्त कठिन था क्योंकि यह नगर सुदृढ़ दीवारों से सुरक्षित एक द्वीप पर स्थित था जो महाद्वीप से आधा मील के लगभग दूर था। इस द्वीप के उस ओर, जो मुख्यभूमि की ओर था, दो बन्दरगाह थे, एक उत्तरी बन्दरगाह जो सिडोनिअन कहलाता था, और दूसरा दक्षिणी जो मिस्त्री बन्दरगाह कहलाता था। पहले बन्दरगाह का मुहाना बहुत ही संकीर्ण था। अपनी स्थल-सेना को विजय के उपयुक्त बनाने के ध्येय से अलेक्जाण्डर ने मुख्यभूमि से उक्त

द्वीप तक एक बाँध बनाना आरम्भ किया जिसका प्रारम्भिक भाग तो छिछले पानी के कारण शीघ्र ही समाप्त हो गया, साथ ही टायर के निकट पहुँचने पर पानी के अधिक गहरे होने व द्वीप की दीवार पर से किये जाने वाले आक्रमण के कारण उक्त बांध का निर्माण कार्य भी अधूरा ही रह गया। इन आक्रमणों से रक्षा के लिए अलेक्जाण्डर ने बांध के ऊँचे मार्ग पर बुर्ज निर्मित किये और जवाबी हमले के लिये अपने यंत्र स्थापित किये; साथ ही चमड़े के विशाल पर्दे भी टांग दिये; परन्तु टायर के निवासी उससे भी आगे निकले, और उन्होंने एक जहाज में आग लगा कर उसे बांध के निकट भेज दिया, फलतः अलेक्जाण्डर का बांध अग्निकाण्ड में जल कर स्वाहा हो गया। अब उसने, पहले तो बांध के ऊँचे मार्ग को विस्तृत किया, और फिर, जहाजी बेड़े की सहायता उपलब्ध करने के निमित्त वह सिडान की ओर चला गया जहां कुछ जहाज स्थित थे। सिडान में बेबिलस व अराडस के ८० जहाज, रोड्स के ६ जहाज, लीसिया तथा सिलीसिया के १० तथा साइप्रस के भी १२० जहाज उससे आ मिले। साइप्रस ने कुछ ही समय पूर्व आत्मनिवेदन किया था। अब अलेक्जाण्डर के पास लगभग २५० जहाजों का शक्तिशाली बेड़ा हो गया जिनकी सहायता से टायर को विजय करना बहुत कठिन कार्य नहीं रह गया। (डेरियस का प्रतिवेदन सम्भवतः इसी समय किया गया था।) सिडान से आगे बढ़ कर अलेक्जाण्डर ने अपने जहाजी बेड़ों से टायर को घेर लिया व उसके दोनों बन्दरगाहों को भी बन्द कर दिया। बांध भी द्वीप तक पहुँचा दिया गया और युद्ध के यंत्र खड़े करने में भी सफलता मिल गयी। कुछ युद्ध के यंत्र जहाजों पर चढ़ा कर दीवार के निकट पहुँचाने का भी प्रयत्न किया गया जो अथक परिश्रम के बाद ही दीवार तक पहुंचाये जा सके। टायर वाले अभी अपनी सुदृढ़ ऊँची दीवारों के पीछे से आक्रमण की कार्यवाही करते जा रहे थे। उनमें से कुछ साहसी जन छोटे-छोटे जहाजों को साथ लेकर साइप्रस के बेड़े को, जो सिडोनिअन बन्दरगाह में स्थित था, तितर-बितरकरने में सफल भी हो गये थे, परन्तु अलेक्जाण्डर के त्वरित वेग के कारण उन्हें पूर्ण सफलता न प्राप्त हो सकी, और सिडोनिअन बन्दरगाह में पड़े हुये उनके जहाज अनुपयोगी हो चले। शीघ्र ही द्वीपीय नगर की दक्षिण ओर की दीवार में से राह बना कर उसे नगर में प्रवेश करने में सफलता प्राप्त हो गयी। मैसिडोनियन सेना अनेक स्थानों से नगर में प्रवेश कर गयी। नगर के हत्याकाण्ड में ८००० के लगभग व्यक्तियों ने प्राणों से हाथ धोये, ३०००० के लगभग दास बनाकर बेच दिये गये। टायर के राजा अजेमिल्को तथा अन्य

उच्च कुल के व्यक्ति मुक्त कर दिये गये (अगस्त ३३२ ई० पू०)। विजय के पश्चात् वह एक मशालयुक्त जुलूस लेकर हिराक्लस के मन्दिर में भेंट चढ़ाने पहुँचा। जिस यन्त्र द्वारा टायर की दीवार को ध्वस्त किया गया था वह भी मन्दिर मे भेंट चढ़ा दिया गया, और विजय के उपलक्ष में खेलो के उत्सव का भी आयोजन किया गया। शीघ्र ही सीरिया के शेष नगरों ने भी उसके समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। अपनी विजयवाहिनी को साथ लेकर दक्षिण की ओर अग्रसर होता हुआ अलेक्जाण्डर फिलस्तीन (Palestine) के सीमावर्ती दुर्ग गाजा तक जा पहुँचा। गाजा का दुर्गयुक्त नगर समुद्र-तट से लगभग दो मील दूर था और बीचका पूरा प्रदेश मरूप्रदेश था। गाजा पर इस समय डेरियस द्वारा नियुक्त बेटिस (Batis) नामक हिजड़े का शासन था जिसने आत्मसमर्पण करने से इन्कार कर दिया क्योंकि वह नगर की सुरक्षा के प्रति अत्यधिक विश्वस्त था; परन्तु अलेक्जाण्डर के आक्रमणकारी यन्त्रों तथा चालों के समक्ष उसकी एक न चल सकी और मैसिडोनियन विजेता नगर में प्रवेश करने सफल हो गया। गाजा में भी भीषण हत्याकाण्ड आरम्भ हुआ और असंख्य जन दास बना कर बेच दिये गये। मैसिडोनियनों के हाथों में एक और सुदृढ़ दुर्ग आ गया जो आगामी विजयों की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता था।

गाजा की विजय
अक्टूबर ३३२
ई०पू०

मिस्त्र की विजय—नवम्बर ३३२ ई०पू०-गाजा पर अधिकार करने के पश्चात् मिस्त्र पर अधिकार करने में अलेक्जाण्डर को कठिनाई न हुयी। मिस्त्र में प्रवेश करने के पूर्व ही वहाँ के परशियन क्षत्रप मैजासेज ने अपनी असहाय स्थिति देख कर विजेता के समक्ष आत्मसमर्पण कर उसकी कृपा प्राप्त करना ही उपयुक्त समझा और उसके स्वागतार्थ अपने दूत भेज दिये। काहिरा के निकट स्थित फराओ की राजधानी मेम्फिस पहुँचने पर उसका भव्य स्वागत किया गया। उसने भी विजेता के अनुकूल नीति का प्रदर्शन करते हुये स्थानीय देवताओं (अपिस आदि) को भेंटें चढ़ाई और इस प्रकार मिस्त्रवासियों की धार्मिक भावनाओं को अपनी ओर आकृष्ट करने में सफल हुआ। दूसरी ओर हेलेनिक सभ्यता के प्रचार-प्रसार के लिये उसने यवन खेलकूद के उत्सवों तथा काव्यपाठ की प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया। मिस्त्र-विजय के समय उसने मरूस्थल में स्थित फराओ के आदि पुरुष जीयस एम्मन के आरेकल का भी दर्शन किया। वह स्वयं को पौराणिक नायक एकीलस का वंशज समझता था

और अब उसने फराओ के उत्तराधिकारी के रूप में स्वयं को जीयस एम्मन के वंशज के रूप में भी स्थापित करने की आकांक्षा प्रकट की, और उसकी पूर्ति भी की (३३२ ई०पू० के प्रारम्भ में)। इस यात्रा के दौरान मार्ग में ही साइरीन (Cyrene) के दूत ने भी आत्मनिवेदन किया जिससे मैसिडोनिया का साम्राज्य पश्चिम में कार्थेज के साम्राज्य की सीमा तक जा पहुंचा।

मेम्फिस से फिर वह नील नदी की पश्चिमी शाखा से समुद्र तट की ओर अग्रसर हुआ और समुद्र तथा मैरीओटिस झील के बीच उसने प्रसिद्ध नगर अलेक्जाण्ड्रिया की स्थापना की जो यवनों का प्रसिद्ध सांस्कृतिक व व्यापारिक केन्द्र बन गया। इस नगर की स्थापना से अलेक्जाण्डर का उद्देश्य पश्चिमी एशिया तथा पूर्वी भूमध्यसागर के वाणिज्य को फीनिशियनों के हाथ से छीन कर यवनों के हाथों में सौंपना था और इसके लिये सबसे उपयुक्त स्थान मिस्त्र का ही कोई नगर हो सकता था।

मिस्त्र से विदा होने के पूर्व वह मिस्त्र के नागरिक प्रशासन, वित्त, तथा सैनिक प्रशासन का पूर्ण प्रबन्ध कर गया। मिस्त्र का शासन वहाँ के दो स्थानीय राजाओं के हाथों में सौंप दिया गया और अरब तथा लीबिया के शासन के लिये यवन राज्यपाल नियुक्त किये गये। साथ ही अनेक सैनिक अधिकारी भी विभिन्न क्षेत्रों के लिये नियुक्त किये गये। वित्त के प्रशासन का कार्य नौक्रेटियस के निवासी क्लिओमिनीज को सौंपा गया। व्यूरी का अनुमान है कि उसी की यह व्यवस्था पश्चात्कालीन रोमन शासकों की 'भेद और शक्ति' की नीति की प्रेरक थी।

बसंत के आगमन पर अलेक्जाण्डर टायर की ओर चला गया जहाँ बेबिलोनिया की विजय की तैयारियाँ की जाने लगीं। तैयारियाँ पूरी कर लेने के पश्चात् फरात नदी को थेपास्कस नामक स्थान पर पार कर, टाइग्रिस (Tig is) नदी से होता हुआ, मैसोपोटामिया के मरूस्थल को बचाता हुआ, वह अरबेला के निकट गौगामेला (Gaugamela) पहुँचा जो निनेवेह से बहुत निकट नदी के बायें तट पर स्थित था। उसके आधीन इस समय ४०००० पदाति सैनिक और ७००० अश्वारोही बेबीलोनिया के साम्राज्य की विजय के लिये आगे बढ़ रहे थे। व्यूरी का अनुमान है कि अलेक्जाण्डर के एशियायी अभियान के समय उसके बढ़ाव और, प्रदेशों की जानकारी के दो कारण रहे होंगे—एक तो उसका गुप्तचर विभाग अत्यन्त सुव्यवस्थित और सुसंगठित रहा होगा, दूसरे मीडिया और बेबिलोनिया के यहूदियों ने भी उसकी सहायता क

होगी। इस अनुमान का कारण है मिस्त्र में अलेक्जाण्ड्रिया की स्थापना के समय यहूदियों को प्रदान की गयी सुविधायें।[1]

२० सितम्बर ३३१ ई०पू० को चन्द्रग्रहण की रात्रि में अलेक्जाण्डर टाइग्रिस नदी को पार कर गया, जिसके दूसरी ओर डेरियस १ लाख पदाति सैन्य और ४०००० अश्वारोही सेनाओं के साथ उसका मार्ग अवरूद्ध करने को मोर्चा जमाये बैठा था। डेरियस की सेना में ४०,००० अश्वारोही, १६००० भारी शस्त्रास्त्रों वाले पदाति, २००० वैतनिक यवन सैनिक, २०० धारदार रथ और १५ हाथी थे।[2] हैमण्ड के अनुसार वैतनिक यवन सैनिकों की संख्या ६००० थी।[3] ३० सितम्बर को अलेक्जाण्डर ने गौगामेला के पास एक ऊचे पर्वत पर शिविर लगा दिया। कहा जाता है कि पार्मिनों ने परशियन सेना पर रात्रि-आक्रमण का परामर्श दिया था परन्तु अलेक्जाण्डर ने यह कह कर इन्कार कर दिया कि 'मैं विजय चुराता नहीं।' अपनी सेना को पूर्ववत व्यूह में स्थापित कर तथा रणक्षेत्र के विस्तार को ध्यान में रख कर पार्श्व एवं पृष्ठ के आक्रमणों से रक्षा के लिये द्वितीय रक्षापंक्ति नियत कर अलेक्जाण्डर ३३१ ई०पू० की पहली अक्टूबर को डेरियस की सेना पर आक्रमण करने को बढ़ा। अलेक्जाण्डर की यवन-सेना के दाहिने पार्श्व से अश्वारोहियों के संघर्ष के साथ युद्ध का आरम्भ हुआ। इस संघर्ष में मैसिडोनियनों की विजय हुयी। अब डेरियस ने हंसिया-युक्त रथों को यवन सैन्य में विध्वंस मचाने के लिये भेजा। इनका स्वागत तीरों व बर्छियों की बौछारों से किया गया। रथों के बहुत से सारथी यवन सैनिकों द्वारा नीचे खींच लिये गये, अनकों रथों के घोड़े साहसी सैनिकों द्वारा अलग कर लिये गये और पदाति सैनिकों ने भी इन रथों को आगे बढ़ जाने के लिये मार्ग दे दिया। इस प्रकार डेरियस का यह प्रयास भी विफल सिद्ध हुआ।

अब पूरी परशियन सैनिक पंक्ति आक्रमण करने के लिए अग्रसर हुयी। दक्षिण पार्श्व में यवन-सैन्य के बर्छी धारियों व हल्की अश्वारोही टुकड़ी से परशियन सेना के सीथियनों तथा बैक्ट्रियनों का घोर संघर्ष छिड़ गया। डेरियस ने अपने सैनिकों की सहायता के लिये अपनी एक अश्वारोही टुकड़ी भी भेज दी। फलतः परशियन पंक्ति में जो स्थान रिक्त हुआ उस पर अपनी अश्वा-

---

(1) AHistory of Greece, J. B. Bury p. 760

(2) TheWill of Zeus, S. Barr, p. 201

(3) A History of Greece, Hammond, p. 612.

रोही सेना लेकर अलेक्जाण्डर ने आक्रमण करके पूरे परशियन केन्द्र को दो भागों में विभक्त कर दिया। परशियन केन्द्र का बाम भाग अरक्षित हो गया जिस पर अलेक्जाण्डर ने पृष्ठ भाग से आक्रमण कर दिया। परशियन केन्द्र के दूसरे भाग को अलेक्जाण्डर की सेना के पंक्ति व्यूह (फैलेन्क्स) ने घेर लिया। युद्ध करते हुये यवन सैनिक निरंतर उस स्थान की ओर बढ़ते रहे जहाँ डेरियस परशियन सामंतों से घिरा हुआ रथारूढ़ था। यवन सेना को पास आता देख डेरियस पुनः भाग चला। उसकी सेना ने भी पुनः उसका अनुगमन किया। कुछ परशियन तथा भारतीय अश्वारोहियों ने अलेक्जाण्डर की सेना का सामना करने का प्रयास किया भी परन्तु यह प्रयास थ्रेसियनों द्वारा, जो पृष्ठ भाग में स्थित थे, विफल कर दिया गया। बाम पार्श्व में पार्मिनो की स्थिति कुछ क्षणों के लिये गम्भीर हो गयी थी परन्तु अलेक्जाण्डर के उस ओर बढ़ते ही विजयश्री पुनः यवनों से आ मिली। इस विजय में थेसालियन अश्वारोहियों का भी कम योगदान न था।

अलेक्जाण्डर ने अब डेरियस का पीछा करने के लिये बढ़ना शुरू किया, परन्तु अराबेला पहुँच कर उसे पुनः डेरियस के बजाय उसके रथ, ढाल व धनुष ही मिले। डेरियस मीडिया की ओर, और उसका क्षत्रप एरियोबार्जेनिस, परशिया की ओर भाग गया था। उनका पीछा छोड़ अलेक्जाण्डर निरंतर बैबिलोनिया की बढ़ता रहा।

बैबिलोनिया पहुँचने पर परशियन क्षत्रप ने नगर का द्वार (अक्टूबर ३३१ ई०पू०) खोल कर अलेक्जाण्डर का स्वागत किया। अलेक्जाण्डर ने यहाँ भी एक विजेता की भांति बैबिलोनिया के राष्ट्रीय धर्म की पुनर्स्थापना की; बेल के मन्दिर का पुनरूद्धार किया और परशियन क्षत्रप मेजायस को ही बैबिलोनिया का राज्यपाल अथवा क्षत्रप नियुक्त किया।

परशियन सम्राटों की ग्रीष्मकालीन राजधानी सूसा को, अलेक्जाण्डर द्वारा अरबेला से भेजा हुआ सेनापति, फिलीक्सोनस पहले ही अधिकृत कर चुका था। ३३१ ई०पू० के अन्त में अलेक्जाण्डर स्वयं भी विजेता के रूप में सूसा आ पहुंचा। वहाँ स्वर्ण-जवाहिरात के वृहद् कोष के अतिरिक्त ५०००० टैलेण्ट भी जर्कसेज के राजकीय कोष से प्राप्त हुए। यहीं पर हिप्पार्कस के अत्याचारों से एथेंस को मुक्त करने वाले शहीदों, हार्मोडियस तथा एरिस्टागिटान, की मूर्तियाँ थीं, जो जर्कसेज द्वारा एथेंस से लायी गयीं थीं। अलेक्जाण्डर ने पुनः इन मूर्तियों को उनके उपयुक्त स्थान एथेंस को ही भेज दिया।

अब अलेक्जाण्डर पर्सिपोलिस (Persipolis) की ओर अग्रसर हुआ। जंगली जातियों को दबाता हुआ वह परशिया के प्रवेशद्वार पर आ पहुंचा जहां ४०००० पदातियों तथा ७०० अश्वारोहियों के साथ एरियोबार्जानस अलेक्जाण्डर का सामना करने के लिये डटा था। उपयुंक्त स्थल सैन्य-व्यूह की दृष्टि से थर्मोपली के समकक्ष था अतः प्रारम्भ में अलेक्जाण्डर को निराशा ही हाथ लगी। परन्तु विश्वविजय के लिये निकला हुआ यवन-विजेता मूर्त निराशा के समक्ष भी हताश होनेवाला न था। परशिया की विजय का द्वार यही द्वार था, अतः इसको विजय करना अनिवार्य था। आवश्यकता के अनुरूप विजेता को मार्ग-दर्शक भी एक कैदी के रूप में प्राप्त हुआ जिसने जंगलों से आच्छादित पर्वतीय मार्ग से उसे उक्त दर्रे के दूसरी ओर पहुंचा दिया। कुछ सेना क्रेटेरस के साथ दर्रे के सामने छोड़ कर शेष सेना के साथ अलेक्जाण्डर निर्देशित मार्ग पर बढ़ चला। एक रात्रिकालीन आक्रमण में अलेक्जाण्डर ने एक और विजय प्राप्त कर ली। असंख्य परशियन सेना मारी गयी और शेष एरियोबार्जानस के साथ पर्वतों की ओर भाग गयी।

यवन विजेता अब इस धरती पर स्थित सबसे अधिक समृद्धिशाली नगर पर्सिपोलिस में आ धमका जहां परशियन सम्राटों के विशाल एवं भव्य प्रासाद, मंदिर एवं समाधिगृह स्थित थे। पर्सिपोलिस के राजकोष में विजेता को १२००००टैलेण्ट धन, तथा इतना अधिक स्वर्ण व रजत प्राप्त हुआ कि उसे ढोने लिये खच्चरों तथा ऊँटों की एक पृथक सेना का प्रबंध करना पड़ा। पर्सिपोलिस के उत्तर में काइरस के नगर पसारगेडी से भी और अधिक धन की प्राप्ति हुयी।

चार माह तक अलेक्जाण्डर परशियन सम्राटों के प्रासादों में डटा रहा और समीपवर्ती डाकुओं व जंगली जातियों आदि का दमन करता रहा। इस बीच, कहा जाता है कि, अत्यधिक मद्यपान कर लेने पर एक रात्रि, थाइस नामक एक एट्टिक महिला, जो जर्कसेज तथा उसके पूर्वजों द्वारा एथेंस के विध्वंस का प्रतिशोध लेने कीं इच्छुक थी, के प्रस्ताव पर अलेक्जाण्डर ने जर्कसेज के प्रासादों को अग्नि के हवाले कर देने का आदेश दे दिया, परन्तु शीघ्र ही उसे अपनी गलती ज्ञात हो गयी और उसने अपना आदेश वापस ले लिया। अलेक्जाण्डर विजेता था, विध्वंसक नहीं, यह पुनः स्पष्ट हो गया।

अलेक्जाण्डर केवल विजेता मात्र ही नहीं वरन एक प्रशासक भी था अतः विजित स्थानों की शासन व्यवस्था भी संगठित करता गया। प्रत्येक विजित

स्थान पर स्थानीय राज्यपाल तथा एक यवन सेनानायक की प्रतिष्ठा की गयी।[1] सम्भवतया अन्य कारणों के अलावा, उसकी सेना में विद्रोह का यह भी एक कारण था। जैसा कि ऐतिहासिक विवरणों से ज्ञात होता है कि जहाँ उसने विजित पूर्वी देशों को हेलेनिक संस्कृति से दीप्त करना आरम्भ किया वहीं स्वयं भी प्राच्य सभ्यता व संस्कृति से इतना प्रभावित हो चला कि उसने वस्त्राभूषण तथा रहन-सहन भी प्राच्य देशों जैसा अपना लिया। इस में उसका उद्देश्य पश्चिम तथा पूर्व को निकटतर लाना ही था, परन्तु उसके द्वारा स्वयं को एक विजेता मात्र न मानकर दैवी पुरुष मानना ही घातक अथवा अरूचिकर सिद्ध हुआ; उसके व्यवहार में भी अब आश्चर्यजनक परिवर्तन झलकने लगा था।

उसके इस परिवर्तन की चरम परिणति बैक्ट्रिया के अभियान के समय हुयी जब पार्मिनो व उसके पुत्र को, जो अलेक्जाण्डर की स्पष्ट और निसंकोच आलोचना के अभ्यस्त हो चले थे, बिना किसी जांच-पड़ताल के अलेक्जाण्डर की हत्या के षडयंत्र का आरोप लगाकर मौत के घाट उतार दिया गया। उसी प्रकार समरकन्द में, जब वह सोगडियाना के विद्रोहों को दबाने में रत था अलेकजाण्डर से एक अन्य कार्य हो गया जो उसके यशपूर्ण जीवन में एक कलंक-कालिमा बन कर इतिहास में अमिट हो गया। वह घटना थी अपने प्रमुख सहायक क्लीटस की अलेकजाण्डर द्वारा हत्या। क्लीटस उसके परिवर्तनों, रोकसाना नामक बैक्ट्रियन महिला से उसके परिणय तथा सेना में एशियायी सैनिकों के भर्ती किये जाने व विजियों का श्रेय यवन सैनिकों व सेनापतियों के बजाय एशियायियों को दिये जाने से रूष्ट हो चला था। अतः एक दिन मद्यपान के समय एशियायियों की चाटुकारिता व अलेक्जाण्डर की अनुकूल प्रतिक्रिया को देख कर क्लीटस अपने पर नियंत्रण न रख सका और उसने खड़े होकर अलेक्जाण्डर को

---

[१] अलेक्जाण्डर ने परशियन क्षत्र्पों को नागरिक, सैनिक और वित्तिय अधिकारों से युक्त देखा। मुद्राप्रसारण का अधिकार भी क्षत्रपों के ही हाथो में था। अलेक्जाण्डर ने इन के लिये अलग-अलग अधिकारी नियुक्त किये। एशियामाइनर में पृथक वित्त-अधिकारी नियुक्त किए गये। मुद्रा-प्रसारण का अधिकार अलेक्जाण्डर ने अपने ही हाथों में रखा। उसने लगान व्यवस्था में भी सुधार किया और लगान पुन: निर्धारित किया। कर वसूलने का अधिकार सीधे वित्त अधिकारियों को सौंपा। पट्टे की प्रथा भी सम्भव: लागू की गई। वित्त विषयक कार्यों के लिये समस्त एशियामाइनर का दायित्व फिलोक्सेनसको सौंप गया। मुद्रा-प्रसारण के क्षेत्र में थवन-नगरों को मुद्रा-मान के निर्धारण की स्वायतता प्रदान की गई।

खरी-खोटी सुनाना प्रारम्भ कर दिया। यह विवाद क्लीटस की हत्या के साथ ही समाप्त हुआ, परन्तु अपनी जान बचाने वाले की जान स्वयं अपने बर्छे से हरने की अलेक्जाण्डर को इतनी ग्लानि हुयी कि तीन दिनों तक न वह कुछ खा सका न सो सका।

पार्सिपोलिस की विजय और शासनव्यवस्था के पश्चात् अलेक्जाण्डर ने डेरियस को पूर्णतः परास्त करने के लिये इकबताना की ओर प्रयाण किया, परन्तु डेरियस वहाँ से पहले ही पलायन कर चुका था। बाद में अलेक्जाण्डर को ज्ञात हुआ कि डेरियस के ही चेचरे भाई और बैक्ट्रिया के क्षत्रप बेसस ने ही उसे, स्वयं परशिया का सिंहासन हस्तगत करने के ध्येय से, बन्दी बना लिया था। अलेक्जाण्डर शीघ्रातिशीघ्र बैक्ट्रिया पहुंचा जहाँ डेरियस द्वारा अलेक्जाण्डर का सामना करने से इन्कार करने के कारण बेसस और उसके साथियों ने डेरियस की हत्या कर दी थी। अलेक्जाण्डर ने मृत डेरियस के प्रति सम्मान व करूणा प्रकट की और उसका शव सम्मानपूर्वक पर्सिपोलिस भिजवा दिया (ई० पू०-३३०)।

अलेक्जाण्डर की नीति व उद्देश्यों में क्रमिक रूप से आने वाले परिवर्तनों की व्याख्या करते हुये ब्यूरी कहते हैं कि गौगामेला की लड़ाई व डेरियस की मृत्यु के बीच का समय एक गम्भीर अवधि थी जब उसके कर्त्तव्यों की व्याख्या में तथा राजनीतिक उद्देश्यों में उल्लेखनीय परिवर्तन परिलक्षित होता है। प्रारम्भ से ही विजित प्रदेशों के साथ वह उदारता के साथ ही राजनीतिक आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर सहिष्णुता का व्यवहार कर रहा था जैसा कि उस के द्वारा उक्त प्रदेशों की राष्ट्रीय शासन व्यवस्थाओं तथा अन्य संस्थाओं के साथ उसकी प्रक्रिया से ज्ञात हो जाता है।

विजय-यात्रा पर प्रस्थान करने के पूर्व वह यवनों का नेता था जो एक निम्नश्रेणी की संस्कृति की विजय के लिये दिग्विजय करने निकला था। अलेक्जाण्डर का शिक्षक अरस्तू स्वयं भी प्राच्य देशवासियों को स्वभावतः दास मानता था और यही मान्यता लेकर अलेक्जाण्डर भी यूनान से चला था। परन्तु जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता गया उसकी विचारधारा तथा धारणा में उल्लेखनीय परितंन भी होते रहे। अब वह यवन तथा बर्बर के अन्तर को उतनी गहनता से नहीं देखता था। वह अब एक ऐसे साम्राज्य की आकांक्षा से पूर्त हो चला था जिसमें यवन तथा एशियायी एक ही सम्राट द्वारा समानरूप

से शासित हों।[1] गौगामेला के बाद उसके व्यवहार में जो परिवर्तन, और प्राच्य संस्कृति के प्रति जो आग्रह झलकता है वह उस की विचारधारा के इसी परिवर्तन की प्रतिक्रिया था। इकबताना (मीडिया) की विजय के पश्चात् वह अरस्तु की शिक्षा का वास्तविक अर्थ समझने लगा था कि युद्ध का उद्देश्य है शान्ति, अध्यवसाय का प्रयोजन है विश्राम, और शरीर-निर्माण का लक्ष्य है आत्मा की सेवा। वह पूर्व तथा पश्चिम के बीच खड़ी दीवार को ढहा देना चाहता था, यद्यपि इस प्रक्रिया में उसके द्वारा उठाये गये कतिपय कदमों से उसके साथियों में रोष भी व्याप्त हो चला जिसकी गम्भीर परिणति का हम पहले ही निर्देश कर चुके हैं। इसी कारण ब्यूरी ने लिखा है कि अलेक्जाडर का जीवन राजनीतिक तथा सैनिक सभी प्रकार की उलझनों को सुलझाने में ही व्यतीत हुआ था परन्तु प्राच्य तथा पाश्चात्य भावनाओं में समन्वय स्थापित करने वाली व्यवस्था के निर्माण में जितनी कठिनाई का सामना उसे करना पड़ा उससे अधिक कभी नहीं करना पड़ा था।[2]

बैक्ट्रिया, व सोगडियाना की विजय

डेरियस की मृत्यु के बाद अलेक्जाण्डर बेसस का पीछा छोड़ दूसरे हत्यारे नैबार्जानिस (Nabarzanes) का पीछा करते हुए हिर्केनिया (Hyrcania)[3] की ओर अग्रसर हुआ और विजय प्राप्त की। नैबार्जानिस ने उसके समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। परशियन सेना के वैतनिक यवन सैनिको में से कुछ को अलेक्जाण्डर ने मुक्त कर दिया और शेष उसकी सेना में ही शामिल हो गए।

---

(१) यवन इतिहासकारों ने लिखा है जिन्हें वह अपने साथ मिलाने में सफल न हो सका उन्हें उसने शक्तिपूर्वक जीता और सर्वत्र समस्त राज्यों को एकीकृत किया। उसने प्रत्येक व्यक्ति को पूरी पृथ्वी को पितृभूमि मानने का सन्देश दिया, अपने शिविर को उनका संरक्षक एवं दुर्ग बताया; सभी अच्छे पुरुषों को उनका सम्बन्धी कहा, और विदेशी की संज्ञा केवल बुरे लोगों को प्रदान की। —Plutarch, Moralia, Iv, On the fortune of Alexander, Aristotle, Politics VII,

(2) A History of Greece, J.B. Bury P. 771

(3) Hyrcania—कैस्पियन सागर और पार्थिया के मध्य-स्थित (Elburz)पर्वतमाला के पार स्थित प्रदेश।

वह पुनः पूर्व की ओर बढ़ा, व एरिया (Areia) के क्षत्रप सैटीबार्जानिस (Satibarzanes) का भी आत्मसमर्पण स्वीकार किया। यहीं पर उसे बेसस के आर्टाजर्कसेज (Artaxerxes) नाम से सम्राट बनने का समाचार मिला, अतः अलेक्जाण्डर उस का दमन करने के ध्येय से बैक्ट्रिया (उत्तरी अफगानिस्तान) की ओर अग्रसर हुआ। पार्मिनो को वह पहले ही कैस्पियन सागर के दक्षिण-पश्चिमी तट की विजय के लिए बिदा कर चुका था। इसी समय सैटीबार्जानिस के विद्रोह के दमनार्थ उसे वापस एरिया (Areia) आना पड़ा। अलेक्जाण्डर के वापस आते ही वह भाग कर बैक्ट्रिया चला गया। अतः एरिया का दमन कर तथा वहाँ अलेक्जाण्ड्रिया (Alexandria Areion-Herat) की स्थापना कर ड्रैंगियाना (Drangiana) की ओर बढ़ा और विजयी हुआ। वहाँ का क्षत्रप ब्रैसेण्टस (Brasaentes) तलवार के घार उतार दिया गया।

पार्मिनो व उसके पुत्र फिलोटास (Philatos) के जीवन का दुःखद अन्त यहीं पर हुआ।

ड्रैंगियाना की विजय के पश्चात् वह अफगानिस्तान व बलूचिस्तान (Gedrosia) की विजय के लिए दक्षिण की ओर बढ़ा और सिस्तान (Seistan) जा पहुँचा (३३०-२६ ई०पू०)। बलूचिस्तान का एक पृथक प्रान्त निर्मित कर वह हलमण्ड (Halmand) की घाटी से बढ़ता हुआ उत्तर-पूर्व में आधुनिक कन्धार आ पहुंचा जो वहाँ उसके द्वारा स्थापित नगर अलेक्जाण्ड्रिया का ही अपभ्रन्श प्रतीत होता है।

पर्वतो को पार कर, गजनी को पीछे छोड़ता हुआ, काबुल नदी की ऊपरी घाटी से होता हुआ अलेक्जाण्डर हिन्दूकुश के तल तक आ पहुंचा। पूर्व को पश्चिम एशिया से, तथा उत्तर को दक्षिण एशिया से पृथक् करने वाली हिन्दूकुश, पामीर तथा हिमालय की पर्वतशृंखलाओं (हिन्दूकुश-Paropanisus, हिमालय-Imaeus) को उन्होंने संयुक्त रूप से कौकेसस (Caucasus) नाम प्रदान किया। यहीं पर काबुल के उत्तर में एक और अलेक्जाण्ड्रिया की स्थापना की गयी।

इसी बीच सैटीबार्जानिस के पुनः विद्रोह का समाचार उसे मिला, अतः अपनी एक सैनिक टुकड़ी भेज कर अलेक्जाण्डर ने उसे पूर्णतः दमित करा डाला। सैटीबार्जानिस इस संघर्ष में मार डाला गया (३२६-२८ ई०पू०)।

आगे बढ़ता हुआ अलेक्जाण्डर बैक्ट्रिया के प्रमुख नगर बलख (Bactra) आ पहुंचा। बेसस अर्टाजर्कसेज ओक्सस (Oxus) नदी के पार भाग गया

ओर बैक्ट्रिया भी बिना किसी तीव्र प्रतिरोध के बिजेता के पाँवों तले आ गया। बेसस का पीछा करते हुए अलेक्जाण्डर ओक्सस व जैक्सार्टस(Zaxartes) नदी के मध्य स्थित बुखारा अथवा सोगडिआना (Sogadianos) प्रांत में आ पहुंचा (सोगड नदी के कारण ही इसका उक्त नामकरण हुआ)। ओक्सस नदी को पार कर अलेक्जाण्डर समरकन्द (Maracanda) पहुंचा। यहाँ के स्थानीय शासकों ने विजेता की कृपा प्राप्त करने के उद्देश्य से बेसस को अलेक्जाण्डर के सिपुर्द कर दिया। पहले उसे नग्न करके कोड़ों की सजा दी गई और फिर अंगभंग कर अपने भाग्य की प्रतीक्षा करने के लिए बलख भेज दिया गया।

समरकन्द, सोगडियाना की राजधानी

अलेक्जाण्डर निरन्तर उत्तर-पूर्व की ओर जैक्सार्टस के उद्गम्-स्थल फर्गना (Fergana) की ओर बढ़ता रहा। दक्षिण-पश्चिम एशिया तथा चीन के मध्य स्थित इस महत्त्वपूर्ण प्रवेश द्वार को ही सम्भवतया अलेक्जाण्डर ने अपने पूर्वी साम्राज्य की सीमा निर्धारित किया और यहाँ अन्तिम अलेक्जाण्ड्रिया (Alexandria The Ultimate-Khodjend) की स्थापना की (३२८ ई०पू०)।

तभी उसे सोगडिआना वालों के विद्रोह का सामना करना पड़ा जिन्होंने मार्ग के सात किलों में स्थित छावनियों को पराजित कर समरकन्द के दुर्ग को घेर लिया था। उनके आमन्त्रण पर सीथियन तथा मेसागीटी (Messagetae) जातियां भी विद्रोहियों की सहायता के लिए उमड़ी आ रही थीं। अलेक्जाण्डर ने शीघ्र ही सातों दुर्गों को विजय कर लिया। कुछ सैनिक समरकन्द की ओर रवाना कर दिए गए। वह स्वयं मुड़ चला क्योंकि उत्तर की जातियां जैक्सार्टस को पार कर उस पर पृष्ठ से आक्रमण करने की तैयारियां कर रही थी। शीघ्र ही नदी पार करके अलेक्जाण्डर ने सीथियनों को दूर स्टेपीज (Steppes) के मैदानों में खदेड़ दिया। यहीं पर अलेक्जाण्डर नदी का दूषित जल पीने के कारण गम्भीर रूप से रोगग्रस्त हो गया, परन्तु भाग्यदेवी की कृपा से शीघ्र ही स्वस्थ हो कर पुन: विजययात्रा पर निकल पड़ा। इसी समय समरकन्द को ओर भेजी गई सैनिक टुकड़ी के धवंस का समाचार पा कर वह उस ओर अग्रसर हुआ, और विद्रोहियों को परास्त करता, उन्हें पश्चिम की ओर खदेड़ता, मृत-सैन्य का सम्मानपूर्ण अन्तिम-संस्कार सम्पन्न करता, सोग्ड नदी को पार कर, सोगडिआना को रौंदता, ओक्ससनदी के पार

पश्चिमी बैक्ट्रिया में जा पहुँचा जहाँ उसने शीतऋतु व्यतीत की (३२८-२७-ई० पू०)। सोगिडआना में ही रोक्साना (Roxana) से उसका विवाह भी सम्पन्न हुआ। यहीं पर बेसस को दण्डित किया गया; उसके कान व नाक काट कर सूली पर चढ़ाने के लिए इकबताना (Ecbatana) भेज दिया गया। दण्ड की उक्त व्यवस्था यद्यपि हेलेनिक संस्कृति के विपरीत और अलेक्जाण्डर के लक्ष्य-हेलेनिक संस्कृति के प्रसार—के प्रतिकूल थी, तथापि अलेक्जाण्डर द्वारा इस का अपनाया जाना, ब्यूरी के मतानुसार, उसकी लक्ष्य-प्राप्ति में सहायक ही था क्योंकि अलेक्जाण्डर जानता था कि विदेशी भूमि पर अपनी संस्कृति के प्रसार के लिए पहले उस भूमि की सभ्यता व संस्कृति के बाह्य अंगों व प्रतीकों अथवा संस्कारों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण झुकाव प्रदर्शित करना आवश्यक है।[1]

बैक्ट्रिया की विजय के पश्चात् अलेक्जाण्डर भारत की विजय पर निकल पड़ा जिसका अपना पृथक् महत्त्व है। अतः उसका विवरण हम अगले अध्याय में देंगे।

---

(1) A History of Greece, J.B. Bury, p,779

अलेक्जाण्डर के विवरण में भारतीय नदियां—

सिन्धु—	Indus—	Indus.
कुभा—	Kophen—	Kabul.
सुवास्तु—	Soastus—	Swat.
वितस्ता—	Hydaspes—	Jhelum.
अस्किनी, चन्द्रभाग—	Acesines—	Chenab.
परुष्नी, इरावती—	Hydraotes—	Ravi
विपाशा— (व्यास)	Hyphasis—	Beas.
शतुद्री—	Zasadrus— or Hesydrus.	Sutlez.

९ | अलेक्जाण्डर भारत में

★

हिन्दुकुश को पार कर वह पुनः काबुल (अफगानिस्तान में,) आया । सम्भवतया इसी नगर को उसने निसेइआ नाम प्रदान किया। नवम्बर तक (३२७ई०पू०) यहीं ठहर कर वह शासन-व्यवस्था तथा आगामी विजयों की तैयारी में संलग्न रहा । उसने बेक्ट्रियनों, सोग्डियानों, तथा शकों की एक अतिरिक्तसेना (३००००) भी खड़ी कर ली । अब उसने भारत की ओर प्रयाण किया । भारत से वह उस मैदान को समझता था जो काबुल (कोफेन)तथा सिन्धु नदी के समतट पर स्थित था। यवनों तथा उनके नेता अलेक्जाण्डर के मस्तिष्क में भारत की अत्यन्त काल्पनिक तस्वीर अंकित थी। उनकी कल्पनानुसार भारत धार्मिक जातियों, अद्भुत जीवों (पशुओं व वनस्पतियों), एवं स्वर्ण-जवाहरात के असीम भण्डार की भूमि था । यह पृथ्वी का सबसे पूर्वी भाग माना जाता था जो समुद्र की धारा से बद्ध था ।[1]

भारत की स्थिति—अलेक्जाण्डर तथा अन्य विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा आक्रान्त भारत का पश्चिमोत्तर भाग, जो छोटे-छोटे परस्पर संघर्ष-रत राज्यों से पूरित था, शेष भारत से नितान्त पृथक् सा हो चला था । आपसी द्वेष व स्पर्धा ने उन्हें विभिन्न स्वार्थयुक्त दलों में विभक्त कर दिया था और इसी प्रति-

(1) A History of Greece, J. B. Bury p. 785.

स्पर्धा ने उनमें से अनेक को यवन विजेता के चरणों में स्वयंमेव ला गिराया था। इन देशद्रोहियों में सिन्धु (Indus) व झेलम (Hydaspes) के बीच के गांधार (तक्षशिला) प्रदेश का राजा आम्भी (Omphis) प्रमुखथा। आम्भी को यवन इतिहासकार Taxiles बतलाते हैं यद्यपि डा० त्रिपाठी सिल्विन लेवी के आधार पर उसे आम्भी (Omphis) और टैक्साइलस या तक्षिलेश (Taxiles) का पुत्र बतलाते हैं।[1] उसके अतिरिक्त अलेक्जाण्डर के लिये भारत का द्वार उन्मुक्त करने वाले विश्वासघातियों में हिन्दूकुश के उत्तरी प्रदेश का शासक शशिगुप्त, पुष्करावती का संज्जय, काबुल का कोफायस भी था। इन सभी ने भारतीय प्रतिरोध के विरूद्ध अलेक्जाण्डर की सहायता करना स्वीकार किया और साथ ही उससे अधीनस्थ-मैत्री भी अंगीकार कर ली। झेलम के पार केकय का पौरव राज्य था जिसकी सीमा चिनाब (Acesines) तकविस्तृत थी। यहाँ पर उस समय पौरस या पुरू राज्य कर रहा था। इसके पूर्व में रावी व व्यास के मैदान में अनेक द्रविड़ व आर्य राज्य अथवा गणराज्य थे जो अलेक्जाण्डर का सम्युक्त प्रतिरोध करने की स्थिति में न थे। इन में प्रमुख थे अद्रिज, कठ, सौभूति भगल, शिवि, अगलेसाय, क्षुद्रक, मालव, अम्बष्ठ, क्षत्रि, शूद्र, मूषिक, प्रोस्थ, शाम्ब, और अटल अथवा पाटल। पुरू के पूर्व में अनेक समृद्ध नगरों से युक्त ग्लुचुकायन राज्य स्थित था जिसकि विषय में स्वयं यूनानी लेखकों के विवरण से ज्ञात होता है कि उसके ३७ नगरों को अलेक्जाण्डर ने अधिकृत किया था। इस के अतिरिक्त पौरव राज्य के पश्चिम व पश्चिम-उत्तर में अश्वक[2], गौर,

---

1. Sylvain Levis Journal Asiatique, p. 234.

2. अश्वकों के लिये यवन इतिहासकारों ने अस्पेसिओई, (Aspasion) तथा अस्सैकेनोई (Assakenoe) (अथवा अश्मक) नाम दिये हैं। अश्मकों की राजधानी मसगा (Massaga), जिसे डा० त्रिपाठी मष्कावती समझते हैं (वि० स्मिथ इसे मलकन्द दर्रे के पास स्थित बतलाते हैं) के रण-क्षेत्र में ही यवनों को ज्ञात हो गया था कि उक्त क्षेत्र में भारतीय ही सर्वशक्तिशाली और अजेय योद्धा थे। मस्सागा के घेरे को एरियन नीसा के पूर्व और कर्टियस बाद में रखते हैं।

डा० त्रिपाठी ने जस्टिन के आधार पर लिखा है कि अश्मकों के प्रमुख अस्सकेनास की मृत्यु के पश्चात् उसकी रानी क्लिओफिस ने अलेक्जाण्डर के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया और उन दोनों के संसर्ग से जो पुत्र उत्पन्न

पूर्वी अश्वक, नीसा (काबुल और सिन्धु नदी के मध्य)[१], पश्चिमी गान्धार(काबुल और सिन्धु के मध्य) पूर्वी गान्धार (सिन्धु और झेलम के मध्य), तथा उरशा

हुआ उसे भी अलेक्जाण्डर नाम दिया गया। उसकी भावी पीढ़ी भी स्वयं को अलेक्जाण्डर की ही संतति मानने लगी। Justin, XII, 7, M.crindle's, Invasion by Alexander, p. 332

मसागा में ही अलेक्जाण्डर ने अश्मकों के ७००० भारतीय वैतनिक सैनिकों को आश्वासन देने के बाद तलवार के घाट उतार दिया। यद्यपि बाद में उसने यह कह कर यह कलंक धोने का यत्न किया कि उसने उन्हें केवल शहर से निर्विघ्न निकल जाने मात्र का आश्वासन दिया था न कि चिर मैत्री का, फिर भी प्लूटार्क ने इस हत्याकाण्ड को उसके यश में कालिमा के समान बतलाया है।

डा० भार्गव इन्हें आश्वकायन नाम से पुकारते हैं और अफगानों का पूर्वज मानते हैं।

इन का दूसरा प्रमुख दुर्ग उनशार (Aornos) या वरणा (पाणिनी) था जिसे यवनों के विवरणानुसार स्वयं (कृष्ण) अथवा हिराक्लस भी नहीं विजय कर पाया था। इसे जीत कर अलेक्जाण्डर ने शशिगुप्त को सौंपा।

1 नीसा Nysa—स्वात घाटी में मेरू पर्वत (Meros, koh-i-Mor) की तराइयों में नीसा नामक एक जाति का शासन था जो कुलीनतन्त्रीय शासनव्यवस्था द्वारा शासित थी। शासन-संचालन के लिये ३०० कुलीनों की एक सभा होती थी। अकूफिस (Akophis) उनका प्रमुख था। भारत के लोग इन्हें वाह्लीक अथवा बेक्ट्रियन के नाम से जानते थे। सम्भवतः इनका आगमन ईरान अथवा अन्य किसी पश्चिमी प्रदेश से हुआ था। परन्तु यवन इतिहासकार इन्हें डायोनीसस की संतति बतलाते हैं जो डायोनीसस के तथा-कथित भारतीय आक्रमण के समय यहीं छोड़ दिये गये थे। यवन इतिहासकारों के इस अनुमान का कारण उनके निवास स्थल मेरू पर्वत (मेरोस-अर्थात् जंघा; कहते हैं डायोनीसस का जन्म जीयस देवता के जंघा से हुआ था) का नाम ही था। दूसरे मेरू पर्वत पर मदिरा के देवता की प्रिय सिरपेंच लता व अंगूर की बेलों का प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होना भी इसका कारण था। साथ ही उक्त जाति द्वारा पूजित देव शिव को डायोनीसस से समन्वित करना भी इस भ्रांति का एक हेतु था। शिव के जुलूस को उन्होंने अपने देवता डायोनीसस के जुलूस

एवं अभिसार राज्य थे। भारत के पश्चिमोत्तर प्रांत के ये राज्य व गणराज्य शेष भारत की राजनीतिक धारा तथा मगध के साम्राज्य से बाहर थे। मगध साम्राज्य ने भी इनकी ओर कोई ध्यान न दिया और उसका विस्तार व्यास अथवा सतलज नदी तक ही सीमित रहा। इस प्रांत की दुर्बल स्थिति ने ही अलेक्जाण्डर के पूर्व, परशिया के सम्राट काइरस (५५० ई०पू०) तथा डेरियस एवं उसके पुत्र जर्कसेज को भी आक्रमण करने के लिये आकृष्ट किया था; यद्यपि उनके आक्रमण राजनीतिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध न हुए। सम्भवत: मेगास्थनीज ने इसी कारण लिखा था कि हिरावलस, डायोनीसस और अलेक्जाण्डर के अतिरिक्त अन्य किसी विदेशी द्वारा भारत कभी आक्रांत न हुआ था।

पश्चिमोत्तर भारत की उपरोक्त राजनीतिक स्थिति के होते हुए भी भारत की भूमि पर पग धरना अलेक्जाण्डर के लिये परशिया के सम्पूर्ण साम्राज्य को हस्तगत करने से अधिक दुष्कर प्रतीत हुआ। तक्षशिला और कपिशा के मध्य स्थित विभिन्न वीर, लड़ाकू व स्वातंत्र्यप्रिय जातियो ने एक-एक पग पर उसका तीव्र प्रतिरोध किया जिनमें से अश्वक, गौर, अश्वाहक (पूर्वी अश्वक-राजधानी मसग, यहाँ पुरुषों के साथ स्त्रियों ने भी उसका दृढ़तापूर्वक सामना किया), व पश्चिमी गांधार प्रमुख थे। इन सबको परास्त कर, फिलिप तथा शशिगुप्त को विजित प्रदेशों का क्षत्रप नियुक्त कर, तक्षशिला के देशद्रोही आम्भी की सहायता से अलेक्जाण्डर सिन्धु के पार तक्षशिला पहुंचा जहाँ उसका भव्य स्वागत किया गया।[1] आम्भी ने उसे ८६ हाथी और ५००० सैनिक[2] सहायतार्थ दिए तथा भेड़ों, बैलों व रजत की भेंट भी, जिसमें अपनी ओर से कुछ और भेंट जोड़ कर

से मिलाया क्योंकि दोनों ही जुलूसों में मद्यादि का पान कर गाजे-बाजे के साथ लोग सड़कों पर नाचते-कूदते निकलते थे। इन लोगों ने अलेक्जाण्डर के समक्ष आत्मसमर्पण कर ३०० अश्वारोही भी सहायतार्थ भेजे। नीसा के बाद वह शाहकोट के दर्रे से यूसुफजाई (Peucepatis) या पश्चिमी गांधार प्रदेश में प्रविष्ट हुआ और पुष्कलावती पर अधिकार किया जहाँराजाहस्ति (Asta या अष्टकराज) ने उसे एक माह तक रोक रखा।

1. तक्षशिला में ही उसकी भेंट दण्डी स्वामी से हुई थी जिसके समक्ष उसे नत होना पड़ा।

2. डा० भार्गव के अनुसार आम्भी ने ७०० अश्वारोही और ३०हाथी दिये थे :—प्राचीन भारत, पृ० १६२।

अलेक्जाण्डर ने उसे लौटा दिया। यहाँ अलेक्जाण्डर आगामी आक्रमण की तैयारियाँ करने लगा जिसका लक्ष्य पुरु का कैकय राज्य था। तक्षशिला में सैनिक संगठन के पश्चात् उसकी सेना में लगभग ६३०० अश्व व कुछ बैतनिक सैनिक थे। अतः टार्न के मतानुसार अलेक्जाण्डर की सेना २७००० से ३०,००० के बीच थी। प्लूटार्क के द्वारा दी गई संख्या १२०,००० पदाति व १५००० अश्वारोही भ्रांतिपूर्ण मानी जाती है।

अतः पोरस के विरुद्ध जो सेना लेकर वह चला उसमें ६३०० अश्वारोही और लगभग १०,००० पदाति सैनिक थे। टालेमी द्वारा बताई गई—६००० से कम पदाति सेना जानबूझ कर हाथियो का प्रभाव अतिरंजित करने के लिए अंकित की गई थी (टार्न)। इसके पूर्व ही वह अपने सेनापति हिफैसन (Hyphaestion) को खैबर दर्रे से काबुल नदी के पार पंजाब के मैदानी क्षेत्र की ओर रवाना कर चुका था जिसके जिम्मे उसने सिन्धु नदी पर पुल तैयार करने का कार्य सौंपा था। अटक से १६ मील दूर ओहिन्द नामक स्थान पर सिंधु पर पुल-निर्माण किया गया।

तक्षशिला से अलेक्जाण्डर झेलम (या वितस्ता) की ओर बढ़ा और अपना एक दूत भी पुरू के पास इस संदेश के साथ भेजा कि वह अलेक्जाण्डर की आधीनता स्वीकार कर ले, परन्तु पुरु ने आधीनता स्वीकार करने के बजाय रणक्षेत्र में उपस्थित हो कर उसका स्वागत करना स्वीकार किया; अब युद्ध अवश्यम्भावी हो गया। पुरू अभिसार के राजा को अपनी ओर मिला कर[1] और लगभग ३०-४० हजार सैन्य एकत्रित कर झेलम के पूर्वी तट पर आ डटा जिसके पश्चिम में अलेक्जाण्डर तथा द्रोही भारतीयों की सेनायें मोर्चा जमाये हुए थीं। महीनों अलेक्जाण्डर नदी को पार करने के तथा पुरू को इस धोखे में डालने के उपाय करता रहा कि अलेक्जाण्डर वापस जाने की तैयारी कर रहा है। साथ ही इस आशय का प्रचार भी किया गया कि उसने महीनोंतक मोर्चे पर डटे रहने लायक खाद्यान्न आदि एकत्रित कर लिया है। इसके बाद उसने एक और उपाय किया कि बार-बार अपनी सेना को नदी पार कराने की तैयारियाँ करता और फिर रुकने का आदेश दे देता। पुरू, जो हर बार अपनी सेना को सन्नद्ध कर देता था, उसकी इस चाल को समझ न सका और इस प्रक्रिया के अनेक बार दुहराये जाने पर उसने सैन्य को सन्नद्ध करना छोड़ दिया। पुरू की इस असावधानी का लाभ उठा कर एक रात, तेज मूसलाधार वर्षा के बीच, अपनी

१. कुछ विद्वानों के मतानुसार अभिसार-नरेश पहले तटस्थ रहा और बाद में उसने भी आत्मसमर्पण कर दिया।

सेना को नदी से २० मील ऊपर की ओर ले जा कर, जहाँ नदी दक्षिण के बजाय पश्चिम की ओर मुड़ जाती है, उसने नदी पार करने का निश्चय किया। योजनानुसार अलेक्जाण्डर ने वेगवती नदी को पार कर लिया और पदाति सैनिकों को पीछे छोड़ अश्वारोहियों को साथ ले कर वह पुरू की सेना पर आक्रमण करने के लिये आगे बढ़ा। उसके साथ लगभग १५ हजार सेना थी जिसका सामना करने के लिये पुरू ने १००० अश्वारोही और ६०[1] रथ दे कर अपने पुत्र को भेजा। इस सेना पर अलेक्जाण्डर ने शीघ्र ही विजय प्राप्त कर ली। पुरू का पुत्र और उसके लगभग ४०० सैनिक मार डाले गये।

अब पुरू अलेक्जाण्डर का रणक्षेत्र की परम्परानुकूकल स्वागत करने के लिये हाथी, रथ, अश्व और पदाति धनुर्धारियों की सेना लेकर आगे आया। अपने रथों व अश्वारोहियों को दोनों पार्श्वों में स्थित कर बीच में पदाति सेना तथा उसके आगे १००-१०० फीट की दूरी पर हाथियों को खड़ा कर के पुरू ने व्यूह रचना कर ली।[2] अलेक्जाण्डर ने नदी की ओर के बाम पार्श्व पर आक्रमण करना उपयुक्त समझ कर पदाति सेना को सिल्यूकस के आधीन पीछे रखा और अश्वारोहियों को दाहिनी तरफ स्थित किया। सबसे दाहिनी तरफ पुरू की सेना पर पीछे से आक्रमण करने के ध्येय से उसने अपने कुछ अश्वारोहियों को सीनस के अधीन खड़ा किया और शेष अश्वारोहियों को अपने नेतृत्व में, सीनस की अश्वारोही टुकड़ी तथा पदातियों के बीच में, स्थापित किया। सीथियन धनुर्धारियों को पुरू की अश्वारोही सेना के बाम पार्श्व के सामने रखा गया।

जैसे ही पुरू अपने दाहिने पार्श्व में स्थित अश्वारोहियों को बाम पार्श्व में ले आया, सीनस की अश्वारोही टुकड़ी ने नदी के किनारे-किनारे उसकी सेना की ओर बढ़ते हुये उसकी अश्वारोही सेना पर पीछे से हमला कर दिया। अलेक्जाण्डर के भी सामने से धावा बोलते ही भारतीय सेना दुहरी मार में पिसने लगी। फलतः पुरू ने अपनी हस्ती-सेना को यूनानी अश्वारोहियो तथा पदाति सैनिकों में विध्वंस मचाने के लिये भेज दिया। परन्तु बर्छों तथा तीरों की वर्षा ने उन्हें शीघ्र ही विक्षिप्तकर दिया और वे अलेक्जाण्डर तथा

---

१. डा० भार्गव ने यह संख्या २००० अश्वारोही और १२० हाथी बनाई है।

—प्राचीन भारत, पृष्ठ, १६४

२. एरिअन के अनुसार पुरू की सैन्य संख्या थी—३०,००० पदाति, ४००० अश्वारोही, ३०० रथ, व २०० हाथी।

पुरू दोनों की ही सेनाओं को समान भाव से कुचलने लगे। अब अवसर देख कर अलेक्जाण्डर ने स्वयं पार्श्व से और उसकी शेष सेना ने सामने से धावा बोल दिया। विक्षिप्त हाथियों के अलावा गीली जमीन ने भी भारतीय सैनिकों की पराजय में महत्वपूर्ण योगदान दिया। दलदल हो जाने के कारण पुरू की सेना के रथ व विशालकाय धनुष व्यर्थ हो गये। फलतः पुरू की सेना में भगदड़ मच गयी और वह भाग चली। परन्तु पुरू भागा नहीं वरन् एक ऊँचे हाथी पर आसन्न हो कर वह निरन्तर वीरतापूर्वक लड़ता ही रहा। अलेक्जाण्डर को ज्ञात हो गया कि परशियन डेरियस और भारतीय पुरू में महान् अन्तर है।[1] यह अन्तर तब और भी प्रत्यक्ष हो गया जब बन्दी पुरू ने अलेक्जाण्डर के इस प्रश्न का कि उसके साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाय, यह शौर्यपूर्ण उत्तर दिया कि जैसा एक राजा को दूसरे राजा के साथ करना चाहिये। एरियन का विवरण है कि पुरू के इस पौरुषपूर्ण, निर्भीक तथा स्वाभिमानयुक्त उत्तर से प्रसन्न होकर अलेक्जाण्डर ने उसे अपना मित्र बना लिया और उसका राज्य भी वापस लौटा दिया। उसके राज्य में १५ गणतंत्र, ५००० नगर व अगणित ग्राम संयुक्त किए गए। अलेक्जाण्डर का यह कार्य उदारता मात्र न था वरन् इसमें उसकी राजनीतिज्ञता भी झलकती है। पुरू से मैत्री करने का उद्देश्य पूर्वविजित राष्ट्रों अथवा राज्यों को सुरक्षित करना मात्र था। तक्षशिला के अम्भी को वश में करने के लिये उसका कोई प्रतिद्वन्दी खड़ा करना भी अनिवार्य था इसे अलेक्जाण्डर भलीभांति जानता था। पोरस के साथ बाद में स्थापित मैत्री-सम्बन्ध की तुलना डा० त्रिपाठी जंगली हाथियों के शिकार के लिए पालतू हाथियों को संरक्षण प्रदान करने से करते हैं! इस तरह उसने कौटिल्य व मनुद्वारा निर्धारित विजेता की नीति का ही पालन किया था।

पुरू पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् अलेक्जाण्डर ने बाउकफेला [अपने मृत घोड़े के नाम पर] और निकाया [विजयदेवी–Nicaea] नामक दो नगरों की स्थापना की। ग्लोसाय [अथवा ग्लुचुकायन] तथा अभिसार राज्यों

---

१. अलेक्जाण्डर को स्वीकार करना पड़ा कि, I see at last a danger that matches my courage. It is at once with wild beasts and men of uncommon mettle that the contest now lies.' Curtius, viii, 14; M'crindle, Invasion of India by Alexander—p. 209.

को जीतता हुआ वह पुरू के हमनाम भतीजे के राज्य में आ पहुँचा। कुछ इतिहासकार छोटे पुरू को ग्लौसाय अथवा ग्लुचुकायन का शासक बतलाते हैं। छोटा पुरू अलेक्जाण्डर की विजयवाहिनी के आगमन की सूचना पाकर पूर्व की ओर भाग गया। अलेक्जाण्डर ने अपने सेनापति हिफेसन को उसके राज्य तथा दोआबा की स्वतन्त्र जातियों को जीत कर बड़े पुरू के राज्य में मिलाने के लिये पीछे छोड़ कर स्वयं आगे पूर्व की ओर प्रयाण किया। रावी के पार अद्रिज या अधृष्ट और कठ नामक जातियों से अलेक्जाण्डर को भीषण प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। कठों को जीतने के लिये उसे पुरू की सहायता लेनी पड़ी जिन्होंने अपनी राजधानी सांगल[1] के चतुर्दिक रथों का घेरा बना कर अलेक्जाण्डर का मार्ग अवरुद्ध कर दिया था। उनका व सौभूति का राज्य भी पुरू के राज्य के अन्तर्गत शामिल कर दिया गया। इस प्रकार पंजाब के पूरे प्रदेश अलेक्जाण्डर के आधीन हो गये जिन्हें उसने आम्भी तथा पुरू के राज्यों में शामिल कर दिया।

अलेक्जाण्डर अब व्यास नदी की ओर बढ़ा और व्यास तथा सतलज के संगम से और आगे शतद्रु नामक स्थान पर पहुँचा। यहाँ उसकी सेना ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया क्योंकि उसके मतानुसार काफी विजय प्राप्त की जा चुकी थी। पश्चिम एशिया, मिस्त्र, परशिया, बलख व वैक्ट्रिया आदि की सुगम विजयों के पश्चात् भारत के पग-पग के प्रतिरोध से ऊब चुके थे। भारतीयों और विशेष कर पुरू के तीव्र प्रतिरोध ने उनके छक्के छुड़ा कर उनका उत्साह शिथिल कर दिया था। व्यास के दूसरी ओर अनेक स्वतन्त्रता-प्रिय जातियाँ, तथा नन्दों का विशाल एवं शक्तिशाली मगध साम्राज्य स्थित था।[2] भारत की भीषण गर्मी और मूसलाधार बरसात भी उन्हें बहुत महँगी

---

१. कठों में सर्वसुन्दर पुरुष राजा चुना जाता था (स्ट्रैबो, मैक्रिण्डेल, प्राचीन भारत M'crdle : Ancient India, पृष्ठ ३८) जन्म के समय ही बच्चों के जीवन-मरण का निश्चय हो जाता था। स्वयंबर व सती की प्रथा भी थी।

टार्न कठों की राजधानी को आधुनिक सांगल (पाणिनी का संकला) या स्यालकोट नहीं मानते यद्यपि अधिकांश इतिहासकार उक्त मान्यता से सहमत हैं। सौभूति (Sophyites) भी, जो कठों के समान योद्धा व सौन्दर्य-प्रिय थे, परास्त कर दिए गए।

२. व्यास के पार यवन लेखकों ने अग्रमोज नामक किसी शक्तिशाली शासक के होने का उल्लेख किया है जिसे डा० भार्गव अष्टनन्दों में से किसी एक से

पड़ी। अनेकों यूनानी रोगग्रस्त थे और कितने ही कालकवलित भी हो चुके थे। अपने स्वदेश, तथा परिवार के समाचार न मिलने से भी वे शीघ्रातिशीघ्र वापस लौटना चाहते थे। पूर्व-विजित प्रदेशो में भी विद्रोह की आशंका उत्पन्न हो चली थी जिसका निराकरण करना आवश्यक था क्योंकि शशिगुप्त, व सिन्धु के पश्चिम प्रदेशों का क्षत्रप निकेनार भी मार डाले गये थे। अलेक्जाण्डर ने अपने सैनिकों को उपर्युक्त कारणों की ओर ध्यान न देकर आगे बढ़ने को प्रोत्साहित किया, और स्वयं एकाकी ही आगे बढ़ने की घोषणा भी की परन्तु उसकी सेना टस से मस न हुयी। एरियन ने लिखा है कि सैनिकों की ओर से अश्वारोही सेना के नायक सीनास ने अलेक्जाण्डर को समझाया कि, 'विजयोल्लाश में संयम सर्वोत्तम है। यद्यपि विजयिनी सेना का नेतृत्व करते हुए तुम्हें कोई भय नहीं, तथापि दैवी प्रकोप को कोई न तो पहले से जानता है न उसका प्रतिकार कर सकता है।" दूसरे दिन हठी अलेक्जाण्डर ने जब नदी को पार करने के लिए बलि चढ़ाई उस समय अशगुन होने पर उसने अपनी सेना की बात स्वीकार कर ली। इसके बाद वह इस लज्जा के कारण तीन दिनों तक अपने शिविर के बाहर न निकला कि पृथ्वी के छोर तक आकर भी छोर तक बिना पहुँचे उसे वापस लौट जाना पड़ा, क्योंकि वह भारत को ही भूमि का अंतिम प्रदेश समझता था। टार्न के अनुसार, "He would have failed of course even without mutiny; it was centuries too early, and Ocean was not where he thought But it was a great dream."[१] वापसी का निश्चय घोषित कर लेने के बाद प्रस्थान के पूर्व उसने ओलम्पिक देवताओं के नाम पर १२ शिलास्तम्भ स्थापित किये। वापसी यात्रा के समय सम्भावित अनिष्टों की शांति के लिये यज्ञादि अनुष्ठान सम्पन्न करने के बाद वह झेलम के तट पर पुरू के राज्य में आ पहुँचा और विजित प्रदेशों की व्यवस्था करने के पश्चात् दक्षिण की ओर रवाना हुआ।

यहाँ से हिफेसन और क्रेटेरस की सेनायें भी उसके साथ हो लीं। सेना दो भागों में बांट दी गयी। नौसेना निआर्कस के नेतृत्व में चली, साथ में अले-

---

समीकृत करते हैं। उनका कथन है कि उग्रसेन का पुत्र होने के नाते वह औग्रसैन्य कहलाता होगा जिसे यवनो ने अग्रमीज कर लिया।

प्राचीन भारत, पृ० १६२

१. W. W. Tarn, Alexander the great p. 100.

क्जाण्डर स्वयं भी था। शेष सेनायें नदी के किनारे-किनारे हिफेसन व क्रेटेरस के नेतृत्व में सिन्धु नदी की ओर रवाना हुयी।

मार्ग में वितस्ता व असिक्नी के संगम पर शिवि[1] तथा अगलस्स[2] जातियों से अलेक्जाण्डर का सामना हुआ। इनमें से अगलस्स जाति के स्त्री व पुरुषों ने अन्तिम सांस तक अलेक्जाण्डर का तीव्र प्रतिरोध किया और अन्त में पराजय निकट देखकर अपने स्त्री व बच्चों को अग्नि के हवाले कर वे स्वयं भी युद्ध-क्षेत्र में जूझ मरे। सबसे अधिक कठिनाई अलेक्जाण्डर को रावी के दोनों तटों पर स्थित मालव-क्षुद्रक गणों के साथ लड़ने में हुई। कहते हैं, इन्होंने ९०,००० पदाति, १०००० अश्वारोही और ९०० रथ एकत्रित किए थे। क्षुद्रकों का राज्य मालवगण के पूर्व में व्यास नदी के तट पर था। मालव का मुख्य नगर मुल्तान था जहाँ अलेक्जाण्डर मरते-मरते बचा।[3] अन्त में मालवगण की पराजय हुयी जिससे निराश होकर उनके सहायक क्षुद्रक गण ने, जिसने मालवगण के साथ मिलकर अलेक्जाण्डर का मार्ग रोकने के ध्येय से एक गण-संघ की स्थापना की थी, देव इच्छा समझ कर अलेक्जाण्डर के पास अपना दूत भेजकर संधियाचना की। संघ भंगकर दिया गया। मालवों ने भी संधियाचना की और क्षुद्रकों के साथ ही उन्हें भी अधीनस्थ राज्य मानकर उन पर फिलिप को क्षत्रप नियुक्त किया गया।

पंजाब पहुंचकर असिकनी व सिंधु के संगम पर एक और अलेक्जाण्ड्रिया की स्थापना की गयी। इसके और दक्षिण में सोग्डी नामक स्थान पर सोग्डियन अलेक्जाण्ड्रिया की यवन बस्ती बसाई गयी। यहाँ से समुद्रतट तक के प्रदेश पीथान के अन्तर्गत एक क्षत्रपी में शामिल कर दिये गये।

दक्षिण-पश्चिम पंजाब के अम्बष्ठ, क्षत्रि व वसाति आदि (Abastanoi, Xathroi Ossadioi, व Sodrai) गणों को जीतते हुआ अलेक्जाण्डर के चरण सिन्ध में आ पड़े जहाँ मुषिक[4] और शम्भु (Musikas & Samsbos) जनपदों ने उसकी आधीनता स्वीकार कर ली; परन्तु ब्राह्मणक जनपद में उसे बड़ी कठिनाई का

---

१. शिवि—The Siboi—इन्हें यूनानी हिराक्लस की संतान मानते थे क्योंकि ये लोग हिराक्लस की तरह चर्म-वस्त्र व गदा धारण करते थे!

२. अग्रसेनी या अर्गलाश्व - Agalassians.

३. इसका नगर के आबाल-वृद्ध स्त्री-पुरुषों से क्रूर प्रतिशोध लिया गया।

४. मूचुकर्ण या मूसिकैनस।

सामना करना पड़ा। स्वयं अलेक्जाण्डर का प्रतिरोध करने के अतिरिक्त उक्त जनपद ने अन्य जनपदों, यथा भूषिकों आदि, को भी विरोध के लिए प्रोत्साहित व प्रेरित किया; साथ ही अलेक्जाण्डर का साथ देने वाले देशद्रोहियों की निन्दा भी की। फलतः अलेक्जाण्डर उन पर अत्यन्त कुपित हो चला और जब उसे उन्हें दबाने में सफलता मिल गयी तो उसने निर्दयतापूर्वक जनपद के अधिकांश निवासियों को मरवा डाला और उनके नेताओं के शव शेष लोगों में आतंक व्याप्त करने के निमित्त राजमार्गों पर टंगवा दिये। आगे औक्सी कैनस (अक्षिकरण) नामक राजा को भी परास्त किया गया।

उपरोक्त विजयों के पश्चात् अलेक्जाण्डर पाटल, अथवा पातन नगर पहुंचा जहाँ सिन्धु नदी दो धाराओं में विभक्त हो जाती है (हैदराबाद सिन्ध)। स्पार्टा के समान यहाँ भी युद्ध के समय सेना का नेतृत्व दो राजाओं के हाथों में रहता था और शासन पर सयानों की सभा का व्यापक प्रभाव था। अलेक्जाण्डर ने इसको जीतकर एक वाणिज्यिक-व्यापारिक बन्दरगाह के रूप में परिणित कर दिया।

पाटल पहुंचने के पूर्व ही वह क्रैटेरस को कुछ सेना के साथ बोलन दर्रे के मार्ग से अफगानिस्तान भेज चुका था जिसे अराकोशिया में उठ खड़े हूये विद्रोह के दमन का कार्य सौंपा गया था। अलेक्जाण्डर स्वयं बलूचिस्तान से होता हुआ उससे फारस की खाड़ी के निकट स्थित किरमान नगर में मिलने को था। सेना का दूसरा भाग समुद्री मार्ग से टाइग्रिस के मुहाने तक जाने वाला था। हिफेसन को पातल के दुर्ग व बन्दरगाह के निर्माण का कार्यभार सौंप कर वह समुद्र की ओर रवाना हुआ। प्रस्थान से पूर्व वरुण देवता पाजीडान की पूजा की गयी। समुद्री यात्रा का नेतृत्व निआर्कस को सौंपा गया और अलेक्जाण्डर स्थल मार्ग से मकरान के रास्ते बेबिलोन की ओर रवाना हुआ (सितम्बर ३२५ ई०पू०) (मकरान-जेड्रोसिया)। इस मरूमार्ग में उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जिसमें मार्ग की लड़ाकू व जंगली जातियों द्वारा उपस्थित की गयी कठिनाइयाँ सर्वप्रमुख थीं। अरबिस नदी को पार कर लड़ाकू आरिटी जाति को दबा कर उसने ओराइट अलेक्जाण्ड्रिया की स्थापना की। मरूमार्ग की यात्रा में उसे खाद्यान्न पूर्ति व जलपूर्ति के अभावों व भीषण गर्मी से उत्पन्न कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ा। उन्हें अधिकांशतः रात में ही यात्रा करनी पड़ती थी और तब तक चलते ही रहना पड़ता था जब तक जल की खोज सफल न हो जाय। अन्त में वे जेड्रोसिया की राजधानी (क्षत्रपी) पुरा

पहुँचने में सफल हो गये जहाँ से किरमान पहुँचने पर क्रेटेरस की सेना भी उनसे आ मिली। निआर्कस भी अब तक किरमान आ पहुंचा था। यहाँ से सेना पुनः तीन भागों में समुद्र, स्थल व पर्वतीय मार्गों से परशिया की ओर रवाना हुयी। तीनों का लक्ष्य एक ही था—सूसा।

मार्ग में वह उन क्षत्रपों व शासकों को दण्डित करता गया जो उसकी अनुपस्थिति में स्वयं को स्वतंत्र शासक के रूप में प्रतिष्ठित कर अपनी प्रजा का शोषण करने में रत थे। मीडिया में उसने दो सेनाधिकारियों तथा लगभग ६०० सैनिकों को मन्दिरों व समाधियों को लूटने के अपराध में फांसी पर चढ़ा दिया जिन्होंने अन्य समाधियों के साथ सम्राट काइरस की समाधि भी ध्वस्त कर लूट ली थी। परशिया के शाही कोष का अधिकारी भी कोष के दुरूपयोग का अपराधी था और अलेक्जाण्डर के आगमन का समाचार पाकर वह कृतघ्न हरपालस भी यूनान की ओर भाग गया।

जिस समय अलेक्जाण्डर विश्वविजय करने के लिए अपनी विशाल विजय-वाहिनी के साथ पूर्व के देशों को एक-एक कर अधीन करता जा रहा था, यूनान के कुछ नगर-राज्य उसकी अनुपस्थिति का लाभ उठा कर यूनानी राज्यों में मेसिडान के जुये को अपने कन्धों से उतार फेंकने विद्रोह की स्थिति का अवसर देख रहे थे। इनमें स्पार्टा और एथेंस सर्वप्रमुख थे; यद्यपि कोरिन्थ की कांग्रेस में शामिल राज्यों ने ईस्सस के रणक्षेत्र में परशिया के विरुद्ध अलेक्जाडर की विजय का समाचार पाकर उसे बधाई के सन्देश प्रेषित किये थे। सम्भवतः इसी कारण स्पार्टा नरेश एजिस (Agis) द्वारा प्रारम्भ किया गया विद्रोह का प्रयास सफल न हो सका। दूसरे, एथेंस के राजनीतिज्ञ, जो अलेक्जाण्डर का विरोध करने में सबसे आगे थे, वे भी अब उसकी विरोध करने की नीति का परित्याग कर चुके थे। न केवल डिमेडीज और फोसियान बल्कि स्वयं डिमास्थनीज भी अब विरोध की निरर्थकता को ग्रहण कर चुका था। एथेंस से निराश हो कर स्पार्टा ने आर्केडिया व एकेइआ की ओर सहायतार्थ देखा। मेगालोपोलिस तथा पैलीन को छोड़ आर्केडिया तथा एकेइआ के समस्त नगर और एलिस भी उसके पक्ष में आ गये। उन्हें युद्ध छेड़ने का उपयुक्त अवसर भी शीघ्र प्राप्त हो गया क्योंकि एण्टीपेटर थ्रेस के विद्रोह के दमन में उलझे रहने से उनका पूरी शक्ति से प्रतिरोध करने की स्थिति में न था। उन्होंने आर्केडियन संघ की राजधानी मेगालोपोलिस को घेर

लिया, परन्तु थ्रेस के विद्रोह का शीघ्र दमन कर एण्टीपेटर मेगालोपोलिस आ
कर उनकी सम्मिलित सेनाओं को परास्त करने में आसानी से सफल
स्पार्टा परास्त हो गया (३३१ ई० पू०)। स्पार्टा का राजा इस युद्ध में खेत
रहा। स्पार्टा ने दूत भेज कर सन्धि-याचना की और अलेक्जाण्डर
ने उसकी याचना स्वीकार कर ली।

एथेंस :—अलेक्जाण्डर की विजययात्रा के १२ वर्षों में एथेंस के शासन व राजनीति की बागडोर फोसिआन व लिकरगस नामक राजनीतिज्ञों के हाथों में रही। उन्हें प्रमुख वक्ता डिमेडीज का भी सहयोग प्राप्त था, साथही डिमास्थनीज भी शांतिनीति के पक्ष में आ गया था। डिमास्थनीज का राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वी एस्कीनस निष्कासित किया जा चुका था।

एथेंस का भूमध्यसागरीय प्रदेशों के वाणिज्य पर अभी भी आधिपत्य बना हुआ था। इट्रस्कन लुटेरों से अपने व्यापारियों तथा यात्रियों की रक्षा की दृष्टि से उसने हैड्रियाटिक समुद्रतट पर उपनिवेशों की स्थापना का प्रयास भी
किया। घोषित शांति-नीति का पालन करते हुए भी
एथेंस का वाणिज्यिक अपनी खोई हुई सत्ता की पुनर्प्राप्ति के ध्येय से, एथेंस
प्रसार नौसैनिक शक्ति की वृद्धि में संलग्न रहा। फलस्वरूप उसके
पास लगभग ४०० पोत तैयार थे। जी (Zea) नामक
बन्दरगाह का भी विकास किया जा रहा था। इसमें सबसे अधिक योगदान वित्तमन्त्री लिकरगस के द्वारा दिया गया था। वित्त का नियन्त्रण 'राजस्व के मन्त्री' नामक अधिकारी के हाथों में सौंप दिया गया था जो जनसामान्य द्वारा, एक अखिल यवन उत्सव से दूसरे उत्सव तक की चार वर्ष की अवधि के लिए. निर्वाचित किया जाता था। लिकरगस (३३८-३२६ ई० पू० तक) १२ वर्षों तक इस पद पर बना रहा। उसकी सहायता के लिए काउन्सिल थी परन्तु उसका नियन्त्रण नहीं के बराबर ही था। लिकरगस ने वित्त विभाग के साथ ही सार्वजनिक कार्यों को भी अपने हाथों में ले लिया। अपने अधिकारों तथा अपनी स्थिति का लाभ उठा कर उसने इलीसस नदी के दक्षिण तट पर एक 'अखिल एथनीक क्रीडांगन' का तथा अपोलो लिकियस (Apollo Lycaeus) के मन्दिर के समक्ष स्थित व्यायामशाला का पुनर्निर्माण करवाया। उसने एक्रोपोलिस की एक ढाल पर संगमर्मर के आसनों की पंक्ति भी निर्मित करवाई तथा एक नया नाट्यगृह भी। साथ ही दुखांत नाटककारों

ऐस्कीलस सोफोक्लीज व यूरीपिडीज की मूर्तियाँ भी उक्त नाट्यशाला में स्थापित कीं और उनकी रचनाओं की प्रतिलिपियाँ तैयार करवा कर राज्य के संरक्षण में सुरक्षित रखवा दीं।

नवीन सैन्य प्रणाली :—केरोनिया की लड़ाई में पराजित होने के पश्चात् एथेंस की सैन्य प्रणाली व प्रशिक्षण में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो चले थे। प्रत्येक नवयुवक को १८ वर्ष की वय प्राप्त कर लेने पर, जब वह अपनी डीम के रजिस्टर में नामांकित कर दिया जाता था, दो वर्ष का प्रशिक्षण लेना होता था। प्रशिक्षण काल में वह इफेबस (Ephebos) या इफेबोइ कहा जाता था। उस अवधि में न्यायालयों में उसकी उपस्थिति किसी भी रूप में निषिद्ध थी। उन के निरीक्षण के लिए जनसभा द्वारा एक मार्शल (कास्मेटीज Kosmets) निर्वाचित किया जाता था जिसके अधीन दस 'अनुशासन के शिक्षक' होते थे जिन्हें साफ्रोनिस्टाइ (Sophronistad) कहते थे। प्रत्येक शिक्षक के अधीन एकही जाति के युवक होते थे। इसका धार्मिक रूप भी था। प्रशिक्षण के अन्तर्गत नवयुवकों को सर्वप्रथम मन्दिरों की परिक्रमा अथवा यात्रा करनी होती थी। तत्पश्चात् एक वर्ष तक उन्हें म्यूनिशिया (Munychia) की चौकी पर नियमित सैनिक प्रशिक्षण लेना होता था। इस समय उन्हें बर्छे, धनुष बाण, व अग्न्यास्त्रों में निपुण बनाया जाता था। 'अनुशासन के शिक्षक' के अधीन उन्हें बैरक-भोजनालयो में साथ-साथ भोजन करना होता था। एक वर्ष के प्रशिक्षण की समाप्ति पर वे असेम्बली के समक्ष उपस्थि होकर, अपनी योग्यता का प्रदर्शन कर, अपने नगर से एक-एक ढाल और बर्छा प्राप्त करते थे। अगले वर्ष उन्हें सीमांतप्रदेशों तथा बन्दीगृहों का कार्य सौंपा जाता था। उनकी पोशाक भी अत्यन्त भव्य थी; वे काले लबादे और चौड़े किनारे के शिरस्त्राण धारण करते थे।

अलेक्जाण्डर के दो आदेश:–इसी बीच ३२४-२३ ई०पू० में अलेक्जाण्डर की तरफ से दो आदेश सभी यवन नगर-राज्यों को प्रेषित किये गये। एक तो यह था कि सभी यवन नगर राज्य अपने निष्कासितों को वापिस बुला लें। एथेंस और एइटोलिया ने इस आदेश का विरोध किया क्योंकि उन्हें अनधिकारिक रूप से अधिकृत की हुई सम्पति से हाथ धोना पड़ता और एथेंस को सैमास भी गँवाना पड़ता।

दूसरा आदेश मानने में किसी को कोई विरोध न था अर्थात् अलेक्जाण्डर को देवपुत्र माना जाय।[१]

इसी समय (बसन्त ३२४ ई०पू०) अलेक्जाण्डर का भागा हुआ कोषाध्यक्ष हरपालस ५००० टैलेण्ट, तीस जहाज और बहुत से वैतनिक सैनिक ले कर एट्टिका के तट पर आ पहुँचा। वह एथेंस में रूक कर अलेक्जाण्डर के विरूद्ध विद्रोह उभाड़ना चाहता था; और इसके लिये एथेंस के खाद्यान्न के अभाव का लाभ उठा कर कुछ खाद्यान्न प्रदान कर उसने एथेंस की नागरिकता भी प्राप्त कर ली थी, परन्तु एथेंस ने सेना के साथ उसे शरण देना अस्वीकार कर दिया। वह सेना को टेनेरान के अन्तरीप में रख कर पुन: एथेंस आया और तब उसे शरण मिल गयी। शीघ्र ही एण्टीपेटर और, पश्चिमी एशिया में अलेक्जाण्डर के वित्त अधिकारी फिलोक्सेनस ने हरपालस के समर्पण के सन्देश भेजे। एथेंस ने उत्तर दिया कि यदि स्वयं अलेक्जाण्डर यह माँग करे तो वह इसके लिये प्रस्तुत हैं पर एण्टीपेटर या फिलोक्सेनस की माँग पर कदापि नहीं। साथ ही डिमास्थनीज के प्रस्ताव पर उन्होंने धूर्ततापूर्वक हरपालस को कैद भी कर लिया। इसी बीच मौका पाकर हरपालस भागने में सफल हो गया परन्तु शीघ्र ही महाकाल ने उसे अपनी कैद में डाल दिया।

हरपालस एट्टिका में

हरपालस से छीनी गयी सम्पत्ति डिमास्थनीज तथा अन्य अधिकारियों के संरक्षण में एक्रोपोलिस में रख दी गयी। इस राशि का, जो ७०० टैलेण्ट थी, कोई लिखत विवरण नहीं रखा गया। अतः जब ज्ञात हुआ कि दुर्ग के कोष में केवल आधी धन राशि शेष है तो गबन का आरोप डिमेडीज तथा डिमास्थनीज आदि पर लगाया गया। डिमास्थनीज पर कर्त्तव्यपालन में असावधानी का भी आरोप लगाया गया। एरोपेगस की परिषद् द्वारा जाँच पड़ताल की गई जिसने डिमास्थनीज सहित (जिसने २० टैलेण्ट प्राप्त किये थे) अनेक अन्य राजनीतिज्ञों को गबन का दोषी पाया। अत: डिमास्थनीज से ५० टैलेन्ट अर्थदण्ड की मांग की गयी जिसमें असमर्थ रहने पर वह बन्दी बना लिया गया किन्तु वह शीघ्र ही निकल भागने में सफल हो गया।

अलेक्जाण्डर की पूर्व-पश्चिम के समन्वय की नीति :— अलेक्जाण्डर मात्र एक सैनिक-विजेता के रूप में पूर्व के साम्राज्यों को पददलित करने के लिये विजययात्रा

Sparta replied, 'since Alexander wants to be God, let him be god.'

एथेंस में डीमेडोज (Demades) ने प्रस्ताव को स्वीकार करने को सम्मति प्रकट की, और दण्डित हुआ। डिमास्थनीज ने कहा कि—'अलेक्जाण्डर Zeus का, और वह चाहे तो पाजीडान का भी पुत्र हो सकता है।'

पर नहीं निकला था वरन् पूर्व तथा पश्चिम, यवन तथा असम्य अथवा बर्बर, के बीच खड़ी दीवारों को ध्वस्त कर देने के विचार से भी मैसिडोनिया से चला था। साम्राज्य पददलित किये जा चुके थे, अब उनके अवशेषों पर एक नयी संस्कृति एवं सभ्यता की इमारत खड़ी करनी थी जिसमें प्राच्य तथा पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति की झलक हो, उनका सामंजस्य हो, समन्वय हो। इस लक्ष्य को उसने अपने मस्तिष्क से कभी दूर नहीं जाने दिया और इस दिशा में निरन्तर प्रयत्नशील रहा। उसके द्वारा बसाये गये विभिन्न नगर (जिनमें उस के द्वारा बसाए गये अलेक्जाण्ड्रिया नामक) नगरों का अपना वशिष्ट स्थान है। सभ्यताओं व संस्कृतियों, विभिन्न जातियों, विचारों, मान्यताओं व परम्पराओं के संगमस्थल थे। उसकी यह भी आकांक्षा थी कि एशियायी जातियों को ले जा कर स्थायी रूप से यूरोप में, और यूरोपिय जातियों को एशिया में बसाया जाय। सम्भव है क्रूरकाल द्वारा कुछ मोहलत दिये जाने पर वह इस लक्ष्य की इच्छानुकूल प्राप्ति कर लेता। जितना समय उसे मिल सका उसमें उसने अन्तर्जातीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय विवाह-सम्बन्धों द्वारा इस दिशा में आशातीत सफलता प्राप्त भी की। उसने स्वयं बैक्ट्रिया में रोक्साना नामक युवती से, तथा सम्राट डेरियस तृतीय की पुत्री स्टैटिरा से विवाह करके अपने अधिकारियों तथा सैनिकों को नवीन प्रेरणा दी, और उन्हें भेंटादि देकर पुरस्कृत व प्रोत्साहित भी किया; ये विवाह संस्कार परशियन रीति-रिवाजों के आधार पर सम्पन्न किये गये थे।

समन्वय के तीसरे क्षेत्र, सेना, को भी उसने विस्मृत न किया। उसने अपनी सेना में मैसिडोनियनों के साथ-साथ एशियायियों को भी ऊँचे पदों पर प्रतिष्ठित करना आरम्भ कर दिया। यद्यपि अपने सैनिकों व सेनाधिकारियों में इसकी तीव्र प्रतिक्रिया भी उसे सहन करनी पड़ी, परन्तु वह अपने मार्ग पर अविचल रहा; एक बार तो उनके द्वारा विद्रोह किये जाने पर उसने, उन्हीं की मांग पर, उन्हें निलम्बित भी कर दिया, और केवल एशियायी अधिकारियों की सहायता से कार्य-संचालन का विचार करने लगा। इसका त्वरित परिणाम यह हुआ कि सेना के तथा अधिकारियों के असंतुष्ट तत्व शमित हो चले। इसके बाद वह पुनः सुचारू रूप से नये-पुराने सैनिकों तथा अधिकारियों के प्रशिक्षण में संलग्न हो गया। अपने दृढ़ रूख के कारण ओपिस के इस विद्रोह के बाद कभी अपने सैनिकों व अधिकारियों के रोष अथवा असन्तोष का उसे सामना नहीं करना पड़ा। ओपिस से उसने बहुत से थकित तथा वृद्धावस्था को प्राप्त व रूग्ण सैनिकों व

अधिकारियों को वापस यूनान भिजवा दिया। क्रेटेरस को मैसिडोनियाँ में क्षत्रप एण्टीपेटर का स्थान लेने को भेजा गया, और एण्टीपेटर को सेना को साथ लेकर एशिया बुलवा लिया गया क्योंकि मैसिडोनिया से मिलने वाले समाचारों तथा स्वयं एण्टीपेर और राजमाता ओलिम्पिया के पत्रों से उनके तनावपूर्ण सम्बन्धों का भान अलेक्जाण्डर को निरन्तर होता रहता था।

ओपिस से चल कर अलेक्जाण्डर मीडिया की राजाधनी इकबताना पहुँचा जहाँ उसने ग्रीष्म तथा शरद् काल का अधिकांश भाग व्यतीत किया। यहाँ उसने विजयों के उपलक्ष में उत्सव आदि का भी आयोजन किया जिसमें भाग लेने के लिये यूनान से भी लगभग ३ हजार कलाकार इकबताना आये थे। परन्तु इस उत्सव के रंग में भंग सा हो गया जब अलेक्जाण्डर का प्रमुख सहायक व मित्र हिफेसन काल के गाल में समा गया। अलेक्जाण्डर को उसकी मृत्यु का इतना दुःख हुआ कि तीन दिनों तक वह शोकमग्न रहा। हिफेसन के शव को सम्मनपूर्वक दाहक्रिया के लिये बैबिलोनिया भेज दिया गया और साम्राज्य भर में राजकीय शोक की घोषणा कर दी गयी।

शरद् के अन्तिम दिनों वह में बैबिलोनिया के लिये रवाना हुआ। मार्ग में अनेक लड़ाकू और लुटेरी जातियों का दमन किया। मार्ग में ही उसे अनेक प्रदेशों व जातियों के दूत मैत्रीयाचना के निमित्त मिले जिनमें प्रमुख थे-ल्यूकेनिअन, इट्रस्कन, स्पेन की कार्थेजीनियन व फीनीशियन बस्तियाँ, सीथियन, लीबियन व इथीओपिअन आदि; केवल रोम ने कोई मैत्री याचना नहीं की।

बैबिलोन में प्रवेश के पूर्व कुछ भविष्यवक्ताओं ने उसे बेल देवता की इस इच्छा से भिज्ञ करा दिया था कि नगर में उसका प्रवेश मंगलमय न होगा। परन्तु उनकी परवाह न कर वह नगर में प्रवेश कर गया और बेल देवता के मन्दिर का पुनर्निर्माण भी करवाया।

अभी असकी विजययात्रा का समापन न हुआ था, वरन् अनेकों अभियानों की योजनायें उसके मस्तिष्क में थीं जिनमें सबसे प्रमुख थी अरब की विजय। पूर्व का यवन-साम्राज्य अरब की विजय के बिना अधूरा था। इस विजय से अलेक्जाण्डर दक्षिण सागर तथा परशिया की खाड़ी को दूसरा प्रमुख व्यापारिक केन्द्र बना चाहता था। इस उद्देश्य से उसने लोगों को सीरिया के तट पर तथा विभिन्न द्वीपो में उपनिवेश-स्थापना के निमित्त भेज दिया था। सिन्धु, टाइग्रिस,

फरात व नील नदियों को शृंखलाबद्ध करके वह लाल सागर से सम्युक्त कर देना चाहता था ताकि एक निरन्तर व्यापार मार्ग पूर्व से पश्चिम तक स्थापित हो जाय। बैबिलोन को वह अपने साम्राज्य का केन्द्र अथवा राजधानी और प्रमुख व्यापारिक स्थल बनाना चाहता था, और इसी ध्येय से उसने वहां बन्दरगाह व गोदियों के निर्माण का कार्य भी प्रारम्भ करा दिया।

अरब की विजय की तैयारियां भी साथ-साथ चलती रहीं। निआर्कस का बेड़ा भी बैबिलोनिया में उससे आ मिला, तथा नये बेड़े का निर्माण भी आरम्भ कर दिया गया। केरिया, लीडिया तथा परशिया से भी नयी सेनायें खड़ी कर ली गयीं। पदाति सेना के पंक्ति व्यूह (फेलैंक्स) में उसने परशियन सैनिकों को भी स्थान दिया और उन्हीं की अधिक संख्या (४ मैसिडोनियन व १२ परशियन सैनिक के अनुपात में) स्थित की। इसके संगठन में अन्य वांछित सुधार भी किये ताकि गति तथा क्षमता में इच्छानुकूल वृद्धि की जा सके।

इतिहास ने पुनः अपनी आवृत्ति की और अपने पिता फिलिप की भांति नवीन विजययात्रा पर प्रस्थान करने के पूर्व वह स्वयं काल द्वारा परास्त कर दिया गया। शायद जून की पहली तारीख थीं (३२३ ई०पू०)–अलेक्जाण्डर के नौसेनापति निआर्कस के सम्मान में, जो नयी समुद्र-विजय पर जा रहा था, एक सहभोज का आयोजन किया गया था जो रात में काफी देर तक चलता रहा। उत्सव की समाप्ति के पश्चात् जब अलेक्जाण्डर अपने शयन-कक्ष में जा रहा था उसके एक मित्र मेडियस ने उसे मद्यपान के लिये आमन्त्रित किया। रात्रिपर्यन्त मद्यपान चलता रहा। प्रातःकाल होने पर जब वह सोने के लिए गया तो उसे ज्वर हो आया। दूसरे दिन पुनः मद्यपान का कार्यक्रम चला जिससे उसका ज्वर बिगड़ गया। जागने पर उसने देवता के समक्ष उपस्थित होकर बलि आदि चढ़ाने की इच्छा प्रकट की परन्तु स्वयं चल पाने में असमर्थ होने के कारण उसे बग्घी पर ले जाया गया। वापस आने पर वह निआर्कस के साथ आगामी अभियान के विषय में ही वार्तारत रहा; परन्तु अगले ६ दिनों तक वह घोर ज्वर से ग्रस्त रहा। इसके बाद उसकी वाक्शक्ति अवरुद्ध हो चली और सैनिकों में उसकी मृत्यु की अफवाह फैल गयी। समस्त सैनिक उसके द्वार पर आ जुटे और पंक्तिबद्ध हो कर उसके दर्शन करने के निमित्त खड़े हो गये। वह भलीभांति अपने सैनिकों का अभिवादन भी स्वीकार न कर सका, केवल सिर थोड़ा सा उठा कर ही उत्तर दे सका। १३ जून को

वह महान् विश्वविजेता अपने साथियों को रोता-बिलखता छोड़ इस संसार से विदा हो गया। ब्यूरी उसकी मृत्यु से होने वाली क्षति के विषय में कहते हैं कि विश्व के इतिहास में यदाकदा ऐसी अकाल-मृत्यु होती ही रहती हैं जिनका आगामी घटनाओं पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है परन्तु जितनी पूर्णता से और स्पष्ट रूप से अलेक्जाण्डर की मृत्यु ने इतिहास की दिशा मोड़ दी उतनी किसी और मृत्यु ने न मोड़ी थी। तथापि, जीवन के साथ ही मृत्यु में भी वह भाग्यशाली था; क्योंकि अपनी मृत्यु के समय वह ख्याति के चरम शिखर पर था और अपने पीछे एक ऐसी कीर्ति छोड़ गया था जिसकी समता कुछ ही व्यक्ति कर सकते हैं। यदि वह और अधिक जीवित रहता तो सम्भव था कि उसे इस कीर्तिशिखर से नीचे उतरना पड़ता। जे. डब्ल्यू स्वाइन का कथन है कि 'अनेक पुरुष अपने प्रशंसकों द्वारा महान् की संज्ञा से विभूषित हुए हैं परन्तु अलेक्जाण्डर का नाम उनमें सर्वोपरि है। वह सर्वदा के लिए अलेक्जाण्डर महान् है।' उसकी विगत विजयें केवल प्रारम्भ मात्र थीं; अभी न जाने कितनी योजनायें उसके मस्तिष्क में प्रसुप्त थीं। अपने एशियायी साम्राज्य के पुनर्संगठन की कितनी ही योजनायें अभी कार्यान्वित की जानी थीं-जिन में उस की विचारों की मौलिकता, उसकी गहन पकड़, उसकी सूक्ष्म दृष्टि, उसकी संगठन की योग्यता वा क्षमता, और उसकी अद्भुत मानसिक शक्ति के दर्शन होते है।[1] उसकी मृत्यु से साम्राज्य की एकता भी मृतप्राय हो चली और मैसिडोनिया का साम्राज्य अनेक छोटे-छोटे भागों में विभक्त हो गया, जिन्होंने यद्यपि उसकी भावना—प्राची व पाश्चात्य के समन्वय—को जीवित रखा, परन्तु उसके जैसे उच्च गुणों व आदर्शों का प्रदर्शन न कर पाये।

व्हीलर ने लिखा है कि अलेक्जाण्डर की गाथा ही मृत्यु की गाथा बन गई है। वह स्वयं असमय कालकवलित हो गया। अपने जीवन में उसने प्राचीन यूनान का अन्त किया; और अपनी मृत्यु के साथ अपने द्वारा स्थापित साम्राज्य का। परन्तु अलेक्जाण्डर, यूनान, और साम्राज्य, तीनों में से प्रत्येक ने अपने-अपने ढंग से इस कथन के अन्तर्मूल्य को स्थापित किया कि, "जब तक गेहूँ का दाना पृथ्वी पर गिर कर स्वयं मिट नहीं जाता तब तक उस का जीवन उसी तक सीमित रहता है।"[2]

---

(1) A Histroy of Greece, J. B.Bury, p, 806,

(2) Alexander The Great, Wheeler, pp, 500-501,

इतिहासकारों ने अलेक्जाण्डर के केवल सैनिक अथवा विजेता के रूप को ही महत्व दिया; उसके प्रशासक के रूप को नितांत विस्मृत अथवा प्रच्छन्न ही रखा गया है। सम्भव है इसका कारण यह रहा हो कि अकालमृत्यु के कारण अथवा निरंतर चलने वाले युद्धों से अवकाश न मिल सकने के कारण उसने विजित प्रदेशों तथा नवोस्थापित नगरों की शासनव्यवस्था की कोई स्थायी एवं समुचित प्रणाली न आरम्भ की हो। भारतीय प्रदेशों से उसके प्रभाव के शीघ्र समाप्त हो जाने का भी यही कारण था।[1]

अलेक्जाण्डर की मृत्यु के उपरान्त मैसिडोनिया

अलेक्जाण्डर की मृत्यु के पश्चात् मैसिडोनियन साम्राज्य छिन्न-भिन्न सा होता प्रतीत हुआ।[2] उसके मरते ही उसके सेनानायक अधिकारों के लिये आपस में लड़ने लगे। मैसिडोनिया के सिंहासन के लिये भी कई दावेदार उठ खड़े हुए। पहले, मैसिडोनिया में ही अलेक्जाण्डर का फिलिप नामक एक सौतेला भाई था जो विक्षिप्त था। दूसरे, रोक्साना के

1. Western Civilizations, E. M. Burns, p. 156.

ई. एम बर्न्स के मतानुसार अलेक्जाण्डर का महत्व बढ़ा-चढ़ा कर प्रदर्शित किया जाता है—वस्तुत: यवन संस्कृति के प्रचार प्रसार में वह इतना सफल नहीं रहा जितना कि प्रदर्शित किया जाता है! वे यह भी कहते हैं कि पूर्व में पश्चिमी संस्कृति के प्रसार की अपेक्षा पश्चिम में पूर्वी संस्कृति का मार्ग ही उसकी विजयों के फलस्वरूप अधिक प्रशस्त हुआ!

(२) प्लुटार्क अलेक्जाण्टर, एरिअन।७, २६।

उसकी असफलता के कारणों पर प्रकाश डालते हुए टार्न का कथन है कि अगर वह अपनी विजयों को एशिया माइनर तक ही सीमित रखता, जहाँ का शासन आसानी के साथ यूरोप से ही हो सकता था, तो वह यवन सभ्यता का अपेक्षाकृत व्यापक प्रसार कर सकता। दूसरे, राष्ट्रीयता के सिद्धांतों के साथ टकराने के कारण भी उसकी पूर्व और पश्चिम के समन्वय की नीति को सफलता न मिल सकी। और तीसरे, उसकी मृत्यु ने उसके प्रयोग के सही परीक्षण के लिये वांछित समय भी नहीं दिया। उसका साम्राज्य उसी पर निर्भर था अतः उसके जीवन काल तक ही सीमित रहा। एक योग्य उत्तराधिकारी न मिलने से अलेक्जाण्डर का प्रयास अधूरा ही रह गया। प्लुटार्क और एरिअन के विवरणों से प्रकट होता है कि जब उससे पूछा गया कि वह अपना विशाल साम्राज्य किसके भरोसे छोड़ जा रहा है तो उसने कहा था, 'सर्वशक्तिशाली के।'

के गर्भ में भी अलेक्जाण्डर का उत्तराधिकारी पल रहा था। अंततः यह निश्चित किया गया कि फिलिप को अलेक्जाण्डर के भावी शिशु के साथ द्वैध शासक के रूप में प्रतिष्ठित किया जाय। साम्राज्य का संरक्षक पडिक्कस को बनाया गया व विभिन्न प्रांत प्रमुख अधिकारी-गणों को प्रशासन हेतु सौंप दिये गये। इस विश्ृंखलित स्थिति का लाभ उठा कर एथेंस, एइटौलिया तथा उत्तरी यूनान की अन्य और रियासतों ने मैसिडोनिया के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया; यद्यपि पहले एथेंस को अलेक्जाण्डर की मृत्यु का विश्वास ही नहीं हुआ, जैसा कि एथेंस के वक्ता डिमेडीज के इस वाक्य से प्रकट हैं कि "यदि वह सचमुच मृत होता तो उसके शव की दुर्गन्ध से समस्त विश्व दूषित हो उठता।"

यवन-राज्यों द्वारा विद्रोह

अलेजाण्डर की सेना से निलंबित ८००० वैतनिक सैनिकों तथा उसकी सेना के एक एथीनियन नायक लिम्रास्थनीज (Leosthnes) को साथ लेकर उन्होंने थर्मोपली के दर्रे पर अधिकार कर लिया, क्योंकि थेसालिनों द्वारा विश्वासघात किये जाने, तथा बोयोशिया के अतिरिक्त मध्य यूनान की रियासतों द्वारा उसका साथ छोड़ दिये जाने से मैसिडोनियन नायक एण्टीपेटर की स्थिति अत्यन्त निर्बल हो चली थी। उसने थर्मोपली के सामने आथ्रीस पर्वत की चोटी पर स्थित लेमिया (Lamia) नामक किले में मोर्चा जमाया। लिम्रास्थनीज ने उसे इसी दुर्ग में घेर लिया (३२३-२२ ई० पू०)। पिलोपोनेसस के राज्य भी अब एथेंस की सहायता के लिए आने लगे, परन्तु नौसैनिक शक्ति का पूर्ण सहयोग न मिलने से उनकी विजय पूर्ण न हो सकी। एथेंस केवल १७० जहाज ही युद्ध में भेज सका जब कि मैसिडान के २४० जहाज युद्ध में शामिल हुए। इसी बीच लिम्रास्थनीज की मृत्यु हो जाने, तथा फ्रीजिया के गवर्नर लिम्रनेटस के सेनापतित्व में नयी सेना के आ जाने से एण्टीपेटर की स्थिति सुदृढ़ हो गयी। यवन सेना लैमिया का घेरा उठा कर थेसाली की ओर लिम्रानेटस की सेना को रोकने के लिए बढ़ गयी ताकि वह एण्टीपेटर से न मिलने पाये। यवनों को लिम्रानेटस को हराने व धराशायी करने में सफलता मिल गयी। पराजित मैसिडानियन सेना को साथ लेकर एण्टीपेटर वापस मैसिडान चला गया। वहाँ क्रेटेरस के आगमन पर पुनः थेसाली में प्रवेश किया गया और क्रेनन (Crannon) नामक स्थान पर वे योग्य नेतृत्व से विहीन यवनों को पराजित करने में सफल हो गये। यवनों ने योग्य नेता और एकता के अभाव में संघर्ष

का पथ त्याग कर मैसिडान के समक्ष संधि-याचना की। एण्टीपेटर को, बोयोशिया होकर, एटिका पर आक्रमण की तैयारियां करते देखकर एथेंस ने भी आत्मसमर्पण कर दिया। संधि की शर्तें इस प्रकार रखी गयीं :—

१—एथेंस, संविधान में सम्पत्ति की योग्यता के सम्बन्ध में परिवर्तन करे, ताकि स्वतन्त्र नागरिकों की संख्या में कमी हो। कहते हैं इस धारा के लागू करने पर एथेंस में स्वतन्त्र नागरिकों की संख्या मात्र ६००० रह गयी। १२००० नागरिक अपने अधिकारों से वंचित कर दिये गये, क्योंकि नागरिकता की सीमा २००० ड्रैक्मा की सम्पत्ति निश्चित की गयी थी।

२—म्यूनिशिया में एक मेसिडानियन छावनी स्थापित की जाय।

३—डिमास्थनीज व हाइपराइडीज (Hypereides) आदि मैसिडान-विरोधियों को समर्पित कर दिया जाय।

एथेंस द्वारा इस धारा के स्वीकार कर लिये जाने पर डिमास्थनीज तो पलायित हो गया और हाइपराइडीज मित्रों सहित एजिना में स्थित एकायस (Aeacus) के मंदिर में जा छुपा; परन्तु वे वहाँ से पकड़ कर ले आये गये और उन्हें प्राणदण्ड दे दिया गया। डिमास्थनीज ने भी केलोरिया में स्थित पाजीडान के मंदिर में शरण ली, और जब स्वयं को बन्दी होते देखा तो विषपान कर आत्मघात कर लिया (३२२ ई० पू० अक्टूबर)।

एरिस्टाटल भी ई० पू० ३२३ में ही एथेंस से बाहर मृत्यु को प्राप्त हो गया।

इस प्रकार एथेंस और यूनान के इतिहास का एक अध्याय समाप्त हुआ और नवीन अध्याय का सूत्रपात हुआ।

उपसंहार—"अलेक्जाण्डर" 'एक बहादुर किन्तु घमण्डी युवक'[1]—अलेक्जाण्डर का जीवन-वृत्ति यद्यपि एक धूमकेतु के समान ही विश्व-गगन पर चमक कर शीघ्र ही समाप्त भी हो गया, तथापि, प्रायः समस्त विद्वानों की सम्मति में यह "गौरवपूर्ण लुटेरा" और "बचकाना व मूढ़" व्यक्ति विश्व इतिहास की महत्वपूर्ण घटना बन गया। शारीरिक दृष्टि से वह एक आदर्श युवक माना जाता है। खेल-कूद, अश्वारोहण, तलवारबाजी, तीर-कमान के प्रयोग और आखेट आदि में वह

---

१. विश्व इतिहास की झलक; संक्षिप्त संस्करण, पं० ज० ला० नेहरू।

अत्यन्त निपुण था। कहा जाता है कि ओलम्पिक खेलों में भी भाग लेने का वह इच्छुक था, परन्तु इस शर्त पर कि उसे अन्य नरेशों से ही प्रतिस्पर्धा लेनी हो। बुसेफालस नामक बिगड़े हुए घोड़े को जब उसने साध लिया था तो उसके पिता ने प्रसन्न होकर कहा था कि, "मेरे पुत्र, मैसिडोनिया तुम्हारे लिये बहुत छोटा है, तुम अपने योग्य कोई अन्य राज्य ढूँढ़ लो।" (प्लुटार्क)। १८ वर्ष की वय में ही चिरोनिया की लड़ाई में विजय प्राप्त करने में उसने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। लक्ष्यवेधकी उसकी निपुणता यहाँ तक विकसित थी कि वह भागते हुए लक्ष्यों को भी वेध डालता था। पूरी गति से दौड़ते हुए रथ पर से उतर कर पुनः आरूढ़ होने में भी वह दक्ष था। कठिन श्रम ही मानो उसका आराध्य था और आराम उसके लिए हराम था। आराम-पसन्द लोगों को वह हेय समझता था। प्लुटार्क ने लिखा है कि वह अपने को अन्य मनुष्यों से विशिष्ठ अथवा दैवी मानता था (माता के वंश की ओर से वह अपने को एकीलस का वंशज मानता था)। वह समझता था कि उसके जीवन का कोई विशेष उद्देश्य है, फिर भी वह दम्भहीन था। निद्रा और सन्तानोत्पत्ति ही उसको स्मरण दिलाते थे कि वह अमर नहीं था वरन् मृतकों की श्रेणी में ही था। कठिन परिश्रम करने के लिए वह स्वास्थ्य की ओर उचित ध्यान देता था; अतः खान-पान के सम्बन्ध मे अत्यन्त परिमित एवं सावधान रहता था, जीवन के अन्तिम दिनों में वह अवश्य मदिरा का आदी हो गया था। उसका चेहरा तराशा हुआ, आँखें हल्की नीली और केश घुँघराले थे। उसने दाढ़ी साफ करने की पद्धति प्रारम्भ की क्योंकि "दाढ़ी से शत्रुओं को हमें वश में करने का साधन मिल जाता है।" इसमें उसकी नीतिज्ञता की झलक भी मिल जाती है।

शारीरिक सौष्ठव के साथ ही उच्च नैतिक श्रेष्ठता भी उसमें विद्यमान थी, जैसा कि डेरिअस के घराने की महिलाओं के साथ किये उसके व्यवहार से प्रत्यक्ष हो जाता है। उसकी चारित्रिक शुचिता ने ही, जो कि चौथी शताब्दी में अलभ्य थी, उसमें इतनी तेजस्विता भर दी थी कि, प्लुटार्क के मतानुसार, कैसाण्डर, डेल्फी में स्थापित अलेक्जाण्डर की प्रतिमा के सामने से कांपे बिना गुजर ही नहीं सकता था।

अपने सामने आदर्श के रूप में उसने एकीलस व हिराक्लस को रखा जिनके रोमांचकारी कृत्यों से उसे सदैव प्रेरणा मिलती रही। वह स्वयं उनकी भाँति महान् कार्य करने की आकांक्षा रखता था। कहते हैं कि वह अपनी तकिया के नीचे सदा एक खड्ग और इलियड की एक प्रति रखता था-मानों एक उसका

लक्ष्य था और दूसरा उसकी प्राप्ति का साधन। उसका लक्ष्य था हिलास कीसंस्कृति को सीमामुक्त कर उसे समस्त ज्ञात विश्व में फैलाना।[१] इसी कारण कुछ इतिहासकारों ने उसे एक महान् स्वप्नद्रष्टा की उपाधि दी है। टार्न के मत में उसकी महानता का कारण वस्तुतः उसकी स्वप्नदर्शिता व व्यावहारिकता का समन्वय ही है।[२] सम्भवतः इसी कारण उसे इतिहास की सर्वश्रेठ प्रेरक शक्ति के रूप में भी माना जाता है; और विश्व की सभ्यता को एक धुरी-पथ से उठा कर दूसरे पथ पर परिचालित करने का भी श्रेय उसे दिया जाता है। इसी स्वप्नद्रष्टा ने सर्वप्रथम मानव-मात्र की एकता व भ्रातृत्व-भावना को प्रतिपादित किया, और राष्ट्रों की संकीर्ण सीमाओं को छिन्न-भिन्न कर यवन तथा बर्बर के भेद को समाप्त करने का भी प्रयास किया। अरिस्टाटल की आदर्श राज्य की सीमित कल्पना को विस्तृत कर उसने जेनो के विशाल आदर्श राज्य की कल्पना की।[३] इस उद्देश्य की पूर्ति के साथ ही, सैनिक, आर्थिक व सांस्कृतिक उद्देश्यों की पूर्ति के निमित्त भी उसने अनेक नगरों का निर्माण किया व उपनिवेशों की स्थापना की।[४] सैनिक

1. "By breaking through the crusted shell of narrow prejudices he set the Greek genius free to spread its wings abroad in unrestricted flight, and find a lodgement wherever men prepared to receive it." Robinson; और टार्न के शब्दों में "—he was the supreme fertilising force of history. He lifted the civilized world out of one grove, and set it in another; he started a new epoach.

Allexander the great, W. W. Tarn, p. 145.

2. "To be mystical (being counselled by Ammon) and intensely practical; to dream greatly and to do greatly; is not given to many men, it is this combination which gives Alexander his place apart in history."

Alexander the great, W. W. Tarn p. 124.

3, "Before Alexander men's dreams of the ideal state had still been based on class-rule and slavery; but after him comes 'I am bulvs' great 'Sun-State' founded on brotherhood and the dignity of free labour".

Ibid, p. 146.

4. A History of Greece, A. Holme, p. 387.

उद्देश्य था साम्राज्य की सुरक्षा की व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना, व आर्थिक उद्देश्य वाणिज्यिक सुरक्षा और संचारपरिवहन की व्यवस्था करना था। नगरों के निर्माणस्थल उसके इन सैनिक और आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति को ध्यान में रख कर ही निर्धारित किये गये थे। तीसरा, और सांस्कृतिक उद्देश्य था पूर्व और पश्चिम की एक मिली-जुली संस्कृति को जन्म देना। इन सब की पूर्ति के लिये उसने विजित प्रदेशों में अनेकानेक नगरों (अलेक्जाण्ड्रिया) की स्थापना की। यद्यपि अनेक नगर यवन-बहुल ही थे, चाहे वह शासन के क्षेत्र में हो या जन-संख्या या विचारधारा के क्षेत्र में, तथापि उसका ध्येय सर्वदा समानता और विश्वबन्धुत्व की स्थापना ही रहा। इसमें जो असफलता मिली उसका कारण यह था कि उसक़नेजिन यूनानियों को उक्त नगरो में बसाया उन्हें अनेक विशेष सुविधाएँ प्राप्त थीं और वे ही प्रमुख नागरिक माने जाते थे। इन यवन प्रवासियों का रुख पृथक्तावादी ही रहा। उनका वास्तविक अभिप्राय वस्तुतः पूर्व का उपयोग वाणिज्यिक शोषण के लिए ही करना था। उनमें कोई वास्तविक राष्ट्रीय प्रवृति या अनुभूति उत्पन्न न हो सकी। इस प्रकार बर्बर पूर्व में स्थापित यवन संस्कृति का प्रभाव नगर की प्राचीरों के अन्दर तक ही सीमित रहा। राबिन्सन के मतानुसार ये नगर असभ्य 'सागरीयप्रदेशों के मध्य स्थित छोटे-मोटे सभ्य टापुओं' मात्र जैसे थे।

जहां तक उसके सैनिक संगठन, संचालन अथवा नेतृत्वक्षमता का प्रश्न है वह अपने स्थान पर अद्वितीय, अतुलनीय है। वह विभिन्न शस्त्रास्त्रों के उपयोग के समन्वय में निपुण था। सैनिक क्षेत्र में उसने संसार को जो महान् देनें दीं वे थीं—शीतऋतु में आक्रमण करने की उपयोगिता, परास्त शत्रु का जहाँ तक हो सके पीछा करने की पद्धति, व, सर्वाधिक महत्वपूर्ण.—'पृथक्-पृथक् प्रस्थान और एक होकर आक्रमण'।

अन्य महान् सेनानायकों से उसकी तुलना करना आसान कार्य नहीं है। वह कभी भी पराजित नहीं हुआ, क्या किसी अन्य सेनानायक के सन्दर्भ में यह उक्ति दी जा सकती है? हाँ, केवल समुद्रगुप्त ही एक ऐसा सम्राट् व सेना-नायक था जो अलेक्जाण्डर के समक्ष नत नहीं हो सकता।

उसकी नेतृत्व-क्षमता भी अद्वितीय थी। नेपोलियन के सैनिक उसके और फ्रांस दोनों के लिए लड़ते थे परन्तु अरबेला के बाद अलेक्जाण्डर के सैनिक केवल उसी के लिए लड़े। केवल साहसिकता या लाभ के विचार से इस प्रकार की विश्वसनीयता दुर्लभ ही है।

विजेता के रूप में भी वह अनुपमेय था। उसकी सैनिक विजयों ने अनेक भाषाओं के लोकग्रन्थों में परीकथाओं का रूप धारण कर लिया।

अलेक्जाण्डर, एडाल्फ होलम के शब्दों में,एक अच्छा सेनानायक,एवं साथ ही, कुशल प्रशासक भी था।[1] जब वह प्रथमतः एशिया में प्रविष्ट हुआ तो उसके मस्तिष्क में विजित प्रदेशों की प्रशासन सम्बन्धी व्यवस्था का खाका भी अवश्य रहा होगा जैसा कि ग्रेनिकस की विजय के उपरान्त सार्डिस में किये गये प्रबन्ध से प्रकट होता है, और जिसके आधार पर उसने आगे भी, मिस्र के अलावा, प्रबन्ध किया। उसने हर स्थान पर तीन पृथक् अधिकारी नियुक्त किये, एक दुर्ग के नायक के रूप में, दूसरा कर एकत्रण के लिये, व तीसरा सामान्य प्रशासन के लिये। तीनों केवल उसी पर-निर्भर थे परन्तु अपने-अपने क्षेत्र में तीनों एक दूसरे के समकक्ष ही थे। राज्य और प्रजा दोनों के ही हितों की दृष्टि से अलेक्जाण्डर की व्यवस्था समय से बहुत आगे थी; यद्यपि उसमें विविधता, उलझन, अस्पष्टता भी थी और कई कारणों से इसे वह पूर्णता तक पहुंचाने में सफल भी न हो सका।

अलेक्जाण्डर द्वारा विजित प्रदेशों में की गयी शासन व्यवस्था की विविधताओं पर प्रकाश डालते हुए टार्न[2] लिखते हैं कि यह व्यवस्था अत्यन्त जटिल थी। मिस्र में वह एक स्वेच्छाचारी शासक एवं ईश्वर था; एशिया में वह स्वेच्छाचारी शासक था परन्तु ईश्वर नहीं था; प्राचीन यूनान में वह ईश्वर था परन्तु स्वेच्छाचारी शासक नहीं; मैसिडोनिआ में वह न तो ईश्वर था न स्वेच्छाचारी शासक, वरन् एक अर्द्ध-संवैधानिक नृप मात्र था, जिसके विरूद्ध उसकी प्रजा को कतिपय परम्परागत अधिकार प्राप्त थे। आगे वे लिखते हैं कि फीनिशिआ के राजागण उसके अधीनस्थ मित्र थे; साइप्रस के नरेश उसके स्वतन्त्र मित्र थे। पर्सिपोलिस में देशी पुजारी शासक बने रहे, और जूडिया में उच्च-पुरोहित विधान पर आधृत शासन करते रहे। एशिया माइनर के धर्म-राज्यों में अनोखी मातृसत्ताक और धर्मतांत्रिक (Matirarchal Theocratic) समाज व्यावस्था बनी रही। परशियन जमींदारों के बीच वह श्रेष्ठ सामंत था। लीडिया व बैबिलोन में उसने स्वेच्छा से अपनी सत्ता को देशी-परम्पराओं के नियन्त्रण में रहने दिया; केरिया का अपना जीयस का संघ

1. AHistory of Greece, A.Holme, P. 378.

2. Alexander The Great, W. w. Tarn, pp. 138-4o

कायम रहा, और सिस्तान कुछ सीमा तक स्वायत्तअधिकारयुक्त रहा; पंजाब के निवासियों के साथ उसका कोई सम्पर्क न था। उनका ग्राम-समुदाय का स्वप्न कायम रहा। अलेक्जाण्डर केवल कुछ समय के लिये ही उन ग्राम समुदायों पर शासन करने वाले राजाओं का नाममात्र का अधिपति मात्र बन गया था।

यूनानी राजाओं के साथ भी सम्बन्ध उलझे हुएथे। फिलिपने कतिपय यूनानी राज्यों को मैसिडोनिआ से सम्युक्त कर लिया था। परन्तु अलेक्जाण्डर के नवीन नगर मैसिडोनिअन की अपेक्षा यवन अधिक थे; और पेम्फीलिआ व सीलिसिआ कतिपय यवन एवं अर्द्धयवन नगर उसके अधीनस्थ थे। परन्तु प्राचीन यवन नगर, जो एजिअन के किनारे-किनारे, और उत्तर में सीजिकस तक, विस्तृत थे, उसके स्वतन्त्र-मित्र थे; जबकि कृष्ण-सागर तटीय नगरों, व इटली और सिसिली में स्थित नगरों के साथ उसके कोई सम्बन्ध न थे। थेसाली में वह संघ का आजीवन प्रमुख चुना गया था, और एम्फीक्टिआनिक परिषद् में उसे दो मत प्राप्त थे। प्राचीन यूनान में वह कोरिन्थ की परिषद् का अध्यक्ष और युद्धकालीन नेता था; परन्तु इन सबसे अधिक वह मूर्तिमान मैसिडोनिया राज्य था, जो संघ का सबसे शक्तिशाली राज्य था।

सामान्यतः उसके तरीके रूढ़िवादी थे। जहाँ सम्भव होता था वह विद्यमान स्थानीय शासनतंत्र अथवा व्यवस्था को ही लागू करता था। एशिया माइनर में प्रायः उसने यवन नगरों को उनका पुराना स्वायत्त पद प्रदान किया, और उनका प्रिय लोकतंत्र कायम रखा। शेष प्राचीन परशियन साम्राज्य में उसने क्षत्रपों को ही बने रहने दिया और कई स्थानों पर विद्यमान गवर्नरों को ही प्रतिष्ठित किया, यद्यपि वित्त और सेना उसी के द्वारा नियुक्त अधिकारियों के ही हाथों में रखी गयी। अधिकृत प्रदेशों के प्रशासन में वह योरोपियनों तथा एशियायियों का सहयोग चाहता था लेकिन १८ मूल देशीय क्षत्रपों में कुछ ही विश्वसनीय सिद्ध हो सके।

चरित्र–उसका चरित्र विरोधाभासयुक्त था। हृदय से वह अत्यंत भावुक था, उसकी आँखें तरल थीं; संगीत एवं गीत उसे द्रवित कर देते थे, परन्तु युद्धप्रियता ने उसे मात्र सैन्य-संगीत से बाँध दिया था। अपनी व्यस्तता के कारण यौन-भावना की दृष्टि से वह अत्यंत ही सात्विक प्रवृत्ति का था। विवाह उसने अनेकों किये, परन्तु वे उसकी प्रेम-भावना की अपेक्षा उसकी नीति के ही अंग थे। हाँ, मित्रता उसने अवश्य की और प्रेम की सीमा तक की, जैसा कि हिफेसिआन की मृत्यु के समय प्रकट हो गया। प्लुटार्क ने उसकी मित्रवत्सलता, उदारता,

स्नेहिलता, आदि गुणों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। अपने सैनिकों के साथ भी उसका व्यवहार मित्रवत् था, यद्यपि अनुशासन अपनी जगह पर विद्यमान था। उसके इस व्यवहार के कारण ही उसके सैनिक इतनी दूर तक उसका साथ दे सके। साथियों द्वारा त्रुटियों की स्वीकार कर लेने पर वह उन्हें क्षमा भी कर देता था—हरपालस के उदाहरण से यह स्पष्ट है। उसके शत्रुओं को भी उसकी उदारता एवं सदाशयता पर पूरा विश्वास था, जिससे वे आत्मसमर्पण करने में सशंकित नहीं रहते थे। कठिन प्रतिरोध का सामना करने पर वह अत्यन्त निर्मम एवं क्रूर भी हो उठता था; गाजा में नगर के नायक बेटिस के साथ, व डेरियस तृतीय की हत्या करने वाले परशियन नायक बेसस के साथा किया गया व्यवहार इसके उदाहरण हैं।[1]

एडाल्फ होल्म ने[2] लिखा है कि अलेक्जाण्डर अपने युग के नितांत विपरीत था क्योंकि चौथी शताब्दी वाक्पटुओं की शताब्दी थी जब कि अलेक्जाण्डर कर्म में विश्वास रखता था। जब तुच्छ प्रवृतियों का जोर बढ़ रहा था, उस समय वह मानव के गुणों पर विश्वास रखता था, और कभी उसे निराश नहीं होना पड़ा। उसमें शिशु-सुलभ विश्वास के साथ ही वयस्क पुरुष के जैसो मेधा-शक्ति भी थी, कल्पनात्मक क्षमता के साथ ही त्वरित कार्य करने की सामर्थ भी थी। पूर्ण बौद्धिक विकास, एवं कला और विज्ञान के प्रति प्रेम के साथ ही सैनिक कार्यों के प्रति प्रेम, और प्रशासन की कुशलता भी उसमें विद्यमान थी। इन्हीं गुणों के कारण वह न केवल यूनान के इतिहास का वरन् समस्त विश्व के इतिहास का एक अनोखा चरित्र बन गया है। वह सम्पूर्ण यवन विशेषताओं की कवितामय अभिव्यक्ति है। वह यवन जीवन के सम्पूर्ण क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि वह एकीलस और इपैमिनाण्डस, दोनों की ही विशेषताएँ रखता था। उसमें कुछ-कुछ पेरीक्लीज की भी भावना था, यथा, राजनीतिक अन्तर्दृष्टि और सत्य व सुन्दर के प्रति प्रेम। प्रकृति ने अपनी शक्ति का उसमें अल्सीबायडीज की अपेक्षा कहीं अधिक प्रदर्शन किया लेकिन अलेक्जाण्डर ने अल्सीबायडीज की तरह इस प्राकृतिक क्षमताका दुरूपयोग नहीं किया। इस शक्ति से उसने महान् कार्य-सम्पन्न किये. और अपने अल्पकालिक जीवन में उसने भलाई अधिक की, हानि कम पहुँचाई।

---

(1) The Life of Greece, W,Durant, pp, 540-41,

(2) Atqitry of Gseece, AHeewe p, 317

मामसेन ने भी कहा है कि यवन सभ्यता अलेक्जाण्डर के रूप में अपने चरम शिखर पर पहुंच गयी थी। एडाल्फ होल्म का भी कथन है कि पूरे अर्थों में अलेक्जाण्डर एक सच्चा यूनानी था।[1] अपने चरित्र व उपलब्धि, दोनों की ही दृष्टि से वह यवन-सभ्यता के चरम शिखर का प्रतीक है। अलेक्जाण्डर के बिना यवन इतिहास ऐसा ही होगा जैसे शरीर के सुन्दरतम अंग के बिना शरीर हो सकता है।

उसके सैनिक गुणों के सम्बन्ध में एडाल्फ होल्म का कहना है कि त्वरित लक्ष्य-निर्धारण, और तीव्रवेग से कार्यान्वियन उसकी प्रमुख विशेषताएँ थीं; युद्धक्षेत्र में वह परिस्थितियों के अनुसार ही साहस व विवेक का प्रयोग करता था।

अलेक्जाण्डर के कट्टर आलोचक ग्रोटे भी, जहाँ उसके अन्य गुणों की ओर से आँखें मूँद लेते हैं, वहीं उसे एक अच्छा सेनानायक मानने से इन्कार भी नहीं करते।

एक विजेता के रूप में वह प्रख्यात है, परन्तु दूसरों को जीतने की अपेक्षा स्वयं को जीतना वह अधिक उपयुक्त समझता था। उसके विभिन्न युद्धों से ही ज्ञात हो जाता है कि वह स्वयं पर कितना अधिकार या नियंत्रण रखता था, अथवा संकट से जूझते समय अपनी कितनी चिंता करता था, जैसा कि मालव अभियान में प्रकट हो जाता है जहाँ उसे मर्मान्तक आघात लगा था। उसकी इस प्रवृति के कारण कुछ विद्वान् उसे अच्छे सेनापति की जगह मात्र एक अच्छा सैनिक ही मानते हैं। दूसरी ओर, विल डूरां ने लिखा है कि, वह सहस्त्रों मनुष्यों का नेतृत्व कर सकता था, लाखों-करोड़ों को जीत कर उन पर शासन भी कर सकता था, परन्तु अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखना उसके लिये दुष्कर था। अपनी त्रुटियों व मर्यादाओं को स्वीकारना भी उसने कभी न सीखा।

उसके चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता उसकी महत्वाकांक्षा थी। सफलता की प्राप्ति के निमित्त वह हर संकट झेलने को प्रस्तुत रहता था। चिरोनिया, ग्रेनिकस, मालवा, आदि इसके उदाहरण हैं। इसीलिये डूरां ने लिखा है कि अच्छे सेनापति की अपेक्षा वह अच्छा सैनिक था। तथापि वह एक प्रेरणास्त्रोत था। सैनिकों के लिए, अपनी कल्पना शक्ति वक्तृत्वकला की उग्रता, और कष्टसहन करने की सत्वरता, एवं निष्ठा के द्वारा ही वह उनका सफल नेतृत्व करने में समर्थ हुआ।[2] उसके

(1) Ibid,pp 374-75

(2) The Life of Greece, W.Durant p. 538-41.

साहसिक वृत्ति उसके समस्त व्यक्तित्व का केन्द्रबिन्दु थी, चाहे वह अध्ययन के क्षेत्र में हो या पूर्व के असीमित रेगिस्तानों में भटकने में। इसके पीछे उसकी ज्ञान-पिपासा और जिज्ञासु वृत्ति का ही हाथ था जिसका अनेक इतिहासकारों ने यत्रतत्र उल्लेख किया है। प्लुटार्क ने लिखा है कि दिन भर के कठिन श्रम के उपरान्त रात के एकान्त वातावरण में वह वैज्ञानिकों व विद्वानों की संगत करना पसन्द करता था। उसने (सम्भवत: अरिस्टाटल के निर्देश पर) नील नदी के स्रोत की खोज के लिये एक अन्वेषक दल भी भेजा था, तथा इस प्रकार के शोध-कार्यों के लिए मुक्तहस्त से धन व्यय करने को सदैव प्रस्तुत रहता था; तथापि शकुन-अपशकुन के अन्धविश्वासों से वह पूरी तरह अछूता न था। भविष्यवक्ता और ज्योतिषि आदि उसे घेरे रहते थे, जिनके परामर्श पर, जैसा कि एरिअन ने लिखा है, वह देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिये तरह-तरह के अनुष्ठान करता था और, यहाँ तक कि, महत्पूर्ण योजनाओं में परिवर्तन भी कर देता था।

अलेक्जाण्डर के महत्व को स्पष्ट करते हुए एडाल्फ होल्म[1] कहते हैं कि यूनानियों के दो राजनितिक लक्ष्य थे–स्वशासन की स्थापना, और बर्बरों के विरुद्ध संघर्ष। एथेंस ने दोनों उद्देश्यों की पूर्ति का लक्ष्य रखा, परन्तु वस्तुतः पहला ही उद्देश्य साध सका। जो कार्य एथेंस से छूट गया उसे अलेक्जाण्डर ने बड़ी कुशलता से निपटा दिया। उसका यही एक कार्य उसे महान् कहने के लिये पर्याप्त है। उसकी त्रुटियाँ इसमें बाधक नहीं हैं।

विल डूरां के शब्दों में[2], उसकी उपलब्धि इससे कहीं अधिक विस्तृत और स्थायी हैं जितनी कि समझी जाती है। इतिहास की आवश्यकता के पूर्तिकर्त्ता के रूप में उसने स्वतंत्र-नगर राज्यों के युग का अन्त किया; और स्थानीय स्वतन्त्रता के एक बड़े अन्श का बलिदान कर तब तक के यूरोप में ज्ञात प्रणाली से अधिक स्थिर और विस्तृत प्रणाली स्थापित की। आधुनिक लोकतंत्र एवं राष्ट्रीयता के सिद्धांतों के उदय तक विभिन्न यूरोपीयराष्ट्र उसी के द्वारा प्रतिपादित धर्मसापेक्ष एकतंत्रवाद के मार्ग पर चलते रहे।

एक स्थल पर विल डूरां[3] कहते हैं कि हम उसमें सीजर की प्रशांत प्रौढ़ता और आगस्टस की बुद्धिमता का यद्यपि अभाव पाते हैं फिर भी नेपो-

(1) A History of Greece, A. Holme, p. 337.
(2) The Life of Greece, W. Durant, p. 552
(3) I bid, p. 552,

लियन की ही भांति आधी दुनिया से संघर्ष लेने वाले के रूप में हम उसकी प्रशंसा कर सकते हैं, क्योंकि वह हमें मानव-आत्मा में निहित प्रसुप्त शक्ति के विचार से प्रेरित करता है। उसके स्नेहपूर्ण स्वभाव, विश्वास व योग्यता के सन्दर्भ में हम उसकी क्रूरता और अन्धविश्वास को विस्मृत कर सकते हैं, क्योंकि वह अपने रक्त में विद्यमान बर्बरता से निरंतर संघर्षरत रहा; और, क्योंकि सारी लड़ाइयों व रक्तपात के बावजूद वह यह न भूला कि उसे एथेंस की संस्कृति का प्रकाश समस्त विश्व में फैलाना है।

ह्वीलर[1] ने लिखा है कि यदि एक मनुष्य के जीवन भर के कार्यों का निर्णय केवल इस आधार किया जाय कि उसने ठोस रूप में क्या निर्मित किया तो अलेक्जाण्डर को हमें असफल, और उससे भी अधिक मानना होगा; क्योंकि उसने जो कुछ देखा उसे नष्ट कर दिया, परन्तु उसके रिक्त स्थान की पूर्ति नहीं की। पूर्व और पश्चिम के समन्वय का उसका लक्ष्य किसी दृष्टिमान संस्था, शासनव्यवस्था या विधान, और चर्च के रूप में प्रकट नहीं हुआ। यूनान, मिस्र, और प्राची अभी भी एक दूसरे से बहुत दूर थे। ग्रोटे एवं नीवहर जैसे इतिहासकारों ने भी विश्व-व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करने, सैनिकवाद को सत्तारूढ़ करने, यवन स्वातंत्र्यभावना को ध्वस्त करने, और यूनान को हर उस चीज को मिटाने वाला कहा है जो यूनान को विश्व में विशिष्ट स्थान प्रदान करने वाली थी।

ग्रोटे और डिमास्थनीज द्वारा अलेक्जाण्डर का विरोध किये जाने के विषय में टिप्पणी करते हुए ह्वीलर कहते हैं कि उन दोनों ने आने वाली फसल के बजाय अतीत की फसल को दृष्टि में रख कर, खेतों में बिखरे हुए अच्छे बीज की निन्दा करने में ही अपनी सारी ताकत लगा दी। अलेक्जाण्डर के सिंहासनारोहण और बेबिलोन पहुँचने के बीच के पाँच वर्षों में विश्व एक फसल से दूसरी फसल तक जा पहुँचा था, परन्तु कोई इसे जानता न था। जब अलेक्जाण्डर का जीवन प्रारम्भ हुआ तो विश्व की संस्कृति अभी भी केन्द्रीकृत और स्थानीय ही थी। एक ओर मेसोपोटामिअन और मिस्री नदी-घाटियों का सम्पन्न-समृद्ध और सुव्यवस्थित औद्योगिक जीवन था, और दूसरी ओर प्राचीन यवन नगर-राज्यों का स्वतंत्र जीवन। जब अलेक्जाण्डर का जीवन समाप्त हुआ तो इन दोनों को पृथक् करने वाली बाधा सदा के लिये दूर हो चुकी थी। अलेक्जाण्डर का काल स्वतंत्र यवन नगर-राज्यों के साथ ही आरम्भ हुआ था जो अब अपकर्ष

(1) Alexander The Great, Wheeler, p. 494–99.

की ओर बढ़ रहे थे और बीज बन कर बिखरने की स्थिति में थे। यूनान की विशेष परिस्थितियों ने व्यक्तिवाद को प्रश्रय दिया था। यूनान में ही विश्व के मापदण्ड और शासन सत्ता के रूप में व्यक्ति का उत्थान हुआ था; यूनान ने ही सौन्दर्य के उन प्रतिमानों की स्थापना की थी जिनसे अधिकांश कलाओं का उदय हुआ। सत्य की शोध के वे नियम भी वहीं बने जिनसे आगे चल कर व्यवस्थित विज्ञान का जन्म हुआ, और उनके स्वातंत्र्य सिद्धांत से ही लोकतंत्रतात्मक शासन व्यवस्था का सृजन हुआ। शेष विश्व के लिये यह यूनान की धरोहर थी। अलेक्जाण्डर इस बीज को बिखेरने वाला तीव्र पवन था, साथ ही बोने वाले का आकांक्षामय हाथ भी। नगरों की स्थापना इसी ध्येय की पूर्ति का एक चरण था। ये नगर हेलेनिज्म (यवन भावना) के मूर्त रूप थे। एथेंस की जगह अब अलेक्जाण्ड्रिया, रोड्स, बाइजैंतियम, एण्टियाक, व पर्गमम आदि इसके प्रतिनिधि थे। इस वृहत्तर यूनान की संस्कृति रोम के माध्यम से पश्चात्कालीन जगत में पहुँची। यहीं पर प्राचीन यवन-संस्कृति ने विश्व की सार्वभौम संस्कृति का रूप धारण किया। यवन भाषा लेवाण्ट (Levant पूर्वी भूमध्यसागरीय प्रदेश) की भाषा बन गयी। स्थानीय नागरिकता का स्थान विश्वनागरिकता की भावना ने लिया और इस प्रकार विश्वबन्धुत्व का जन्म हुआ जिसके जनकों में भारत का भी विशिष्ट स्थान है। एक साथ रहने वालों में धार्मिक समन्वय भी स्थापित हुआ और धर्म भी स्थानीय नहीं रह गया। ह्वीलर ईसाई धर्म को अलेक्जाण्डर के विशाल साम्राज्य की वास्तविकता और स्थायित्व का प्रमाण मानते हैं जिसका अन्तर अथवा हृदय पूर्व का है और मस्तिष्क अथवा सैद्धांतिक पक्ष यूनान का।

●